अधिकतम सुचि मुल्य ~~८~~ रुपया

मुद्रक –
दे स शर्मा मेनेजर, खेमराज श्रीकृष्णदास श्री वेंकटेश्वर प्रेस, खेतवाडी, बम्बई-४

प्रस्तावना

उस सर्वशक्तिमान् परब्रह्म परमात्माको कोटिश धन्यवाद है जिसने इस असार ससार सागर में नाना विद्वान् पुरुष रत्न उत्पन्न किये हैं जिन्होंने लौकिक जीवो के उपकारार्थ व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिषादि अनेक विषय के ग्रन्थ निर्माण किये हैं।

उन्हीं महाशयो की गणना में यह एक श्रीयुत योगेश्वर गौरीपुत्र नित्यनाथजी भी हैं जिन्होंने परम अद्भुत यह "कामरत्न" ग्रन्थ निर्मित किया है। वास्तव में लोकोपकारहित यह ग्रन्थ अद्वितीयही है ससार में यावत् आवश्यकीय प्रयोग मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण, स्तम्भनादिक हैं सबकी विधि सविस्तर इसमें लिखी है, इसके सिवाय सर्वव्याधि निवारण चिकित्सा और यन्त्र मन्त्र तन्त्रादि सब पदार्थोंसहित कल्पवृक्ष इव अभीष्टदायक है। अब और विशेष हम क्या प्रशसा करें ? अवलोकनसे सब वृत्त ज्ञात होगा।

यह परमोपयोगी ग्रन्थ हमको श्रीत्रिविक्रममिश्र स्टूडेन्ट, मेडिकल कालेज आगरा द्वारा प्राप्त हुआ है। हमने प श्रीज्वालाप्रसादजी मिश्र द्वारा इसका सरल भाषानुवाद कराया निज "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर यन्त्रालय" में मुद्रित कर प्रकाशित किया है। आशा है कि पाठक गण उक्त हमारे हितैषियोको धन्यवाद देते हुए हमारे परिश्रमको सफल करेंगे।

आप सज्जनोका कृपापात्र–

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापखाना

कल्याण–बम्बई

भूमिका

भारतवर्षकी विद्याओमें तन्त्र शास्त्रभी एक अनुपम सामग्री है इस शास्त्रके मुख्य आचार्य भूतभावन देवादिदेव महादेवजी है। इन्होने प्राणियोका अल्प सामर्थ्य देख थोडे परिश्रमसे ही भक्तोकी कार्यसिद्धिके निमित्त तन्त्र शास्त्रका उपदेश किया है, तन्त्र में मन्त्र यन्त्र और औषधी तीनो का प्रयोग होने से शीघ्र ही कार्यकी सिद्धि होती है, इसी कारण तन्त्र शास्त्र की महिमा सर्वत्र वडे प्रभाव के साथ सुनी जाती है, जब काल क्रमसे शास्त्र लुप्त हुआ तब बडे २ सिद्ध योगी महात्माओ ने अपने तपके द्वारा मन्त्र और यन्त्रोको देखकर उनमें दैवी शक्ति स्थापन कर चराचरके उपकारकी इच्छा की, तत्रो में आदि आचार्य होने और सब विषय महेश्वरी से कथन करने के कारण शिवजी का सर्वत्र सवाद पाया जाता है, । सिद्धि योगियोने तपसे उस वार्ताको जान अपने ग्रथो में भी प्राय वैसाही लिखा है। देश , काल, पात्र, राशि, मुहूर्त, योग मिलाकर मत्र साधने मे साधक को शीघ्र सिद्धि होती है। तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र पूर्वक औषधी का प्रयोग करनेसे रोगीको वहुत शीघ्र आरोग्यता होती है तथा षट् कर्मसे कुशलता होती है, इन्ही सब योगो से यह विद्या एक समय सपूर्ण विश्वमें व्याप्त थी, अथर्ववेद में इसका मूल है, बडी २ गूढ विद्या मन्त्रशास्त्रमें प्रत्यक्ष फल देनेवाली विद्यमान है, जिनके अनुष्ठान से साधक मनोरथ बहुत शीघ्र प्राप्त कर सकते है, परन्तु मन्त्रानुष्ठानमें गुरुकी बडी आवश्यकता है। जो कृतज्ञ, कृतकार्य, अनुभवी, जितेन्द्रिय गुरुके मुखसे विधि ग्रहण कर उनकी आज्ञासे शुभ दिन में अनुष्ठान प्रारभ करते है वे सिद्धि लाभ करते है और जो निरक्षर भट्टाचार्य विना गुरु के मन्त्र सिद्धि करना चाहते है उनके मनोरथकी प्राप्ति नहीं होती। इस कारण गुरुके द्वाराही तन्त्र विधानमें प्रवृत्त होना चाहिये और कठिन प्रयोगो में तो कृतकार्य गुरुकी वडी ही आवश्यकता है। कालक्रमसे इस समय फिर तन्त्रशास्त्रका प्रचार घट चला है, कोई २ देश तो ऐसे हो गये कि , नन्त्र क्या पदार्थ है इसको भी नहीं जानते और कार्य सिद्धि के

निमित्त इधर उधर भटकते फिरते तथा सैकडो रुपये व्यय करके भी पूर्णरूपसे कृतकार्य नहीं होते हैं। तन्त्र द्वारा स्वल्प व्यय और स्वल्प परिश्रमसे कृत-कार्यता हो। यही विचारकर परोपकार दृष्टिसे वैश्यवशदिवाकर जगद्विख्यात सेठजी श्रीयुत गगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी महोदयने सत्प्राचीन तन्त्रो के प्रचार करनेकी इच्छासे कितने एक तन्त्र भाषाटीकासहित प्रकाशित किये और करते जाते हैं, जिनमें ६४ तन्त्रो का सार-महानिर्वाण तन्त्र वलदेवप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीका सहित, तथा रावणकृत वालतन्त्रादि मुख्य हैं प्रकाशित हुए। ऐसे ग्रन्थोमें कामरत्न ग्रन्थ वहुत उत्कृष्ट और सर्व साधारणको लाभ-दायक है। इसकी एक लिखी हुई पोथी सेठजीने मेरे पास भेजकर भाषाटीका करनेको कहा, यद्यपि वह लिखी पुस्तक विशेषरूपसे अशुद्ध थी परन्तु दो और पुस्तक मिल जाने के कारण उसके शुद्ध करनेमें विशेष कठिनाई न पडी और भाषाटीकासहित तैयार कर पुस्तक प्रेषण की।

इस ग्रन्थमें कितने विषय हैं इसके कहनेकी तो कोई आवश्यकता नहीं। कारण कि, इसकी सूचीमें वह विषय विस्तारसे लिखे हैं परन्तु यह कहने में अत्युक्ति नहीं है कि, इस समयतक जितने तन्त्र प्रकाशित हुए हैं उनसे यह उत्कृष्ट है और प्राय इसमें सब विषय सन्निविष्ट हैं। इसकी उत्तमताका एक और भी प्रमाण यह है कि, प्रकाशित होतेही शीघ्रतासे यह ग्रन्थ निकल गया और किन्ही असहनशील ईर्षापरवश लोलुप जनोको यहाँतक क्षोभ हुआ कि, वबई सरकारमें, पुस्तक को अश्लील कहकर अभियोग उपस्थित कर दिया, परन्तु 'यतो धर्मस्ततो जय' जहाँ धर्म वहाँ जय, सत्यकी जय होती है अनृतकी नहीं। अन्तमें पुस्तक उपयोगी और प्रकाशनीय सिद्ध होकर श्रीदन्यायाध्यक्षको जय हुई।

अबकी आवृत्तिमें प्राचीन लिखित कामरत्नकी पुस्तकोसे मिलाकर इसको विशेष शुद्ध करदिया है, तथा जहाँ कहीं कोई विशेषता इनमें देखी वह भी इसमें सयुक्त करदी गई है जिसमें प्रथमकी अपेक्षा पुस्तक वहुत शुद्ध और बृहत भी हो गई है। औषधि और मन्त्र के प्रयोगो के साथ ग्रंथकारने यत्र भी लिखे हैं। मत्र और यत्र दोनोही मिलकर तत्र सिद्ध होता है इस कारण दोनोही इस ग्रन्थमें सयुक्त करदिये गये हैं।

तत्र शास्त्र के प्रचार करनेमें इस समय मुरादाबाद निवासी पंडित बलदेवप्रसाद मिश्रभी अतिशय यत्नवान् हैं और उन्होने बहुतसे तत्र बडी खोजके साथ प्रकाशित भी किये हैं जिससे इस विद्याके प्रचारकी शीघ्र सम्भावना है, परन्तु साथही इस तत्र शास्त्रका प्रचार होता देख उदरभर स्वार्थी केवल द्रव्य उपार्जनकी इच्छासे तन्त्रोमें खमेलकरनेको कटिबद्ध होरहे हैं कोई तो कहींके सौपचास श्लोक सग्रह कर उसका प्राचीन तत्रोके नामोमेंसे कोई चमकता-सानाम रख देते हैं, कोई मिथ्याही किसी पुस्तकको तत्र कहकर अनर्थ करते हैं, कोई अपने तत्रको अथर्व वेदान्तर्गत प्रगटकर सहृदय पुरुषोको प्रतारण करनेकी आसुरी लीला प्रगट कर रहे हैं, कोई भूत प्रेत सिद्धि वीरभद्रसिद्धि दो दो चार २ पत्रोकी पुस्तको को बडे आडम्बर के साथ प्रकाश करके बडी कीमत लेकर ग्राहको के चित्त सकुचित कर रहे हैं, किन्हीं की यथार्थ तत्रोको देख इतनी आत्मा कुलबुलाती है कि, तत्रोके ऊपर वरुणालयका प्रयोग करके चिल्ला रहे हैं। कोई कहींसे दो चार पत्रे उठाय तत्र बनाय यही तत्र है २ कहते हुए ढोल पीटते हुए दान पात्र बन रहे हैं बहुत क्या इन मिथ्यातत्र और कल्पोके नामसे जो पुस्तकें प्रकाशित होती हैं इनसे बडी हानि है कारण कि, जब कभी वे असली पुस्तक प्रकाशित होगी तब लोगो को बडा भ्रम होगा कि, इसमें सत्य ग्रन्थ कौनसा है ? एक नामके दो ग्रन्थोका वखेडा पाठक जानही सकते हैं। "केटलाग आफ सस्कृत मेन्युस्कृप्स" (Catalogue of Sanskrit Manuscriqfs) जिसमें प्राय सस्कृतकी पुस्तकोके बहुतसे नाम उनके पत्रो और श्लोकोकी सख्या सवत् निर्माताका नाम तथा जिसके पास वह पुस्तकें हैं उनका पता लिखा रहता है जो गवर्नमेण्टके आर्डरसे प्रकाशित हुई हैं। इसके देखनेसे विदित होता है कि, कई मिथ्या तत्र लोगोने प्रकाशित किये हैं जो कि, उस ग्रन्थ में बृहत्और इस समय चार पाच पत्रोमें प्रकाश किये गये हैं। फिर ऐसे तत्रो को ग्रहण कर उससे लाभ न होनेसे सज्जनोकी अरुचि होनेकी सम्भावना क्यो न हो ? इन नकली तत्रोकेभी प्रचारसे असली तत्रोके भी मिलजानेका सदेह है। अनुवादक तथा तत्रके खोजनेवालोसे हमारा यह कहना है कि, यदि आपसे तन्त्र प्रकाश किये विना नहीं रहाजाता तो असली तन्त्रोको अनुवाद और प्रकाश कर यशके भागी हूजिये प्रपचसे लाभ -नहीं होता.

पाठक महाशयो से प्रार्थना है कि, इस ग्रन्थको अद्योपान्त देखकर लाभ उठावे। यद्यपि यथाशक्ति इसको ठीक करदिया है तथापि यदि कहीं कुछ त्रुटि रह गई हो तो क्षमा कर हसके समान गुणग्राही हूजिये। इस आवृत्तिमें और भी विशेषयत्नके साथ शद्धिकी गई है।

आपका–

ज्वालाप्रसाद मिश्र

(दिनदारपुरा)–मुरादाबाद

श्रीः

कामरत्नस्य–विषयानुक्रमणिका

श्रीगणेशाय नमः

अथ कामरत्नम्

हिन्दीटीकासहितम्



प्रथमोपदेशः

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः

मंगलाचरणम्

यस्येश्वरस्य विमलं चरणारविन्दं
संसेव्यते विबुधविद्धमधुव्रतेन ।
निर्वाणसूचकगुणाष्टकवर्गं पूर्णं
तं शङ्करं सकलदुःखहरं नमामि ।। १ ।।

दोहा—गौरीशंकर पदकमल, प्रेमसहित हियलाय ।
कामरत्नभाषातिलक, बहुविधि लिखत बनाय ।।
श्रीगणेशमंगलकरन, हरन सकल भयशूल ।
द्विजज्वालाप्रसादपर, सदा रहहु अनुकूल ।।

जिन ईश्वरके निर्मल चरणारविंद देवता सिद्ध भ्रमरके समान उपासना करते रहते हैं, जिनके गुणानुवाद स्मरणसे मुक्ति होजाती है उन अष्टमूर्ति ,वेदपूर्ण, सम्पूर्ण दुःख हरनेवाले शंकरको मैं नमस्कार करता हूं. "निर्माणशातकगुणाष्टकवर्गपूर्णम्" ऐसा भी पाठ है, अर्थ-जो सम्पूर्णसृष्टिके संहार गुण ध्यान धारणादि अष्टांग योग और धर्मादि चार वर्गमें विराजित हैं उन सम्पूर्ण दुःखनाशक शिवको प्रणाम है।।१।।

पार्वतीप्रश्न

देव्युवाच

ज्ञातं तव प्रसादेन यथा कालस्य बन्धनम् ।
मन्त्रस्य सारसंभूतमिदानीमौषधं वद ।।
औषधान्यप्यनेकानि मनुजानां हिताय वे ।
पूर्वं तु यत्त्वया प्रोक्तं प्रत्यक्षं कथयस्व मे ।। १ ।।

देवी कहने लगीं–हे भगवन् ! आपकी कृपासे मैंने यथायोग्य कालका बंधन जाना, अब इस समय आप मन्त्रके सारसे प्रगट होनेवाली औषधी कहिये. आपने पहले मनुष्योंके हित करनेवाली अनेक औषधी कही हे, अब प्रत्यक्ष कहिये ।। १ ।।

औषधिग्रहणे कालनिर्णय

ईश्वर उवाच

कामरत्नमिदं चित्रं नानातन्त्रार्णवान्मया ।
वश्यादियक्षिणीमंत्रसाधनान्तं समुद्धृतम् ।। २ ।।
तिथिनक्षत्रकारेण ऋतुभेदैः परिग्रहः ।
खननोत्पाटनं मन्त्रैः कारयेद्वै चिकित्सकः ।। ३ ।।
औषधं कालयोगेन गृह्णाति परमं बलम् ।
शरद्धेमान्तिके देवि त्वचो मूलपरिग्रहः ।। ४ ।।
शिशिरे च फलं सम्यङ्मूलं सारसमन्वितम् ।
वसन्ते पुष्पपत्रे च ग्रीष्मे च फलबीजके ।। ५ ।।

स्वकाले बलवन्तोऽपि वर्षासु तरवः सदा ।
मूले शुष्के बलं चार्द्धं मलादौ भिषजे तथा ॥ ६ ॥
ग्रीष्मवार्षिकयोरेतच्छरत्संपूर्णता भवेत् ।
वृक्षादीनां फलं बीजं स्वकीये चार्तवे तथा ॥ ७ ॥
फलपुष्पलता ह्येते स्वकाले बलिनस्तथा ।
निशायां वनजा वीर्या जलजा बलिनो दिवा ॥ ८ ॥

शिवजी कहने लगे–हे देवि ! तुम्हारे प्रश्नके लिये यह विचित्र कामरत्न नामक ग्रन्थ अनेक सागररूप ग्रन्थोसे संग्रह करके वशीकरणसे प्रारंभ कर यक्षिणीमन्त्रके साधनपर्यन्त उद्धृत किया है, इसमें तिथि-नक्षत्र, वार और ऋतुओके भेदसे औषधियोका ग्रहण, खनन, उखाडना मन्त्रपूर्वक वैद्यको करना चाहिये । समय योगमें ग्रहण की हुई औषधी परम बल करती है । शरद् और हेमन्तमें त्वचा (छाल) और मूल ग्रहण करना । शिशिरमें फल मूल और सार ग्रहण करने चाहिये । वसन्तमें पुष्प पत्र और ग्रीष्ममें फल बीज ग्रहण करने चाहिये । अपने काल और वर्षामें वृक्ष सदा बलवान् होते है । मूल शुष्कहोजानेसे आधा बल होता है तथा मलादि निकालनेमें तथा भेषजमें निर्बल होती है । ग्रीष्म वर्षा और शरद्में सम्पूर्णता होती है, वृक्षादिके फल बीज अपनी ऋतुमें ग्रहण करने चाहिये । फल पुष्प लता अपने समयमें बलवान् होती है । रातमें वनकी होनेवाली बली होती है और दिनमें जलमें होनेवाली औषधी आदि बली होती है ॥ २–८ ॥

षट्कर्माणि

शान्तिवश्यस्तम्भनानि द्वेषणोच्चाटने तथा ।
मारणान्तानि शंसन्ति षट्कर्माणि मनीषिणः ॥ ९ ॥

शान्ति ,वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण ये छः कर्म विद्वानोने कहे हैं ।। ९ ।।

षट्कर्मणि कालनिर्णय

वश्याकर्षणकर्म्माणि वसन्ते योजयेत्प्रिये ।
ग्रीष्मे विद्वेषणं कुर्यात्प्रावृषि स्तम्भनं तथा ।। १० ।।
शिशिरे मारणञ्चैव शान्तिकं शरदि स्मृतम् ।
हेमन्ते पौष्टिकं कुर्यादुक्तकर्मविशारदैः ।। ११ ।।

हे प्रिय पार्वति ! वशीकरण और आकर्षण कर्म वसन्त ऋतुमें करने चाहिये । ग्रीष्मऋतुमें विद्वेषण, वर्षाऋतुमें स्तंभन, शिशिरमें मारण, शरद्में शातिकर्म हेमन्तमें पुष्टिकर्म इन छःकर्म कर्मोंके जाननेवालोंको करने चाहिये ।। १० ।। ११ ।।

वसन्ते चैव पूर्वाह्णे ग्रीष्मे मध्याह्न उच्यते ।
वर्षा ज्ञेयाऽपराह्णे तु प्रदोषे शिशिरस्तथा ।
अर्द्धरात्रे शरत्काले * उषा हेमन्त उच्यते ।। १२ ।।

दुपहरसे पहिले वसन्त,मध्याह्नमें ग्रीष्म ,तीसरे प्रहरको वर्षा, प्रदोषमें शिशिर, आधी रातमें शरद्, उषः काल (पांच घडीके तडके) में, हेमन्त ऋतु जाननी उचित है ।। १२ ।।

ऋतवः कथिता ह्येते सर्वे ह्येव क्रमेण तु ।
तद्विहीना न सिद्ध्यन्ति प्रयत्नेनापि कुर्वतः ।।
अनन्यकरणात्ते हि ध्रुवं सिद्ध्यन्ति नान्यथा ।। १३ ।।

यह क्रमसे ऋतुओंका वर्णन किया है, कालके विना यत्न करनेपरभी मन्त्र सिद्धिको प्राप्त नहीं होते और अपने कालमें करनेसे वे सिद्ध होते है इसमें संदेह नहीं ।। १३ ।।

---

* पचपच उष काल इति धर्मशास्त्र

तत्र तिथिनिर्णय.

वशीकरणकर्माणि * सप्तम्यां साधयेद्बुधः ।
तृतीयायां त्रयोदश्यां तथाकर्षणकर्म वै ॥ १४ ॥

चतुर पुरुषको उचित है कि, सप्तमीमें वशीकरण कर्म साधन करे, तीज और तेरसके दिन आकर्षण कर्म करना चाहिये ॥१४॥

उच्चाटनं द्वितीयायां षष्ठ्याञ्चैव प्रकारयेत् ।
स्तम्भनञ्च चतुर्दश्यां चतुर्थ्यां प्रतिपद्यपि ॥ १५ ॥

दोयज और छटको उच्चाटन कर्म करे, चौथ चौदसको तथा पडवाको भी स्तम्भन करे ॥ १५ ॥

मोहनन्तु नवम्याञ्च तथाष्टम्यां प्रयोजयेत् ।
द्वादश्यां मारणञ्चैवमेकादश्यां तथैव च ॥ १६ ॥

नवमी और अष्टमी को मोहनकर्म करे, एकादशी द्वादशीको मारण कर्म करना चाहिये ॥ १६ ॥

पञ्चम्यां पौर्णमास्याञ्च योजयेच्छान्तिकादिकम् ।
सर्वविद्याप्रसिद्ध्यर्थं तिथयः कथिताःक्रमात् ॥ १७ ॥

पंचमी और पौर्णमासीको मारण कर्म करना चाहिये । यह तिथि-सर्व विद्याओंकी प्रसिद्धिके निमित्त कही हैं ॥ १७ ॥

वारादिनिर्णय

शुक्रे लक्ष्मीः शनौ वश्यं रवौ मारणकर्म च ।
उच्चाटनं बुधे भौमे विद्वेषादि शुभं भवेत् ॥ १८ ॥

शुक्रवारमें लक्ष्मी, शनिको वशीकरण, रविवारको मारण, बुधको उच्चाटन, मंगलको विद्वेषणकर्म शुभ होता है ॥ १८ ॥

---

* दशम्यामित्यपिपाठ

माहेन्द्रादिनिर्णयः

स्तंभनं मोहनञ्चैव वशीकरणमुत्तमम् ।
माहेन्द्रे वारुणे चैव कर्त्तव्यमिह विद्धिदम् ॥
विद्वेषोच्चाटनं वह्निवायुयोगेन कारयेत् ॥ १९ ॥

स्तभनं मोहन और उत्तम वशीकरण माहेन्द्र व वारुण मंडलमें करनेसे सिद्धिको देनेवाला है। विद्वेषण और उच्चाटन अग्नि और वायुके योगमें अर्थात् इन तत्त्वोंके उदय में करावे ॥ १९ ॥

तत्र नक्षत्राणि

ज्येष्ठा चैवोत्तराषाढा ह्यनुराधा च रोहिणी ।
माहेन्द्रमण्डलस्थाश्च प्रोक्ताः कर्मप्रसिद्धिदाः ॥ २० ॥

ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, अनुराधा, रोहिणी यह माहेन्द्र मण्डलमें स्थित हुए कर्मविद्धिके देनेवाले हैं ॥ २० ॥

स्यादुत्तराभाद्रपदा मूला शतभिषा तथा ।
पूर्वाभाद्रपदाश्लेषा ज्ञेया वारुणमध्यगाः ।
पूर्वाषाढा च तत्कर्म्मसिद्धिदा शम्भुना स्मृताः ॥ २१ ॥

उत्तराभाद्रपदा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, आश्लेषा यह वारुण मण्डलके मध्यचारी कहाते हैं और इसी प्रकार शिवजीने पूर्वाषाढाको उक्त कर्मसिद्धिका देनेवाला कहा है ॥ २१ ॥

स्वाती हस्तो मृगशिराश्चित्रा चोत्तरफाल्गुनी ।
पुष्य पुनर्वसुर्वह्निमण्डलस्थाः प्रकीर्तिताः ॥ २२ ॥

स्वाती, हस्त, मृगशिर, चित्रा, उत्तराफाल्गुनी, पुष्य, पुनर्वसु ये वह्निमंण्डलमें स्थित हैं ॥२२ ॥

अश्विनी भरणी चार्द्रा धनिष्ठा श्रवणं मघा ।
विशाखा कृत्तिका पूर्वाफाल्गुनी रेवती तथा ।
वायुमण्डलमध्यस्थास्तत्तत्कर्मप्रसिद्धिदाः ।। २३ ।।

अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, धनिष्ठा, श्रवण, मघा, विशाखा, कृत्तिका पूर्वाफाल्गुनी रेवती ये वायुमण्डलमें स्थित हुए उन उन कर्मोंकी सिद्धि देनेवाले हैं ।। २३ ।।

शान्तिकं पौष्टिकञ्चैव ह्यभिचारिक कर्म्मच ।। २४ ।।

शान्ति, पुष्टि और अभिचारके कर्म–आगे लिखी अंगुली द्वारा करे तो सिद्ध होते है ।। २४ ।।

तत्राङ्गुलीनिर्णय

तर्जन्यादिसमारूढं कुर्याद्यत्नात्क्रमं सुधीः ।
तथाङ्गुष्ठासमारूढा सर्वकर्म ह्युभे तथा ।। २५ ।।

पूर्वोक्त कर्म तर्जनी (अँगूठेके निकटकी अंगुली) आदि द्वारा यथा क्रमसे करे और अंगुष्ठसे सब शुभकर्म प्रयोग करने चाहिये अर्थात् अगुष्ठ और तर्जनी द्वारा शान्तिकार्य, मध्यमा और अंगुष्ठसे पौष्टिक, अनामिका और अंगुष्ठके अभिचारकर्म करे ।। २५ ।।

औषधीना वलावलविचार

विधिमन्त्रसमायुक्तमौषधं सफलं भवेत् ।
विधिमन्त्रविहीनं तु काष्ठवद्भेषजं भवेत् ।। २६ ।।

विधिपूर्वक मन्त्रद्वारा लाईहुई औषधी सफल होती है और विधि तथा मन्त्रके विना लाईहुई औषधी काठके समान होती है ।। २६ ।।

एकान्ते तु शुभारण्ये तिष्ठत्येव यदौषधम् ।
कार्यविद्धिर्भवेत्तेन वीर्यमस्तिच तत्र वै । २७ ।।

जो औषधी एकान्तमें अच्छे वनमें स्थित होती है उससे कार्य-सिद्धि होती है, कारण कि, उसमें बल रहता है ॥ २७ ॥

वल्मीककूपरथ्यातरुतलदेवालयश्मशानेषु ।
जाता विधिना विहिता ओषधयः सिद्धिदा न स्युः ॥ २८ ॥

बाँबी, कूप (कुँआ) ,मार्ग वृक्षके नीचेकी, देवालय, श्मशानमें उत्पन्न हुई औषधी विधिपूर्वक लाई हुई भी सिद्धि देनेवाली नहीं होती ॥ २८ ॥

जलजीर्णमग्निकवलितमकालजातं कृमिक्षतशरीरम् ।
न्यूनं तथाधिकं वा द्रव्यमद्रव्यं जगुर्भिषजः ॥ २९ ॥

जलसे गलीहुई, अग्निसे जलीहुई, अकालमें उत्पन्न हुई, कृमिसे खाई हुई, बहुत थोडी तथा अधिक औषधी (द्रव्य) होनेपरभी नहीं होनेके समान है, ऐसा विद्वान् कहते हैं ॥ २९ ॥

अथ मूलिकाग्रहणविधिः

भूतादियुक्तमभ्यर्च्य गिरीशं प्रातरुत्थितैः ।
श्राद्धैरुपासितैर्वापि संग्राह्यं सर्वमौषधम् ॥ ३० ॥

प्रातःकाल उठकर भूतादिके सहित शिवका पूजन कर शुद्धव्रतादिसे युक्त हो सम्पूर्ण औषधियोंको ग्रहण करना चाहिये ॥ ३० ॥

इत्येवं सर्वमूलानां विधिर्मन्त्रश्च कथ्यते ।
आदौ वृक्षस्य मूलञ्च गत्वा तमभिमंत्रयेत् ॥ ३१ ॥

इस प्रकारसे सब मूलोकी विधि और मन्त्रको कहते हैं। पहले वृक्षमूलमें जाकर उसको अभिमंत्रित करे ॥ ३१ ॥

अभिमत्रणमत्रम्

ॐ वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः ।
अपसर्पन्तु ते सर्वे वृक्षादस्माच्छिवाज्ञया ॥ ३२ ॥

यह मन्त्र है कि–वेताल, पिशाच, राक्षस, सरीसृप शिवकी आज्ञासे सब इस वृक्षसे दूर हो ॥ ३२ ॥

ततो नमस्कार

ॐनमस्तेऽमृतसम्भूते बलवीर्यविवर्द्धिनि ।
बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः ॥ ३३ ॥

फिर नमस्कार करके यह मन्त्र पढे-अमृतसे उत्पन्न, ब्रह्म-वीर्यको वढानेवाली ! बल और आयु मुझे दो और दूरसेही पापोसे मेरी रक्षा करो ॥ ३३ ॥

तत खननम्

येन त्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः ।
येन हीन्द्रोऽथ वरुणो येन त्वामपचक्रमे ॥ ३४ ॥

यह कहकर खोदे–जिस कारण कि, तुमको ब्रह्मा और भृगुजीने खोदा है, जिस कारण कि, तुमको इन्द्र और वरुणने खोदा है ॥ ३४ ॥

तेनाहं खनयिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना ।
मा पातेमानि पतिते मा ते तेजोन्यथा भवेत् ॥ ३५ ॥

इसी कारण मन्त्रसे पवित्र हाथोंसे मैं तुमको खनन करता हूं, खोदने और उखाडनेमें तुम्हारा तेज अन्यथा न हो ॥ ३५ ॥

अत्रैव तिष्ठ कल्याणि मम कार्यकरी भव ।
मम कार्ये कृते सिद्धे ततः स्वर्गं गमिष्यसि ॥ ३६ ॥

हे, कल्याणि ! यहीं स्थित होकर तुम हमारा कार्य करो । मेरे कार्यकी सिद्धि होनेसे फिर तुम्हारा स्वर्गमें गमन होगा ॥ ३६ ॥

"ॐह्लीं चण्डे हूं फट्स्वाहा,, अनेन मन्त्रेणा-
दित्यवारे पुष्यनक्षत्रे वा पुष्यार्कयोगे वा सर्वा

औषधीरुत्पाटयेत् ।। "ॐ ह्रीं क्षौं फट् स्वाहा" ।।
अनेन मूलिकां छेदयेत् ।। इति मूलिकाग्रहणविधिः ।।

"ओं ह्रीं चण्डे हूं फट् स्वाहा" इस मन्त्रसे रविवारके दिन, पुष्य नक्षत्र वा पुष्य अर्क योगमें सम्पूर्ण औषधी उखाडे।।"ओंह्रींक्षौं फट् स्वाहा" इस मन्त्रसे मूलिका छेदन करे।। इति मूलिकाग्रहणकी विधि।

ॐ वनदण्डे महादण्डाय स्वाहा ।। ॐ शूद्री
(सूत्री) कपालमालिनी स्वाहा ।। प्रत्येकं
सप्तधा जप्त्वा वन्दा ग्राह्या ।। ततः कार्यसिद्धिः ।।
इति विन्दाग्रहणविधिः ।

"ओं वनदण्डे महादण्डाय स्वाहा । ओं शूद्री कपालमालिनी स्वाहा" यह प्रत्येक सात वार जपकर वन्दा ग्रहण करे तो कार्यकी सिद्धि होती है ।। इति वन्दाग्रहणमन्त्र ।।

इत्येवं सर्वविद्यानां सिद्धये कालनिर्णयः ।
कथितं चात्र यत्नेन मूलिकाग्रहणादिकम् ।। ३७ ।।

इस प्रकार सब विद्याओंकी सिद्धिमें ऋतुआदिकाल निर्णय है। यह यत्नपूर्वक मूलग्रहणादिकी विधि कही है ।। ३७ ।।

अथ वशीकरणम्

तत्र सर्वजनवशीकरणम्

वर्णानामुत्तमं वर्णं मन्त्रस्थानं तथैव च ।
ओङ्कारशिरसं चापि ओङ्कारशिरसं ततः ।। ३८ ।।
अधोभागे च रेफञ्च दत्त्वा मन्त्रं समुद्धरेत् ।
निरामिषान्नभोक्ता च जप्तव्यो मन्त्र एव च ।। ३९ ।।

प्रथम सम्पूर्ण जनोंको वश करनेकी विधि--जो वर्णोंमें उत्तम वर्ण है वह मन्त्रका स्थान है । ओंकार शिरके स्थानमें और दूसरे क प व लिखकर अधोभागमें रेफ देकर उद्धार करे । मासरहित अन्न खाकर मन्त्र को जपे ।। ३८ ।। ३९ ।।

"क्रों प्रों व्रों" अनेन मन्त्रेण--
असाध्याश्चापि राजानः पुत्रमित्राश्च बान्धवाः ।
ये मे गोत्रसमुत्पन्नाः पशवो ये च सर्वतः ।। ४० ।।
ते सर्वे वशतां यान्ति सहस्राद्धंस्य जापनात् ।
पृष्ट्वा दृष्ट्वा च ये साध्या गृहीत्वा नाम तत्र वै ।।४१।।

"क्रो प्रों व्रो" इस मंत्रसे असाध्य राजा, पुत्र, मित्र, बांधव जो अपने गोत्रमें हैं और जो पशुप्राय है वे सब ५०० वार मन्त्र जप करनेसे वशीभूत हो जाते हैं । उन साध्योंसे पूछकर देखकर उनके नाम लेकर सिद्ध करे (क्रो प्रो के बदले कहींपर म्रौं डौ ऐसा पाठ है ।।४०।।४१।।

("ओ ह्रीं क्लीं कलिकुण्डस्वामिनी अमृतवक्र अमुकं जृम्भय मोहय स्वाहा" यह मत्र इक्कीस वार जपनेसे सिद्धि होती है ।।१।। उद्भ्रान्त पत्र, मँजीठ, कुंकुम, तगर यह समान ले खान पान और स्पर्शमें देनेसे वशी करता है । पुष्यनक्षत्रमें सिंहकी मूल लाय कमरमें बांधनेसे जगत्प्रिय होता है ।। २ ।। कृष्णचतुर्दशीमें श्मशानसे महानील लावे उसे उखाड नरतेलसे अंजन करे तो लोक वशीभूत होता है अथवा इसीकी मूल अपने वीर्यसे अंजन करे तो लोक वशमें होता है ।। ३ ।।अथवा इसीकी मूल हाथमें बांधनेसे सर्व प्रिय होता है ।। ४ ।। चंद्रवार पुष्यनक्षत्रमें ब्रह्मदण्डीकी मूल लाय अञ्जनसे करनेसे सब जीववशमें होते हैं ।। ५ ।। उल्लूके नेत्र, घीकुवार, वंशलोचन इसके अञ्जनसे लोक वशीभूत होते हैं ।। ६ ।। "ओं नमो महायक्षिणी अमुकंवशमानय स्वाहा," इस मन्त्रका दशसहस्र जपनेसे सब सिद्ध होती है ।।)

इत्यादिकाः सर्वमन्त्रा ग्राह्या भक्त्या गुरोस्तदा ।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणिनान्यथा सिद्धिभाग्भवेत् ॥४२॥

सम्पूर्ण मन्त्र भक्तिपूर्वक गुरुसे ग्रहण करनेसे इससे तो सब कार्य सिद्ध होजाते है, अन्यथा कार्यसिद्धि नहीं होती ॥ ४२ ॥

"ॐ नमः कटविकटघोररूपिणीस्वाहा ॥" अनेन मन्त्रेण सप्ताभिमन्त्रितं भक्त पिडं यस्य नाम्ना सप्ताहं खाद्यते स ध्रुवमेव वश्यो भवति ॥

"ओनमः कट विकट घोररूपिणी स्वाहा" इस मन्त्रसे सात वार अभिमन्त्रित कर भोजन पिण्डको जिसका नाम लेकर बराबर सात दिनतक खाय वह अवश्य वशमें होजाता है ॥

"ॐवश्यमुखी राजमुखी स्वाहा ॥" अनेन मुखप्रक्षालनात्सर्वे वश्या भवन्ति ॥

"वश्यमुखी राजमुखी स्वाहा" इस मन्त्रको पढ सात वार मुख धोनेसे सब वशमें होजाते हैं।

"ॐ भूराजमुखि वश्यमुखि स्वाहा ॥" वामहस्तेतैलं संस्थाप्य अनामिकया त्रिधा आमन्त्र्य पुनर्मू-लमन्त्रं त्रिधा पठित्वा प्रातःकाले शय्यायां स्थित्वा मुखकेशादौ विलेपयेत् । तदा सर्वेजनाः वश्या भवन्ति, व्याघ्रोपि न खादति ॥

"ॐ राजमुखिवश्यमुखि स्वाहा" इससे बायें हाथमें तेल लेकर कन अंगुलीसे तीन वार अभिमन्त्रित कर फिर मूलिकाको तीन वार पढकर प्रातःकाल शय्यामें स्थित होकर मुख और केशादिमें लगावे, तब सब मनुष्य वशमें होते है, व्याघ्रभी उसको नहीं खाता ।

"ॐ चामुण्डे जय २ स्तम्भय २ जंभय २ मोहय २
सर्वसत्त्वान्नम. स्वाहा" अनेन पुष्पाण्यभिमंत्र्य
यस्मै दीयते स वश्यो भवति ॥

"ॐ चामुण्डे जय २ स्तम्भय २ जभय २ मोहय २ सर्वसत्त्वान्नम स्वाहा" इस मन्त्रसे पुष्प अभिमन्त्रित करके जिसको दियाजाय वह वशीभूत हो जाता है ॥

एकचित्तस्थितो मन्त्रीमन्त्र जप्त्वायुतत्रयम् ।
ततः क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः ॥४३॥

मन्त्र जपनेवाला स्थिरचित्त होकर तीस सहस्र मन्त्र जप करके अपने दर्शनसेही लोकोंको क्षुभित कर सकता है ॥ ४३ ॥

भूताख्यवटमूलंच जलेन सह घर्षयेत् ।
विभूत्या संयुतं मन्त्रं तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ ४४ ॥

*शाखोटवृक्षकी जड यत्नसे घिसकर विभूतिके साथ तिलक लगावे तो लोक वशीभूत होजाते हैं ॥ ४४ ॥

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभिमन्त्रितम् ॥ बध्वा
सर्वत्र पूज्यः स्यान्मन्त्रस्तवत्रैव कथ्यते ॥ "ऐं रौं डं
क्षोभय भगवति त्वं स्वाहा" । मन्त्रमिममुक्तयोग-
स्य पूर्वमयुतद्वयं जपेत्ततः ॥ ४५ ॥

पुष्य नक्षत्रमें पुनर्नवाकी जडको उक्तमंत्रसे सातवार अभिमंत्रित कर हाथमें बाँधे तो सर्वत्र पूजित होता है। मंत्र यह है-"ऐं रौं डं क्षोभय भगवति त्वं स्वाहा" यह मंत्र २०००० जपनेसे सिद्धि होती है ॥ ४५ ॥

---

* कहीं रुद्राक्ष पाठ है ।

अपामार्गस्य मूलन्तु पेषयेद्रोचनेन च ।
ललाटे तिलकं कुर्याद्वशी कुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ ४६ ॥

अपामार्ग (चिरचिटे) की जडको गोरोचनके साथ पीसले, इसका तिलक मस्तकमें करनेसे त्रिलोकीको अपने वशमें कर सकता है ॥ ४६ ॥

"ॐनमः कन्दर्पशरविजालिनिमालिनि सर्वलोक-
वशंकरि स्वाहा ॥" इति मन्त्रयुक्तयोगस्याष्टोत्तर-
सहस्रं जपेत्ततः सिद्धिः ॥ ४७ ॥

"नमः कन्दर्पशर" यह मंत्रको कथितयोगमें १००८ वार जपनेसे सिद्धि होती है ॥ ४७ ॥

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यामष्टम्यां वाह्युपोषितः ।
बलिं दत्त्वा समुद्धृत्य सहदेवीं सचूर्णयेत् ॥
तांम्बूलेन तु तच्चूर्णं दत्तं वश्यकरं ध्रुवम् ।
स्नाने लेपे च तच्चूर्णं योज्यं वश्यकरं भवेत् ॥ ४८ ॥

कृष्णपक्षकी चौदस और अष्टमीका व्रत रहकर बलि देकर सहदेईको जडको उखाडके चूर्ण करे । उस चूर्णको पानमें रखकर जिसको दीजाय वह अवश्य वशीभूत होजाता है तथा इसीका चूर्ण स्नानीय जलमें मिलाकर नहानेसे अथवा शरीरमें लेपन करनेसे वश्यता होती है ।४८ ॥

रोचनासहदेवीभ्यां तिलकं लोकवश्यकृत् ।
शिरसा धारेत्तच्च चूर्णं सर्वत्र वश्यकृत् ॥ ४९ ॥

गोरोचन और सहदेई मिलाकर तिलक करनेसे लोक वशीभूत

१ कादण्डशरइति वा पाठ

होते हैं और उसका चूर्ण शिरपर धारण करनेसे भी लोक वशीभूत होते हैं ।। ४९ ।।

मुखे क्षिप्त्वा च तन्मूलं कट्यां बध्द्वा च कामयेत् ।
यां नारीं सा भवेद्वश्या मन्त्रयोगेन कथ्यते ।।
"ॐनमो भगवतिमातङ्गेश्वरी सर्वमुखरञ्जिनि सर्वेषां महामाये मातङ्गि कुमारिके*लहलहजिह्वे सर्वलोकवशंकरि स्वाहा।।सहस्रं जप्त्वा उक्तयोगानां सिद्धिः।।५०।।

उस सहदेईमूलको अन्यस्त्रियोंके द्वारा जिसके मुखमें डालदे या कमरमें उक्त मन्त्रयोगसे बांधदे तो वह स्त्री वशमें होजाती है । मंत्र यह है-"ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरञ्जिनि सर्वेषां महामाये मातंगि कुमारिके लहलहजिह्वे सर्वलोकवशंकरि स्वाहा" इसको सहस्र जप करनेसे ऊपर कह्वे योगकी सिद्धि होती है ।।५०।।

श्वेतपराजितामूलं × चन्द्रग्रस्ते समुद्धृतम्।
रञ्जिताक्षो नरस्तेन वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ।
तन्मूलं रोचनायुक्तं तिलकेन जगद्वशम् ।। ५१ ।।

श्वेतविष्णुक्रान्ताकी जड चन्द्रग्रहणमें उखाडकर लावे उसको पीसकर आंखोंमें आंजनेसे त्रिलोकी वशमें होती है और इसकी जडका गोरोचनके साथ तिलक लगानेसे जगत् वशमें होता है ।।५१।।

+ग्राह्यं कृष्णत्रयोदश्यां श्वेतगुञ्जीयमूलकम् ।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ।। ५२ ।।

कृष्णपक्षकी त्रयोदशीके दिन सफेद चौंटलीकी जडको लावे, उसको ताम्बूलके साथ देनेसे सब लोक वशीभूत होते हैं ।। ५२ ।।

---

* हल हल । × मृगऋक्षे । + ग्राह्य शुक्लचतुर्दश्या । इति च पाठान्तरम्

शिलारोचनाताम्बूलं वारिणा तिलके कृते ।

संभाषणेन सर्वेषां वशीकरणमुत्तमम् ।

स्वर्णेन वेष्टितं कृत्वा तेनैव तिलके कृते ॥ ५३ ॥

दृष्टमात्रे वशं याति नारी वा पुरुषोऽपि वा ।

"ॐ वज्रकिरणेशिवेरक्षभवेममाद्यअमृतंकुरु२स्वाहा ॥

इमं मंत्रमुक्तयोगेन सहस्रं जपेत्ततः सिद्धिः ॥ ५४ ॥

मनसिल और गोरोचन ताम्बूलजलके साथ घिसकर तिलक-लगानेसे जिसके साथ सभाषण करे वह वशमें होसकता है तथा स्वर्णसे वेष्टित कर "ॐ वज्रकिरणे शिवे रक्षभवेममाद्यअमृतं कुरु कुरु स्वाहा" इसको एक हजार वार जप कर तिलक करनेसे नारी या पुरुष कोई हो देखतेही वशीभूत होजाता है इससे अवश्य सिद्ध होती है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

हृत्पादचक्षुर्नासानां मलं पूगे प्रदापयेत् ।

तत्पूगं खाद्यते येन यावज्जीवं वशीभवेत् ॥ ५५ ॥

हृदय, चरण नेत्र नासिकाका मैल इनको पूग (सुपारी) में किंचित्भी देनेसे खानेवाला जीवनपर्यंत उसके वशमें होजाता है ॥ ५५ ॥

मंत्राभिमंत्रितं कृत्वा दण्डेन्दीवरमूलकम् ।

रोचनाभिस्ताम्रपात्रे मृष्ट्वा नेत्रद्वयाञ्जनात् ॥

प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टमात्रे न संशयः ॥ ५६ ॥

नीलकमलकी जडको पूर्वोक्तमत्रसे अभिमत्रित करके गोरोचन ताम्रपत्रमें पीसकर दोनो नेत्रोंमें आंजनेसे देखतेही वह मनुष्य सबका प्यारा होजाता है. इसमें सन्देह ॥ ५६ ॥

---

१ ओवक्रकिरणे शिवरक्षभये ममाद्यामृत कुरुकुरुस्वाहा इति वा पाठ

तन्मूलं मधुसंयुक्तं ललाटे तिलके कृते ।
ताम्बूले वा प्रदातव्यं वशीकरणमुत्तमम् ।। ५७ ।।

इसीकी (नीलकमलकी) जडका सहतके साथ तिलक लगानेसे वा ताम्बूलके साथ देनेसे उत्तम वशीकरण होजाता है ।। ५७ ।।

तन्मूलं रञ्जनोत्थं वा मूलं पिष्ट्वा प्रयोजयेत् ।
ताम्बूलेन तु तद्भुक्ते ध्रुवं वश्यं समानयेत् ।
'ॐपिङ्गलायै नमः' अनेनमंत्रेणाभिमन्त्र्योक्तयो-
गान् साधयेत् ।। ५८ ।।

तथा नीलकमलकी जड, तिरिच्छकी जड पीसकर 'ओम् पिङ्गलायै नम.' इस मंत्रसे अभिमन्त्रितकर पानकेसाथ प्रयोग करे । ताम्बूल खाते-ही वह मनुष्य वशमें होजायगा ।। ५८ ।।

रक्तगृध्रोभयं नेत्रंनेत्रं वा कृष्णपेचकम् ।
कृष्णपेचिकमाहृत्य तत्तैलेन प्रदीपकम् ।। ५९ ।।
कृत्वा च मधुना लिप्त्वा वर्ति कज्जलपातने ।
तेन नेत्राञ्जनं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ।। ६० ।।

लाल गृध्रके दोनो नेत्र और कालेउल्लूका नेत्र लेकर या काले उल्लूको लाकर उसे तेल से प्रदीप्त करके और सब प्रकार सावधानी करके उसको सहतसे लपेटकर बत्ती बनाय काजर पारे, उस काजरको नेत्रोमें लगानेसे त्रिलोकीको वशमें करसकता है ।। ५९ ।। ६० ।।

देवदाली च सिद्धार्थं गुटिकां कारयेद्बुधः ।
मुखे निःक्षिप्य सर्वेषां प्रियो भवति नान्यथा ।। ६१ ।।

देवदाली (घघरवेल) सरसो इनका गुटिका बनाकर मुखमें रख-नेसे सबका प्रिय होता है इसमें संदेह नहीं । कहीं देवदानव सिद्ध्यर्थं पाठहै कि, देव दानवकी सिद्धि के निमित्त गुटिका करे ।। ६१ ।।

भृङ्गमूलं मुखे क्षिप्त्वा सर्वैःसंपूजितो भवेत् ।
रोहिण्यां वटवन्दाकं सङग्राह्य धारयेत्करे ।
वश्यं करोति सकलं विश्वामित्रेण भाषितम् ।। ६२ ।।

भांगेरकी जड मुखमें डालकर सर्वत्र पूजित होता है । रोहिणीनक्षत्रमें वटके वन्देको संग्रहकर हाथमें धारण करे तो वह सबको वशीभूत कर सकता है, ऐसा विश्वामित्रने कहा है ।। ६२ ।।

कुङ्कुमं तगरं कुष्ठं हरितालं समं त्रयम् ।
अनामिकाया रक्तेन तिलकं लोकवश्यकृत् ।। ६३ ।।

केशर (काश्मीरमें उत्पन्न) तगर, कूठ, हरिताल इनको बराबर लेकर कनउंगलीके रक्तके साथ तिलक करनेसे सब लोक वशीभूत होजाते हैं ।। ६३ ।।

विष्णुकान्ता शुभा भृङ्गी श्वद्रंष्ट्रा मूलरोचनाम् ।
पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा तिलकं वश्यकृत्परम् ।। ६४ ।।

विष्णु कांता, भांगरा, गोखरूकी जड़, गोरोचन इन सबको पीसकर गोली बनाले इनका तिलक करनेसे लोक वशीभूत होजाते हैं ।। ६४ ।।

पुष्योद्धृतं श्वेतभानुमूलं मूत्रैरजाभवैः ।
वटिकां कारयेत्प्राज्ञस्तिलकेन जगद्वशम् ।। ६५ ।।

पुष्यनक्षत्रमें श्वेतमन्दारकी जड (सफेद आककी जड) लेकर अजामूत्रसे पीस वटी बनाकर उसका तिलक करनेसे सब जगत वशीभूत हो जाता है ।। ६५ ।।

अजारक्तेन तन्मूलं पुष्यार्के पेषयेद्बुधः ।
कज्जलं पातयित्वा तु चक्षुषी रञ्जयन्नरः ।।
त्रैलोक्यं वशतां यांति दृष्टमात्रे न संशयः ।। ६६ ।।

भेडके रुधिरके साथ मन्दारकी जड पुष्यनक्षत्रमें पीसे और उसमें काजर डालकर जो मनुष्य नेत्रोंमें लगावे तो देखतेही त्रिलोकी वशमें होजाती हे, इसमें सन्देह नहीं ॥ ६६ ॥

मूलन्तु श्रवणाङ्क्षे पिण्डीतगरसंभवम् ।
संग्राह्य धारयेद्वश्यं कुरुते सकलं जगत् ॥ ६७ ॥

श्रवण नक्षत्रमें पुहकरमूलकी जड लेकर तगर मिलाकर धारण करे तो सम्पूर्ण जगत् वशमें हो जाता हे ॥ ६७ ॥

कृष्णापराजितामूलं पुष्येणोद्धृत्य चूर्णयेत् ।
गोघृतेन समालोड्य कज्जलं धारयेद्बुधः॥
तेनैवाञ्जितमात्रेण वशीकुर्याज्जगत्रयम् ॥ ६८ ॥

कृष्णक्रान्ता (कोयल) कीजड पुष्यनक्षत्रमें लाकर चूर्ण करे, उसमें गौका घृत मिलाकर कज्जल धारण करे (कहीं गोमूत्र लिखा है) उसके आजनेमात्रसे ही त्रिलोकी वशमें होजाती हे ॥ ६८ ॥

पुत्रजीवकपत्रं च तिलकं रोचनायुतम् ।
प्रियो भवति सर्वेषां नरः कृत्वा ललाटके ॥ ६९ ॥

जियेपोते वृक्षके कोमल पत्तोंको पीसकर उसमें गोरोचन मिलाकर तिलक करे । इस मस्तकके तिलकके दर्शन करतेही सब मनुष्य इसको प्यार करने लगते हैं ॥ ६९ ॥

श्वेतापराजितामूलं तथा श्वेतजवाग्रजा ।
नासाग्रे तिलकं कृत्वा वशीकुर्य्यान्न संशयः ॥ ७० ॥

श्वेत विष्णुक्रांताकी जड तथा श्वेत गुड इन दोनोंको पीसकर नासके अग्रभागमें तिलक लगानेसे वशीकरण होता है, इसमें संदेह नहीं ॥ ७० ॥

मञ्जिष्ठयदवचाशितसूर्यमूलैः
स्वीयाङ्गशोणितयुतैः समकुष्ठकैश्च ।
कृत्वा ललाटफलके तिलकं कृतज्ञो
लोकत्रयं वशयति क्षणमात्रकेण ।। ७१ ।।

मंजीठ, मोथा, वच, श्वेतआककी जड, अपने शरीरका रुधिर, इनके बराबर कूट लेकर इनका तिलक मस्तकपर करनेसे क्षणमात्रमें त्रिलोकी वशमें होती है ।। ७१ ।।

१शम्भोर्ज्जलं च मधुकं च कृताञ्जलिञ्च
हव्यं समं निजशरीरमलेन २मिश्रम् ।
आलेपभक्षणविधौ तिलके कृते वा
योगोऽयमेवभुवनानि वशीकरोति । ७२ ।।

शुद्ध पारा, सहत, लज्जावन्ती, हव्य और अपने शरीरका मल इनका लेपन भक्षण वा तिलक सब भुवनोको वशीभूत कर सकता है ।। ७२ ।।

मूलं जटा तगरमेषविषाणिकानां
पञ्चाङ्गजं निजशरीरमलं तथैव ।
एकीकृतानि मधुना दिवसे कुजस्य
कुर्वन्तिवक्रतिलकेन वशं जगन्ति ।। ७३ ।।

रुद्रजटा, तगर, मेढासिगीका पंचांग और अपने शरीरका मल इन सबको एकत्र कर मंगलके दिन टेढा तिलक लगानेसे त्रिलोकीको अपने वशमें कर सकता है ।। ७३ ।।

भृङ्गस्य पक्षयुगलं ३शुकमांसयुक्तं
स्वानामिकारुधिरकर्णमलं स्वबीजम् ।

---

१ शम्भोर्घृतं च मधुकं च । २ पिष्टम् । ३ कुश । इति च पाठान्तरम् ।

एतानि लेपविधिनाप्यथ भक्षणाद्वा
कुर्वंति वश्यमखिलं जगदप्यकस्मात् ।। ७४ ।।

भौंरके दोनो पंख, तोतेका मांस, अनामिका उँगलीका रुधिर कानका मैल, अपना वीर्य इनका लेप वा भक्षण करानेसे तत्काल जगत् वशमें होता है, इसमें सन्देह नहीं ।। ७४ ।।

तालीशकुष्ठतगरैः परिलिप्य वर्ति
सिद्धार्थतैलसहितां दृढपट्टवस्त्राम् ।
पुंसः कपालफलके विनिपातितेन
तेनाञ्जनेन वशतां किल याति लोकः ।। ७५ ।।

तालीस, कूट, तगर, इसका लेप करके दृढ रेशमी कपडेकी बत्ती वनावे, और सरसोंके तेलसे युक्त कर पुरुषके कपालमें कज्जल पार नेत्रोंमें आंजे, तो उससे जन निश्चय वशीभूत होजाते हैं ।। ७५ ।।

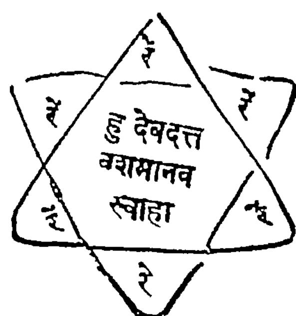
गोरोचना पद्मपत्रं प्रियङगु रक्तचन्दनम् ।
एकीकृत्याञ्जयेन्नेत्रं यं पश्यति वशी भवेत् ।। ७६ ।।

गोरोचन, पद्मपत्र, प्रियंगु, लालचन्दन इनको एकत्र कर नेत्रोंमें आज कर जिसे देखे वह वशमें होजाता है ।। ७६ ।।

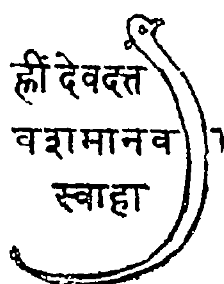
सर्वजनवशीकरणयत्राणि

रुं तुं रु	रु तुं रु	रुं तु रु
रु तुं रु	देवदत्त वशमानय स्वाहा	रु तु रु
रुं तुं रु	रु तुं रु	रु तुं रुं

इस यन्त्रको भोजपत्रपर लाल चन्दनसे लिखे, देवदत्तस्थानमें साध्य नामको लिखकर घी और शहतमें तीन रात्रि स्थापन करें, वह वशी भूत होता है,



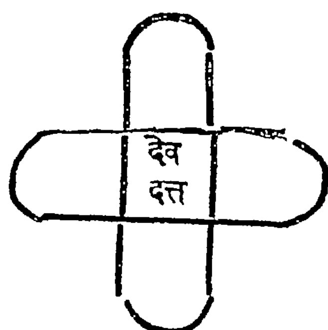
गोरोचनसे भोजपत्रपर (जिसका नाम लिखकर सदाफूलोंके वृक्षके नीचे स्थापन करे। इससे रातको प्लावित करे तो वह वशमें होता है.



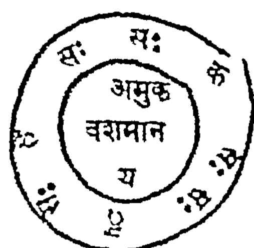
अनामिका अंगुलीके रक्त और गोरोचनसे जिसका नाम लिखकर मधुमें स्थापन करे तो वह वशमें होता है.

स्वन २ देवदत्त वशकुरु
स्वाहा

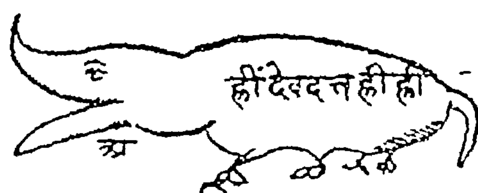
इसका गोरोचनसे भोजपत्रमें लिखलाल सूत्रसे बांध मुखमें डालकर जिसे देखे वह वशमें हाता है.



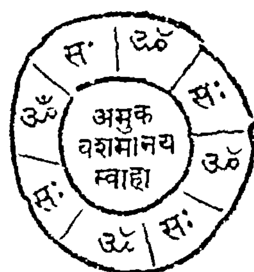
फल कंटक द्वारा जिसका नाम लिख जन्तुके विवरमें स्थापन करे, वह वशमें होता है; केवल इतनाही नहीं किन्तु त्रिभुवनको भी वशीभूत कर सकता है.



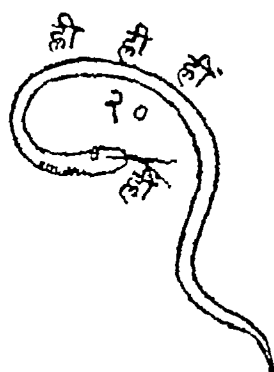
गोरोचनसे भोजपत्रमे जिसका नाम लिख मधुमे स्थापन करे वह वशीभत होता है



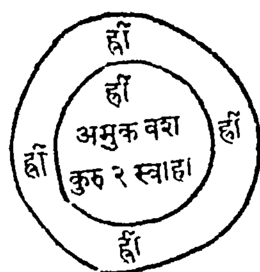
लाल चन्दनसे जिसका नाम लिख पानमें स्थापन कर तो वह वशमें होजाता है.



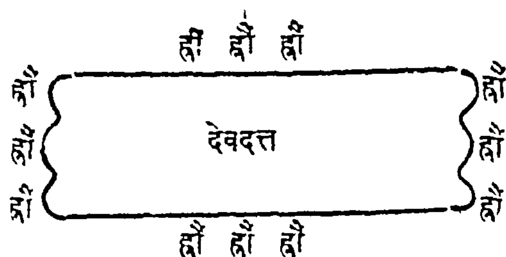
चमेलीके फूल और आकके दूधसे भोजपत्र पर इस यत्रको लिखकर भुजामें धारण करे, वह वशमें होता है.



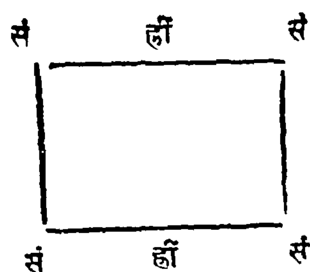
गोरोचन और कुकुमसे भूर्जपत्रपर जिसका नाम लिख सूत्रसे लपेट रक्खे तो सवदुष्ट वशमें होते है.



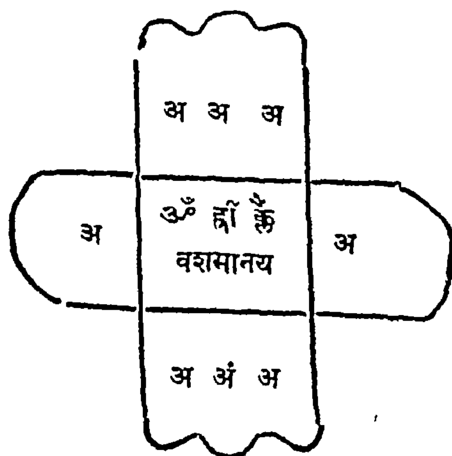
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख मधुमें स्थापन करे वह वशमें होता है.



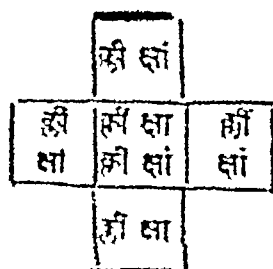
इसको गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नामलिख देवतास्थानमें स्थापन करे, वह वशमें होता है.



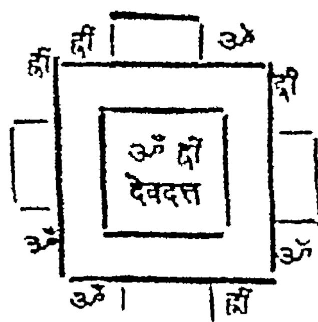
अनामिका रक्तसे भोजपत्रपर इस यत्रको साध्य नाम सहित लिख बाहु वा कण्ठमें धारण करे, वह वशीभूत होता है.



गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख साध्यका नाम लिख मधुके मध्यमें स्थापन करे वह वशमें होजाता है



कुंकुम गोरोचनसे अनामिका या अगस्तके कलमसे साध्यके नामको लिख अंगारेसे तापदे तो राजाभी हो वह अवश्य वशमें हो जाता है



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर लाल सूत्रमें वेष्ठन कर हाथमें बांधे तो वह वशीभूत होता है.



जिसके नामसहित गोरोचनसे यह चक्र लिखकर कण्ठ वाहु वा वस्त्रके अंचलमें बाँधे, चाहे शत्रुके समान भी हो वह अवश्य वशीभूत होता है,

अथ राजवशीकरणम्

कुंकुमं चन्दनञ्चैव रोचनं शशिमिश्रितम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं ध्रुवम् ।। ।। ७७ ।।

कुंकुम, चन्दन, गोरोचन, इसमें भीमसेनी कपूर मिलाकर गौके दूधसे युक्त तिलक करनेसे राजा अपने वशमें होजाता है ।। ७७ ।।

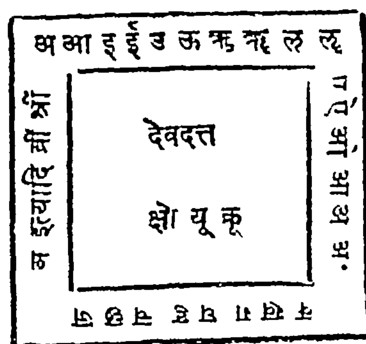
"ॐ ह्रीं सः अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॥"
पूर्वमेव सहस्रं जप्त्वाऽनेन मंत्रेण सप्ताभिमंत्रित-
तिलकं कार्यम् ॥

"ॐ ह्रीं सः अमुकं मे वशमानय स्वाहा" यह मंत्र सहस्र वार पहले जपकर फिर सात वार इन औषधियोको अभिमन्त्रित कर तिलक लगावे ॥

चंपकस्य तु वन्दाकं करे बद्ध्वा प्रयत्नतः ।
संगृह्य भरणीऋक्षे पुष्यर्क्षे वा विधानतः ॥ ७९ ॥
राजानं तत्क्षणादेव मनुष्यो वशमानयेत् ;
करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वा राजप्रियो भवेत् ॥ ७९ ॥

चम्पके वन्देको यत्नपूर्वक भरणी नक्षत्रमें अथवा पुष्य नक्षत्रमे उक्त विधानसे संग्रह करके हाथमें बांधकर राजाको दिखानेसे उसी समय राजा वशमें होजाता है । तथा सुदर्शनाकी जड़ हाथमें बांधनेसे राजाका प्यारा होता है ॥ ७८ ॥७९ ॥

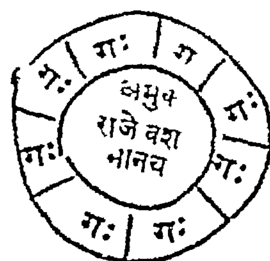
राजवशीकरणयत्राणि



इस यंत्रको कुंकुमसे भूर्जपत्रपर लिख देवदत्तके स्थानमें साध्य नाम लिखकर अपने पास रखनेसे राजा वशमें होता है,

ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा

गोरोचन कुंकुम कर्पूरसे भोजपत्र पर जिसका नाम होसो लिखकर घृत मधुमें स्थापन कर तीन दिन लाल फूलसे पूजन करे तो राजा वशमें हो



गोरोचन कुंकुम कर्पूर अर्कदूधमें साध्यका-नाम लिखकर घृत मधुमे स्थापन कर तीन दिन लाल फूलसे पूजन करे तो वह राजा वशमें होता है, इति राजवशीकरणम् ॥

अथ स्त्रीवशीकरणम्

पुष्ये पुष्पं च संगृह्य भरण्यां तु फलं तथा ।
शाखां चैव विशाखायां हस्ते पत्रं तथैव च ॥ ८० ॥
मूले मूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्य तत्क्रमात् ।
पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनासमम् ॥
तिलकात्स्त्री वशं याति यदि साक्षादरुन्धती ॥ ८१ ॥

पुष्यनक्षत्रमें काले धतूरेके फूल, भरणीमें फल, विशाखोमें शाखा, हस्तमें पत्ते, मूलमें जड लावे, यह क्रमसे ग्रहण कर कपूर मिलाकर पीसे इ समें कुंकुम और गोरोचन मिलावे इसका तिलक करनेसे ... हो वशमें हो जाती ... चाहे साक्षात् अरुन्धती क्यो न हो ॥८

काकजङ्घा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम् ।
*तद्दत्ते भोजने बाला श्मशाने रोदिनि सदा ।
"ॐ नमो भवते रुद्राय ? चामुंडे अमुकी मे
वशमानय स्वाहा।।" उक्तयोगानामयमेव मंत्रः ।।८२।।

काकजघा (चौंटली,) वच, कुष्ठ, अपना वीर्य और रुधिर मिलाकर "ॐ नमो भगवत रुद्राय ॐ चामुण्डे अमुकीं मे वशमानय स्वाहा" इस मत्रसे अभिमत्रितकर खवादेनेसे वह स्त्री सदा श्मशानमें रोदन करती है अर्थात् जीतेजी साथ न छोड़कर मरनेपर भी श्मशानमें सदा रोती है ।। ८२ ।।

प्रातर्मुखन्तु प्रक्षाल्य सप्तावाराभिमंत्रितम् ।
यस्या नाम्ना पिबेत्तोयं सा स्त्री वश्या भवेद् ध्रुवम् ।।८३।।
"ॐ नमः क्षिप्रकामिनि अमुकीमेवशमानय स्वाहा"

',ॐ नम क्षिप्रकामिनि अमुकी मे वशमानय स्वाहा" इस मत्रको प्रात.काल सातवार पढ अपना मुख सातवार धोकर जिस स्त्रीका नाम लेकर उक्तमत्रसे जलको सातवार अभिमंत्रितकर पीवे, तो वह स्त्री अवश्य वशमें होजाती है ।। ८३ ।।

कृष्णापराजितामूलं ताम्बूलेन समायुतम् ।
अवश्यायै स्त्रियै दद्याद्वश्या भवति नान्यथा ।।
"ॐ हूं स्वाहा" । अनेनाभिमन्त्र्य दद्यात् ।। ८४ ।।

काली विष्णुक्राताकी जड पानके साथ जो अवश्या स्त्रीको दे तो वह अवश्या स्त्री वशमें हो जाती है । "ओं हूं स्वाहा" इस मंत्रसे उपरोक्त औषधि अभिमन्त्रित कर दे ।। ८४ ।।

---

* तद्धस्ते—ऐसाभी पाठ है—उसके हाथसे खाने से जीते जी साय नछोड़कर मरनेपर भी शमशानमें सदा रोती है यह अर्थ है

साध्यसाधकनाम्ना तु कृत्वा सप्ताभिमन्त्रितम् ।
दीयते कुसुमं यस्यै सा वश्या भवति ध्रुवम् ॥ ८५ ॥

साध्य-साधक (अपना और स्त्री) का नाम लेकर "ओ हूं स्वाहा" इस मंत्रसे सातवार अभियंत्रित कर जिसको फूल दिये जाय वह अवश्या वशमें होजाती है ॥ ८५ ॥

सुसाधितो ह्ययं मंत्र अवश्यं फलदायकः ।
तस्मादिमं प्रयत्नेन साधयेमन्त्रमुत्तमम् ॥ ८६ ॥
"ॐ हूं स्वाहा" ॥

"ॐ हूं स्वाहा" यह मंत्र साधन करनेसे अवश्य फलका देनेवाला होता है. इस कारण इस मंत्रको यत्नसे साधे ॥ ८६ ॥

विशाखायान्तु वन्दाकं मङ्गले च समाहरेत् ।
हस्ते बद्ध्वा तु कुरुते वशगां वरयोषितम् ॥ ८७ ॥

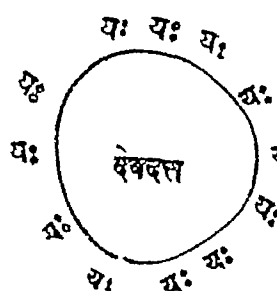
विशाखा नक्षत्रमें और मंगलवारमें दारु हलदीकी जड लाकर उसे हाथमें बांधकर श्रेष्ठ स्त्रियोंको अपने वशमें करता है ॥ ८७ ॥



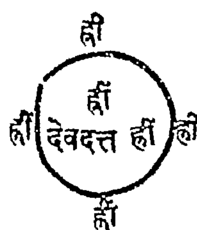
इस यन्त्रको गोरचन कुंकुमसे लिखकर देवदत्त के स्थान में गाड दे अर्थात् जिसे वशीभूत करना हो उसके स्थानमें गाडे या घृतमधुमें रखे तो वह वशमें हो जाती है ॥

सः देवदत्त सः

इस यन्त्रको कुंकुम, रक्त और गोरोचनसे भोज पत्रपर लिखकर वशमें होनेवालीका नाम लिखकर सदा पुष्पवाले वृक्षके नीचे या घृतमें स्थापन करे वह सात रात्रिमें वशमें होजाती है ॥



इस, यन्त्रको भोजपत्रपर गोरोचन लालचन्दनसे लिखकर, और वशमें होने वालीका नाम बीचमें लिखकर घीके बीचमें या जमीनमें तीन रात्रितक स्थापन करनेसे, वशीभूत हो जाती है ॥



इस यन्त्रको और वशमें होने वालीके नामको कनिष्ठिका उँगलीके रुधिरसे तथा गोरोचनसे लिखकरसहतके बीचमे स्थापन करे वह अवश्य वशीभूत होजाती है ॥

–इन यंत्रोंको स्थापन करती बार "ॐ पाते वज्राय स्वाहा" इस मन्त्रसे अभिमंत्रण करना चाहिये ॥

कृष्णोत्पलं मधुकरस्य च पक्षयुग्मं
मूलं तथा तगरजं सितकाकजङ्घा ।
यस्याः शिरोगतमिदं विहितं विचूर्णं
दासी भवेज्झटिति सा तरुणी विचित्रम् ॥ ८८ ॥

काले कमल, भौंरेके दोनों पंख, पुष्करमूल, तगर, श्वेतकाकजंघा इन सबका चूर्ण कर जिसके शिरपर डाले वह स्त्री झट दासी होजाती है इसमें सन्देह नहीं (कहीं मोरपंख लिखा है) ॥ ८८ ॥

सव्येन पाणिकमलेन रतावसाने य। रेतसा निजभवेन विलासिनीनाम् । वामं विलिम्पति पदं सहसैव यस्या वश्यैव सा भवति नात्र विकल्पभावः ॥ ८९ ॥

जो मनुष्य रतिके अन्तमें सव्य (बायें) हाथसे अपना वीर्य स्त्रीके वामचरणके तलुएमें मलता है वह स्त्री उसके वशमें होजाती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ८९ ॥

सिन्धूत्थसाक्षिककपोत्तमलानि पिष्ट्वा लिङ्गं विलिप्य
तरुणीं रमते नवोढाम् । साऽन्यं न याति पुरुषं
मनसापि नूनं दासी भवेदिति मनोहरदिव्यमूर्त्तिः ॥९०॥

जो मनुष्य सेंधानोन सहत, कबूतरकी बीटको पीसकर मदनाकुशमें लेप कर तरुणीसे रमण करता है वह स्त्री मनसेभी दूसरे पुरुषके पास नहीं जाती और सदब काल उस पुरुषकी दासी होजाती है और मनोहर दिव्य मूर्ति मानती है ॥ ९० ॥

गोरोचनाशिशिरदीधितिशंभुबीजैः काश्मीरचन्द
नयुतैः कनकद्रवैश्च । लिप्त्वा ध्वजं परिरमत्यबलां
नरो यां तस्या स एव हृदये मुकुटत्वमेति ॥ ९१ ॥

गोरोचन, कुमुद, पारा, केशर, चन्दन और धतूरेका रस इनको मदनाकुशपर लेप कर जो रमण करे वह उसको हृदयसे क्षणमात्र भी पृथक् नहीं होता । ९१ ॥

पुष्ये रुद्रजटामूलं मुखस्थं कारयेद्बुधः ।
ताम्बूलादौ प्रदातव्यं वश्या भवति निश्चितम् ॥ ९२ ॥

पुष्य नक्षत्रमें रुद्रजटा (शंकरजटा) की जड मुखमें धारण कर ताम्बूलादिमें जिसको दे वह वशमें होजाती है ॥ ९२ ॥

तथैव पाटलामूलं ताम्बूलेन तु वश्यकृत् ।
त्रिपत्रभण्टिकामूलं पिष्ट्वा गात्रे तु संक्षिपेत् ॥
यस्याः सा वशतां याति बिन्दुमात्रेण तत्क्षणात् ॥ ९३ ॥

पाढलकी जड ताम्बूलके साथ देनेसे वशीभूत करती है । बेल तथा मँजीठकी जड पीसकर एक कणभी जिसके शरीरपर डाले वह अवश्य वशमें होजाती है इसमें सन्देह नहीं ।। ९३ ।।

स्वकीयकाममादाय कामदेवं स्मरेत्पुनः ।
तरुण्या हृदये दत्तं तत्क्षणात्स्त्री वशा भवेत् ।। ९४ ।।

अपने वीर्य को लेकर और कामदेवका स्मरण कर तरुणीके हृदयमें रखनेसे तत्काल स्त्री वशमें हो जाती है ।। ९४ ।।

गिलित्वा पारदं किंचिद्रम्यते नायिका यदि ।
प्राणान्तेऽपि च सा नारी तं नरं न विमुञ्चति ।। ९५ ।।

कुछेक शोधे पारेको निगलकर यदि स्त्रीके साथ रमण करे तो प्राणान्त पर्यंत वह स्त्री पुरुषको नहीं छोडती है ।। ९५ ।।

कामाक्रान्तेन चित्तेन मासार्द्धं जपते निशि ।
अवश्यं कुरुते वश्यं प्रसन्नो विश्वचेटकः ।।
"ऐं पिं स्यां क्ली कामपिशाचिनी शीघ्रं
अमुकीं ग्राहय २कामेन मम रूपेण नखैर्विदारय२
विद्रावय२ स्नेहने बंधय२ श्रीं फट्"। अयुत
द्वयेन सिद्धिः ।। ९६ ।।

कामयुक्त चित्त होकर रात्रिके समय जो पन्द्रह दिनतक "ऐं पि स्थां क्लीं कामपिशाचिनि शीघ्रं अमुकीं ग्राहय २ कामेन मम रूपेण नखैर्विदारय विदारय विद्रावय २ स्नेहने बंधय २ श्रीं फट् इस मंत्रको बीस हजार जप करता है तो यह साधक विश्वभरको निश्चयही अपने बशीभूत कर सकता है ।। ९६ ।।

नागपुष्पं प्रियङगुञ्च तगरं पद्मकेशरम् ।
जटामांसीं समं निम्बं चूर्णयेन्मंत्रवित्तमः ।। ९७ ।।

नागपुष्प ,प्रियंगु, तगर, पद्मकेशर, जटामांसी इनके समान नीमका चूर्ण लेना चाहिये ॥ ९७ ॥

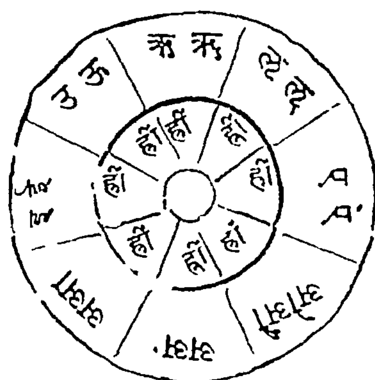
स्वाङ्गं तु धूपयेत्तेन भजते कामवत्स्त्रियः ।
धूपमन्त्रः–"ॐमूली मूली महामूली सर्व संक्षोभय२
एभ्य उपद्रवेभ्यः स्वाहा" । इति ॥
पानीयस्याञ्जलीन् सप्त कृत्वा विद्यामिमां जपेत् ।
सालङ्कारां नरः कन्यां लभते मासमात्रतः ॥ ९८ ॥

इस मंत्रसे अपने अंगको धूपित करे तो स्त्री कामदेवके समान अपने पतिको मानती है । मन्त्र यह है –"ॐ मूली मूली महामूली सर्व संक्षोभय २ एभ्य उपद्रवेभ्यः स्वाहा" । अंजलीमें जल लेकर इस विद्याको जपे तो एक मासमें अलंकारयुक्त स्त्री प्राप्त होती है ॥९८ ॥

"ॐ विश्वावसुर्नामगन्धर्वः कन्यानामधिपतिस्सुरूपां
सालंकृतां कन्यां देहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा "
कन्या गृहे शालकाष्ठं क्षिपेदेकादशांगुलम् ।
ऋक्षे च पूर्वफाल्गुन्यां यस्तां कन्यां प्रयच्छति ॥ ९९ ॥

"ॐ विश्वावसुर्नाम गंधर्वः कन्यानामधिपतिः सुरूपां सालंकृतां कन्यां देहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा ।" इस मंत्रसे कन्याके घरमें ग्यारह अंगुलका शालकाष्ठ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें डाल दे तो कन्या-उसको स्वीकार करेगी ॥ ९९ ॥

स्त्रीवशीकरणयन्त्रे



कुंकुम गोरोचनसे भोजपत्रपर इस यंत्रको साध्या नामसहित लिख भुजामें धारण करे तो स्त्री वशमें होती है और इससे सौभाग्य भी होता है.



गोरोचनसे भोजपत्रपर पूर्ववत् लिखकर खैरके अगारेसे तीन संध्याओमें तपावे तो उर्वशी भी बलपूर्वक वशीभूत होजाती है. इति स्त्रीवशीकरणम् ।।

अथ पतिवशीकरणम्

खञ्जरीटस्य मांसं तु मधुना सह पेषयेत् ।
अनेन योनिलेपेन पतिर्दासो भवेद्ध्रुवम् ।। १०० ।।
पञ्चाङ्गं दाडिमं पिष्ट्वा श्वेत सर्षपसंयुतम् ।
योनिलेपात्पतिं दासं करोत्यपि च दुर्भगा ।। १ ।।
कर्पूरं देवदारुं च सक्षौद्रं पूर्ववत्फलम् ।
"ॐकामकाममालिनि पतिं मे वशमानय ठः ठः ।"
उक्त योगानां सप्ताभिमंत्रिते सिद्धिः ।। २ ।।

खंजरीटका मास शहदके साथ पीस जो स्त्री अपनी योनिमें लेपनकरे तो उसका पति दासकी तरह वशमें हो जाता है। श्वेत सरसोंके सहित दाडिमका पंचाग पीसकर योनिमें लेपन करनेसे दुर्भागिनीभी पतिको अपना दास करती है। इसी प्रकार कर्पूर, देवदारु, सहत यह पूर्ववत् देनेवाले है। "ओ कामकाममालिनि पति मे वशमानय ठः ठः" सात वार उपरोक्त औषधियोको अभिमन्त्रित कर प्रयोग करे ॥१००-१०२ ॥

रोचनां मत्स्यपित्तं च पिष्ट्वापि तिलके कृते ।
वामहस्तकनिष्ठायां पतिर्दासो भवेद् ध्रुवम् ।
स्वशोणितं रोचनया तिलकं पतिवश्यकृत् ॥ ३ ॥

गोरोचनको मच्छीके पित्तासे पीसकर तिलक करनेसे अर्थात् बायें हाथकी कनिष्ठिका उँगलीसे तिलक लगानेसे निश्चय पति अपना दास हो जाता है। अपने रुधिरमें गोरोचन मिलाय तिलक करनेसे पति वशमें हो जाता है ॥ ३ ॥

चित्रकस्य तु पुष्पाणि मधुयुक्तानि कारयेत् ।
खाने पाने प्रदातव्यं पतिवश्यकरं भवेत् ॥
भूर्जपत्रं च मधुना योनिलेपे पतिर्वशः ॥ ४ ॥

चीतेके फल सहतके साथ मिलाकर अन्न वा पानमें देनेसे अवश्य पति अपने वशमें हो जाता है। अथवा सहतमें भोजपत्र मिलाकर योनिमें लेप करनेसे पति अपने वशमें हो जाता है ॥ ४ ॥

जलौकसां मुखे देयं शम्बूशंखादिच्चूर्णकम् ।
तच्चूर्ण तु समागृह्य ताम्बूलेन समायुतम् ।
दातव्यं स्वामिने भोक्तुं वश्यो भवति नान्यथा ॥ ५ ॥

शुद्ध पारा और शंखका चूर्ण लेकर जलजीवोंके चूर्णको ताम्बूलमें मिलाकर स्वामीको भोजनके निमित्त दे तो अवश्य पति वश में हो जाता है ।। १०५ ।।

गोरोचनानलदकुंकुमभावितायास्तस्याः सदैव
कुरुते तिलकं वशित्वम् । वात्स्यायनेन बहुधा
प्रमदाजनानां सौभाग्यकृत्यसमये प्रकटीकृतोऽसौ ।। ९ ।।

गोरोचन, नलद (खस) कुंकुम इनको मिलाकर तिलक करनेस वशीकरण होता है । यह वात्स्यायन ऋषिने स्त्रियोंकी सौभाग्यवृद्धिके निमित्त प्रगट किया है ।। १०६ ।।

सम्भोगशेषसमये निजकान्तमेढं या कामिनी स्पृशति
वामपदाम्बुजेन । तस्याः पतिस्सपदि विन्दति दास-
भावं गोणीसुतेन कथितः किल योगराजः ।। १०७ ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने वशीकरण नाम
प्रथमोपदेश ।। १ ।।

सम्भोगके समय जो स्त्री अपने पतिकी ध्वजाको वामचरणसे छूती है उसका पति सदैव दास होजाता है यह योगराज गोणीपुत्रने कहा है ।। १०७ ।। इति पतिवशीकरणम् ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकाया वशीकरण नाम प्रथमोपदेश ।। १ ।।

द्वितीयोपदेशः

अथाकर्षणम्

चतुर्थवर्णमाकृष्य द्वितीयवर्गसंस्थितम् ।
कृत्वा त्रिविधहांहातं तदन्तं हे द्वितीयकम् ॥ १ ॥
अंकारशिरसं कृत्वा प्रत्यक्षरप्रजापनम् ॥
मन्त्रम्—झां झा झां हां हां हां हें हें ॥
सहस्रार्द्धस्य जापेन फलं भवति शाश्वतम् ॥ २२ ॥

द्वितीय वर्गमें होनेवाला चौथा वर्णसे तीन संयुक्तकर अर्थात् झकार त्रय इनमें आकार अग्रे आकार सहित तीन हकार योजना कर पश्चात् एकारसहित दो हकार मिला सबके ऊपर अनुस्वार लगाकर ओंकार प्रथम लगाकर "झां झां झां हां, हां हां हें हें" इस मंत्रको पांचसौ वार जप करनेसे पूर्ण फल होता है ॥ १ ॥ २ ॥

मानुषासुरदेवाश्च सयक्षोरगराक्षसाः ।
स्थावरा जङ्गमाश्चैव आकृष्टास्ते वराङ्गने ॥ ३ ॥

उत्तम अंगवाली हे पार्वति ! मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, उरग राक्षस, स्थावर, जंगम यह सब इससे आकर्षित होते हैं ॥ ३ ॥

हान्ते रेफं समादाय यकारस्तु विशेषतः ।
अक्षरत्रितयं तच्च द्विधा कृत्वा प्रजापयेत् ।
भक्ष्यं द्रव्यं स्वहस्तेन कृत्वा मंत्रविभावनम् ॥ ४ ॥
दीयते यस्य भक्ष्यं तत्सर्वेषां प्राणिनां शुभे ।
ते सर्वे यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति तत्क्षणात् ॥ ५ ॥

हे शुभे ! हकारके अन्तमे रेफ लगाकर और यकार को संयुक्त करके दोप्रकार कर (हरय हरय इस मन्त्रको) जप कर और भक्ष्यद्रव्यको अपने हाथसे बनाकर उसमे मन्त्रकी भावना करके उसके भक्षण करानेसे सब प्राणी जहा लेजाओ वही तत्काल गमन करने लगते हे ।। ५ ।।

ह्रींकारे मन्त्रयेत्पाशं हूंकारेणाङ्कुशं तथा ।
त्रिफलं वामगं पाशं दक्षिणे ज्वलिताङ्कुशम् ।
संधार्य स्वकरे मंत्री ततो मन्त्रमिमं जपेत् ।। ६ ।।

ह्री से पाशको अभिमंत्रित कर, हू से अकुशको अभिमंत्रित कर त्रिफल वाम और पाशको, दक्षिण और प्रज्वलित अकुशको मंत्रवाला अपने हाथमें धारण कर, फिर इस मत्रको जपे ।। ६ ।।

मंत्रः—"ॐ ह्री रक्ष २ चामुण्डे तुरु २ अमुकीमाकर्षय २ ह्रीं" अस्य मंत्रस्यपूर्वमेवायुतं जपेत्ततः सिद्धिः। "चामुण्डे ज्वल २ प्रज्वल २ स्वाहा ।" अमुं मंत्रं स्त्रियं दृष्ट्वा जपेत्तत्क्षणात् सा स्त्री पृष्ठतः समागच्छति पूर्वमयुतं जपेत्ततस्सिद्धिः ।। ७ ।।

मंत्र—"ॐ रक्ष २ चामुण्डे तुरु २, अमुकीमाकर्षय २ ह्री" प्रथम यह मंत्र १०००० बार जपनेसे पश्चात् सिद्धि होती है । इस अगले मंत्रको स्त्रीको देखकर जपे तो तत्काल स्त्री उसके पीछे पीछे चली आती हे । मंत्र यह है—"ॐ चामुण्डे ज्वल २ प्रज्वल२ स्वाहा" यह मंत्रभी प्रथम १०००० जपनेसे सिद्धि होती है ।। ७ ।।

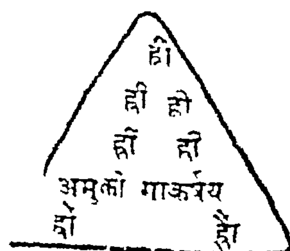
आश्लेषायां समादाय अर्ज्जुनस्य तु बृन्धकम् ।
अजासूत्रेण संपिष्यस्त्रीणां शिरसि दापयेत् ।
पुरुषस्य पशूनां वा क्षिपेदाकर्षणं भवेत् ।। ८ ।।

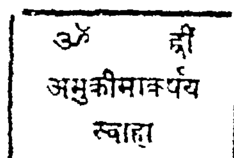
आश्लेषा नक्षत्रमें अर्जुनवृक्षसे वन्देकोलावे, बकरीके मूत्रसे पीसकर जिस स्त्रीके शिरपर डाले अथवा जिस पुरुष वा पशुके ऊपर डाले वह तत्काल आकर्षित होजाता है ॥ ९ ॥

साध्यावामपदस्थां ता मृत्तिकामाहरेत्ततः ।
कृकलासस्य रक्तेन प्रतिमां कारयेत्ततः ॥ ९ ॥
साध्यानामाक्षरं तस्यास्तद्रक्तैर्विलिखेद्धृदि ॥ १० ॥
मूत्रस्थाने च निखनेत्सदा तत्रैव मूत्रयेत् ।
आकर्षयेत्तु तां नारीं शतयोजनसंस्थिताम् ॥ ११ ॥

जिसका आकर्षण करना है उसके वामचरणसे नीचेकी मृत्तिका लाकर गिरगिटके रुधिरसे उस मिट्टीका पुतला बनावे और हृदयमें उसके रुधिरसे आकर्षणवाले प्राणीका नाम लिखे और मूत्रस्थान पर गाडकर सदा उसी स्थानमें मूत्र करे, सौ योजनपर स्थित भी स्त्री आकर्षित होजाती है ॥ ९-११ ॥

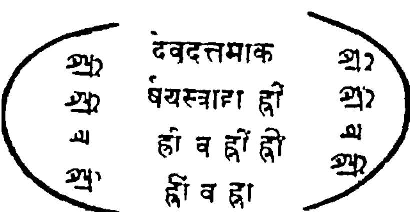
युवत्याकर्षणयन्त्राणि





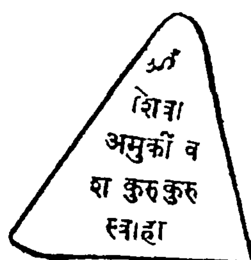
गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख मोम घीमें स्थापनकरधावैंवह स्त्री आकर्षित हो०

गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर घीमें स्थापन करे वह स्त्री दूरसे आकर्षित होती है.



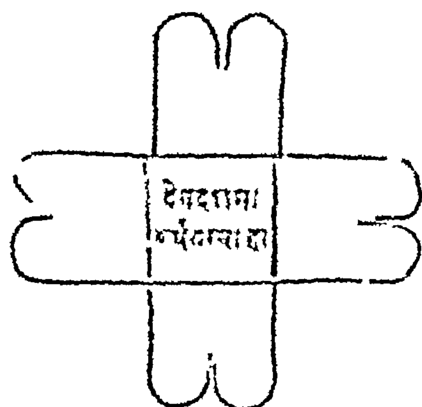
धतूरेके पत्तेके रससे और गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखे करबीरका नलिकामें स्थापन करे खैरके अंगारसे तपावे तो सौ योजनेसे भी आकर्षित होती है.





गोरोचनसे लिखकर खैरके अंगारोपर तपाय तीनो कालमें जपे तो उर्वशी भी आकर्षित होती है.

अनामिकाके रक्तसे वाम हाथमें लिख रात्रिमें मनमें जप करे तो आकर्षित होती है.





गोरोचन चन्दनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख शहतमें डाल नलिकामें रख पृथ्वीमें गाडदे तो स्त्री शीघ्रआकर्षित होती है.

अनामिका उंगलीके रक्तसे वाम हाथमें लिख हृदयमें रखकर जपे तो रात्रिमें शय्यापर आजाय

सूर्यावर्तस्य मूलं तु पञ्चम्यां ग्राहयेद्बुधः ।
ताम्बूलेन समं दद्यात्स्वयमायाति तत्क्षणात् ॥ १२ ॥

बुद्धिमान् पंचमीके दिन सूर्यावर्त (शाकविशेष क्षुप हुडहुडिया) की जड ला वे जिसको पानमें मिलाकर दे वह तत्काल पीछे पीछे स्वयम् आजाती है । १२ ॥

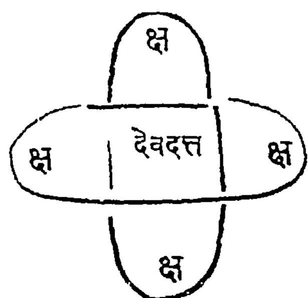
रतिकर्म्मकरौ ग्राह्यौ भ्रमरौ यत्नतो बुधैः ।
भिन्नौ कृत्वा दहेत्तौ तु चिताकाष्ठैस्तयोः पुनः ॥ १३ ॥
वस्त्रेण बन्धयेद्भस्म पृथग्वै पुट्टलीद्वयम् ।
तयोरेकामजाशृङ्गे दृढं बद्ध्वा परीक्षयेत् ॥ १४ ॥

जिस समय भौंरा भौंरी रति करते हो उस समय उनको ग्रहण कर अलग करके चिताकाष्ठमें उनको जलादे और उनकी भस्म पृथक् पृथक् वस्त्रमें ग्रहण कर पोटली बनाले । उनमेंसे एकको बकरी के सींगमें दृढ बाधकर परीक्षा करे ॥ १३ ॥ १४ ॥

यां यां याति च सा मेषी सा पृथग्गृह्यते बुधैः ।
तद्भस्म शिरसि न्यस्तं क्षणादाकर्षयेत्स्त्रियः ।
अपरं रक्षयेद्वस्त्रे नोचेन्नायाति कामिनी ।। १५ ।।
"ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा ।" इमं मन्त्रं पूर्वमेकायुतं
जपेत् तत उक्तयोगमभिमन्त्र्य सिद्धिः ।। १६ ।।

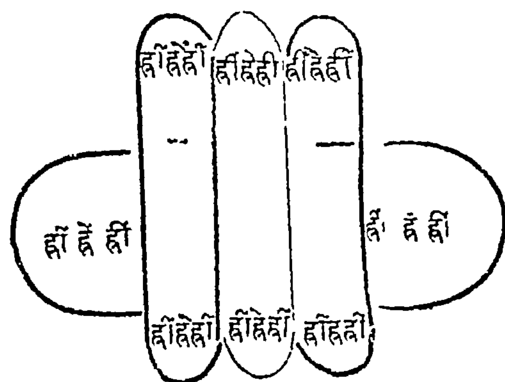
इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने आकर्षणंनाम
द्वितीयोपदेशः ।। २ ।।

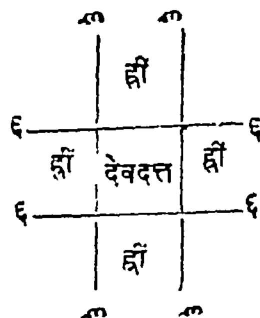
जिस जिसको वह स्पर्श करे उसकी पृथक् आकर्षित होती है, उस भस्मको शिरपर डालनेसे तत्काल स्त्री आकर्षित होती हे और दूसरीको वस्त्रमें रक्षा करे नहीं तो स्त्री कदाचित् नही आवेगी "ॐकृष्णवर्णाय स्वाहा" इस मंत्रको १०००० जपनेसे उक्तयोगकी सिद्धि होती है ।। १५ ।। १६ ।।



आकर्षणयन्त्राणि

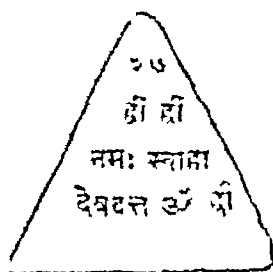
गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख मधुमें स्थापन करे दूरसे भी आकर्षण होता है.

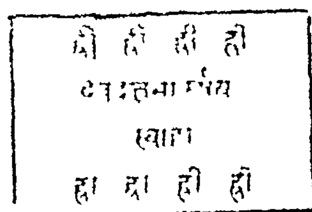




गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिखकर मधुमें स्थापन करे आकर्षण होता है

अनामिकाके रक्तसे भोजपत्रमें लिख अग्निमें तपावे आकर्षण होता है

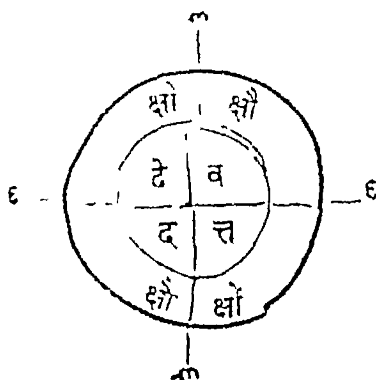




अनामिका रक्तसे हाथमें लिख रात्रिमें जपे सध्यामें आकर्षण होता है.

लाल चन्दन और अपने रुधिरसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख घरमें स्थापन करे वह आकर्षित होता है.



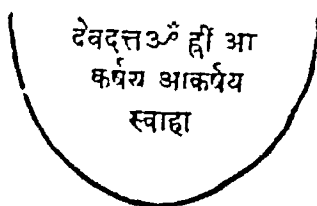


अपने रुधिरसे जिसका नाम लिखकर कागमें बाधकर छोड दे वह शीघ्र आकर्षित होता है

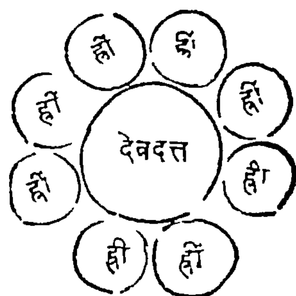
गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख मधुमें स्थापन करे सौ योजनसे आकर्षित होता है.



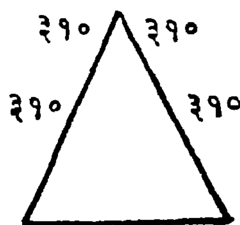
कुंमकुम गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख मोमसे लपेट खैरके अंगारेसे तपावे वह शीघ्र आर्कांषित होता है



गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख मधुमध्यमें स्थापन करे उसे सौ योजनसे आर्कांषित करता है.



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख घृतमें स्थापन करे वह आर्कांषित होता है.



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख पनीमें स्थापित करे वह आर्कांषित होता है.

इति कामरत्ने पं. ज्वालाप्रसादकृत भा. टी. आकर्षण नाम द्वितीयोपदेशः ।। २ ।।

तृतीयोपदेश

अथ जयः

हकारं स्वरसंयुक्तमुकारेण सुपूजितम् ।
ओंकारेण च संपूज्य अग्रे फट् विनियोयेत् । ,ॐहुंफट्'
जेयाग्रे शतजापेन जितो भवति नान्यथा ।। १ ।।

हकार स्वर संयुक्त उकारसे पूजित और ॐ कार युक्त कर अन्तमें फट् लगावे । ॐ हुंफट्' जेय अर्थात् जिसके जीतनेकी इच्छा हो उस पुरुषके आगे सौ बार जपनेसे जीता जाता है, इसमें सन्देह नहीं ।। १ ।।

जेयनाम हृदि न्यस्य चक्षुषा तन्निमील्य च ।
स्पृष्ट्वा च मन्त्रजापेन तत्क्षणाज्जितवानसौ ।। २ ।।

जो कोई हो उसके नामको हृदयमें रखकर नेत्रसे उसको निरीक्षण और स्पर्श कर मन्त्र जपनेसे वह तत्काल जीतलिया जाता है ।। २ ।।

गोजिह्वाशिखिमूली वा मुखे शिरशि संस्थिता ।
कुरुते सर्ववादेषु जयं पुष्ये समुद्धृता ।। ३ ।।

गाजुवा चीता, पुष्करमूल शिरपर रखनेसे और पुष्यनक्षत्रमें उखाडकर लानेसे सब वादमें जय करते है । ।। ३ ।।

मार्गशीर्षस्य पूर्णायां शिखिमूलं समुद्धरेत् ।
बाहौ शिरसि वा धार्यं विवादे विजयो भवेत् ।। ४ ।।

मार्गशोर्षकी पूर्णमासीको शिखीकी मूल उखाडकर लावे । भुजामें और शिरपर धारण करनेसे सब विवादमें जय प्राप्त करता है,इसमें सन्देह नहीं ।। ४ ।।

गिरिकर्णी शमीं गुञ्जां श्वेतवर्णां समाहरेत् ।
चन्दनेनान्वितं सर्वं तिलकेन जयी भवेत् ।। ५ ।।

गिरिकर्णी (कोयल) शमी (झंड) श्वेत चौंटली इनको लेकर चन्दनसे युक्त कर तिलक लगानेसे युद्धमें जयी होता है ॥ ५ ॥

कनकार्कवटो वह्निर्विद्रुमः पञ्चमस्तथा ।
तिलकं कुरुते यस्तु पश्येत्तं पञ्चधा रिपुः ॥ ६ ॥

धतूरा, आक, बड, चीता, मूंगा इनका जो तिलक लगाता है उसको शत्रु पांच प्रकारसे देखता है यानी अपनेसे पचगुना जानता है ॥ ६ ॥

कृष्णसर्पकपाले तु वसामृत्तिकयान्विते ।
सितगुञ्जां वपेत्तत्र तस्या मूलं समाहरेत् ॥ ७ ॥
कृततिलकं तदा दृष्टचा पश्येत्स्वं सम्भृतं रिपुः ॥ ८ ॥

काले सापकी खोपडीमें चर्बी व मृत्तिका युक्त कर श्वेत चौटली बोवे ,उसकी जड लेकर तिलक करनेसे शत्रुको सब प्रकारसे रक्षित दिखाई देता है ॥ ७ ॥ ८ ॥

❀१ श्वगणैर्भक्ष्यमाणं च पतितं च ततो भुवि ।
औषधी सिंहिकानाम तया घृष्टो महारसः ॥ ९ ॥
सिंहीकपर्द्दिकामध्ये क्षेप्यस्तन्मूलसंयुतः ।
पिधाय वदनं तस्या सिक्थकेन समन्वितः ॥ १० ॥
तस्यां वक्त्रस्थितायां तु सिंहवज्जायते नरः ।
रणे राजकुले द्यूते विवादे चापराजितः ॥
मदोन्मत्तो गजस्तस्य दर्शनेन पराङमुखः ॥ ११ ॥

श्वगणोंके भक्षण करनेसे जो पृथ्वीपर गिरी सिंहिका नाम औषधी-का महारस घिसे उस सिंहिका (कटेरी) को कौडीके बीचमें रख ले, कटेरीकी जडके सहित उसका मुख मोमसे बन्द करे । उसके मुखमें रख-

❀१ स्वगणै । स्वगतै इति च पाठ ।

लेनेसे यह मनुष्य सिहके समान होजाता है । युद्धमें, राजकुलमें जुए अथवा वादमें कहोभी पराजित नही होता है । उसे देखकर मदोन्मत्त हाथीभी पराङमुख होजाता हे ।। ९-११ ।।

व्याघ्रीरसेन संघृष्टः पारदो मूलसंयुतः ।
पूर्ववत्साधयेद्व्याघ्रीफलं चैव तथाविधम् ।। १२ ।।

व्याघ्री (कटेरी) के फलमें मूल सहित पारा धिसनेसे यह कटेरी पूर्ववत् जयको प्राप्ति करती है इसमे सन्देह नहीं ।। १२ ।।

करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वा राजकुले जयी ।
जयामूलं राजकुले मुखे संस्थं जयप्रदम् ।। १३ ।।

सुदर्शनाकी जड हाथमें बाधनेसे राजकुलसे मुकदमेमं जय प्राप्त होता है । जया (जयन्ती) की जड मुखमें रखनेसे राजकुलमें जय प्राप्त होता है ।। १३ ।।

आर्द्रायां वटवन्दाकं हस्ते बद्ध्वापराजित· ।
तदृक्षे चूतवन्दाकं गृहीत्वा धारयेत्करे ।।
संग्रामे जयमाप्नोति जयां स्मृत्वा जयी भवेत् ।। १४ ।।

आर्द्रा नक्षत्रमें वटके वन्देको हाथमें बाधनेसे जयी होता है इसी प्रकार आर्द्रामें आमका वन्दा हाथमें धारण करनेसे जहा जाय जय प्राप्त होता है तथा जयन्तीको स्मरण करनेसे (रणमें) जय प्राप्त होता है ।। १४ ।।

कोकाया नयनं वामं गुडलोहेन वेष्टयेत् ।
मुखे प्रक्षिप्य च नरः सर्ववादे जयी भवेत् ।। १५ ।।

कोकाका बायां नेत्र गुड और लोहेमें लपेटकर उसको मुखपर लेप करनेसे मनुष्य सपूर्ण वादोंमे जय प्राप्त करता है ।। १५ ।।

कृत्तिका च विशाखा च भौमवारेण संयुता ।
तद्दिने घटितं शस्त्रं संग्रामे जयदायकम् ।। १६ ।।

जब कृतिका और विशाखा नक्षत्रसे युक्त भौम वार हो तो उस दिनमें बनाहुआ शस्त्र सग्राममें जयदायक होता है ।। १६ ।।

अपामार्गरसेनैव यानि शस्त्राणि लिप्यते ।
जायन्ते तानि संग्रामे वज्रसाराणि निश्चितम् ।। १७ ।।
पूर्वोक्तमंत्रराजेन तानि सर्वाणि मंत्रयेत् ।
सर्वेषामुक्त योगानां सिद्धिर्भवति ते ध्रुवम् ।। १८ ।।

चिरचिटेके रसमें जितने शस्त्र लिप्त किये जायँ वे संग्राममें वज्र सारकी समान होजाते है, इसमें सन्देह नहीं । पूर्वोक्त मन्त्रराज द्वारा सम्पूर्ण अस्त्रोको अभिमन्त्रित करेतोसपूर्ण योगोकी सिद्धि होती है१८।।

हस्तेऽर्कलाङ्गलीमूलं मूलमन्त्राभिमंत्रितम् ।
तच्चूर्णोद्वर्त्तनान्मल्लो मल्लान्मोहयते बहून् ।।

मन्त्रः- ॐ नमो महाबलपराक्रम शस्त्रविद्याविशारद
शारद अमुकस्य भुजबलं बंधय बंधय दृष्टि
स्तम्भय स्तम्भय अङ्गानि धूनय२ पातय२
महीतले हूं" ।। १९ ।।

हस्त नक्षत्रमें लांगली (कलिहारी) की जडको इस मूलमन्त्रसे अभिमन्त्रित करके उसके चूर्णको छोटा पहलवान शरीरमें मलकर दूसरे पहलवानको पछाड सकता है । मन्त्र यह है-"ॐ नमो महावल पराक्रम शस्त्रविद्याविशारद अमुकस्य भुजवलं बन्धय बन्धय दृष्टि स्तंभय स्तंभय अंगानि धूनय २ पातय २ महीतलेहूं" इति ।। १९ ।

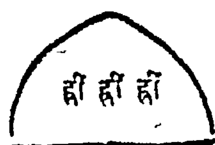
विजयकरयन्त्राणि

५३
देवदत्त

गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख शिखा में धारण करे जय होती है, और सौभाग्य होता है



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख भुजा वा कण्ठमें धारण करे सग्राममें जय होती है यह महामाहेश्वरी विद्या है



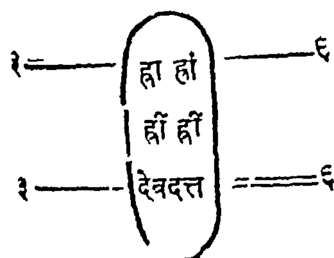
भोजपत्रपर गोरोचनसे जिसका नाम लिख भुजा कंठ, शिखामें धारण करे तो संग्राममें जय होती है.

अभिजित् अपराजित्
देवदत्तस्य जयो भवेत्

शिलापट्टमें हरतालसे लिखकर जिसका नाम लिख नीचेकी ओर मुखपर रख दे, वह जयी होता है.

	१	२६	१	२४
	८	२७	२०	१५
	२४			
	२९			

गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजामें बांधे संग्राममें जय होती है.

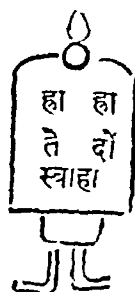




गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भोजपत्रमें स्थापन करे तो युद्धमे जय होती है,

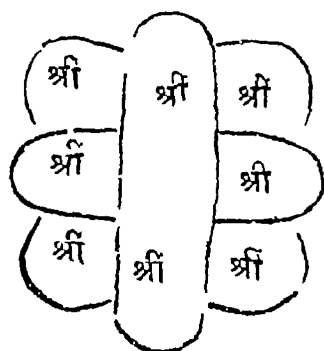
ॐ	क्षं	ॐ
क्षः	ॐ	ह्रां
	देव	दत्त

गोरोचनसे भोजपत्रमे लिख भुजा और कठमे धारण करे, सग्राममें जय होती है

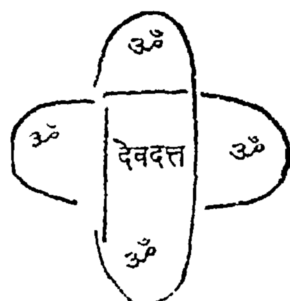


गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर मधुमध्यमें स्थापन करे, जय होती है,

गोरोचनसे भोजपत्र लिख भुजामें धारण करे, सर्वत्र जय होती है



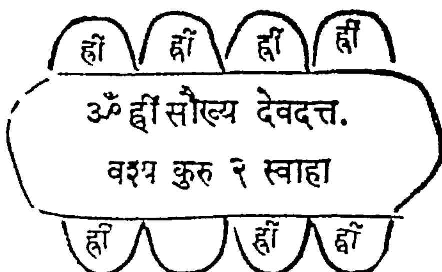
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर धारण करे अथवा राजकुलमें देना चाहिये, व्यवहारमें जय होती है



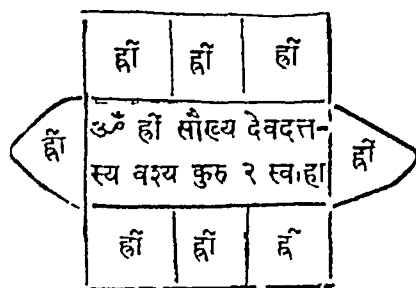
गोरोचनसे और कुमकुमसे राजाका नाम लिख भुजामें धारण करे, जय होती है

अथ सौभाग्यकरणम्

पुष्योद्धृतं सितार्कस्य मूलं वामेतरे भुजे ।
बद्ध्वा सौभाग्यमाप्नोति स्वामिनो दुर्भगापि सा॥२०॥
रक्त चित्रकमूलन्तु सोमग्रस्ते समुद्धृतम् ।
क्षौद्रैः पिष्ट्वा वटीः कुर्यात्तिलकैस्सुभगाङ्गना ॥२१॥

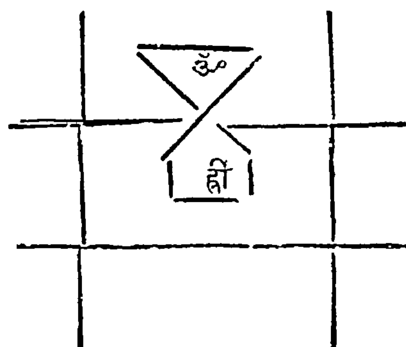


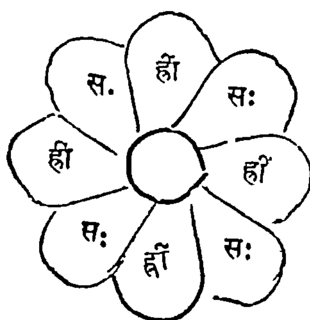
श्वेत आककी जड पुष्य नक्षत्रमें उखाडकर दहिनी भुजामें बान्धनेसे दुर्भगा स्त्रीभी स्वामीसे सौभाग्यको प्राप्त होती है.



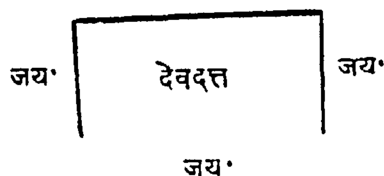
चन्द्रग्रहणमें रक्तचीतेकी जड उखाडकर शहदसे पीसकर तिलकलगानेसे सौभाग्य होता है ॥ इन यंत्रोको गोरोचनसे भोज पत्रपर (जिसका) नाम लिखकर कोखमें धारणकरे तो दुर्भगा सुभगा होती है ॥ २० ॥ २१ ॥

सोभाग्यमत्राणि





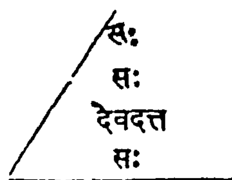
कुकुम गोरोचनसे भूर्जपत्रमें जिसको लिखकरदे निश्चय उसका सौभाग्य होता है.



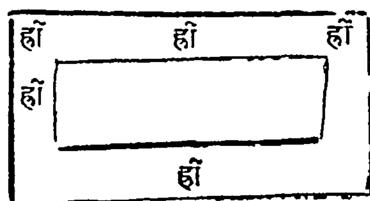
कुंकुम, रक्त और गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजा तथा कंठमें धारण करे तो सौभाग्य होताहै.



लाखके रससे जिसका नाम लिख मधुमध्यमें डाले, सौभाग्य होता है.

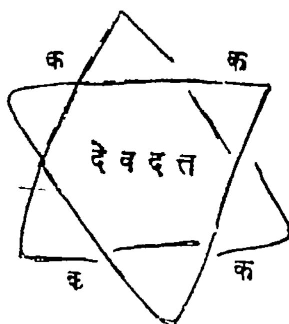


गोरोचनसे जिसका नाम लिख शहतमें स्थापन करे सौभाग्य होता है.



कुंकुम गोरोचन और लाखसे जिसका नाम लिख वाजीकर शरीरमे धारण करे सौभाग्य होता है.

गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख मधुमें स्थापन करे, सौभाग्य होता है.



कुंकुम गोरोचन जिसका नाम लिख मधुमें स्थापन करे तो सौभाग्य होता है.

अथेश्वारादीनां क्रोधोपशमनम्

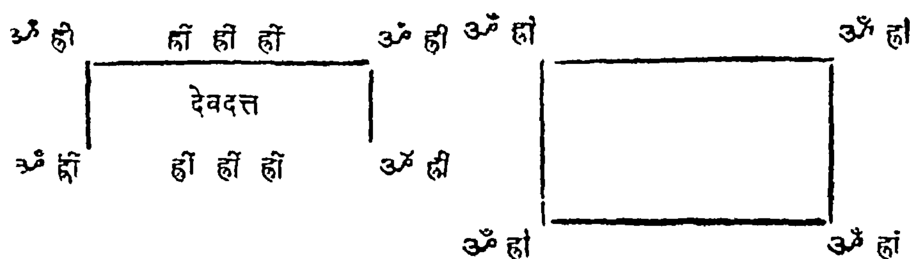
"ॐशान्ते प्रशान्ते सर्वक्रुद्धोपशमनि स्वाहा"

अनेन मन्त्रेण त्रिसप्तधा जप्तेन मुखमार्जनात्

क्रोधोपशमनं भवति । प्रसादपरो भवति ।। २२ ।।

"ॐशान्ते प्रशान्ते सर्वक्रुद्धोपशमनि स्वाहा।" इस मंत्रको २१ वारजप कर मुखधोवे तो क्रोधी शान्त होताहै औरप्रसादकरनेवालाहोताहै।२२।

क्रोधोपशमनयन्त्रे



ताल पत्रमें कंटकसे लिख कर्दस्थमे स्थापन करे तो क्रोधी पुरुष प्रसन्न होता है.

गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख दूधमे स्थापन करे तो क्रोधित हुआ प्रसन्न होता है.

अथ गजनिवारणम्

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे चूर्णयेत्तां छुछुन्दरीम् ।

तल्लेपेन गजो याति दूरेण खलु सम्मुखम् ।। २३ ।।

शुभ नक्षत्रमें ग्रहणकर छुछुंदरको भली प्रकार चूर्ण करे, इसके लेप करनेसे देखते ही हाथी भागजाता है ।। २३ ।।

बिल्वपुष्पस्य चूर्णं तु छुछुन्दर्याश्च तत्समम् ।

तल्लिप्ताङ्गं नरं दृष्ट्वा दूरे गच्छति कुञ्जरः ।।२४।।

बेलके फूलका चूर्ण छुछुंदरके साथ शरीरके ऊपर लेप करनेसे हाथी दूरसे भाग जाता है ।। २४ ।।

मूलं मर्कटवल्याश्च बाहौ बद्धं च मूर्द्धनि ।
दुष्टदन्तिहरं दूरं चित्रं संयाति जायते ।। २५ ।।

कौंचकी जडको बाहु और शिरपर बांधनेसे दुष्ट हाथी दूरसे भाग जाता है, चित्रसा हो जाता है ।। २५ ।।

श्वेतापराजितामूलं हस्तस्थं वारयेद्गजम् ।
मूलं त्रिशूल्या वक्त्रस्थं गजवश्यकरं ध्रुवम् ।। २६ ।।

श्वेतविष्णुक्रान्ताकी जड हाथमें रखनेसे हाथी निवारण होता है। त्रिशूली (बेल) की जड मुखमें रखनेसे हाथी वशमें हो जाता है ।२६।।

अथ व्याघ्र निवारणम्।

मुखस्थं बृहतीमूलं हस्तस्थं व्याघ्रभीतिजित् ।।

कटेरीकी जडको हाथमें वा मुखमें रखनेसे व्याघ्रका भय दूर होजाता है ।।

"ह्लीं ह्लीं श्रीं द्रौं द्रौं हि एति" अथवा "क्रीं ह्लीं ओं ह्लीं ह्लीं ।।"इत्यष्टाक्षरमन्त्रेणलोष्टं पठित्वा क्षिपेत्, तदा मुखं न चालयति गन्तुमशक्ताः ।।

"ह्लीं ह्ली श्रीं द्रौं द्रौं हि एति" इस अष्टाक्षर मन्त्रसे मिट्टी (ढेला) को पढकर व्याघ्रके ऊपर फेंके तब न वह मुख चला-सकेगा, न चल सकेगा ।।

मूलं कृष्णचतुर्दश्यां ग्राहयेल्लाङ्गलीभवम् ।
हस्तस्थं व्याघ्रसिंहादिभयहृत्परिकीर्तितम् ।। २७ ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचित्ते कामरत्ने विजयादिव्याघ्रनिवारण नाम तृतीयोपदेश ।। ३ ।।

कृष्ण पक्षकी चौदशको कलिहारीकी जड ग्रहण करे, उसको हाथमें रखनेसेही सिंहव्याघ्रादिका भय दूर होजाता है ।। २७ ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र-
कृतभाषाटीकाया विजयादिव्याघ्रनिवारण नाम तृती-
योपदेश ।। ३ ।।

चतुर्थोपदेशः

अथ शत्रूणां मुखस्तम्भनम्

मेघनादस्य मूलं तु मुखस्थं तारवेष्टितम् ।।
परवादी भवेन्मूकोऽथवा याति दिगन्तरम् ।। १ ।।

नागरमोथाकी जड़को चांदीमें लपेटकर मुखमें रखनेसे वादी मूक होजायगा या दिशाओके अन्तको चला जायगा । १ ।।

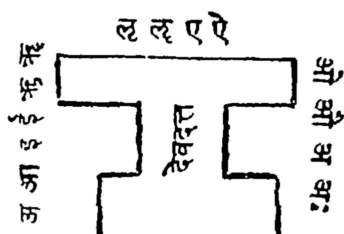
श्वेतगुञ्जोत्थितं मूलं मुखस्थं पुष्टतुण्डजित् ।।
"ॐह्लीरक्षचामुण्डेतुरुतुरुअमुकंमेवशमानयस्वाहा ।"
अयं चामुण्डामन्त्र उक्तयोगयोः सिद्धिकरः ।। २२ ।।

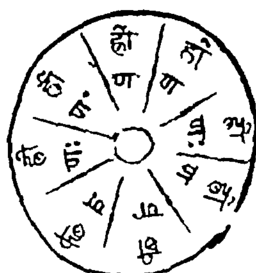
श्वेत चौटलीकी जड मुखमें इस मंत्रसे रखनेसे शत्रुको जीतता है । मन्त्र यह है-"ॐ ह्लीं रक्ष चामुण्डे तुरुतुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा" यह चामुण्डका मंत्र पढनेसे उक्त योगोकी सिद्धि होती है ।। २ ।।

पुष्यार्के मधुवन्दाकं गृहीत्वा प्रक्षिपेद्बुधः ।
सभामध्ये च सर्वेषां मुखस्तम्भः प्रजायते ।। ३ ।।

पुष्यनक्षत्रमें मुलैटीका वन्दा ग्रहणकर सभाके बीचमें फेंक देनेसे सबका मुख स्तम्भित होजाता है ॥ ३ ॥

शत्रुमुखस्तम्भनयन्त्रे

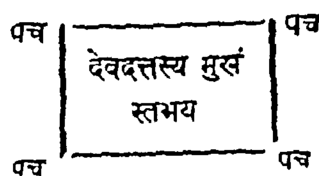




यह यन्त्र गोरोचनसे भूर्जपत्रपर लिख पृथ्वीमें गाडनेसे शत्रु मौन हो वशमें होजाता है.

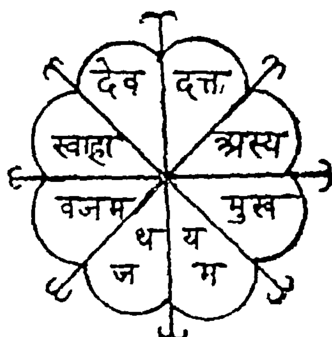
गोरोचनसे भोजपत्रमें साध्यका नाम लिख बाहु वकण्ठमें धारणकरे वह शत्रु मौन हो वशमें होता है.



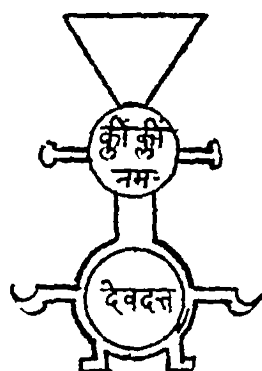


हरिताल हलदीसे साध्यका नाम लिख दो सिकोरोमें स्थापन कर पूजन कर नीचेको मुखकर स्थापन करे तो शत्रुका मुखस्तंभन होता है,

यह लिख ऊषामध्य ईशान कोणमें स्थापन करे तो शत्रुका मुखस्तंभन होता है.



किसी भीतपर जिस शत्रुका नाम लिखे उसका मुख बंध होताहै.



शिलापट्टमें हल्दीसे जिस शत्रुका नाम लिख नीचे मुखकर स्थापन करे उसका मुख बन्धन होता है.

निद्रास्तम्भनम्

मूलं बृहत्या मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत् ।
निद्रास्तम्भनमेतद्धि मूलदेवेन भाषितम् ॥ ४ ॥

कटेरीकी जड और मुलैठी इनको पीसकर नाम लेनेसे निद्रा दूर हो जाती है यह मूलदेवने कहा है ॥ ४ ॥

नौकास्तम्भनम्

भरण्यां क्षीरिकाष्ठस्य कीलं पञ्चाङ्गुलं क्षिपेत् ।
नौकामध्ये तदा नौकास्तम्भनं जायते ध्रुवम् ॥ * ॥

भरणी नक्षत्रमें क्षीरी काष्ठकी पांच अंगुलकी कील नौकामें डालनेसे नौकाकी गति स्तंभित होती है ॥ * ॥

अथ शस्त्रस्तम्भनम्

अङ्कुली च जटा पाठा विष्णुकान्ता च पाटली ।
श्वेतापराजिता पुंसा स (ह) देवी काकजङ्घिका ॥ ५ ॥

पुष्यर्क्षेण समुद्धृत्य वक्त्रे शिरसि संस्थिता ।
एकैकं वारयत्येव शस्त्रसङ्घट्टने नृणाम् ।। ६ ।।

अंकुली वा अंकुशी, रुद्रजटा, पाठा, विष्णुक्रान्ता, पाटल, श्वेत जयन्ती, सहदेई, काकजंघा इनको पुष्यनक्षत्रमें उखाडकर मुखमें तथा शिरमें रखनेसे युद्धमें एक एक मनुष्यको निवारण कर सकता है ।। ५ ।। ६ ।।

बद्ध्वा तु व्याघ्रभूपालचौरशत्रुभयं जयेत् ।
जातीमूलं मुखे क्षिप्तं शत्रुस्तम्भनमुत्तमम् ।। ७ ।।

चमेलीकी जडको बांधनेसे व्याघ्र राजा चोर और शत्रुका भय दूर होकर जय होती है । (कही "वह्न्यम्बु" पाठ है–जल अग्निकाभी भय दूर करती है) चमेलीकी जडको मुखमें रखनेसे शत्रुका स्तंभन होता है ।। ७ ।।

सूर्यस्य ग्रहणे चेन्दोर्मुलं चोत्तरगो हरेत् ।
पुङ्खाया पाटलाया वा मुखस्थं काण्डशस्त्रहृत् ।। ८ ।।

सूर्यके ग्रहणमें अथवा चन्द्रके ग्रहणमें उत्तरकी ओर जाकर शुद्धतासे शरफोका अथवा लाल लोधकी जडको ग्रहण करे, उसको मुखमें रखनेसे सम्पूर्ण शस्त्रसमूहको स्तंभन करसक्ता है ।। ८ ।।

कपित्थस्य च वन्दाकं कृत्तिकायां समुद्धरेत् ।
वक्त्रसंस्थं तदेव स्यात्खड्गस्तम्भकरं परम् ।। ९ ।।

कृत्तिका नक्षत्रमें कैथके वंदाको ग्रहण करके मुखमें रखनेसे खड्गका स्तंभन होता है ।। ९ ।।

करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वास्त्रस्तम्भनं भवेत् ।
केतकीमस्तकं नेत्रे तालमूलं मुखे स्थितम् ।।
खर्ज्जूरं च रणे हस्ते खड्गस्तम्भः प्रजायते ।। १० ।।

हाथमें सुदर्शनाकी जड बाधनेसे शस्त्रोका स्तभन हो जाता है। केतकी मस्तक नेत्रमे, तालमूल मुखमें, खर्जुरको हाथमें रखनेसे रणमें खड्ग स्तभित हो जाता है ॥ १० ॥

एतानि त्रीणि मूलानि चूर्णितानि घृतैः पिबेत् ।
त्र्यहं रात्रौ ततस्सर्वैर्यावज्जीवं न बाध्यते ॥ ११ ॥

ऊपर कहे हुए इन तीनोका मूल चूर्ण कर घीके साथ तीन दिन रात्रिमें पिये तो जीवन पर्यन्त सब इन शस्त्रोसे बाधित नही होता है ॥ ११ ॥

सर्वेषामुक्तयोगानां कुम्भकर्णः प्रसीदति ।
आयान्तं सैन्यकं शस्त्रसमूहं विनिवारयेत् ॥
"ॐअहो ? कुम्भकर्ण महाराक्षस कैकसीगर्भ-
संभूत परसैन्यं स्तम्भय महाभगवान् रुद्रः प्राज्ञा-
पयति स्वाहा ।" सर्वयोगानामष्टोत्तरशतं जपे-
त्सिद्धिः ॥ १२ ॥

इन उक्त योगोसे कुम्भकर्ण प्रसन्न हो जाय तो आती हुई शस्त्र सेनाको निवारण करसकता है। मंत्र यह है—"ॐ अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस कैकसी (नि॰ ाषा) गर्भसंभूत परसैन्य स्तम्भय महाभगवान्रुद्र॰ प्राज्ञापयति स्वाहा" सब योगोमें यह मंत्र एकसौ आठ बार जपनेसे सिद्धि होती है ॥ १२ ॥

वक्री चक्री तथा वज्री त्रिशूली मुशली तथा ।
देहस्था समरे पुंसां सर्वायुधनिवारिणी ॥ १३ ॥

वक्री, चक्री, वज्री, त्रिशूली, मुशली ये नाम देहमें स्थित हो तो समरमें पुरुषके सम्पूर्णायुध निवारण करनेवाले है ॥ १३ ॥

गृहीतं शुभनक्षत्रे ह्यपामार्गस्य मूलकम् ।
लेपमात्रेण वीराणां सर्वशस्त्रनिवारणम् ।। १४ ।।

चिरचिटेकी जड अच्छे नक्षत्रमें ग्रहण करनेसे इसके लेपमात्रसे वीरोके सब शस्त्र निवारण होते है ।। १४ ।।

खर्जुरी मुखमध्यस्था कटयां बद्ध्वा च केतकीम् ।
भुजदण्ड स्थितश्चार्कस्सर्वशस्त्रनिवारणः ।। १५ ।।

खर्जुरी मुखमें स्थित करनेसे, कमरके मध्यमें केतकी, भुजदण्डमें स्थित आक यह सब शस्त्रोका निवारण करनेवाला है ।। १५ ।।

पुष्यर्क्षे श्वेतगुञ्जा या मूलमुद्धृत्य धारयेत् ।
हस्ते काण्डं भयं नास्ति संग्रामे च कदाचन ।। १६ ।।

पुष्य नक्षत्रमें श्वेत चौटलीकी जड को हाथमें धारण करे तो कदाचित् शस्त्रका भय न हो ।। १६ ।।

त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा रसं वज्राभ्रसंयुतम् ।
वक्रस्थञ्चकरस्थञ्च सर्वायुधनिवारणम् ।। १७ ।।

सोना चादी ताबेके सहित रस वज्राभ्र (पारा अभ्रक) वेष्टित करके मुखमें स्थित वा हाथमें स्थित हो तो संपूर्ण आयुधोको निवारण करनेवाला है ।। १७ ।।

ब्रह्मदण्डी च कौमारी ईश्वरी वैष्णवी तथा ।
वाराही वज्रिणी चान्द्री महालक्ष्मीस्तथैव च ।। १८ ।।
एताश्चौषधयो दिव्या स्तथैता मातरः स्मृताः ।
स्मृत्वा चैव करे बद्ध्वा सर्वशस्त्र निवारणी ।। १९ ।।

ब्रह्मदण्डी, कौमारी, ईश्वरी, वैष्णवी, वाराही, वज्रिणी, चान्द्री, महालक्ष्मी यह दिव्य औषधी माताओको स्मरण कर हाथमें बाधनेसे

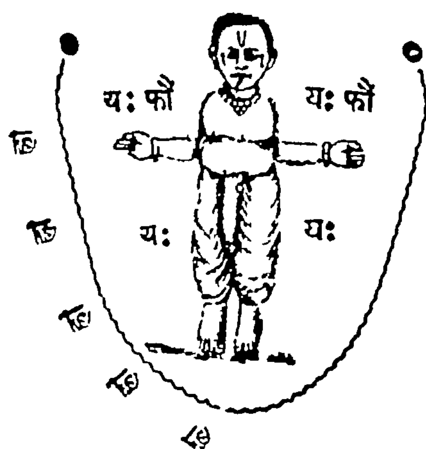
सब शस्त्रोको निवारण करनेवाली है ॥ १८ ॥ १९ ॥ इति शस्त्र-स्तम्भनम् ॥

अथाग्निस्तम्भनम्

"ॐशङ्कर हरहर अग्नि स्तंभय स्तंभय"
अनेनाग्नौ फूत्कारं दत्त्वा अग्नि स्तंभयति ॥

"ओ शकर हरहर अग्नि स्तम्भय २" इस मंत्रसे फूंक मारनेसे अग्नि थम जाती है ॥

जप्त्वा जटी नरो देवी तारां महिषमर्दिनीम् ।
खदिराङ्गारमध्ये तु प्रविष्टोऽसौ न दह्यते ॥ २० ॥



जटी, तारा, महिषमर्द्दिनी मंत्रसे १०००० जप करके फिर खेरके अंगारोंमें घुस जानेसे भी मनुष्य नही जलता है ॥ २० ॥ इस यंत्रको भोजपत्रपर पीत-द्रव्यसे लिख पीत सूत्र तथा मोमसे लपेटे जलसे पूर्ण घटमें स्थापन करे तो अग्निस्तंभन करे (अग्निस्तंभनं पूर्णपात्रपतितम्) ॥

"ॐ मत्कटि तच्छयघनेशेकटीयमनीयश्रीअलि-प्यप्रायम्बुदीये वशनरकीर्य्यमन्त्री क्रींफट् ॥"
"ॐ क्रींमहिषवाहिनी जम्भजम्भय मोहय२ भेदय २अग्निस्तंभय २ ठः ठः" एतन्मन्त्रद्वयं पूर्वमेवायुतं जपेत्तेन सिद्धिः॥अथवा—मत्तकटीटछयघने सेक-

टीयमूलीयसी आलिप्याग्नायमुदीयतेशनकवीज्जे मन्दीह्लींफट् । ॐ ह्लीं महिषवाहिनीस्तंभयमोहयभेदय अग्निस्तंभय ठः ठः इतिः पाठः ।।

"ॐ मत्कटि तच्छय घनेशे कटीय मनीय श्री अलिप्य प्रायम्बुदीये वशनरकीयं मंत्री क्षींफट् ।। ॐ क्षीं महिषावाहिनी जम्भय २ भेदय २ मोहय २ अग्नि स्तम्भय २ ठः ठः" इन दोनों मन्त्रोंके प्रथम १०००० जप करनेसे सिद्धि हो जाती है ।।

कुमारीशूरणं पिष्ट्वा लिप्तहस्तो नरो भवेत् ।
दीप्ताङ्गारैस्ततो लोहर्मन्त्रयुक्तेर्न दह्यते ।।२१ ।।

जो मनुष्य घीकुवार और जमीकंदको हाथमें लपेट ले तो वह दीप्त अंगार और जलते हुए लोहेको हाथमें उठासकता है ।। कही "कुमारीरसक" पाठ है अर्थ यह कि–घीकुआर ।। २१ ।।

करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वाग्निस्तंभनं भवेत् ।।
अत्रमंत्रलेखनं पूर्ववत् ।।

पूर्व लिखा मंत्रभी पढ हाथमें सुदर्शनाकी जड बांधनेसे अग्नि स्तंभित होती है ।। इति अग्निस्तंभनम् ।।

अथ जलस्तम्भनम्

पद्मकं नाम यद्द्रव्यं सूक्ष्मचूर्णन्तु कारयेत् ।
वापीकूपतडागेषु निःक्षिपेद्बन्धयेज्जलम् ।। २२ ।।

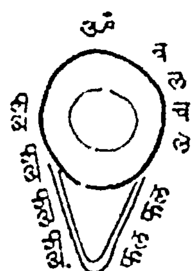
जो पद्मक (पदमाख) नाम द्रव्य है उसको चूर्ण करले उसको बावडी कूप तडागमें डालनेसे जल थाम जाता है ।। २२ ।।

"ॐनमोभगवते रुद्राय जलं स्तंभयस्तंभय ठःठःठः ।"
क्षणार्द्धेन घटं भिद्याज्जलं तत्रैव तिष्ठति ।। २३ ।।

"ओ नमो भगवते रुद्राय जलं स्तंभय २ ठ ठः ठ." यह मंत्र पढकर क्षणार्धमें घट भेदित होनेसेभी जल उसमें स्थित रहता है ॥ २३ ॥

देवदालीयमूलं तु मण्डूकरसयोजितम् ।
लेपयेद्धस्तपादौ तु जलस्तम्भनमुत्तमम् ॥ २४ ॥

घवरबेलकी जड (मेंडकके) मेढासिगीके रसमें युक्त कर हाथ पैरमें लेपकरनेसे जलका स्तंभन हो जाता है ॥ २४ ॥



जलस्तम्भनयत्रे

पीतद्रव्यसे कर्पटपर इस यन्त्रको लिख मोमसे लपेट पूजे तो जलस्तभन होता है ।



ह्रां	ह्रां	ह्रा	ह्रा	ह्रा
हां	ह्रा	ह्रा	ह्रां	ह्रां
ह्रा	ह्रां	ह्रां	ह्रां	ह्रां
ह्रा	ह्रां	ह्रा	ह्रां	ह्रां

इसको पीत द्रव्यसे पटपर लिख मोमसे वेष्टितकर जलमें स्थापित करे तो उससे जल स्तंभन होता है.

इसको लिखते समय रविवार केदिनशिरसकी जड लाय जलसे घिसकर माथेपर तिलक करे.

श्लेष्मान्तकस्य पिष्टेन कर्त्तव्यं पादुकाद्वयम् ।
गोधाचर्ममयं बद्धं कृत्वारूढो भवेज्जले ॥ २५ ॥

दोनो खडाऊंपर लसोडेको पीस लपेटकर गोहके चर्मका बन्धन कर जलमें चल सकता है ॥ २५ ॥

श्लेष्मान्तकफलं चूर्ण मर्द्दयित्वा लिपेद्घटम् ।
घनमङ्गुलमात्रं तु शोषयेत्पूरयेज्जलैः ।। २६ ।।

लसोडेके फलको चूर्ण कर घडेपर एक अंगुल मात्र मोटा लेप कर सुखा लेवे, फिर जलसे पूर्ण करे ।। २६ ।।

शिरीषमूलमादाय रविवारे तु पूर्वजम् ।
उदकेन सहाघृष्टं ललाटे तिलके कृते ।। २७ ।।

इतवारके दिन शिरसकी जड लाकर जलके संग पीसकर माथेपर तिलक करनेसे (देखनेसेही जल) स्तंभित होजाता है ।। २७ ।।

अथदिव्यस्तम्भनम्

तप्तदिव्ये तथा सर्वकृतदोषो विमुच्यते ।
उत्तराभिमुखं ग्राह्यं मेघनादस्य मूलकम् ।
भक्षयेद्धारयेद्वस्त्रैर्दिव्यस्तम्भकरं परम् ।। २८ ।।

तप्त दिव्यमें सब दोष छूट जाते है। उत्तरकी ओर मुख कर ढाककी जड ग्रहण करे अर्थात् तत्ती वस्तु गरम नहीं लगती। उसे भक्षण कर वस्त्रद्वारा धारण करे तो दिव्यपदार्थ स्तंभित होजाते हैं। २८ ।।

	ह्रीमः	ह्रींसः	ह्रींसः	
ह्रींसः	ह्रींस	ह्रींसः	ह्रींम	ह्रामः
	ह्रीमः	ह्रांसः	ह्रांमः	

गोरोचनसे कुमकुम और लाखसे भोजपत्रमें इस यंत्रको लिख तत्ती सरैयामें वन्द करे तो दिव्य स्तंभन होजाता है ।।

श्वेतगुञ्जोत्थितं मूलमृक्षे उत्तरभाद्रके ।
उत्तराभिमुखं ग्राह्यं दिव्यस्तंभकरं मुखे ।। २९ ।।

उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड उत्तरकी ओर मुखकर ग्रहण करे और मुखमें धारण करनेसे दिव्यस्तंभन होता है ।। २९ ।।

भृङ्गीमूलं रोचनां च पिष्ट्वा पाणौ प्रलेपयेत् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा तप्तदिव्यजयी भवेत् ।। ३० ।।

भांगरेकी जड गोरोचनके साथ पीस हाथमें लपेट मस्तकमें तिलक करनेसे तप्त दिव्यपदार्थका जीतनेवाला होता है ।। ३० ।।



इस यंत्रको गोरोचन कुकुमसे टेसूके फूलके रसिके सहित भोजपत्रपर लिख दूधके घडेमें रक्खे तो सब दिव्यस्तंभ होते हैं.

मरीचं मागधी चैला चर्विता गिलिता सती ।
रवितण्डुलजैर्दिव्यैः कृतदोषो विमुच्यते ।। ३१ ।।

कालीमिर्च, पीपल, इलायची, आक और तन्दुल यह चाबने या निगलनेसे सब प्रकारके दिव्य दोषोसे छुटजाता है ।। ३१ ।।

आज्यं शर्करया पीत्वा चर्वित्वा नागरं वचाम् ।
तप्तलोहं लिहेत्पश्चात्कृतदोषो विमुच्यते ।। ३२ ।।

घी और बूरा मिलाकर पीनेसे और सोठ वच मिलाकर मुखमें रखनेसे तत्ते लोहेको चाटनेसेभी उसका दोष नहीं लगता ।। ३२ ।।

मण्डूकरससंपिष्टैर्लज्जामूलैर्वनक्तकैः ।
लिप्तपाणिर्नरः सत्ये तप्तदिव्ये विशुद्धयति ।। ३३ ।।

सोनापाठाके रसमें लज्जावन्तीकी जड पीस उसे हाथमें लगाने से मनुष्य दिव्यपदार्थके तापसे शुद्ध होता है अर्थात् शरीर जलता नहीं ।। ३३ ।।

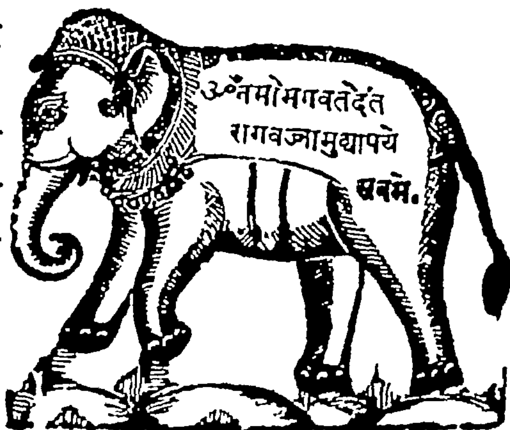
लोहदिव्यस्तम्भनमत्र

"ॐअग्नीदहंतीकोधरैमैधरोजातीनाभावाछुछि
निददोदिव्यपतितस्तंभे ईश्वरो महेशः ॥" एतेन
स्तम्भनम् । श्रीमहादेवकी आज्ञा । अमुं मन्त्र-
मयुतं जपेद्दिव्यसिद्धिर्भवति ॥
"ॐलोहा प्रज्वल कोईलाके भानुहौचण्डके-
दारकापडी लोहापडौतुषार ॥"

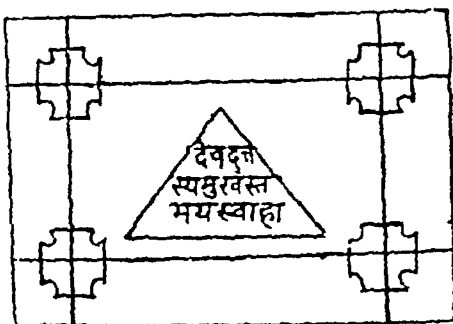
मंत्र—ॐ अग्नीदहतीकोधरैमैधरोजातीनाभावाछुछिनिददो दिव्यपति तरतंभे ईश्वरोमहेशः । एतेन स्तम्भनम् । श्रीमहादेवकी आज्ञा । इस मन्त्रको १०००० जपनेसे सिद्धि होती है ॥ "ॐ लोहा प्रज्वले कोइलाकेभानुहौ चण्डकेदारकापडीलोहापडौतुषार" ॥ यह लोहदिव्यके स्तम्भनका मंत्र है ॥

अथ गजगोमहिष्यादिस्तम्भनम्

उष्ट्रास्यस्थि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ।
गोवाजिमेषीमहिषीः स्तंभयेत्करिणीमपि ॥ ३४ ॥



ऊंटकी हड्डी चारो ओर भतलमें गाडनेसे गौ, भैंस, भेड, घोडा हाथीतकका स्तंभन होता है. इस हाथी यंत्रको तालपाटमें लिख हाथीका दांत उखाड मट्टीका हाथी बनावे, इससे हाथी आदि सब स्तंभित होते है ॥ ३४ ॥



इस यत्रको हलदीसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर दुमके नीचे स्थापित करे वह स्तभित होता है.

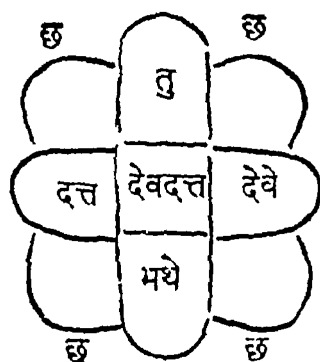
इतिगजगोमहिष्यादिस्तम्भनम्

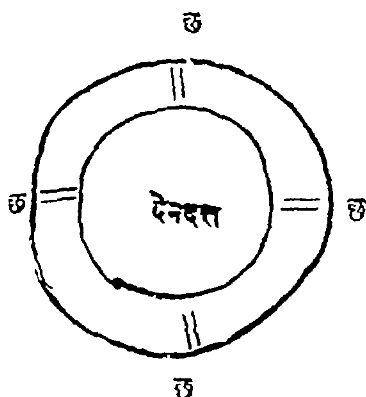
अथ मनुष्यस्तभनम्

"काली कराली अमुकं स्तंभय स्वाहा ॥"
अनेन मंत्रेण साध्यनाम हृदि धृत्वा स्पृष्ट्वा वा
दर्शनाज्जपतः स्तंभितो भवति क्षिप्रम् ॥ ३५ ॥

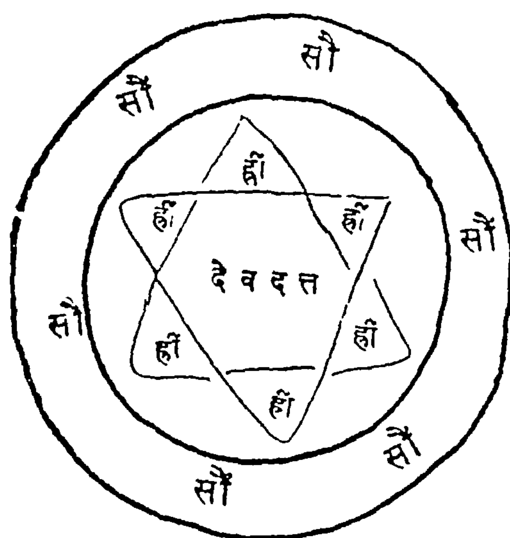
"काली कराली अमुकं स्तंभय स्वाहा" इस मत्रसे साध्यका नाम हृदयमें धारण कर उसको छूकर वा देखकर जपे तो स्तभन होता है ॥ ३५ ॥

मनुष्यस्तभनयत्राणि





इन यंत्रोको गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका, नाम लिख शिकोरेमें स्थापन करे उसका स्तंभन होता है



इसको गोरोच [illegible] का नाम लिखे और कपावे वह स्तंभित होता है "कालीकंकाली अमुकंस्तंभयस्वाहा" इस मंत्रसे साध्यकानाम हृदयमें रखकर छूकर वा दर्शन कर जपे शीघ्रस्तंभित होता है.

इति मनुष्यस्तम्भनम्

अथ मनःस्तम्भनम्

चर्मकारस्य कुण्डानि रजकस्य तथैव च ।
कुण्डान्मलं समुद्धृत्य चाण्डाल्या ऋतुवाससम् ॥
बन्धयेत्पोटलीं प्राज्ञो यस्याग्रे तां विनिःक्षिपेत् ।
तस्योत्थाने भवेत्स्तम्भः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ३६ ॥

चमार और धोबीकी नांदका मैल लेकर चाण्डालीका ऋतुका वस्त्र लेकर इसकी पोटली बांधकर आगे फेंकदे वह उठनेमें स्तंभित होजायगा । सिद्धयोग है ॥ ३६ ॥

आसनस्तम्भनम्

श्वेतगुञ्जाफलं वाप्यं नृकपालेऽपि मृत्सह ।
निशि कृष्ण चतुर्दश्यां त्रिदिने तत्र जागरेत् ॥ ३७ ॥
नित्यं सिञ्चेज्जलेनैव मन्त्र पूजां च कारयेत् ।
तस्याः शाखा लता ग्राह्या शुभऋक्षे स्वमन्त्रतः ॥ ३८ ॥
क्षिपेद्यस्यासने तां तं स्तम्भयेत्तत्क्षणाद्ध्रुवम् ॥ ३९ ॥

"ॐरुद्रेभ्यो नमः । ॐ वज्ररूपाय वज्रकिरणाय शिवे रक्षभवे समामृतं कुरु २ स्वाहा ।।" अयं पूजामंत्रः ।।

श्वेत चौंटलीको मनुष्यकी खोपडीमें मट्टी डालकर बोवे, कृष्णपक्षकी चौदसको यह कार्य कर तीन राततक जागे और तीन दिन बराबर उस पर जल छिडके ।। मन्त्रपूर्वक पूजा करे और शुभ नक्षत्रमें उसकी शाखाको ग्रहण करे जिसके आसनपर फेंके वह उसी समय स्तंभित होजाता है । पूजामंत्र–"ॐ रुद्रेभ्यो नमः।ॐवज्ररूपाय वज्रकिरणाय शिवे रक्ष भवे समामृतं कुरु २ स्वाहा" ।। इति आसनस्तंभन इति मनुष्यस्तम्भनम् । ।। ३७–३९ ।।

सर्वभूतबुद्धिस्तम्भनम्

भृङ्गराजो ह्यपामार्गसिद्धार्थं सहदेविकाम् ।
तुल्यं तुल्यं वचाश्वेताद्रव्यमेषां समाहरेत् ।। ४० ।।
लोहपात्रे विनिक्षिप्य द्विदिनान्तं समुद्धरेत् ।
तिलकैः सर्वभूतानां बुद्धिस्तम्भकरो भवेत् ।। ४१ ।।

भांगरा, चिरचिटा, सरसो, सरदेई इनकी बारबर, बच, श्वेतकटेरी सब लोहपात्रमें डालकर इनका रस निकाले, इसके तिलक करनेसे सब भूतोकी बुद्धि स्तंभित होजाती है ।। ४० ।। ४१ ।।

शत्रुबुद्धिस्तभनम्

"ॐ नमो भगवते विश्वामित्राय नमः । सर्वमुखीभ्यां विश्वामित्राय विश्वामित्र आज्ञापयति शक्त्या आगच्छ२ स्वाहा ।।" उक्तयोगस्यायं मन्त्रः । "अङ्गुलीलात्रिधा आशय आगल स्वाहा ।" अनेन मन्त्रेण नदीं प्रविश्य अष्टोत्तरशताञ्जलींस्तर्पयेत् । शत्रूणां बुद्धिस्तम्भो भवति ।। कर्पुरेण चिताङ्गारे

नाम लिखित्वा तदुपरि मृत्तिकां दद्यात् तत्र शत्रोर्मुखबन्धो भवति ।। इति शत्रुबुद्धिस्तम्भनम् ।।

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते विश्वामित्राय नम· सर्वमुखीभ्या विश्वामित्राय विश्वामित्र आज्ञापयति शक्त्या आगच्छ स्वहा ।।" यह उपरोक्त योगका मंत्र है ।।"अंगुलीलात्रिधा आशय आगल स्वाहा" इस मन्त्रसे नदीमें प्रवेश कर १०८ अंजलिसे तर्पण करे तो शत्रुओकी बुद्धि स्तंभित होजाती है।। कपूरसे चिताके अंगारेपर शत्रुका नाम लिखकर उसके ऊपर मिट्टी डालनेसे शत्रुका मुख बध होजाता है । इति शत्रुबुद्धिस्तम्भनम् ।।

अथ चौरगतिस्तम्भनम्

"ॐ नमो * ब्रह्मद्वेषिणी शिवे रक्षरक्ष ठः ठः ।" अनेन मन्त्रेण सप्तपाषाणखण्डानि श्मशानाद् गृहीत्वा त्रीणि कटयां बद्ध्वा पराणि मुष्टिभ्यां धारयेच्चौराणां गतिस्तम्भो भवति । इति ।।

"ॐ नमो ब्रह्मद्वेषिणी शिवे रक्षरक्ष ठः ठः" इस मन्त्रसे सात कंकर श्मशानस्थाने लेकर कमरमें बांधे, शेष मुट्ठीमें धारण करे तो चोरोंकी गति स्तंभित होती है ।। (कहीं पाशोका धारण करना कहा है) इति चोरणां गतिस्तंभनम् ।।

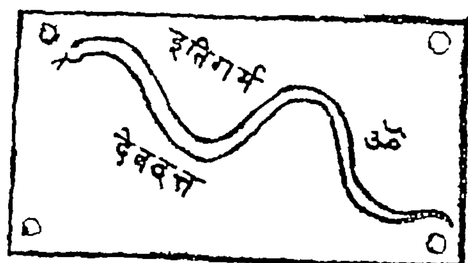
अथ गर्भस्तम्भनम्

गृह्य कृष्ण चतुर्दश्यां धत्तूरस्य तु मूलकम् ।
कटचां बद्ध्वा रमेत्कान्तां न गर्भ धारयेत्क्वचित् ।।
मुक्तेन लभते गर्भं पुरा नागार्ज्जुनोदितम् ।
तन्मूलचूर्ण योनिस्थं न गर्भ सम्भवेत्क्वचित् ।। ४२ ।।

* ब्रह्मवशिनी इत्यादि पाठ ।

कृष्णपक्षकी चौदसके दिन धतूरेकीजड ग्रहणकर कमरमें बांधकर स्त्री पतिसे रमण करे तो कभी गर्भकी स्थिति नहीं होती है, इसके खोलनेसे गर्भकी स्थिति होती है ऐसा पहले नागार्जुनने कहा है। अथवा धूतूरेकी जडका चूर्णकर योनिमें धारण करनेसे कभी गर्भकी स्थिति नहीं होती है ॥ ४२ ॥

सिद्धार्थमूलं शिरसि बद्ध्वा कान्तं रमेत्तु या।
नगर्भं धारयेत्सा स्त्री मुक्तेन लभते पुनः ॥ ४३ ॥
अनेन गर्भो न भवति ॥ इति गर्भस्तम्भनम् ॥



सरसोकी जड शिरपर बांधकर जो अपने कान्तसे रमण करती है वह स्त्री कभी गर्भधारण नही करती, उसके खोल रखनेसे फिर गर्भकी स्थिति होती है ॥ ४३ ॥ इस मत्रंको आनमिकाके रक्तसे या मार्जार (बिलाव) का मल अनामिकासे ग्रहण कर रक्तसे देवदत्तके स्थानपर गर्भवतीके नामके साथ भोजपत्रपर लिख भूमिमें गाडे तो गर्भस्तंभन होगा ॥ इति गर्भस्तम्भनम् ।

अथ शुक्रस्तम्भनम्

इन्द्रवारुणिकामूलं पुष्ये नग्नः समुद्धरेत् ।
कटुत्रयैर्गवां क्षीरैः सम्मिज्य गोलकीकृत्तम् ।
छायाशुष्कं स्थितं चास्ये वीर्यस्तम्भकरं नृणाम् ॥ ४४ ॥

नग्न होकर पुष्यनक्षत्रमें इन्द्रायणकी जड उखाडकर उसे सोठ, मिरच, पीपलके साथ पीस गौके दूधमें गोली बांधे और उसको छायामें सुखाले एक गोली मुखमें रखनेसे वीर्यस्तंभन होता है॥४४॥

नीलीमूलं श्मशानस्थं कटयां बद्ध्वा तु वीर्यधृक् ॥४५॥

श्मशानमें उत्पन्न हुई नीलकी जड कमरमें बांधकर रमें तो वीर्य स्तंभित होता है ॥ ४५ ॥

कृष्णोन्मत्तवचामूलं मधुपिष्टं प्रलेपयेत् ।
लिङ्गे तदा रमेत्कान्तां स्वभावाद्द्विगुणं नरः ॥ ४६ ॥

काले धूतरे और वचकी जड शहतमें पीसकर मदनध्वजपर लेपकर स्त्रीके साथ रमण करनेसे दुगुना पराक्रम दिखाता है ॥ ४६ ॥

भृङ्गीविषं पारदं च प्रत्येकं तु द्विगुञ्जकम् ।
वराटाक्षं क्षिपेद्विन्दुः स्थिरः स्याच्छिरसा धृतम् ।

अभ्रक, विष, पारा यह वस्तु शोधी हुई ले और प्रमाणमें दो दो चोटली भरले इनके प्रयोगसे शुक्रस्तंभन होता है ॥ ४७ ॥

रक्तापामार्गमूलं तु सोमवारे निमन्त्रयेत् ।
भौमे प्रातःसमुद्धृत्य कटयां बद्ध्वा तु वीर्यधृक् ॥४८॥

लाल अपामार्ग (चिरचिटे) की जडको सोमवारके दिन निमंत्रण देकर मंगलके दिन प्रात.काल उखाडकर लावे, उसके कमरमें बांधनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ४८ ॥

दुन्दुभीनामकं सर्पं कृष्णवर्णं समाहरेत् ।
तस्यास्थि धारयेत्कटयां नरो वीर्य्यं न मुञ्चति ।
विमुञ्चति विमुक्तेन सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ४९ ॥

काले वर्णके दुन्दुभी नाम सर्पको लावे, उसकी हड्डी कमरमें धारण करनेसे मनुष्यका वीर्य स्तभित होता है और उसको खोल रखनेसे वीर्य मुक्त होता है ॥ ४९ ॥

नखास्थीनि समादाय मार्जारस्य सितस्य च ।
कृकलासस्य पुच्छाग्रमुद्रिकाप्रेततन्तुभिः ॥ ५० ॥

वेण्टचा कनिष्ठिका धार्या नरो वीर्यं न मुञ्चति ॥ ५१ ॥

श्वेत मार्जारके नख और अस्थि लेकर कृकलास (गिरगट) की पूंछके अग्रभागकी बनी अँगूठीको मृतकस्थानके सूतसे लपेटकर कनउँगलीमें धारण करके मनुष्य वीर्यको नहीं त्याग करसकता है ॥ ५० ॥ ५१॥

पुष्योद्धृतं श्वेतपिकाक्षबीजं कटीतटे लोहितसूत्र-
बद्धम् । बीजच्युतिं धारयति प्रसङ्गे ख्यातः
सदायं किल योगराजः ॥ ५२ ॥

पुष्य नक्षत्रमें उखाडा हुवा श्वेतपिकाक्षका बीज लाल सूतमें कमरमें बांधनेसे बीजकीस्खलितता नहीं होती । यह योगराज कथन किया है ॥ ५२ ॥

श्वेतान्यपुष्टाख्यतरोः फलानि क्षीरेण पिष्ट्वा वटपा-
दपस्य । करञ्जबीजोदरमध्यगानि स्तम्भन्ति
वीर्यं वदने धृतानि ॥ आदित्यवारोद्धृतसप्तपर्ण-
वृक्षस्य बीजं विनिधाय वक्त्रे । जयेदकाण्डं सुर-
तावतारे पुमान् पुरन्ध्रीः स्मरतीव्रवेगाः ॥ ५३ ॥

श्वेतकोयल वृक्षके फल लेकर उन्हें वडके दूधके साथ पीसे । उसमें करज बीजका मध्यांश डालकर मुखमें धरनेसे वीर्य स्तम्भित होता है । रविवारके दिन सप्तपर्ण वृक्षके बीज ला करके मुखमें रखनेसे सुरतके समय पुरुष स्त्रीका जय करता है ॥ ५३ ॥

नागकेशरकर्षं तु गोघृते पातयेद्बुधः ।
भुक्त्वा रमेच्च रमणीं तदा बिन्दुःस्थिरो भवेत् ॥ ५४ ॥

नागकेशर एक कर्ष गौके घीमें डाले उसे भोजन कर जो स्त्रीसे रमण करे तो वीर्य स्थिर होता है ॥ ५४ ॥

श्वेतेषुपुङ्खाचरणं गृहीत्वा पुष्यार्कयोगे पुरुषस्य कट्याम् । कुमारिकाकर्तितसूत्रकेण बद्धं जयत्याशु मनोजबीजम् ॥ ५५ ॥

श्वेत शरफोंकेकी जडको पुष्य नक्षत्रयुक्त रविवारमें ग्रहण करके क्वारी कन्याके काते सूतसे पुरुषकी कमरमें बांधनेसे कामको जय करता है ॥ ५५ ॥

बीजमीश्वरलिङ्गस्य सूतं वृश्चिककण्टकम् ।
क्षीपेत्पूगफलं चास्मिंस्त्रिलोहैस्तं च वेष्टयेत् ॥
जिह्वोपरि स्थिते तस्मिन्नरो वीर्यं न मुञ्चति ॥ ५६ ॥

धतूरेके बीज, पारा, मैनफल यह सुपारीके साथ मिलाकर तीन लोहसे उसको वेष्टित करे । इसको जिह्वापर रखनेसे मनुष्य वीर्यको नहीं छोडता है ॥ ५६ ॥

सहदेवीबीजमूलं संमिश्र्यं पद्मकेसरैः ।
मध्वाज्यसहिताल्लेपान्नरो वीर्यं न मुञ्चति ॥ ५७ ॥

सहदेवीके बीज और जड पद्मकेसर इसमें घी और शहद मिलाकर लेप करे तो मनुष्यका वीर्य स्खलित नहीं होता है ॥ ५७ ॥

नीलोत्पलसिताम्भोजकेसरं मधुशर्करम् ॥ ५८ ॥
अमीभिर्नाभिलेपेन चिरं रमति कामुकः ॥ ५९ ॥

नील कमल श्वेत कमलकी केसरमें शहद शर्करा मिलाय इसका नाभिपर लेप करनेसे बहुत देरतक कामी पुरुष रमण कर सकता है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

आदाय कृष्णेतरकाकजङ्घामूलं सिताम्भोरुहकेसरञ्च । क्षौद्रेण पिष्ट्वा परिलिप्य नाभिं स्तम्भं प्रपद्येत् पुरुषस्य बीजम् ॥ ६० ॥

श्वेत काकजंघाकी जड, श्वेत कमलकी केसर यह लेकर शहदके साथ पीस नाभिपर लेप करनेसे पुरुषका वीर्यस्तंभित नहीं होता है ॥६०॥

छाग्येडकादुग्धपिष्टं लज्जामूलं प्रलेपयेत् ।
हृदये पादयोर्वीर्यं द्रवते न कदाचन ॥ ६१ ॥

बकरी और भेडीके दूधमें लज्जावन्तीकी जड पीसकर हृदय और चरणोंमें लेप करनेसे पुरुषका वीर्य पतित नहीं होता है ॥ ६१ ॥

मूलं वा श्वेतपुङ्खायाः सक्षौद्रं नाभिलेपनात् ।
मधुना पद्मवीजस्य तद्वल्लेपेन वीर्यधृक् ॥ ६२ ॥

श्वेत शरफोकेकी जडमे शहद मिलकार नाभिमें लेप करे तो वीर्य स्तंभित होता है । अथवा शहदमें कमलका बीज मिलाकर लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ६२ ॥

इन्द्रवारुणिकामूलमुन्मत्ताजस्य मूत्रतः ।
भावयेत्सप्तवारं तं लिङ्गलेपेन वीर्यधृक् ॥ ६३ ॥

इन्द्रायणकी जडको उन्मत्त बकरेके मूत्रमें सात वार भावना देकर लिंगपर लेप करनेसे वीर्य स्तम्भित होता है ॥ ६३ ॥

उन्मत्ताजस्य मूत्रेण पेषयेद्वानरीशिफाम् ।
लिप्त्वा लिङ्गं नरो वीर्यं चिरकालं न मुञ्चति ॥ ६४ ॥

उन्मत्त बकरेके मूत्रसे जटामासीको पीसकर ध्वजपर लेप करनेसे मनुष्यका वीर्य चिरकालतक स्खलित नहीं होता है ॥ ६४ ॥

कर्पुरं टङ्कणं सूतं तुल्यं मुनिरसं मधु ।
मर्दयित्वा लिपेल्लिङ्गं स्थित्वा यामं तथैव च ॥ ६५ ॥
ततः प्रक्षालयेल्लिङ्गं रमेद्रामां यथोचितम् ।
वीर्यस्तम्भकरं पुंसां सम्यङ्नागार्जुनोदितम् ॥ ६६ ॥

कपूर, सुहागा, पारा यह सब बराबर ले अगस्त्यके रस और शहदमें इनको मिलाकर लिंगपर लेप कर एक पहरतक स्थित रहे, फिर अपने ध्वजको धोकर कान्ताके साथ रमण करे तो पुरुषका वीर्य स्तंभित होता है, यह नागार्जुनने कहा है ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

कौसुम्भतैलेन विलिप्य पादौ यदृच्छया दीव्यति वृद्धवीर्यः । पुनर्नवाचूर्णविलेपनाच्च जहाति बीजं न कदाचिदेतत् ॥ ६७ ॥

कुसुम्भका तेल पैरोमें मलनेसे स्वेच्छासेही वीर्यकी वृद्धि होती है और पुनर्नवाके चूर्णके विलेपन करनेसे कदाचित्भी वीर्य स्खलित नहीं होता है ॥ ६७ ॥

कर्पुरसंपाकमहेशबीजैः * सार्धं तु बीजं पुरुषस्य नाभौ । विलिप्य कान्ताजघने च कान्ते न लभ्यते शुक्रमधः कदापि ॥ ६८ ॥

कपूर, सपाक और पारा यह नरवीर्यके साथ पुरुषकी नाभिमें लेप करनेसे वा स्त्रीकी जघामें लेप करनेसे कभी वीर्य स्खलित नहीं होता है ॥ ६८ ॥

भूलतासिक्थकं चैव कुसुम्भस्य च तैलकम् ।
वीर्यधृक्पादलेपेन तटकाण्डस्य लेपनात् ॥ ६९ ॥

भूलता और मोम और कुसुम्भका तेल पैरमें लेपनेसें वीर्य स्तंभित होता है अथवा चटिकाके अंडेका पैरमें लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ६९ ॥

नवनीतेन युक्ताभ्यां शय्यां पद्भ्यांच न स्पृशेत् ।
श्लेष्मान्तस्य कुरण्टस्य बीजं कारञ्जकस्य च ।

* चार्द्धेन्दुबीजम् इति कुत्रचित् पाठ ।

भेडीक्षीरेण तं पिष्ट्वा कर्षं भुक्त्वा तु वीर्यधृक् ॥ ७० ॥

पैरोमें मक्खन मलकर चरणोंसे सेजको स्पर्श न करे, लहसोडा, कुरंट (पीली कटसरैया) और करंजके बीज भेडीके दूधमें पीसकर एक कर्षमात्र भक्षण करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७० ॥

सुदर्शनाभवं मूलं ताम्बूलैस्सह पेषयेत् ।
भक्षत्याज्यं प्रयत्नेन शुक्रस्तम्भनमुत्तमम् ॥ ७१ ॥

सुदर्शनाकी जड ताम्बूलके साथ पीसकर घृतके साथ यत्नसे सेवन करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७१ ॥

श्वेतार्कतूलकैर्वर्तीदीपः सूकरमेदसा ।
यावज्ज्वलति दीपोऽयं तावद्वीर्यं न मुञ्चति ॥ ७२ ॥

श्वेत आकके तूल (रुई) की बत्ती करके सूकरकी चरबीसे दीपक बालनेसे जबतक दीपक बलता रहेगा तबतक वीर्यपात नहीं होगा ७२॥

मूलं वराहक्रान्ताया अजाक्षीरेण पेषयेत् ।
लिङ्गलेपेन चानेन वीर्यस्तम्भकरं भवेत् ॥ ७३ ॥

वाराहीकन्दकी जड बकरीके दूधसे पीसकर ध्वजपर लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७३ ॥

पुष्योद्धृतं श्वेतहयमारमूलं कटीतटे ।
बद्धं बिन्दुस्थिरकरं मुक्ते तु च्यवते पुनः ॥ ७४ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत हयमार अर्थात् कनेरकी जड ला कमरके बांधनेसे वीर्यपात नहीं होता है ॥ ७४ ॥

वज्रीरसं तूद्ध्वंगेन पात्रेण ग्राहयेद्रवौ ।
संपिष्य वटिकां कृत्वा संशोष्य च विनिक्षिपेत् ॥
आत्ममूत्रेण तल्लिप्य लिङ्गमूलं तु वीर्यधृक् ॥ ७५ ॥

पर्पटीको लेकर उसका रस रविवारके दिन ग्रहण कर इसको भली प्रकार पीस इसकी गोली बनाय सुखाकर रख छोडे, अपने मूत्रसे उसको घिसकर मदन ध्वजके मूलस्थानमें लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७५ ॥

पूतीकरञ्जबीजं च श्वेतबन्धूकमण्डयोः ।
मूलं पिष्ट्वा तु लिङ्गाग्रे लेपयेच्चन्दनैस्सह ॥ ७६ ॥
तथा करतले दद्याद्वामे बिन्दुः स्थिरो भवेत् ॥ ७७ ॥

पूतीकरंजके, वीज, श्वेतबंधूक और मंड, सोनापाठा इनकी जड चन्दनके साथ मदनध्वजपर लेप करनेसे तथा बाँयें हथेलीमें लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

लज्जालुमूलं भटिका पिष्ट्वा ताम्रस्य भाजने ।
कृत्वाञ्जनं च तेनाञ्जयेदर्द्धरात्रं स्थिरो भवेत् ॥ ७८ ॥

लज्जावन्तीकी जड और भटिकाको पीसकर ताम्रपात्रमें घिस अंजन करे तो आधी राततक वीर्य स्थिर होता है ॥ ७८ ॥

कृष्णधूर्त्त महाकालं शनिवारे निमन्त्रयेत् ।
रविवारे समानीय चादत्तारक्णीकृतैः ॥ ७९ ॥
सूत्रैर्गुणत्रयैर्बद्धं करे वामे प्रयत्नतः ।
उपविश्यासने खण्डत्रयैर्यामत्रयं ततः ।
बिन्दुः स्थिरत्वमाप्नोति मुक्ते स्खलति तत्क्षणात् ॥ ८० ॥

काले धतूरे तथा महाकाललताको शनिवारके दिन निमन्त्रण दे और रविवारके दिन लाकर और कन्यासे सूत कतवाकर तिगुने उस सूत्रके तीन खंड कर वाम हाथमें यत्नसे बाधकर आसनपर तीन पहरतक बैठे तो बराबर वीर्य स्थिर होता है, इसके खोलनेसे मुक्त होता है ॥ ८० ॥

हेमह्वालोचनं तुल्यं कृष्णधत्तूरबीजकम् ॥ ८१ ॥

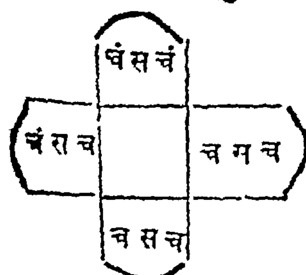
वटक्षीरेण संमर्द्य कुबेराक्षस्य बीजकैः
क्षिप्त्वा तद्धारयेद्वक्रे वीर्यस्तंभकरं भवेत् ॥ ८२ ॥

इति श्रीनित्यनाथ० कामरत्ने शत्रुमुखस्तम्भनादिवर्णन
नामचतुर्थोपदेश. ॥ ४ ॥

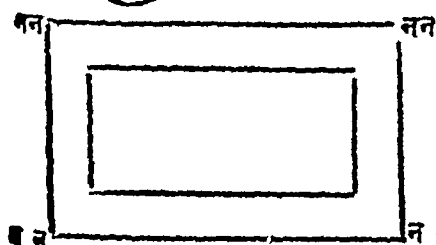
धा देव दत धा
मः
मः
मः
मः

(चोक) नागकेशर वंशलोचन और काले धतूरेके बीज बडके दूधके सहित करञ्जके बीज यह सब एकत्र कर मुखमें धारण करनेसेवीर्य स्तंभित होता है ॥ ८१ ॥ ८२ इसयंत्रको मिष्ट रसपान रससे भूर्जपत्रपर लिख कपोलमध्यमें जबतक रक्खे तबतक निश्चय वीर्य स्तंभन होता है ॥

तीनो लोकोंको भी स्तम्भनेवाले दो यंत्र है।
इनसे सब कुछ स्तम्भन हो जाता है।



इस यंत्रको गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख निर्जन स्थानमें स्थापन करे तो त्रिभुवन स्तम्भन हो जाता है



इस यंत्रको हलदी और हरतालसे भोजपत्रपर लिख निर्जनमें स्थापन करे तो त्रिभुवन स्तंम्भनहो सकता है.

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकाया चतुर्थोपदेश ॥ ४ ॥

पञ्चमोपदेशः

अथ मोहनम्

कन्यावरे युवतिसंगमने नराणामालोकने नरपतेः
क्रयविक्रयादौ । प्रज्ञाविधौ सकलकर्मणि कौतुके
वा धूपः सदैव कृतिभिर्विनियोजनीयः ॥ १ ॥

कन्याके विषयमें ,स्त्रीप्रसंगमें, राजाके देखनेमें प्रज्ञाविधि, सम्पूर्ण कर्म और कौतुक इन्होमें विद्वानोकोधूपका प्रयोग सदा करना चाहिये ॥ १ ॥

धूपविधि

भृङ्गीवचानलदसर्जरसं समानं कृत्वा त्रुटिं मल-
यजे च षडेव नित्यम् । या धूपयेन्निजगृहं वसनं
शरीरं तस्यास्तु दास इव मोहमुपैति लोकः ॥ २ ॥

काकडासींगी, वच, उशीर, राल (त्रुटि), छोटी इलायची ये समान भाग लेकर मलयागिरी चन्दनको मिलाकर जो स्त्री अपने घर-वस्त्र और शरीरमें धूप दे तो लोक मोहको प्राप्त हो उसके दासके समान होजाता है ॥ २ ॥

भृङ्गराजः केशराजो लज्जा च सहदेविका ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ ३ ॥

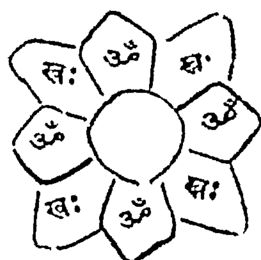
भांगरा, दूसरा भाँगरा, लज्जावन्ती, सहदेई इनका तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकी को मोहित कर सकता है ॥ ३ ॥ कुंकुम गोरोचनसे भूर्जपत्रपर अनामिका रक्तसे इस



यंत्रको लिख, देवदत्तके स्थानमें साध्य नाम सहित स्थापनकरे या भुजामें बाधे तो वह मोहित होजाता है ॥

त्रिदलं कुसुमं यस्य धत्तूरस्य कृताञ्जलिः ।

भृङ्गराजेन साज्येन तिलकं मोहयेन्नरः ॥ ४ ॥

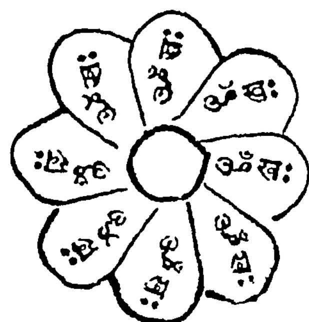


त्रिदल (हसपदी) के तथा धतूरेके फूल लज्जावन्ती और भृङ्गराज इन सबोको घृत मिलाकर तिलक करनेसे मनुष्य त्रिलोकीको मोह सकता है ॥ ४ ॥ इस यंत्रको लाल द्रव्यसे साध्य नामसहित लिख मधुमें स्थापन करे तो दुष्ट भी मोहित होजाता है.

तालकं कुनटीं चैव भृङ्गपक्षं समंसमम् ।
कृष्णोन्मत्तस्य कुसुमं वटिकां कारयेद्बुधः ।
तेनैव तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ ५ ॥

हरताल, मनशिल और भौंरेके पख यह समान भाग लेकर तथा धतूरेके फूल लेकर बनावे, उसीसे तिलक करके मनुष्य त्रिलोकीको मोहित कर सकता है ॥ ५ ॥

आदौ सप्तस्वरा ग्राह्यो अन्ते हुंकारसंयुताः
ॐकारं शिरसि कृत्वा हूं अन्ते फडिति न्यसेत् ॥ ६ ॥
मंत्रः–"ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं हूं फट् ॥"
अनेनैव तु मन्त्रेण कृत्वा ताम्बूलभावनम् ।
मुखे साध्यस्य निःक्षिप्ते मोहमायाति तत्क्षणात् ॥ ७ ॥



प्रथम सात स्वर उच्चारण कर अन्तमें हूंकार मिलावे । ॐ कार प्रथम लगाकर अन्तपदमें फट् लगावे अर्थात् यह मन्त्र है–"ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं हूं फट्" इस मन्त्रसे तांबूलको भावना देकर साध्यके मुखमें खवावे

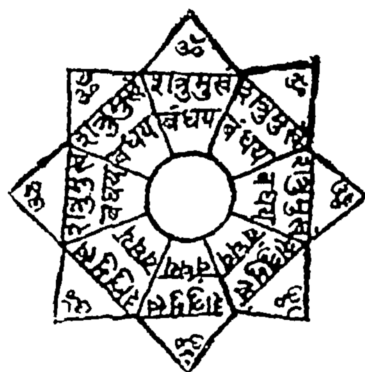
तो मोहको प्राप्त होता है देर नहीं लगती ॥ ६ ॥ ७ ॥ इस यंत्रको गोरोचनसे नामसहित भोजपत्रमें लिख पुष्पादिखंडसे पूजनकर स्थापन करे तो वह अवश्य मोहित होजाता है

"ॐ भीं क्षां भीं मोहय २ ॥ ॐ नमो
भगवतीपादपंकजपरागेभ्यः ॥ " अस्य मंत्रस्य
वारत्रयजपान्मोहमाप्नुवन्ति जनाः ॥ ८ ॥

"ॐ भीं क्षां भीं मोहय २ । ॐ नमोभगवतीपादपंकजपरागेभ्यः ।" इस मन्त्रको तीन वार जपनेसे मनुष्य मोहको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

शुभामूलं तथा बीजं रक्तचन्दनसंभवम् ।
त्रुटिबीजं समं पिष्ट्वा ताम्बूलादौ प्रयोजयेत् ॥ ९ ॥
भोक्तुं देयं स्वहस्तेन मोहमाप्नोति चेश्वरः ॥ १० ॥

प्रियंगुकी जड तथा बीज लालचन्दन इलायचीके बीज इनको समान पीसकर तांबूलमें दे और अपने हाथसे खानेको दे तो ईश्वर भी मोहको प्राप्त होजाता है ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ भोजपत्रमें गोरोचनसे साध्यनाम सहित इस यंत्रको लिखकर भुजामें बांधे तो उसको मोह होता है.



*वृश्चिकोद्भवचूर्णेन धूपो मोहयते नृणाम् ॥ ११ ॥
मैनफलके चूर्णकी धूप मनुष्योको मोहित करदेती है ॥११॥

---

* दुश्चिक्योद्भव ।

गरलं धूर्त्तपञ्चाङ्गं महिषीशोणितं कणा ।
* निशायां कुरुते मोहं धूपो गुग्गुलुसंयुतः ॥ १२ ॥

विष, धूतरेका पञ्चांग, भैसका रुधिर, श्वेत जीरा, गुग्गुलसंयुक्त इनकी धूप देनेसे मनुष्यको मोहित करती है तथा शिलाकोभी मोहित करती है ॥ १२ ॥

हालनी विषधत्तूरशिखिवष्ठाभिरन्वितम् ।
तथा धूपः समं भागं मोहयत्येव निश्चितम् ॥ १३ ॥

कलिहारी ,विष, धतूरा, मोरकी बीट यह समान भाग ले धूप देनेसे उसी क्षण मनुष्यको मोहित करती है ॥ १३ ॥

छुछुन्दरी सर्पमुण्डं वृश्चिकस्य तु कण्टकम् ॥
हरितालं समं धूपो मोहयेत् सकलान्नराम् ॥ १४ ॥

छछुंदर, सांपका मुड, बीछूका कांटा और हरिताल यह सब समान भाग ले इनकी धूप देनेसे मनुष्योंको मोहित करती है ॥ १४ ॥

अथ शत्रुमोहनम्

× अधः पुष्पीशिखा चैव श्वेतं च गिरिकर्णिका ।
गोरोचनसमायोगे तिलकं शत्रुमोहनम् ॥१५ ॥

गोभी, कलहारी, श्वेत कितहीवृक्ष और गोरोचन इनका तिलक करनेसे शत्रुको मोहकर सकता है ॥ १५ ॥

तालकोन्मत्तबीजानि पाने शत्रोश्च दापयेत् ।
तत्क्षणान्मोहमाप्नोति चोन्मत्तो जायते नरः ॥ १६ ॥

हरताल धतूरेके बीज पानमें शत्रुको देनेसे शत्रु उसी क्षणमें मोहको प्राप्त हो जाता है और उन्मत्त हो जाता है ॥ १६ ॥

---

* शिलाया । × अविपीतशिखा इति च पाठ ॥

मोहशमनम्

समाक्षिकैः सिताम्भोजैः स्वस्थः पानाद्भवेन्नरः ।। १७ ।।

शहद मिला श्वेत कमलका पान करनेसे मनुष्य स्वस्थ होता है ।। १७ ।।

अथ रञ्जनम्

तत्र देहरञ्जनम्

अत्राङ्गरागः पुरुषेण कार्यः स्त्रियाश्च संभोगसुखाय गात्रे । तस्मादहं गन्धविधानमादौ विलासिनः सर्वमुदीरयामि ।। १८ ।।

प्रथम देहरंजन कहते हैं–प्राय. स्त्रियोंके सुखके निमित्त पुरुषोंको तथा पतियोंके निमित्त स्त्रियोंको अपना देहरंजन करना चाहिये । इस कारण विलासीजनोंके निमित्त गंधादिकार्य कथन करता हूं ।।१८।।

हरीतकीलोध्र मरिष्टपत्रं सप्तच्छदं दाडिमवल्कलं च । एषोऽङ्गनायाः कथितः कवीन्द्रैः शरीरदौर्गन्ध्यहरः प्रलेपः ।। १९ ।।

हरड, लोध और नीमके पत्ते, सतौना, डाडिमका, छिलका इन सबका लेप करनेसे शरीरकी दुर्गन्ध दूर होती है । यह प्रयोग विद्वानोंने कहा है ।। १९ ।।

हरीतकी श्रीफलमुस्तचिञ्चाफलत्रिकं पूतिकरञ्जबीजम् । कक्षादिदौर्गन्ध्यमपि प्रभूतं विनाशयत्याशु निदाघकाले ।। २० ।।

हरड, नारियलकी जड, मोथा, चिंचाफल, त्रिफला, पूतिकरंजुएके बीज इनका लेप करनेसे गरमीके दिनोंमें बगलमें होनेवाली महादुर्गन्धको दूर करता है ।। २० ।।

हरीतकीचन्दनमुस्तनागैरुशीरलोध्रामयरात्रितुल्यैः ।
स्त्रीपुंसयोर्घर्मजगात्रगन्धं विनाशयत्याशुविलेपनेन॥२१॥

हरड, लालचन्दन, नागरमोथा,नागकेशर, खस, लोध, कुष्ठ, हलदी यह बराबर लेकर स्त्रीपुरुषोके शरीरपर मलनेसे पसीनेकी दुर्गन्ध दूर हो जाती है ॥ २१ ॥

कदम्बपत्रं लोध्रं च अर्जुनस्य तु पुष्पकम् ॥ २२ ॥
पिष्ट्वा गात्रोद्वर्तनाच्च दुर्गन्धचविनाशनम् ॥ २३ ॥

कदम्बके पत्ते, लोध, अर्जुनके फूल पीसकर शरीरमें मलनेसे शरीरकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ २२ ॥ २३ ॥

सचन्दनोशीरकरञ्जपत्रैः* कोलाक्षमज्जागुरुनागयुक्तैः ।
लिप्त्वा शरीरं प्रमदा तु तेन चिरप्रसूतं विनिहन्ति
गन्धम् ॥ २४ ॥

चन्दन ,उशीर, करंजके पत्ते, कोल, बहेडेकी मींगी, अगुरु, नाग केशर यह सब पीसकर शरीरपर मलनेसे बहुत कालकी दुर्गन्धको दूर करते हैं ॥ २४ ॥

सदाडिमत्वङ्मधुलोध्रापद्मैः पिष्टस्समानैः पिचुमर्द-
पुत्रः । विलिप्य गात्रं तरुणी निदाघे दुर्गन्धघर्मा-
म्बुचयं निहन्ति ॥ २५ ॥

दाडिमीका वक्कल और मधु लोध पद्म इनको समान भाग लेकर नीमके पत्तोको शरीरमें मलनेसे स्त्रीके पसीनेकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥ २५ ॥

सकेशरोशीरशिरीषलोध्रैश्चूर्णीकृतैरङ्गविलेपनेन ।

---

* बाल्पत्रै –ऐसा पाठ है, अर्थ नेत्रवाला ।

ग्रीष्मे नराणां न कदापि देहे घर्म्मच्युतिः स्या-
दिति भोजराजः ॥ २६ ॥

केशर, उशीर, शिरस, लोध इनका चूर्ण कर शरीरपर लेप करनेसे गरमीमें शरीरसे बहुत पसीना नहीं निकलता है ऐसा भोजराजने कहा है ॥ २६ ॥

तिलसर्षपरजनीद्वयदूर्वागोरोचनकुष्ठैः ॥
अजमूत्रतक्रपिष्टैरुद्वर्तितमङ्गमनुपमं भवति ॥ २७ ॥

तिल, सरसो, दोनो हलदी, दूर्वा, गोरोचन, कूठ इनको बकरेके मूत्र और मट्ठेके साथ शरीरपर लेप करनेसे मनोहरता होती है ॥ २७ ॥

हरीतकीतोयदतुल्यभागैर्वनेरुहस्यापि चतुर्थभागः ।
तदर्धभागः कथितो नखस्य स्यादेष गन्धो मदन-
प्रकाशः ॥ २८ ॥

हरड और मोथा यह तुल्य भाग लेकर वनरुहका चौथाई भाग ले और इनसे आधा भाग तालमखाना यह मिलाकर लेप करनेसे काम-स्थानकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥ २८ ॥

एलाशटीपत्रकचन्दनानि तोयाभयाशिग्रुघनाम-
यानि । ससौरभोऽयं सुरराजयोग्यः स्यातः स
गन्धो नरमोह नाख्यः ॥ २९ ॥

इलायची, कचूर, पत्रज, चन्दन, मोथा, हरड, सैंजना, कपूर कुष्ठ यह नरमोहन नामक योग सब प्रकारकी दुर्गन्धको दूर करनेवाला है ॥ २९ ॥

धत्तूरकाश्मीरघनाम्बुलोहनिशाकरोशीरसमानि

पिष्ट्वा । लेपः प्रियोऽयं सुरमानवानामुदीरितः
पूर्वकवीन्द्रधीरैः । ३० ॥

धतूरा, केशर, मोथा, नेत्रवाला, लोह, कपूर, उशीर यह सब समान पीसकर इनका लेप करनेसे सबोकी प्रियता होती है । यह मनुष्य और देवताओंको प्रिय है पूर्व विद्वानोने कहा है ॥ ३० ॥

उशीरकृष्णागुरुचन्दनानि पत्राम्बुतुल्यानि समानि
पिष्ट्वा । एतानि गात्रेषु विलासिनीनां श्रीखण्ड
तुल्यं प्रकरोति गन्धम् ॥ ३१ ॥

उशीर, काला अगर, चन्दन ,तेजपात, नेत्रवाला यह सब समान पीसकर अंगोमें लेप करनेसे विलासवती स्त्रियोके अंगोंमें चन्दनकेसी सुगन्ध होजाती है ॥ ३१ ॥

अथ मुखरजनम्

रसालजम्बूफलगर्भसारः सकर्कटो माक्षिकसंयुतश्च ।
स्थितो मुखान्ते पुरुषस्य रात्रौ करोति पुंसां मुख-
वासमिष्टम् ॥ ३२ ॥

आम और जामुन दोनोंकी गुठली लेकर काकडासींगी शहद मिलाकर यह रात्रिके समय मुखमें रक्खे तो बडी दुर्गन्ध नष्ट होकर सुगन्धि होती है ॥ ३२ ॥

गुडत्वगेलानखजातिशिह्लैः स्वर्णान्वितैः क्षुद्रवटी
विधेया । ताम्बूलगर्भा दिवसे च रात्रौ करोति
पुंसां मुखवासमिष्टम् ॥ ३३ ॥

गुड, दालचीनी, इलायची, नख (गन्धद्रव्य) जायफल, नागकेशर इन्होंमें सुवर्ण वरक मिलाकर इनकी क्षुद्रवटी करके रात्रिमें ताम्बूलके साथ खानेसे पुरुषोके मुखमें सुगन्धि होती है ॥ ३३ ॥

चूर्णं मुराकेशरकुष्ठकानां प्रातर्दिनान्ते परिलेढि या स्त्री । अप्यर्द्धमासेन मुखस्य गन्धः कर्पुरतुल्यो भवति प्रकामम् ।। ३४ ।।

जो स्त्री प्रातःकाल और सन्ध्यामें जटामासी, केशर, कूठ तीनोंको पीस इनका चूर्ण चाटती है तो पन्द्रह दिनमें उसके मुखकी गन्ध कर्पूरके तुल्य होजाती है ।। ३४ ।।

यः कुष्ठचूर्णं मधुना घृतेन पिकाक्षबीजान्वितमत्ति नित्यम् । मासैकमात्रेण मुखं तदीयं गन्धायते केतकगन्धतुल्यम् ।। ३५ ।।

जो कोई तालमखाने सहित कूठका चूर्ण मधु और घृतके साथ नित्य सेवन करता है उसका मुख एक महीनेमें केतकीके गन्धके तुल्य होजाता है ।। ३५ ।।

गोजलैः क्वथिता पथ्या मिशिकुष्ठकणान्विता ।
वदनस्य दुरामोदं निहन्ति परिशीलिता ।। ३६ ।।

गोमूत्रमें हरड पकाकर उसमें सौंफ, कूठ, पीपल डालकर इसका सेवन करनेसे मुखकी दुर्गन्ध दूर होती है ।। ३६ ।।

तिलं जातीफलं पूगं भक्षयित्वा पिबेदनु ।
शीततोयं पलार्द्धं तु आस्यदुर्गन्धनाशनम् ।। ३७ ।।

तिल, जायफल, सुपारी भक्षण करनेसे इसके पीछे ठंढा जल आधा पल पीनेसे मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ।। ३७ ।।

घृतकाञ्जिकगण्डूषं परितो भक्षयेच्छटीम् ।
तथाकृते भवेदास्ये दुरामोदविनाशनम् ।। ३८ ।।

घी, कांजी यह दोनोका गंडूष (कुल्ला) करे इनके आदि अन्त मध्यमें कचूरका भक्षण करे तो मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ।। ३८ ।।

गोमूत्रैः क्वाथयेत्कुष्ठं वालकं सहरीतकीम् ।
सर्वं पिष्ट्वा वर्टी कुर्यान्मुखदुर्गन्धनाशनम् ॥ ३९ ॥

गोमूत्रमें कूठ, सुगन्धवाला और हरड डालकर क्वाथ बनावे, पीछे सब पीसकर गोली बना मुखमें रखनेसे मुखकी दुर्गन्धका नाश होता है ॥ ३९ ॥

कटुतिक्तकषायेण दन्तकाष्ठेन नित्यशः ।
दुर्गन्धं हन्ति नो चित्र क्षौद्रैर्वा कुष्ठचूर्णकम् ॥ ४० ॥

कडवे और तीखे काढे करके अथवा नित्य दतौन करनेसे अथवा शहदके साथ कूठका चूर्ण सेवन करनेसे मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है इसमें आश्चर्य नहीं है ॥ ४० ॥

सिन्धूत्थसिद्धार्थकसारिवानांत्वचा युतानां परि-
लेपनेन । स्त्रीपुंसयोर्यौवनयोर्हठेन विनाशमा-
याति मुखस्यगन्धः ॥ ४१ ॥

सेंधा, सरसों, सारिवन, दालचीनी इनको चूर्ण कर लेप करनेसे स्त्री पुरुषोंके युवावस्थामें उठा हुआ मुखका दुर्गन्ध दूर हो जाता है ॥४१॥

पिष्ट्वा मसूरं घनसारवरेण मुहुर्मुहुस्तेन विलिप्य
वक्त्रम् । नश्यन्ति गण्डाः पिटकाः प्ररूढा मासार्द्धमात्रेण
विलासिनीनाम् ॥ ४२ ॥

मसूरको कपूर सरिवनके साथ पीसकर वारवार उसको स्त्रियोंके मुख पर लेप करनेसे गंड, पिटक (मुहांसे) यह पन्द्रह दिनमेंही नष्ट होजाते हैं ॥ ४२ ॥

यः कण्टकान् शाल्मलिपादपस्य क्षीरेण पिष्ट्वाष्ट-
दिनं विलिप्य । गण्डप्रदेहाः पिटकास्त्र्यहेण
प्रयान्ति नाशं पुरुषस्य तन्व्याः ॥ ४३ ॥

जो सेमलकेवृक्षके कांटे दूधमें पीसकर स्त्री वा पुरुषके मुखपर आठ दिन लेप करे तो उस स्त्री पुरुषके मुखकी झांई मुहांसे आदि तीन दिनमें नष्ट होजाते हैं ॥ ४३ ॥

धान्यं वचा * सावरतुल्यभागं पिष्ट्वा लिपेत्तेन मुखं नितान्तम् । मुखोद्भवा यौवनजा नराणां नश्यन्ति नूनं पिटकाः क्रमेण ॥ ४४ ॥

धनियां, वच, सरिवन यह बराबर भाग लेकर इन्हें पीस निरन्तर मुखपर लेप करनेसे निश्चयही मनुष्योंके जवानीके मुहांसे पिटिक दूर हो जाते हैं ॥ ४४ ॥

१ "शैलज लोध्रतुल्यम्" भी पाठ है । अर्थ—मनसिल और लोध है ।

सिद्धार्थबीजद्वितयं तिलं च क्षारेण पिष्ट्वा परिलिप्य वक्त्रम् । सप्ताहमात्रेण मुखस्थनीलीं निहन्ति कृष्णामिति रन्तिदेवः ॥ ४५ ॥

सरसो और तिल इनको जवाखारके साथ पीसकर मुखपर लेप करनेसे सात दिनमें मुखकी नीलिका—फुन्सी—मुहांसे आदि नष्ट होते हैं, यह रंतिदेवने कहा है ॥ ४५ ॥

निशाद्वयं गैरिकशोणयष्टिरम्भाम्बुमाहेन्द्रयवो-त्तमानि । निघ्नन्ति नीलिं त्रयवारमात्राच्चन्द्रेण तुल्यं वदनं भवेच्च ॥ ४६ ॥

दोनों हलदी, गेरू, सोनापाठा, कदली, नेत्रवाला इन्द्रजौ यह तीन वार मुखपर लगानेसे मुखकी फुन्सी दूर होती है और मुख चन्द्रमाके तुल्य हो जाता है ॥ ४६ ॥

मरिचं रोचनायुक्तं संपेष्य मुखमालिपेत् ।
तरुण्याः पिटकाः सर्वा नश्यन्ति मुखसंभवाः ॥ ४७ ॥

काली मिरच और गोरोचन पीसकर मुखपर लगानेसे स्त्रीके मुखके जवानीके मुहासे आदि दूर हो जाते हैं ।। ४७ ।।

व्यङ्गेषु चार्जुनत्वग्वा मञ्जिष्ठा वा समाक्षिका ।
एता लिप्तास्त्र्यहं यावद्भवेत्पद्मोपमं मुखम् ।। ४८ ।।

अर्जुनकी छाल और मञ्जीठका चूर्ण इनको शहदमें मिलाय तीन दिन मुखपर लेप करनेसे मुख कमलसदृश निर्मल हो जाता है ।। ४८ ।।

मातुलिङ्गजटा सर्पिः शिला गोशकृतो रसः ।
मुखकान्तिकरो लेपः पिटकातिलकालजित् ।। ४९ ।।

विजौरेकी जड, घी,मनसिल, गौके गोवरका रस इनके लेप करनेसे मुखपर कान्ति होती है, पिटिका तिल आदि दूर होते हैं ।। ४९ ।।

रक्तचन्दनमञ्जिष्ठाकुष्ठलोध्रप्रियङ्गवः ।
वटाङ्कुरमसूराश्च व्यङ्गघ्ना मुखकान्तिदाः ।। ५० ।।

रक्तचंदन, मँजीठ, कूठ, लोध, प्रियंगु वटके अकुर, मसूर इनका लेप मसूरिका व्यंगादिको दूर कर मुखपर गन्ध और कान्ति करनेवाला है ।। ५० ।।

मञ्जिष्ठा मधुकं द्राक्षा मातुलिङ्गं सपिष्टकम् ।
कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं पचेत् ।। ५१ ।।
अजापयस्तद्द्विगुणं शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ।। ५२ ।।

मँजीठ, मुलैठी, लाख, बिजौरेकी जडको पीस यह एक एक कर्ष प्रमाण लेकर एक कुडव तेलमें पकावे उससे दूना बकरीका दूध लेकर मृदु अग्निमें इन सबको पकावे ।। ५१ ।।५२ ।।

नीलिका पिटिका व्यङ्गा अभ्यङ्गादेव नाशयेत् ।
मुखप्रसन्नेऽपि हितं नीलकर्कशवर्जितम् ।। ५३ ।।

नीलिका, छोटी फुन्सी, व्यंग, (मुहांसे आदि) सब इसके मलनेसे दूर होते है, मुख निर्मल होजाता है, कंटकादि नहीं रहते है, खुदरापन जाता रहता है ।। ५३ ।।

सप्तरात्रप्रयोगेण भवेत्काञ्चनसंनिभम् ।
अत्र द्विरुक्तत्वाद्यष्टीमधुकर्षद्वयं तथा ।। ५४ ।।

सात रातके प्रयोगसे मुख सुवर्णके तुल्य होजाता है मधुको दो वार कहनेसे शहद दो वर्ष लेना चाहिये ।। ५४ ।।

मनःशिला तथा लोध्रं द्विनिशासर्षपाः समाः ।
वारिपिष्टो हितो लेपो वदने श्यामिकां हरेत् ।। ५५ ।।

मनशिल, लोध, दोनो हलदी, सरसो ये बारबर लेकर जलसे पीस लेप करनेसे मुखकी श्यामता छूट जाती है ।। ५५ ।।

महिषीक्षीरसंयुक्तं रजनीरक्तचन्दनम् ।
कृते लेपे निहंत्याशु श्यामिकां वदनाश्रिताम् ।। ५६ ।।

भैंसके क्षीरसे युक्त दोनो हलदी, लालचन्दन मिलाकर मुखपर लेप करनेसे मुखकी झाई दूर होती हे स्याहीभी जाती रहती है ।। ५६ ।।

उभे हरिद्रे मञ्जिष्ठा घृतं गौराश्च सर्षपाः
पेष्यं गैरिकसंयुक्तमजाक्षीरेण पाचितम् ।। ५७ ।।
एतेनैव भवेद्वक्त्रमुदयादित्यवर्चसम् ।
वचा लोध्रमुशीरं च सर्पिस्सर्जरसः पयः ।। ५८ ।।
पीतानि वटपत्राणि रजन्या सह पेषयेत् ।
लेपोऽयं मुखपादाभ्यां पद्मवत्कुरुते भृशम् ।। ५९ ।।

दोनो हलदी, मंजीठ, गौका घी, सफेद सरसो, गेरूके साथ इनको पीस कर बकरीके दूधके साथ पकावे, इसके मुखपर सूर्यके समान कांति होती है । वच, लोध, उशीर, घृत, राल, दूध, पीले वटके पत्ते,

हलदीके साथ पीसकर मुखपर लेप करनेसे कमलके समान मुख प्रकाशित होता है ॥ ५७-५९ ॥

मसूरान् मधुना सार्धं पिष्ट्वा तैर्मर्दयेन्मुखम् ।
सप्तरात्रप्रयोगेण पुण्डरीकदलप्रभम् ॥ ६० ॥

मसूर शहदके साथ पीसकर मुखपर मलनेसे सात रात्रिको प्रयोगमें कमलके समान मुख होजाता है ॥ ६० ॥ इति मुखरञ्जनम् ॥

अथ केशरञ्जनम्

स्रग्गन्धधूपाम्बरभूषणानां न शोभतेशुक्लशिरो-
रुहाणाम् । यस्मादतो मूर्द्धजरागसेवां कुर्याद्यथै-
वाञ्जनभूषणानाम् ॥ ६१ ॥

माला, गन्ध, धूप, वस्त्र, भूषण ये श्वेत बालवाले पुरुषको शोभित नहीं होते हे, इस कारण बालोंकी सेवा अवश्य करे जिससे वह अजन और भौरेको समान हो जाते हैं ॥६१॥

आम्राण्डेनोत्थितं तैलं कान्तपाषाणचूर्णितम् ।
काकतुण्डीफलं कृष्णं चूर्णयित्वा प्रयत्नतः ॥ ६२ ॥
धान्यराशौ विनिःक्षिप्य मासोद्ध्वं शिरसि क्षिपेत् ।
नस्यं दिनत्रय तेन केशरञ्जनकं भवेत् ॥
वर्षार्द्धं तिष्ठते कृष्णभ्रमराञ्जनसन्निभम् ॥ ६३ ॥

आमकी गुठलीका तेल और कान्तापाषाणका चूर्ण, काकादनीका फल, लोहचूर्ण यह सब यत्नपूर्वक चूर्ण करके वा अंकोलका तेल धान्यराशिमें दाबकर एक महीनेके उपरान्त निकाल शिरमें डाले, तीन दिन लेप करनेसे केश काले होजाते हे । वे बाल छः महीनेतक काले भौंरेके समान रहते हे ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

त्रिफलालोहचूर्णं तु नीली भृङ्गीसमूलकम् ।। ६४ ।।
एतच्चूर्णमिडामूत्रे दिनमेकं विभावयेत् ।
तेनैव मर्दयेच्छीर्षे रञ्जते भ्रमरोपमम् ।। ६५ ।।

त्रिफला, लोहचूर्ण नीलेके पत्ते, भांगरामूल इन सबका चूर्ण बकरीके मूत्रमें एक दिन भावना देकर फिर शिरपर मलनेसे भौंरेके समान बाल होजाते हैं ।। ६४ ।। ६५ ।।

गुञ्जाबीजस्य चूर्णन्तु कुष्ठैला देवदारुकम् ।
तुल्यांशं भावयेच्चूर्ण दिनैकं भृङ्गजद्रवैः ।। ६६ ।।
चूर्णाच्चतुर्गुणे तैले पाचयेन्मृदुवह्निना ।
तेनाभ्यङ्गाद्घनाः केशा रञ्जनं भ्रमरोपमम् ।। ६७ ।।

चौंटलीके बीजोका चूर्ण, कूठ, एला, देवदारु यह बराबर लेकर इनके चूर्णकी एक दिन भांगरेके रसमें भावना दे, चूर्णसे चौगुने तेलमें कोमल अग्निसे पकावे । उसके लगानेसे बाल भौंरके समान होजाते हैं ।। ६६-६७ ।।

हस्तिदन्तस्य दग्धस्य समांशेन रसं समम् ।
आक्षीरेण तं पिष्ट्वा लेपनात्केशरञ्जनम् ।। ६८ ।।

हाथीका दांत जलाकर और इसके समान रस ले बकरीके दूधमें उसे पीसकर लेप करनेसे बाल काले होते हैं ।। ६८ ।।

त्रिफलालोहचूर्णन्तु इक्षुभृङ्गरसस्तथा ।
कृष्णमृत्तिकया सार्धं भाण्डे मासं निरोधयेत् ।
तल्लेपाद्रञ्जयेत्केशश्चतुर्मासं स्थिरो भवेत् ।। ६९ ।।

त्रिफला, लोहचूर्ण, ईखका रस, भांगरेका रस इनके आधी काली मिट्टी एक बर्तनमें एक महीने तक बन्द कर रखे उसके लेप करनेसे काले बाल होकर चार महीनेतक स्थिर रहते हैं ।। ६९ ।।

लोहकिट्टं जपापुष्पं पिष्ट्वा धात्रीफलं समम् ।
त्रिदिनं लेपयेच्छीर्षं द्विमासं केशरञ्जनम् ॥ ७० ॥

लोहकिट्ट, जपा (गुडहर) के फूल, आमले यह समान भाग ले इनको पीस तीन दिन लेप करनेसे दो महिनेतक बाल काले रहते है ॥ ७० ॥

भृङ्गराजरसप्रस्थं तैलं कृष्णतिलात्समम् ॥ ७१ ॥
मर्दयेत्प्रहरैकं तु तैलाप्तं नीलिकारसम् ।
तल्लेपं त्रिदिनं कुर्य्यात्केशरञ्जनकं भवेत् ॥ ७२ ॥

भांगेरका रस एक सेर और इसीको बराबर काले तिल के एक प्रहरतक इसमें तैलयुक्त नीलीका रस लिप्त करे । इसके तीन दिन लगानेसे बाल काले होजाते हं । ७१ ॥ ७२ ॥

चूर्णं सर्जयवक्षारं सिद्धार्थं चारनालकैः ।
नागपुष्पं दिने मध्ये तल्लेपात्केशरञ्जनम् । ॥७३ ॥

सज्जीखार, जवारखार, सरसो, कांजी और नागकेशर इनको पीसकर केशोमें लगानेसे बाल काले होजाते है ॥ ७३ ॥

काकमाचीयबीजानि समं कृष्णतिलांस्ततः ।
तत्तैलं ग्राहयेद्यन्त्रे तन्न्यस्येत्केशरञ्जनम् ॥ ७४ ॥

काकमाचीके बीज इसके बराबर काले तिल के यन्त्रमें इनका तेल निकालकर बालोमें लगानेसे बाल काले होजाते है ॥ ७४ ॥

गोघृतं भृङ्गजद्रावं मयूरशिखया सह ।
अग्निना मृदुना पाच्यं तं न्यस्येत्केशरञ्जनम् ॥ ७५ ॥

गौका घी, भांगरेका रस, मोरशिखाके साथ मृदु अग्निसे पका ले । इसके लगानेसे बाल काले होजाते है यह प्रयोग उत्तम है ॥ ७५ ॥

काकमाचीयबीजानि समं कृष्णतिलांस्ततः ।

जपापुष्परसं क्षौद्रं कर्षैकं न्यस्यमाचरेत् ॥
सप्ताहं रञ्जयेत्केशान् सर्वन्यस्ये त्वयं विधिः ॥ ७६ ॥

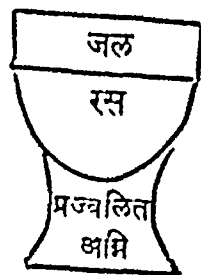
काकमाचीके बीजोके समान काले तिलके उसमें गुडहरके फूलोका रस शहद एक कर्ष डाले, यह एकत्र करके सात दिनतक लगावे तो बालोंको काला रखता है । यह सब न्यस्यकी विधि है ॥७५॥७६॥

त्रिफलालोहचूर्णं तु वारिणा पेषयेत्समम् ।
द्वयोस्तुल्येन तैलेन पचेन्मृद्वग्निना क्षणम् ॥ ७७ ॥
तैलतुल्यं भृङ्गरसं यावत्तैलं च पाचयेत् ।
स्निग्धं भाण्डगतं भूमौ स्थितं मासात्समुद्धरेत् ॥ ७८ ॥
सप्ताहं लेपयेल्लिप्त्वा कदल्याश्च दले शिरः ।
निर्वाते क्षीरभोजी स्यात्क्षालयेत्त्रिफलाजलैः ॥ ७९ ॥
नित्यमेवं हि कर्त्तव्यं सप्ताहे रञ्जनं भवेत् ।
यावज्जीवं न सन्देहः केशाः स्युर्भ्रमरोपमाः ॥ ८० ॥

त्रिफला और लोहचूर्ण यह समान ले जलसे पीसे, इन दोनोंके समान तेल लेकर मृदु अग्निसे पकावे और तेलके बराबर भांगरेका रसभी इसमें डाले जब रस जलजाय तेल मात्र रहजाय तब उसे चिकने बर्तनमें भरकर पृथ्वीमें गाडदे । एक महीनेसे निकालकर केलेके पत्तेपर लगाय शिरमें सात दिनतक लकावे, निर्वातस्थानमें क्षीरका भोजन पान करे और त्रिफलेके जलसे धोडाले, सात दिन ऐसा करनेसे सर्वथा बाल काले हो जाते हे और निःसन्देह जन्मपर्यंत केश श्याम रहते है ॥ ७७-८० ॥

महाकालस्य बीजानि वाकुचीबीजतत्समम् ॥ ८१ ॥
चूर्णं द्रव्यैश्च निर्गुण्ड्यां भावयेत्तु चतुर्दिनम् ।

जपापुष्पद्रवैरेवं ततः पातालयन्त्रके । ८२ ॥
तैलं ग्राह्यं तु तल्लेपे पत्रैरेरण्डजैश्शिरः ।
वेष्टयेत्क्षीरभोजी स्याद्वातातपविवर्जितः ॥ ८३ ॥
एवं सप्तदिनं लेप्यं तण्डुलान् धारयेन्मुखे ।
कृष्णवर्णाः प्रजायन्ते तथा भवति प्रत्यहम् ॥ ८४ ॥



महाकालके बीज, उसके समान बाकुची, सोमराजीके बीज उसीके समान ले इनको चूर्ण कर चार दिनतक गुडहरके रसकी भावना दे और इस पातालयंत्रसे इसका तेल निकालकर उसके लेप करनेसे अर्थात् एरंडके पत्तोमें लगाकर शिरपर लेप करनेसे और क्षीर (दूध) पान करनेसे और वात-धूपका सेवन न करनेसे मुखमें तण्डुल धरके इस प्रकार सात दिनतक बालो पर लेप करनेसे कृष्णवर्ण होजाते है ॥ ८१-८४ ॥

मोहोग्रं कर्दमे क्षिप्त्वा षण्मासात्तु समुद्धरेत् ।
तद्द्रुतं जायते कृष्णं कर्षैकं शिरसि क्षिपेत् ॥ ८५ ॥
केशाः कृष्णाः प्रजायन्ते भ्रमरीकुलसन्निभाः ।
कपालरञ्जनं ख्यातं यावज्जीवं न संशयः ॥ ८६ ॥

वायविडंगको कीचडमें डालकर छः महीनेतक पडा रहने दे, उसका एक कर्ष चूर्ण कर शिरमें डालनेसे बाल काले होजाते है यानी काले भौंरेके समान हो जाते है और जीवनपर्यन्त वैसेही रह जाते है इसमें सन्देह नहीं, यह कपालरंजन प्रसिद्ध है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

सनीलिकां सैन्धवपिप्पलीभिघृतानुयुक्तैरुपलिप्य केशम् । क्रमेण शंखोपममाशु कृष्णं शिरोरुहं मेचकतामुपैति ॥ ॥ ८७ ॥

नीलकी जड, सैंधा, पीपली घृत इनसे बालोंको लेपनकरनेसे श्वेत बालभी क्रमसे काले वर्णके हो जाते है ॥ ८७ ॥

फलान्वितं चूततरोः प्रसूनं पिण्डारकं पाण्डुर-नीलिके वा । प्रस्थप्रमाणं च तिलस्य तैलं पचे-दमीभिर्विदितोपदेशः ॥ ८८ ॥ तस्मिंश्च मध्ये यदि हंसपक्षः क्षिप्तो भवेन्मेचकवर्णयुक्तः । पाक-स्तदैवास्य नरैर्विधेयः ख्यातं पृथिव्यामपि नीलतैलम् ॥ ८९ ॥

फूलसहित आमके फल, पिंडार, धवईके फूल, नील ये सब लेकर और एक सेर तिलोका तेल लेकर इसमें यह सब पकावे उसके मध्यमें राजहंसके बाल डालकर देखे जो वह डालतेही कृष्णवर्णके हो जायँ तो उसका पाक यथार्थ जाने और यह पृथ्वीमें नीलतेल नामसे विख्यात है ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

एतन्निलिप्तं पलितं नराणां शंखावदातं सकलं त्रिरात्रम् । पुष्पं न श्रेयांसि समानयुक्तं चिरं-भवेदृष्ट इति प्रयोगः ॥ ९० ॥

इसको बालोंपर लगानेसे तीन रात्रिमें श्वेत बाल भौंरेके समान काले हो जाते हैं । यह प्रयोग अच्छी प्रकार देखा हुआ है और सिद्ध है ॥ ९० ॥

शतावरी कृष्णतिलेन युक्ता गोरोचना काकमुखा-

भिधा च । अम्भोभिरालिप्य पुनः सुकेशान् करोति शुक्लानपि कृष्णवर्णान् ॥ ९१ ॥

शतावरी, काले तिल, गोरोचन, काकमुखा इनको पीस बालोपर लेप करनेसे शुक्ल बाल काले हो जाते है ॥ ९१ ॥

मदन्तिकाया रसकल्कसिद्धं तिलोद्भवं तैलमिदं नराणाम् । अकालजातं पलितं सरौक्ष्यं केशस्य कारुष्यमलं निहन्ति ॥ ९२ ॥

नवमल्लिकाका रस निकालकर तिलका तेल डाल कल्क लगानेसे मनुष्योके अकालमें श्वेत हुए बाल श्याम हो जाते है । बालोके सब प्रकारके रोग और मल दूर होते है ॥ ९२ ॥

मुस्थं च सर्षपं चैव ह्युशीरं च तथैव च ।
हरीतक्याश्च क्वाथेन आमलक्यास्समं ततः ॥ ९३ ॥
केशमूलं समालेप्य मेघतुल्यो भवेत्कचः ॥ ९४ ॥

मोथा, सरसो, उशीर, हरड, आमला इनका क्वाथ करके केशोकी जडमें लेपन करनेसे बाल मेघके समान काले हो जाते है ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

इति केशरंजनम्

स्नानीयसुगन्धिद्रव्यम्

सूक्ष्मैलाजीमूतनखैः सचूतैः स्वर्णामसीपत्रकसंयुतैश्च । सौरभ्यकान्ती किल मूर्द्धजानां स्नात्वा नरो विन्दति सर्वदैव ॥ ९५ ॥

छोटी इलायची, मोथा, उंशीर नख (सुगन्धद्रव्य), आम, नागकेशर, शेफालिका, तेजपात, ढाक इनका चूर्ण करके इनको बालोमें लगाकर स्नान करनेसे बालोमें सुगन्ध और काति होजाती है ॥ ९५ ॥

स्वर्णाम्बुदोशीरनखीयुतानां पथ्यान्वितानां च
विलेपने च। स्नात्वा नरः सौरभमर्द्धमासं वैकल्प-
माप्नोति शिरोरुहस्य ॥ ९६ ॥

नागकेशर, मोथा, उशीर, नखी (सुगन्धद्रव्य), हरड इनका लेपन कर स्नान करनेसे मनुष्योंके शिरमें पन्द्रह दिनतक सुगन्धि आती है ॥ ९६ ॥

पथ्यावसानामलकीफलानामजस्तु जीमूतरसाम-
यानाम्। मांसीयुतानां परिलेपनेन स्नात्वा
नरः सौरभकान्तिमेति ॥ ९७ ॥

हरडेकी बकली, आमला, मेंढासींगी, मोथेका रस, कूठ जटामांसीके सहित लेप कर स्नान करे तो सुगन्धि होजाती है ॥९७॥

विडङ्गगन्धोत्पलकल्कयोगाद्गोमूत्रसिद्धं कटुतै-
लमेतत्। अभ्यङ्गयोगेन शिरोरुहाणां यूकादि-
लिक्षाप्रचयं निहन्ति ॥ ९८ ॥

वार्यविडंग, गन्धक, कमल इनको पीस गोमूत्रसे सिद्ध कर कडवे तेलमें पकाकर बालोमें मलनेसे सम्पूर्ण लीखें मरजाती हे। ९८ ॥

गोमूत्रसारिवामूलं लेपाद्यूकानिवारणम्।
पारदं मर्दयेन्निष्कं कृष्णधत्तूरजैर्द्रवैः ॥ ९९ ॥
नागवल्लीद्रवैर्वापि वस्त्रखण्डं विलेपयेत्।
तद्वस्त्रं वेष्टयेन्मौलौ धार्यं यामत्रयं तथा।
यूकाः पतन्ति निश्शेषं मस्तकान्नात्र संशयः ॥ १०० ॥

गोमूत्र, सरवनकी जड इनका लेप लीखोको निवारण करता है। काले धतूरेके रसमें एक निष्क (१०८ रत्ती) पोरेको खरल करे और

पानके रसमें मिलाकर वस्त्रपर लपेटकर वह वस्त्र शिरपर लपेटकर तीन पहर शिरपर रखनेसे शिरसे सब लीखें गिर जाती हे। इसमें सन्देह नहीं ॥ ९९ ॥ १०० ॥

द्विनिशानवनीतेन लेपान्मौलेः प्रकण्डुनुत् ॥ १०१ ॥

दोनो हलदी मक्खनके साथ मिलाकर मलनेसे शिरकी खुजली नष्ट हो जाती है ॥ १०१ ॥

नीलोत्पलं तिलं यष्टिसर्षपा नागकेशरम् ।
धात्रीफलं समं पिष्ट्वा लेपो यूकाविनाशकः * ॥१०२॥

नीलकमल ,तिल, मुलैठी, सरसो, नागकेशर, आमलेके साथ पीसकर लेप करनेसे यह लेप लीखका नाश करनेवाला है ॥ १०२ ॥

निशागन्धकगोमूत्रं विडङ्गं कटुतैलकम् ।
पारदेन समं मर्द्यं लेपो यूकाविनाशकः ॥ १०३ ॥

हलदी, गंधक, गोमूत्र, वायविडंग, कडवा तेल, पारेके साथ पीस कर लेप करनेसे लीखोंको दूर करता है ॥ १०३ ॥

लाक्षा भल्लातकं मुस्ता कूटग्गुलसर्षपाः ।
विडङ्गेन समं लेपाद्धूमो यूकानिवारकः ॥ १०४ ॥

लाख, भिलावा, नागरमोथा, कूठ, गूगल, सरसा, वायविडंग इनके साथ लेप करनेसे लीखें निवारण होजाती हैं ॥ १०४ ॥

बिल्वमूलं सगोमूत्रं लेपाद्यूकाविनाशनम् ॥ १०५ ॥

बेलकी जड गोमूत्र इनका लेप लीखोंका निवारण करनेवाला है ॥ १०५ ॥

---

* तिलप्रमाणसस्थानवर्णा केशाम्बराश्रया । बहुपादा अपादाश्च यूका लिक्षाश्च नामत ॥

अथ केशस्येन्द्रलुप्तादिनिवारणम्॥

गुञ्जाफलैःक्षौद्रयुतैर्विलिप्य शिरःप्रदेशो सकले-
न्द्रलुप्तम् । अनेन योगेन सदैव केशा रोहन्ति
कृष्णाः कुटिला विशालाः ।। १०६ ।।

शिरके बाल गिरने लगें इसको इन्द्रलुप्त कहते हैं । चौंटली और शहद पीसकर शिरपर लगानेसे सब प्रकारका इन्द्रलुप्तरोग दूर होजाता है इस योगसे बाल जमकर बडे और कुटिल होजाते हैं ।। १०६ ।।

मातङ्गदन्तस्य मसीं विधाय श्वेताञ्जनंतुल्यतया
सुपिष्टम् । लिप्येदनेनैव महेन्द्रलुप्तं केशाः प्ररो-
हन्त्यपि हस्तमध्ये ।। १०७ ।।

हाथीके दांत जलाय उसकी राख कर इसकी बराबर रसौत ले बकरीके दूधमें पीस इसका लेप करनेसे हाथोंकी हथेलीमें भी बाल जमसकते हैं औरजगहकी तो क्या कहें ।। १०७ ।।

कुङ्कुमं मरिचैस्सार्द्धं पिष्ट्वा तैलेन लेपयेत् ।
इन्द्रलुप्तं निहन्त्याशु किंवा जम्बीरजद्रवैः ।। १०८ ।।

कुंकुम और कालीमिर्च किंवा जंबीरीके बीजोंका रस इनको तेलके साथ पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्तरोग शीघ्र नष्ट होजाता है ।। १०८ ।।

सुदग्धं हस्तिदन्तं तु छागदुग्धं रसाञ्जनम् ।
पिष्ट्वा लेपात्प्रजायन्ते केशाः करतलेष्वपि ।। १०९ ।।

दग्ध हुआ हाथीका दांत, बकरीका दूध, रसोत इनको पीसकर हाथमें लेप करनेसे भी बाल जम आते हैं ।।।१०९।।

जातीपुष्पं दलं मूलं कृष्णागोमूत्रपेषितम् ।
लेपोऽयं सप्तरात्रेण दृढकेशकरः परः ॥ ११० ॥

चमेलीके फूल, दल, मूल, काली गौके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे सात रात्रिमें दृढ बाल कर देता है ॥ ११० ॥

भृङ्गाट*त्रिफलाभृङ्गीनीलोत्पलमयोरजः ।
सूक्ष्मं चूर्णं समं कृत्वा पचेत्तैले चतुर्गुणे ।
तल्लेपेन दृढाः केशाः कुटिलाः सरला अपि ॥ १११ ॥

सिघाडा, त्रिफला, भांगरा, नीलकमल, लोहचूर्ण इन सबका चूर्ण कर इसके चौगुना तेल डालकर पकाले, इसका लेप करनेसे बाल कुटिल और सरल होजाते हैं ॥ १११ ॥

कीटभक्षितकेशं तु स्थानं स्वर्णेन घर्षयेत् ॥
यावत्सुतप्ततां याति तावल्लेपमिमं कुरु ॥ ११२ ॥

यदि बालोको कीडा खागया हो तो सुवर्णको वहां घिसे । जबतक वह तप्तताको प्राप्त न होजाय तबतक बराबर लेप करता रहे ॥ ११२ ॥

भल्लातकं च बृहती गुञ्जामूलफलं तथा ।
मधुना सह लेपेन वायुक्षीरोटकप्रणुत् ॥ ११३ ॥

भिलावा, कटेरी, चौंटलीकी जड और फल इनको शहदके साथ पीसकर लेप करे तो इन्द्रलुप्त दूर करता है ॥ ११३ ॥

भल्लातकं कृष्णतिलं कण्टकारीफलं समम् ।
पिष्टं तण्डुलतोयेन लेपोऽयं तं विनाशयेत् ॥ ११४ ॥

---

* भृङ्गाटम् पाठ है । उसका अर्थ—भांगरा है ।

भिलावा, काले तिल, कटेरीके फल यह समान भाग के चावलके जलसे पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्त रोग दूर करता है ।। ११४ ।।

जपापुष्पैश्च तं हन्यात्कृष्णागोमूत्रलेपनात् ।। ११५ ।।

काली गौके मूत्रमें जवाके फूल पीसकर लेपन करे तो भी इन्द्रलुप्त दूर होता है ।। ११५ ।।

तिलप्रसूनं सह गोक्षुरेण सलावणं गव्यघृतेन
पिष्टम् । सप्ताहमात्रेण शिरः प्रलेपाद्भवन्ति दीर्घाः
प्रचुराश्च केशाः ।। ११६ ।।

तिलके फूल, गोखरू, लवण, गौके घीसे पीसकर सात दिन लेप करनेसे बाल दीर्घ और बहुत होजाते है ।। ११६ ।।

शाल्मलीतालमूल्योश्च मूलं पद्मसमुद्भवम् ।
छागदुग्धे समं पिष्टं लेपयेन्मुण्डितं शिरः ।।
त्रिदिनं भक्षयेत्तच्च केशवर्धनमुत्तमम् ।। ११७ ।।

सेमल, तालमूली, कमलमूल यह बराबर लेकर बकरीके दूधके साथ पीनेसे यह लेप शिरमुंडित बालोको हितकारी है और तीन दिन लेप करनेसे उत्तम केशवृद्धि होजाती है ।। ११७ ।।

अथ केशशुक्लीकरणम्

वज्रीक्षीरेण सप्ताहं तच्छेषं भावयेत्तिलम् ।
तत्तैललिप्ताः केशाश्च शुक्लाः स्युर्नात्र संशयः ।।११८।।

थूहरके दूधमें काले तिलोको सात दिन भावना दे, फिर उस तेलको बालो पर लेप करनेसे निःसन्देह बाल श्वेत होजाते हैं ।। ११८ ।।

रोगामलकचूर्णं तु वज्रीक्षीरेण सप्तधा ।
भावयेत्तस्य लेपेन शुक्लतां यान्ति मूर्द्धजाः ।। ११९ ।।

कूठ और आमलेके चूर्णको थूहरके दूधसे सात वार भावित कर-वेसे इसका लेप बालोंको श्वेत करता है ॥ ११६ ॥

अजाक्षीरेण सप्ताहं भावयेदभयाफलम् ।
तच्चूर्णं सह तैलेन लेपाच्छुक्ला भवन्ति हि ॥ १२० ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने मोहनादिवर्णनं
नाम पचमोपदेश ॥ ५ ॥

हरडोको सात दिन बकरीके दूधमें भावना दे उसका चूर्ण कर तेलमें मिलाय बालोमें लकावे तो बाल श्वेत हों ॥ १२० ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्रकृत
भाषाटीकाया मोहनादिवर्णन नाम पचमोपदेश ॥ ५ ॥

षष्ठ उपदेशः

अथ वाजीकरणम्

बलेन नारी परितोषमेति न हीनवीर्यस्य कदापि
सौख्यम् । अतो बलार्थं रतिलम्पटस्य वाजीवि-
धानं प्रथमं विदध्ये ॥ १ ॥

बलीसे स्त्री संतुष्ट होती है, परन्तु हीनवीर्य पुरुषसे कभी स्त्री संतुष्ट नहीं होती है, इस कारण उन लम्पट पुरुषोके बलके निमित्त वाजी (पुष्ट) प्रकरण लिखा जाता है ॥ १ ॥

अश्विन्यां वटवृन्दाकं क्षीरैः पीत्वा महाबलः ।
पुष्योद्धृतं पिबेन्मूलं श्वेतार्कस्य प्रयत्नतः ।
सप्तरात्रं तु गोक्षीरैर्वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ २ ॥

अश्विनीनक्षत्रमें बडका बंदा दूधके साथ पीसकर पीनेसे बलवान

होता है। पुष्यनक्षत्रमें उखाडी हुई श्वेत आककी जड सात दिनतक गौके दूधके साथ यत्नसे पिये तो वृद्धभी तरुण होजाता है ॥ २ ॥

चूर्णं विदार्याः स्वरसेन तस्या विभावितं भास्कर-
रश्मिजालैः । मध्वाज्यसंमिश्रितमेव लीढ्वा दश
स्त्रियो गच्छति निर्विशङ्कः ॥ ३ ॥

विदारीकन्दका चूर्ण कर उसीके स्वरसमें भावना दे घूपमें सुखानेसे शहद और घृत मिलाय सेवन कर निःशङ्क हो दश स्त्रियोंको तृप्त कर सकता है ॥ ३ ॥

भूयो विभाव्यामलकस्य चूर्णं रसेन तस्यैव
सिताज्यमिश्रम् । सक्षौद्रमालेढि निशामुखे यो
नूनं स वृद्धस्तरुणत्वमेति ॥ ४ ॥

आमलेके रसमें आमलोको भावना देकर उसमें मिश्री और घृत मिलावे, इसे शहदके साथ रात्रिमें पान करनेसे वृद्ध पुरुषभी तरुण होजाता है ॥ ४ ॥

कर्षप्रमाणं मधुकस्य चूर्णं क्षौद्राज्यसंमिश्रितमेव
लीढ्वा । क्षीरानुपानाद्रमते तु तावद्यावन्नराणा-
मुदरस्थमेतत् ॥ ५ ॥

मुलहठीका चूर्ण एक कर्ष लेकर इसमें घृत और शहद मिलाकर चाटनेसे और पीछे दूध पीनेसे मनुष्यमें अधिक सामर्थ्य होजाती है अर्थात् यह जबतक न पचे तबतक रमण कर सकता है ॥ ५ ॥

सितपिकतरुबीजं तण्डुला यष्टिकानां सघृतमधु-
समेतं प्रत्यहं योऽवलेढि । जठरकुहरमध्ये याति
पाकं न यावद्रमयति कृशदेहोप्यङ्गनानां समहम् ॥ ६ ॥

कौंचके बीज, सांठीके चावल, मुलहठी, न्यूनाधिक घृत और शहद मिलाकर चाटनेसे जबतक यह न पचे तबतक कृश मनुष्य भी स्त्रीयोके साथ रमण करसकता है ॥ ६ ॥

वृद्धशाल्मलिमूलस्य रसं शर्करया पिबेत् ।
एतत्प्रयोगात्सप्ताहाज्जायते रेतसोऽम्बुद्धिः ॥ ७ ॥

बृद्ध सेमलकी जडका रस शर्कराके सहित पान करे । इस प्रयोगसे सात दिनमें मनुष्य वीर्यवान् हो जाता है ॥ ७ ॥

लघुशाल्मलिमूलेन तालमूलीसचूर्णितम् ।
सर्पिषा पयसा पीत्वा रतौ चटकवद्भवेत् ॥ ८ ॥

लघु सेमलकी जड़ और तामूलीका चूर्ण घृतके साथ पान करनेसे रतिमें चटकके तुल्य होजाता है ॥ ८ ॥

घृतेन मासं मसृतानि भूयो सुभावयित्वा रविशोषितानि । क्षीरेण संसाध्य च भक्षयित्वा स याति नारीशतमुग्ररेताः ॥ ९ ॥

फिर घृतके साथ एक महीना इसीको प्लावित करके सुखाय दूधसे संभावित कर भक्षण करे तो रतिमें चटकतुल्य हो जाता है सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है ॥ ९ ॥

यो वर्त्तकीलावकपिञ्जलानां मांसं तथा वेश्मविहङ्गमस्य । हव्येन सिद्धं सह सैन्धवेन महाबलः स्यादुपयुज्यमानः ॥ १० ॥

जो वर्त्तक लवा कबूतर (जंगली चिडिया) पक्षीका मांस मे (हव्य) घृत डालकर सेंधेके साथ भक्षण करता है उसका बल अधिक बढजाता है ॥ १० ॥

विदारीकन्दकल्कं तु घृतेन पयसा नरः ।
उदुम्बरसमं खादेद्वृद्धोऽपि तरुणायते ।। ११ ।।

विदारीकन्दके कल्कको घी मिले दूधके साथ एक तोला पान करनेसे वृद्ध पुरुष भी तरुण हो जाता है ।। ११ ।।

पिप्पलीनां रसोपेतौ बस्ताण्डौ क्षीरसर्पिषा ।
साधितौ भक्षयेद्यस्तु स गच्छेत्प्रमदाशतम् ।। १२ ।।

बकरेके दोनों अंडकोशोंको प्रथम जलमे उबालकर फिर दूधसे निकाले हुए घीमें भूनकर अनुपानके अनुसार उसमें सेंधानिमक और पीपलका चूर्ण मिलाय भक्षण करे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकता है ।। १२ ।।

बस्ताण्डसिद्धे पयसि भावितानसकृत्तिलान् ।
यः खादेत्स नरो गच्छेत्स्त्रीनां शतमपूर्ववत् ।। १३ ।।

बकरेके अण्डकोशको दूधमें औटाकर उस दूधकी तिलोंमें बारंवार भावना दे इनको छायामें सुखाय सेवन करे तो सौ स्त्रियों से रमण कर सकता है ।। १३ ।।

गोक्षुरकः क्षुरकः शतमूली वानरिनागबलातिबला च ।
चूर्णमिदं पयसा निशि पेयं यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति।।१४

गोखरू, तालमखाने, शतावर, कौंचके बीज, नागबला, खरैटी इनका चूर्ण दूधके साथ रात्रिमें पान करनेसे, करनेसे सौ स्त्रियों को तृप्त कर सकता है ।। १४ ।।

अश्वत्थफलमूलत्वक् छुङ्गासिद्धं पयो नरः ।
स पीत्वा शर्कराक्षौद्रं कलिङ्ग इव हृष्यते ।। १५ ।।

पीपलके फल जड, छाल और कली इनको अनुमानके अनुसार दूधमें डाल औटावे । शीतल होनेपर मिश्री, शहद मिलाय तथा बूरा डालकर पीवे तो कलिंग (चिडे) के समान प्रसन्न होता है।१५।

घृतं शतावरीगर्भं क्षीरे चतुर्गुणे पचेत् ।
शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तं तद्वृष्य मुच्यते ।। १६ ।।

घृतमें शताबरीका स्वरस मिलाय चौगुने दूधके साथ पकाय उसमें मिश्री, पीपल, शतावरका कल्क डालकर खाय तो पुष्टता होती है ।। १६ ।।

नृसिहचूर्णम्

शतावरीरजःप्रस्थं प्रस्थं गोक्षुरकस्य च ।
वाराह्या विंशतिपलं गुडूच्याः पञ्चविंशतिः ।। १७ ।।
भल्लातकानां द्वात्रिंशच्चित्रकाणां दशैव तु ।
तिलानां निस्तुषाणां तु प्रस्थं दद्यात्सुचूर्णितम् ।। १८ ।।
त्रिफलस्य पलान्यष्टौ शर्करायाश्च सप्ततिः ।
माक्षिकं शर्कराद्धेंन माक्षिकार्द्धेन वै घृतम् ।। १९ ।।
शतावरीसमं देयं विदारीकन्दजं रजः ।
एतदेकीकृतं चूर्ण स्निग्धभाण्डे निधापयेत् ।। २० ।।

शतावरका चूर्ण एक सेर, दक्षिणी गोखरूका चूर्ण एक सेर, वाराहीकंदका चूर्ण एक सेर, सतगिलोय एक सेर नौ छटांक, शुद्ध किये भिलावें दो सेर, चीतेकी छाल ढाई पाव, धोए तिल एक सेर, सोंठ, मिरच, पीपलका चूर्ण आध सेर, मिश्री साढे चार सेर इनसे आधा शहद और एक सेर दो छटांक घी, शतावरीके समान विदारीकन्दका चूर्ण यह सब बारीक कर मिलाय चिकने बर्तनमें रख छोडे ।।१७-२०।।

पलार्द्धमुपभुञ्जीत यथेष्टं चास्य भोजनम् ।
मासैकमुपयोगेन जरां हन्ति रुजामपि ।। २१ ।।

वलीपलितखालित्यहेमपाण्ड्वाद्यपीनसान् ।
हन्त्यष्टादशकुष्ठानि तथाष्टार्वुदराणि च ।। २२ ।।
भगन्दरं मूत्रकृच्छ्रं गृध्रसीं सहलीमकम् ।
क्षये चैव महाव्याधि पंचकासान् सुदारुणान् ।। २३ ।।
अशीतिवातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् ।
विंशतिसूक्ष्मरोगांश्च संसृष्टान्सान्निपातिकान् ।। २४ ।।
सर्वानर्शोगदान्हन्याद्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ।। २५ ।।

प्रतिदिन दो तोले सेवन कर यथेष्ट भोजन करे तो एक महीनेमें जरा और हीनवीर्यता नष्ट होती है, वली, शिरके बालोंकाश्वेत होना मूत्रकृच्छ्र, गृध्रसी, हलीसकी रोग, क्षय, महाव्याधि, पांच प्रकारकी दारुण खांसी, अस्सी वातरोग चालीस पित्तके रोग, बीस सूक्ष्म-रोग, सन्निपातके रोग, बवासीर यह सब ऐसे दूर होजाते है जैसे इन्द्रके वज्रसे वृक्ष नष्ट हो जाते हैं ।। २१-२५ ।।

सकाञ्चनाभो मृगराजविक्रमस्तुरङ्गमं चाप्यनुयाति वेगतः । स्त्रीणां शतं गच्छति सातिरेकं प्रहृष्टपुष्टं च यथा विहङ्गम् ।। २६ ।।

तथा सुवर्णके समान शरीर होकर सिंहके समान पराक्रमी, घोडेके समान कामवेग प्राप्त होता है और यह सौ स्त्रियोके सग गमन कर-सकता है तथा विहंग (पक्षी) के समान हृष्ठ पुष्ट होता है ।। २६ ।।

पुत्रान्संजनयेद्धीमान्नरसिंहनिभांस्तथा ।।
नारसिंहमिदं चूर्णं सर्वरोगहरं नृणाम् ।। २७ ।।

यह चूर्ण खानेसे मनुष्य नृसिंहके समान कान्तिमान् पुत्रको जन्माता है। यह नृसिंहचूर्ण मनुष्योंके सब रोग दूर करता है ।। २७ ।।

मदनमोदक.

त्रैलोक्यविजयापत्रं सवीजं घृतभर्जितम् ।
त्रिकटु त्रिफला कुष्टंभृङ्गी सैंधवधान्यकम् ॥२८ ॥
चव्यं तालीशपत्रं च कट्फलं नागकेशरम् ।
अजमोदा यवानी च यष्टी मधुकमेव च ॥ २९ ॥
मेथी जीरकयुग्मंच गृहीत्वा समभागतः ।
च्यवन्त्येतानि चूर्णानि तावदेव तदौषधम् ॥ ३० ॥
सम शिलातले पिष्ट्वा चूर्णयेदतिचिक्कणम् ।
तावदेव सिता देया यावदायाति बन्धनम् ॥ ३१ ॥
घृतेन मधुना मिश्रं मोदकं परिकल्पयेत् ।
घृतर्भाजततिलचूर्णं मोदकोपरि विन्यसेत् ॥
त्रिसुगंधिसमायुक्तं कर्पूरेणाधिवासितम् ।
स्थापयेद्घृतभाण्डे तु श्रीमन्मदनमोदकम् ॥ ३२ ॥

त्रिलोकविजया (भंग) के पत्ते और वीज घृतसे भूनकर उसमें त्रिकटु (सोठ, मिरच, पीपल), हरडा, बहेडा, अमला, कूठ, भांगरा धनिया, वच, तालीसको छाल, कट्फल, नागकेशर, अजमोदा, अजवायन, मुलहठी, मधुक, मेथी, कालाजीरा, श्वेतजीरा, ये सब समान भाग लेकर यह सम्पूर्ण औषधी समान शिलापर पीसकर महीन चूर्ण करे। इतनी इसमें मिश्रीकी चासनी करे जिससे वह बँध जाय तथा इसमें घी और शहद मिलाकर लड्डु बांधे। मोदकके ऊपर घीमें भुने हुए तिलोंका चूर्ण डाले तथा पत्रज, तज, इलायची, कपूरसे अधिवासित करे एवं घृतके बर्त्तनमें स्थापन करके रखछोडे। २८-३२।

भक्षयेत्प्रातरुत्थाय वातश्लेष्मभयापहम् ।
प्रवृद्धमग्निं कुरुते मन्दमग्निं प्रदीपयेत् ॥ ३३ ॥
कृशानामतिरूक्षाणां स्नेहनं स्थौल्यकारणम् ॥ ३४ ॥
कासघ्नं सर्वशूलघ्नमामवातविनाशनम्
सर्वरोगहरं ह्येतत्संग्रहग्रहणीहरम् ॥ ३५ ॥
एतस्य सतताभ्यासाद्वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ३६ ॥

यह मदनमोदक प्रातःकालमें उठकर खानेसे श्लेष्माका भय दूर होता है। बढीहुई अग्निको सम और मन्दाग्निको बढाता है। कृश, अत्यन्त रूखे पुरुषोंके स्थूल और स्नेहन करता है। कास, शूल, आमवातका नाशक है। सम्पूर्ण रोग तथा संग्रहणी रोगको यह हरण करता है। निरंतर इसके सेवन करनेसे वृद्धभी तरुण होता है ॥३३-३६

ब्रह्मणश्च मुखाच्छ्रुत्वा वासुदेवे जगत्पतौ ।
एष कामस्य वृद्ध्यर्थं नारदेन प्रकाशितः ।
येन लक्षैर्वरस्त्रीणामरंस्त यदुनन्दनः ॥ ३७ ॥

ब्रह्माके मुखसे श्रवण कर वासुदेव जगत्पतिसे यह कामकी वृद्धिके अर्थ नादरजीने कथन किया है; जिसके कारण यदुनन्दन सैंकडों स्त्रियोंसे रमण करते थे ॥ ३७ ॥

कामकलारस

मृतसूताभ्रकं स्वर्णवाजिगन्धावचारसैः ।
मुशली कदलीकन्दद्रवैश्च मर्दयेद्दिनम् ॥ ३८ ॥
लाक्षालघुपुटैः पच्यान्मर्दयेत्पूर्ववद्द्रवैः ।
पुटं देयं पुनर्मर्द्यमेवमष्टपुटैः पचेत् ॥ ३९ ॥

शालमलीजातनिर्यासैश्चतुर्मासांस्तु भक्षयेत् ।
गोदुग्धं मर्कटीबीजैः पलार्द्धं पाचयेदनु ॥ ४० ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध सुवर्ण, असगंध, वचके रसमें खरल कर इसमें मुशली, कदलीकन्दका चूर्ण डालकर एक दिन खरल करे । लाखकी लघुपुट देकर इसको फिर खरल करता रहे और लाक्षा जलके आठ पुट देकर इसको पकावे । सेमलके उत्पन्न हुए गोंदसे चार महिने भक्षण करे और गौका दूध, कौंचके बीज आधे पल डालकर पकावे ॥ ३८ – ४० ॥

रसः कामकलाख्योऽयं रमते स्त्रीसहस्रकैः ।
सर्वाङ्गोद्वर्त्तनं कुर्यात्स्वरसैः शालमलीरसैः ॥ ४१ ॥

यह कामकलानामक रस है । इसके सेवनके मनुष्य सहस्र स्त्रियोंसे रमण कर सकता है । सर्वांगमें सेमलके स्वरसको मले तो पुरुषके कामबल बढ जाता है ॥ ४१ ॥

शुद्धसूतसमं गन्धं त्र्यहं कह्लारजैर्द्रवैः ।
मर्दितं वालुकायन्त्रे यामं संपुटगं पचेत् ॥ ४२ ॥
रक्तागस्त्यद्रवैर्भाव्यं दिनमेकमिव द्रुतम् ।
यथेष्टं भक्षयेच्चान्नं कामयेत्कामिनीशतम् ॥ ४३ ॥

शुद्ध पारा उसके बराबर शोधी गन्धक तीन दिन श्वेतकमलके साथ खरल करके वालेकायन्त्रमें एक पहर संपुट कर आंच दे और फिर निकालकर एक दिन लाल अगस्त्यके रसकी भावना दे, इसको सेवनकर यथेष्ट अन्न भक्षण करे तो सौ स्त्रियोसे रमण कर सकता है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥



अनङ्गसुन्दरीवटिका

पलद्वयं द्वयं शुद्धं पारदं गन्धकं तथा ।
मृतहेम्नस्तु कर्षैकं पलैकं च मृताभ्रकम् ।। ४४ ।।
मृत्तताम्रं चतुर्निष्कं सर्वं पंचामृतैर्दिनम् ।
रुद्रैर्गजपुटैः पच्याद्दिनैकान्ते समुद्धरेत् ।। ४५ ।।
पिष्ट्वा पंचामृतैः कुर्याद्वटिकां बदराकृतिम् ।
अनङ्गसुन्दरीं खादेद्रमेद्रामाशतत्रयम् ।। ४६ ।।

दो पल शुद्ध पारा, दो पल शुद्ध गन्धक, शुद्ध सोना एक कर्ष, शुद्ध अभ्रक एक पल, फूंका हुआ तांबा चार निष्क (६४ मासे) इन सबोको पंचामृतसे खरल करके ग्यारह दिन पीछे * गजपुटमें रखकर एक दिनकी आंच देकर फिर इसको फूंकी दे, इसको निकालकर पंचामृतसे पीसे बेरकी बराबर इसकी गोली बनावे, यह अनंगसुन्दरी नामक वटी सेवन करनेसे तीन सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है ।। ४४–४६।।

शाल्मलीमूल चूर्णं तु भृङ्गराजस्य मूलकम् ।
पलैकं सितया चान्नं भक्षयेत्कामयेच्छतम् ।। ४७ ।।

सेमलकी जडका चूर्ण, भांगरेकी जड इनका चूर्ण कर इसमें एक पल मिश्री डालकर खाय तो सौ स्त्रियोके गमन कर सकता है ।। ४७ ।

महाकामेश्वररस

सूतपादं ताम्रचूर्णं खल्वे पिष्टं प्रकारयेत्
निक्षिप्य कदलीकन्दे पुनर्लेप्यं च गोमयैः ।। ४८ ।।

पारा चौथाई भाग और तांबा इनको ले चूर्णकर केलेकी जडमें खरल करे फिर इनका गोला कर गोबरसें लपेट सुखाले ।।४८।।

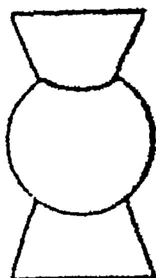
---

* सवा हाथके बराबर चौकोर गढ्ढेमें पाच सौ अरने उपलोकी अग्निसे पुट देना ।

शुष्कं गजपुटैः पश्चात्तथा कन्दे पुनः क्षिपेत् ।
एवं सप्तपुटैः पश्चात्कन्दैः कन्दं पृथक्पृथक् ॥ ४९ ॥
दत्त्वा तत्र घृतं चूर्णं वस्त्रे बद्ध्वा तु पाचयेत् ।
दोलायंत्रे च संयुक्तं छागीदुग्धे पुनः पचेत् ॥ ५० ॥

सुखाकर गजपुटसे फूंकदे फिर निकाल फलेको कन्दमें भावना देकर फूंकदे, इस प्रकार सातवार पृथक् पृथक् भावना दे और घृत मिलाय फिर वस्त्रको कपरौटी लगा सुखाय फिर कपरौटी चढावे, फिर दोलायन्त्रमें विद्ध कर बकरीके दूधसे पाक करे ॥४९ ॥ ५० ॥

दोलायन्त्र



गुडूच्याथ शतावर्या वानर्या गोक्षुरैस्तथा ।
गजपिप्पलिका लाजा कदल्या कोकिलाक्षकैः ॥ ५१ ॥
सितय पाचयेदेव द्विगुणं लघुवह्निना ।
उद्धृत्य चूर्णयेत्स्वच्छं भक्षेद्गुञ्जाचतुष्टयम् ॥ ५२ ॥
सितायुक्तं सदा सेव्यं महाकामेश्वरो रसः ।
कामिनीनां सहस्रैकं क्षोभयेन्निमिषान्तरे ॥ ५३ ॥

गुडूची शतावरी, कौंचके बीज, गोखरु, गजपीपल, लाजा (खील), केलाकन्द, तालमखाना इन सबको बराबर ले बारीक करके इनसे दूनी मिश्रीका चासनी कर लघु आंचसे पकावे, उपरोक्त सब औषधी उसमें डालदे और ऊपरके रसभी इसमें डाल दे इस चूर्णको चार चौंटली प्रमाण भक्षण करे, मिश्रीके साथ यह महाकामेश्वर रस सदा सेवन करे तो एक क्षणमें सहस्र स्त्रियोको क्षुभित कर सकता है ॥ ५१–५३ ॥ इति महाकामेश्वररस ॥

गोक्षुरं वानरं बीजं गुडूची गजपिप्पली
कोकिलाक्षस्य बीजानि फलं गुणशतावरी ॥ ५४ ॥
कर्कशाबीजमज्जा च सर्वं तुल्यं विचूर्णयेत् ।
चूर्णतुल्या सिता योज्या मधुना पिण्डितं लिहेत् ।
पलार्द्धमनुपानं स्यात्किंचित्पेयं गवां पयः ॥ ५५ ॥

गोखरु, कौंचके बीज, गुडूची, गजपीपल, तामलखानेके बीज और फल, शतावरी, कर्कशाके बीज और मींगी यह सब बराबर लेकर चूर्ण करे और चूर्णके तुल्य बराबर मिश्री डालकर शहदके साथ इसकी वटी बनाकर सेवन करे । इसका अनुपान यह है कि इस पर आधे पल की कुछ गौका दूध पीना चाहिये ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

मदनोदयरस

शुद्धसूतसमं गन्धं रक्तोत्पलदलद्रवैः ।
याममेकं पुनर्गन्धं पूर्वादर्द्धं विनिक्षिपेत् ॥ ५६ ॥
तद्द्रवैर्मर्द्दयेच्चाङ्गं पूर्वगन्धं च मर्द्दनम् ।
पूर्वद्रावैर्दिनैकं तु काचकुप्या निरुध्य च । ५७॥
दिनैकं वालुकायन्त्रे पक्वमुद्धृत्य भक्षयेत् ।
पञ्चगुञ्जासितासार्द्धं रसोऽयं मदनोदयः ॥ ५८ ॥
कोकिलाक्षस्य बीजं च मुसली शर्करासमम् ।
गवां क्षीरेण तत्पेयः पलार्द्धमनुपानकम् ॥ ५९ ॥

शोधा पारा, शोधी गंधक, लाल कमलके दलके रसमें एक पहर तक खरल करे और इस रसको सुखाकर बारंबार खरल करे और जब पारा और गंधक सब प्रकारसे एंकरूप हो जायँ तब इसको ले कांचकी शीशीमें भरकर एक दिनतक वालुकायंत्रमेंचढादे; फिर उनार उतार इसे प्रयोग करे । यह मदनोदय रस पांच चौंटली प्रमाण मिश्रीके

सहित खाना उचित है। तालमखानेके बीज और मुसली, शर्करा ये समान भाग ले, आधे पल गौके दूधके साथ इसको पान करे तो पुष्टि होती है, यह मदनोदय रस है ।। ५६ –५९ ।।

कामाङ्गनायकचूर्णम्

वानरीकोकिलाक्षस्य बीजं श्यामतिलं समम् ।
मूलं गोक्षुरमासाभ्यां शुष्कचूर्णं प्रकल्पयेत् ।। ६० ।।
चूर्णं तुल्यं मृतं चाभ्रं सर्वतुल्या सिता भवेत् ।
कर्षमेकं गवां क्षीरैः पेयं कामाङ्गनायकम् ।। ६१ ।।

कौंचके बीज, तालमखानेके बीज और काले तिल यह समान भाग और गोखरू, उरद इनको पीसकर चूर्ण करले, इस चूर्णमें अनुमानसे शोधा अभ्रक डाले इन सबकी तुल्य मिश्री डाले एक कर्ष (सोलहमासे) गौके दूधसे इस कामांगनायक चूर्णका पान करे ।। ६० ।। ६१ ।।

तैलेन पक्वं चटकं खादेद्भोजनपूर्वतः ।
भोजनान्ते पिबेत्क्षीरं रामाः कामयते शतम् ।। ६२ ।।

अनुपान–चटक (चिडिया) के मांसको तेलमें पकाय भोजनसे पहले तथा भोजनके अन्तमें दूध पीवे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकता है ।। ६२ ।।

कामामृतयोग.

अश्वगन्धा वह्निमूलं शाल्मली च शतावरी ।
विदारी मुशलीकन्दं कोकिलाक्षस्य बीजकम् ।। ६३ ।।
तत्तुल्यं वानरीबीजं सुष्टु चूर्णं तु कारयेत् ।
चूर्णतुल्यं मृतं चाभ्रं सर्वतुल्या सिता भवेत् ।।
गवां क्षीरैः पिबेत्कर्षं रमयेत् कामिनीशतम् ।। ६४ ।।

अश्वकर्कटमांसं तु भक्षयेच्च पिबेत्पयः ।
योगः कामामृतः ख्यातो बलायुर्वीर्यवर्द्धकः ।। ६५ ।।

असगंध, चीतेकी जड, सेमल, शतावरी, विदारीकंद, मुशली कंद, तामलखाने और कौंचके बीज इनका चूर्ण करे और चूर्णके अनुसार शुद्ध अभ्रक डाले सबकी बराबर मिश्री देवे इन सबको एक कर्ष गौके दूधके साथ लेनेसे सौ स्त्रियोसे रमण करसकता है। अश्व और केकडेका मांस भक्षण कर ऊपरसे दूध पीवे यह कामामृतनामक योग अत्यन्त बल-आयु-वीर्यका बढानेवाला है ।। ६३–६५ ।।

धात्रीलोहम्

धात्रीफलस्य चूर्णं तु भावयेत्तत्फलद्रवैः ।। ६६ ।।
एकविंशतिवारं तु शोष्यं पेष्यं पुनः पुनः ।
चूर्णपादं मृतं लोहं मध्वाज्ये शर्करान्वितम् ।। ६७ ।।
पलैकं भक्षयेन्नित्यं सिताक्षीरं पिबेदनु ।
कामयेत्स्त्रीशतं नित्यं धात्रीलोहप्रभावतः ।। ६८ ।।

आंवलेका चूर्ण कर उसमें उसीके फलोंके रसकी भावना देकर सुखावे, ऐसे इक्कीस बार भावना देकर सुखाय चूर्ण करे इस चूर्णसे चौथाई लोहभस्म डाले इसमें शहद, घृत, मिश्री डाले इसको प्रतिदिन एक पल खाय मिश्रीसहित ऊपरसे दूध पीवे । इस धात्रीलोहके प्रभावसे सौ स्त्रियोकी नित्य इच्छा करसकता है ।। ६६ – ६८ इति धात्रीलोह ।।

वानरीबीजचूर्णं तु निस्तुषं माषचूर्णितम् ।
नारिकेलोदकैर्भाव्यं यामान्तं पेषयेत्समम् ।। ६९ ।।
पिष्टस्य विंशद्विंशेन मृतमभ्रं नियोजयेत् ।
तद्वत्तैर्वटिका कार्या मध्वाज्याभ्यां तु भक्षयेत् ।। ७० ।।

पीत्वा क्षीरं सितायुक्तं रम्या रामा रमेच्छतम् ।
सताम्बूलं शतामुलमनुपानं निरन्तरम् ।। ७१ ।।

कौंचके बीजोंका चूर्ण, छिलके रहित उडदोंका चूर्ण लेकर नारियलके रसकी भावना देकर एक प्रहरके उपरान्त उसको पीसले अच्छे प्रकार उसको पीसकर शुद्ध अभ्रक उसमें डाले इस प्रकार उनकी वटिका करके शहद और घृतके साथ भक्षण करे । इसके ऊपर मिश्री डालकर दूध पीवे तो अनेक स्त्रियोंके साथ रमण कर सकता है इसके ऊपर निरन्तर शतामूलयुक्त ताम्बूल भक्षण करे ।। ६९–७१ ।।

ऊर्णनाभिभवं बीजं मधुना वह पेषयेत् ।
तेन नाभिप्रलेपेन बन्धः सद्यो विमुञ्चति ।। ७२ ।।

मकडीके बीजको शहदके साथ नाभिपर लेप करनेसे स्त्रीसे वद्ध हुआ पुरुष शीघ्र मुक्त होता है अर्थात् मैथुनमें समर्थ होता है ।। ७२ ।।

अन्तरिक्षेण संग्राह्य यत्नाद्वा गुटिकामलम् ।
तेन लिङ्गप्रलेपेन रमेद्रामाशतं नरः ।। ७३ ।।

अन्तरिक्षमसे गुटिका मल ले इसका घ्वजापर लेपकरे तो मनुष्य सौ स्त्रियोसे रमण करसकता है ।। ७३ ।।

कामेश्वररस

सम्यङमारितमभ्रकं कटफलं कुष्ठाश्वगन्धामृता
मेथी मोचरसं विदारमुशली गोक्षूरमिक्षूरकम्
रंभाकन्दशतावरी ह्यजमुदा माषस्तिला धान्यकं
यष्टी नागबला कचूरमदनं जातीफलं सैन्धवम् ।।७४।।
मार्गीकर्कटश्रृङ्गभृङ्गकटुकं जीरद्वयं चित्रकं
चातुर्जातपुनर्नवा गजकणा ब्राह्मी निशा वासकम् ।

बीजं मर्कटिशाल्मलं फलत्रिकं चूर्णं समं कल्पये-
च्चूर्णंसंविजयासिताद्विगुणिता मध्वाज्ययोःपिण्डितम्॥७५

अच्छी प्रकार शोधा अभ्रक ,शोधा हुआ कट्फल, कूठ, अजमोद गिलोय, मेथी, मोचरस, विदरीकंद, मुशली, गोखरू, कोकिलाक्षके बीज, कदलीकंद, शतावरी, अतिबला, उडद, तिल, धनियां, असगंध, खिरेंटी, मुलहठी और नागबला, कचूर, मेनफल, जायफल, सेंधा, कस्तूरी, काकडासिंगी, भांगरा, त्रिकटु, दोनों जीरे, तज, पत्रज, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, पुनर्नवा, गजपीपल, ब्राह्मी, हलदी, अडूसा, कौंचके बीज, सेमल, त्रिफला इनको बराबर लेकर चूर्ण करे, उस चूर्णके साथ भंग, दूनी मिश्री ले इसमें घृत और मधु डालकर इसको वटिका बनाले ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

कर्षार्द्धं वटिका विलेह्यमथवा सेव्यं मुदा सर्वदा
पेयं क्षीरसितानुवीर्यकरणे स्तम्भेप्ययं कामिनीम् ।
वामावश्यकरं परं च सुखदं प्रौढाङ्गनाद्रावकं
क्षीणे पुष्टिकरं गदक्षयकरं हन्त्याशु सर्वामयम् ॥ ७६ ॥

इसकी आधे कर्षकी वटिका बनावे उसको चाटे अथवा वैसेही सेवन करे इसके ऊपर मिश्री डालकर दूध पीवे तो यह स्त्रीको स्तम्भित कर सकता है, यह स्त्रीको वशमें करनेवाला, सुखदायक, प्रौढ स्त्रियोंको प्रेरणा करनेवाला है, क्षीणवीर्यमें पुष्टिका करनेवाली, रोगक्षयकर शीघ्र सब रोगोका नाशक है ॥ ७६ ॥

कासश्वासमहातिसारशमनं मन्दाग्निसंदीपनं
अर्शःसंग्रहणीप्रमेहनिचय श्लेष्मातिरक्तप्रणुत् ।
नित्यानन्दकरं विशेषकविता वाचां विलासोत्तमं
धत्ते सर्वगुणं हठात्स्ववदशाध्यानप्रधानं पुनः ॥ ७७ ॥

कास श्वास मसाअतिसारका शमन करनेवाला,मन्दाग्निको प्रदीप्त करनेवाला, ववासरीर संग्रहणी सब प्रकारसे प्रमेह कफके रोग, रक्त रोगको दूर करता है, नित्य आनन्द करनेवाला, विशेषकर विशेष बुद्धि आदिके गुण देता है, सम्पूर्णगुण इसके प्रभावसे प्राप्त हो जाते हैं ।। ७७ ।।

अभ्यासेन निहन्ति मृत्युपलितं कामेश्वरो वत्सरात्
सर्वेषां हितकारको निगदितः श्रीनित्यनाथेन सः ।
वृद्धानां मदनोदयोदयकरः प्रौढाङ्गनासंगमे
सिद्धोयं समदृष्टप्रत्ययकरी राज्ञा सदा सेव्यताम् ।।७८।।

इसके अभ्याससे मृत्यु जीती जाती है, बालोका अकालमें पकना दूर होता है, यह सबका हितकारक कामेश्वररस नित्यनाथने कहा है, वृद्धोको काम उदय करनेवाला, प्रौढ अंगनाके संगममें सुख देनेवाला यह विद्धराजोको सदा विश्वासकर सेवन करना चाहिये ।। ७८ ।।

यत्किञ्चिन्मधुरस्निग्धं जीवनं बृंहणं गुरु ।
हर्षणं मनसश्चैव तत्सर्वं वृष्यमुच्यते ।
नरो वीर्यकरान्योगान्सम्यक् शुद्धो निरामयः ।। ७९ ।।

जो कुछ वस्तु मधुर चिकनी है वह जीवनकारक और भारी मनको हर्षण करनेवाली जो वस्तुमात्र है वह सब वृष्य कहाती है, वीर्य कारी पदार्थोंको शुद्ध रोगरहित होकर सेवन करना चाहिये ।। ७९ ।।

वाजीकरणकाल.

आसप्ततेः प्रकुर्वीत वर्षादूर्ध्वं च षोडशात् ।
न पूर्वं षोडशाद्वर्षात्सप्तत्याः परतो न च ।। ८० ।।

सोलह वर्षसे ऊपर ७० वर्षतक इन योगोको सेवन करे, सोलहसे न्यून और सत्तर वर्षसे अधिक इन योगोंको सेवन न करे॥८०॥

वाजीकरणफलम्

आयुःकामो नरः स्त्रीभिःसंयोगं कर्तुमर्हति ।
कल्पेनादग्धवयसो वाजीकरणसेवितः ॥ ८१ ॥
आयुष्मन्तो मन्दजरावपुर्वीर्यबलान्विताः ।
स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्ति स्त्रीषु संयुताः ॥ ८२ ॥

आयुकी कामना करनेवाला मनुष्य स्त्रियोसे इस प्रकार संयोग करे। वाजीकरणकल्पसे शरीर पुष्ट होजाता है और इसके होनेसे उत्साह और इष्ट विद्ध होता है, पूर्ण आयुवाले मन्दजर वीर्य बलसे युक्त जो है वे स्थिर आरोग्य बलसे युक्त हो स्त्रियोमें आसक्त होते है ८१॥८२

स्त्रीसगमकाल.

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्च सेवेत प्रमदां नरः
सर्वर्तुषु च ग्रीष्मेषु पक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः ॥ ८३ ॥

संपूर्ण ऋतुओमें तीन तीन दिनमें स्त्रीको सेवन करे अर्थात् तीसरे दिन स्त्रीका संगम करना उचित है और सबसे अधिक बलकी आवश्यकता हो तो ग्रीष्ममें न्यून प्रसंग करे अर्थात् एक पक्षमें गमन करे ॥ ८३ ॥

योगं कृत्वा सुसेव्यं सुभृतमपि पयः शीतलं चाम्बु
पीत्वा गच्छेन्नारी सुरूपां स्मशरवशगां कामुकः
कामलीलः । रत्या हृष्टः प्रहृष्टो व्यपगतसुरतः
सन्धये नित्यनित्यं कान्तासंगाद्दिवापि ह्यसकृदपि
नरो धातु वैषम्यमेति ॥ ८४ ॥

जो बलवर्धक औषधियोको सेवन नही करता वह दुर्बल यह योग सेवन करे, शीतल जलपान करके वा औटाया दूध पीकर कामीजन रूपवती स्त्रीमे गमन करे, यत्नपूर्वक रातके समय प्रेम और धीरतासे सेवन करे । ग्रीष्मकालकी यह विधि है कि, अतिप्रसग वर्जित करना दिन में एकवार भी स्त्रीसग करे तो धातुओकी वैषम्यता हो जाती है ॥ ८४ ॥

अन्यथास्त्रीसङ्गमे दोष

ग्लानिः कम्पोरुदौर्बल्य धात्विन्द्रियबलक्षयः ।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या रोगाश्चातीव दुर्जयाः ॥
अकालमरणं चैव भजतः स्त्रियमन्यथा ॥ ८५ ॥

जो इससे अन्यथा स्त्रियोको सेवन करते है उनको ग्लानि, कम्प, दुर्बलता, धातु इन्द्रियोका बलक्षय होता है तथा क्षय, अंडवृद्धि, उपदंशादि दुर्जय रोग होते है और अकालमें मरण भी होता है ॥ ८५॥

शोषकासज्वरार्शांसि श्वासकार्श्यातिपाण्डुता ।
अतिव्यवायाज्जायन्ते रोगाश्च क्षयकादयः ॥ ८६ ॥
असेवनान्मोहमदौ ग्रन्थिरग्नेश्च मार्दवम् ।
त्यजेच्चिन्ततावशुचितां शोकाध्यक्षं च मैथुनम् ।
जरायाश्चिन्तया शुक्रं व्याधिभिः कर्मकर्षणात् ॥ ८७ ॥
क्षयं गच्छत्यनशनात्स्त्रीणां चैवातिसेवनात् ।
क्षयाद्भयादविश्वासाच्छोकस्त्रीदोषदर्शनात् ।
नारीणामवसन्नत्वादभिघातादसेवनात् ॥ ८८ ॥

शोषरोग, कास, श्वास, ज्वर, बवासीर आदि पाण्डुरोग होता है । अति रति करनेसे क्षयादि रोग होजाते है, विना सेवनसे मोह, मद, ग्रन्थि आदि तथा अग्निकी मन्दता होती है । मनुष्य चिन्ता, मैथुनका

ध्यान त्याग दे, जराकी चिन्तासे वीर्य क्षीण होता है, व्याधियोंसे और अतिकर्मसे भोजन न करनेसे और स्त्रीके अति सेवन करनेसे क्षय, भय और अविश्वास तथा शोक स्त्रीदोष देखनेसे क्षीणता होती है तथा स्त्रियोंको समीपमें रखनेसे, अभिघातसे असेवनसे, क्षय होता ॥ ८६-८८ ॥

वाजीकरणयोग्या स्त्री

रूपयौवनसौन्दर्यलक्षणैर्या विभूषिता ।
या वश्या शिक्षिता या च सा स्त्री वृष्यतमा मता ॥ ८९ ॥

जो यौवनसम्पन्न और सौंदर्य लक्षणोसे विभूषित है, जो स्त्री वशीभूत व शिक्षित है, वह अपने वशमें होनेसे वाजीकरणके योग्या है ८९॥

वाजीकरणयोग्या

स्त्रीषु क्षयं गतवतां वृद्धानां चरितश्रिताम्[1] ।
क्षीणानामल्पशुक्राणां स्त्री क्षीणाश्च ये नराः ॥ ९० ॥
विलासिनामर्थवतां यौवने बलशालिनाम् ।
बहुपत्नीवतां नृणां योगा वाजिकरा हिताः ॥ ९१ ॥

स्त्रीजनोमे जिसका वीर्य अल्प होगया है, तथा जो वृद्ध है अतिव्यायायी है क्षीण हैं अल्पवीर्य है तथा जो मनुष्य स्त्रीमें क्षीण है, विलासी, अर्थवाले, यौवनवाले पुरुष, बहुत, स्त्रीजनोके पतिवाले पुरुषोको वाजीकरणयोग हितकारक है ॥ ९० ॥ ९१ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डि ज्वालाप्रसादमिश्रकृत-भाषाटीकाया मोहनादिवर्णन नाम षष्ठोपदेश ॥ ६ ॥

---

१ मृगयताम् इति पाठान्तरम् ।

सप्तमोपदेश

अथ गाढीकरणम्

तत्र भक्ष्यनिषेध

अत्यन्तमूलकटुतिक्तकषायमम्लं
क्षारं च शाकखदिरं लवणाधिकं च ।
कामी सदैव रतिनान्वनिताभिलाषी
नो भक्षयेदिति समस्तजनप्रसिद्धः ॥ १ ॥

अथ वीर्यगाढीकरण । तहां भक्ष्यनिषेध—अत्यन्त मूल, कडवी, कसैली, अम्ल, खारी, शाक, खैर, अत्यन्त नमकीन वस्तु इतनी वस्तुओंको रतिकी अभिलाषा करनेवाला पुरुष सेवन न करे ॥ १ ॥

प्रौढाङ्गनाया नवसूतिकायाः श्लथं वराङ्गं न
सुखाय यूनाम् । तस्मान्नरैर्भेषजतो विधेया गाढी
क्रिया मन्मथमन्दिरस्य ॥ २ ॥

प्रौढा स्त्री, नवीन प्रसूता स्त्री इनका वरांग शिथिल होजानेके कारण युवा पुरुषोंको सुखदायक नहीं होता इस कारण मदनमंदिरका संकोच करना चाहिये ॥ २ ॥

निशाद्वयं पङ्कजकेशरञ्च निष्पीड्य देवद्रुमतुल्य-
भागम् । अनेन लिप्तं मदनातपत्रं प्रयाति संकोच-
मलं युवत्याः ॥ ३ ॥

दोनों हलदी, कमल, केशर, देवदारु इनको तुल्य भाग लेकर काममंदिरमें लेप करनेसे संकोच होकर निर्मलता होती है ॥ ३ ॥

सधातकीपुष्पफलत्रिकोण जम्बूत्वचा साररसं घृतेन । लिप्त्वा वराङ्गं मधुकेन तुल्यं वृद्धापि कन्येव भवेत् पुरन्ध्री ॥ ४ ॥

धायके फूल, हरड, बहेडा, आमला, जामुनकी त्वचा, लोहसार, घृत और मुलहठी इनका लेप वारंवार करनेसे वृद्धा स्त्रीभी कन्याके समान होजाती है ॥ ४ ॥

पिकाक्षबीजेन मनोजगेहं विलिप्य योषा नियमं चरन्ती । हठेन गाढं लभते तदङ्गं दृष्टं नरैरेष हठेन योगः ॥ ५ ॥

शिलारस और रुद्राक्षके बीजोसे कामसंदिरपर लेप कर उक्त नियमको करनेसे अवश्य मदनमंदिर संकुचित हो जाता है, यह योग श्रेष्ठ है ॥ ५ ॥

मृणालपद्मं पयसा सुपिष्य दृढा समाङ्गी गुटिका विधेया। यस्या वराङ्गे निहिता क्षणेन कन्यात्वमेत्याह स मूलदेवः ॥ ६ ॥

कमलको जडसहित जलसे पीसके और उसकी गुटिका बनाकर जिसके काममंदिरमें क्षणमात्रको रखदे वह कन्यावत हो जाती है। ऐसा मूलदेवने कहा है ॥ ६ ॥

इक्ष्वाकुबीजं स्नुहिसारवेण पिष्ट्वा वराङ्गं परिलिप्य तेन । नवप्रसूतापि हठेन नारी कन्या भवेत् संयमतो न चित्रम् ॥ ७ ॥

कडवी तुम्बीके बीज, सेहुंडी, सारिवाके साथ पीसकर योनिपर लेप करनेसे नवप्रसूता स्त्रीकाभी कामभवन कन्याके समान हो जाता है ॥ ७ ॥

इन्दीवरव्याघ्रिवचोषणानां तुरङ्गमारासनयामिनी-
नाम् । लेपेन नार्याः स्मरसद्मरन्ध्रं संकोचयत्याशु
हठेन योगः ॥ ८ ॥

नीलकमल, कटेरी, वच, कालो मिरच, कनेर, असन, हल्दी ये सब वस्तु लेप करनेसे तत्काल स्त्रीका काममन्दिर संकुचित हो जाता है ॥ ८ ॥

या शक्रगोपं स्वयमेव पिष्ट्वा विलिपति स्त्री च
वराङ्गदेशम् । आहत्य तस्याः कठिनं च गाढं
भवेन्न चात्रास्ति विचारचर्या ॥ ९ ॥

वीरवहूटीको पीसकर जो स्त्री रतिमंदिरपर लेप करती है उसका मदनमंदिर मनोहर और सकुचित हो जाता है इसमें आश्चर्य नहीं ॥ ९ ॥

मदनकथन सारः क्षौद्रतुल्यैर्वराङ्गं
शिथिलितमपि यस्याः पूरितं भूय एव ।
भवति कठिनमुच्चैः कर्कशं कामिनीना-
मिति निगदति योगं रन्तिदेवो नरेन्द्रः ॥ १० ॥

मैनफल, कथानसार यह बराबर शहद डालकर जो काममंदिरमें लेप करे तो वह स्थान कर्कश और कठोर होजाता है, यह योग रति-देव नरेन्द्रने कहा है ॥ १० ॥

अश्वगन्धैर्लिपैद्योनिं गाढीकरणमुत्तमम् ॥

असगंधका योनिपर लेप करे तो योनि गाढी होती है ॥

अथ स्त्रीद्रावणम्

यद्यप्यष्टगुणाधिको निगदितः कामोऽङ्गनानां
सदा नो याति द्रवतां तथापि झटितिस्त्री कामिनां

संगमे । तस्माद्भेषजसंप्रयोगविधिना संक्षेपतो द्रावणं किञ्चित्पल्लवयामि नीरजदृशां प्रीत्या परं कामिनाम् ॥ ११ ॥

यद्यपि स्त्रियोको कामदेव आठ गुणा अधिक कहा है तथापि संगममें द्रवीभूत नहीं होती हे इस कारण संक्षेपसे द्रवीभूत होनेको औषधी कहते हे, जिसके होनेसे कामिनियोंको परम प्रीति प्राप्त होती है ॥ ११ ॥

सिन्दूरचिंचाफलमाक्षिकाणि तुल्यानि यस्या मदनातपत्रे । प्रलिप्य तासां पुरुषप्रसङ्गात्प्रागेव वीर्यच्युतिमातनोति ॥ १२ ॥

सिंदूर, इमलीका फल, शहद इनको बराबर ले कामध्वजपर लेप कर स्त्रीसे रति करे तो शीघ्रही स्त्री द्रवीभूत होजाती है ॥ १२ ॥

व्योषं रजः क्षौद्रसमन्वितं वा क्षिप्तं यदि स्यात्स्मरयंत्रगेहे । द्रुता भवेत्सा सहसैव नारी दृष्टः सदायं किल योगराजः ॥ १३ ॥

त्रिकुटेका चूर्ण शहदके साथ रतिस्थानमें डालनेसे पुरुषके प्रसंगमें स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूत हो जाती है । यह योगराज देखा गया है ॥ १३ ॥

सुपक्वचिञ्चाफलघोषमूली गुडं तथा माक्षिकतुल्यभागम् । अमीभिरालिप्य पुनः सुलिङ्गं बीजं करोत्याशु नितम्बिनीनाम् ॥ १४ ॥

पक्के इमलीके फल, मूली, गुड, शहद ये सब वस्तु कामध्वजपर लेप कर रति करनेसे स्त्री शीघ्र द्रवीभूत होती है ॥ १४ ॥

सटी कणा क्षौद्रमहेशबीजैः कर्पुरतुल्यैरुपलिप्य लिंगम् । शतं नरो यः सविलासिनीनां रेतः प्रपातं कुरुते हठेन ॥ १५ ॥

कचूर पीपल, शहद, पारा, कपूर ये सब कामध्वजपर लेपन करजो पुरुष रति करता हे वह सो स्त्रियोंको द्रवीभूत करसकत्ता है ॥ १५ ॥

पारावतपुरीषं च मधुना सैन्धवैर्युतम् ।
लिंगस्य लेपनात्तेन स्त्रीणां द्रावणमुत्तमम् ॥ १६ ॥

कबूतरकी वीट, शहद, सेंधा ये कामध्वजपर लेपकर रति करनेसे स्त्री द्रवीभूत हो जाती है ॥ १६ ॥

गोक्षुवार्ताक्यपामार्गरसेन लिंगलेपनात् ।
तत्क्षणाद्द्रवते नारी पद्मपत्रे यथा पयः ॥ १७ ॥

गोखरू, वैंगन और अपामार्गके रसका कामध्वजपर लेप करनेसे उसी क्षण स्त्री ऐसी द्रवीभूत हो जाती है जैसे कमलपत्र-पर जल ॥ १७ ॥

पिप्पली चन्दनं चैव बृहती पक्वातन्तिडी ।
एतैर्लिङ्गप्रलेपेन द्रवेन्नारी न संशयः ॥ १८ ॥

पीपली, लालचन्दन, कटेहरी, पक्की इमली इनका कामध्वजपर लेप करनेसे स्त्री द्रवीभूत होजाती है, इसमें सन्देह नही ॥ १८ ॥

अगस्तिपत्रद्रवसंयुतेन मध्वाज्यसंमश्रितकंटकणेन ।
लिप्त्वा ध्वजं यो रमतेऽङ्गनानां स शुक्रमाकर्षात शीघ्रमेव ॥ १९ ॥

अगस्तिके पत्तोके रसके सहित उसमें मधु घृत और सुहागा मिला कर जो स्त्रियोसे रमण करते हैं उनसे बहुत शीघ्र स्त्री द्रवीभूत होती है ।। १९ ।।

सलोध्रधत्तूरकपिप्पलीनां क्षुद्रोषणक्षौद्रविमिश्रितानाम् ।
लेपेन लिंगस्य करोति रेतश्च्यूति विपक्षप्रमदाजनस्य ।।२०

लोध, धतूरा, पीपली, कटेहरी, पीपलामूल इनमें शहद मिलाय लेप कर जो रति करता है उससे स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूत होजाती है ।। २० ।।

तुरगसलिलमध्ये भावितं क्षेत्रमाषं
मरिचमधुकतुल्यां पिप्पलीं पेषयित्वा ।
परिरमति विलिप्य स्वीयलिङ्गं नरो यः
प्रभवति वनितानां कामकल्लोल मानः ।। २१ ।।

असगध जलके मध्यमें क्षेत्रमाष (उडद) मिरच मुसहठीके समान पीपलको पीसकर इसको कामपताकापर लेप कर स्त्रीसे विहार करनेसे स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूत होती है ।। २१ ।।

बिल्वपुष्पं सुकर्पूरं मुण्डीपुष्पं च पेषितम् ।
लिंगलेपेन रामाणां द्रावो भवति संगमे ।। २२ ।।

बेलका फूल, कपूर, मुंडीके पुष्प इनको पीसकर कामध्वजपर लेप रनेसे शीघ्र स्त्री द्रवीभूत होती है ।। २२ ।।

बृहतीफलमूलानि पिप्पल्यो मरिचानि च ।
मधु रोचनया सार्द्धं लिङ्गलेपे द्रवन्ति ताः ।। २३ ।।

कटेहरीके फल और जड, पीपल, काली मिर्च, शहद, गोरोचन ये मिलाय कामध्वजपर लेप कर रमण करनेसे स्त्री द्रवीभूत होती है ।। २३ ।।

क्षौद्रगंधकल्पेन शिलायुक्तेन तत्फलम् ।
उपहारपशो रक्तं गृह्णीयादन्तरिक्षत ॥ २४ ॥
तच्छुष्कं चूर्णितं स्थाप्यं पुष्पे रक्ताश्वमारजे ।
तत्पुष्पं धारयेद्वस्त्रे तर्ज्जन्यङ्गुष्ठयोगत ।
आवर्त्य सम्मुखं स्त्रीणां दृष्टमात्रे द्रवन्ति ता ॥ २५ ॥

शहद, गधकम नशिलके लेपसे भी कार्य सिद्ध होता है, भेटके पशुका रक्त अन्तरिक्षसे ग्रहण कर उसको सुखाय चूर्ण कर लाल कनेरके फूलमें धारणकर उसको वस्त्रमे बाध तर्जनी (अंगूठेके निकटकी अँगुली) और अँगूठेसे उसको धारण अरे ,स्त्रीके सन्मुख होतेही वह अवश्य द्रवीभूत होजाती है ॥ २४ ॥ २५ ॥

जम्बीरफलमध्ये तु मूलं वृश्चिककण्टकम् ।
क्षिप्त्वा बद्ध्वा स्त्रियै दद्याद्घ्राणमात्रे द्रवन्ति ताः॥२६॥

जम्भरी नोबूके बीचमें श्वेतपुनर्नवाकी जड रखकर बाधकर स्त्रीको दे तो सूंघनेमात्रसे द्रवीभूत होती है ॥ २६ ॥

आहरेद्वामजङ्घां तु टिट्टिभस्य तु दक्षिण ॥ २७ ॥
तन्मध्ये प्रक्षिपेद्भूर्ज्जपत्रमोङ्कारलेपितम् ।
रक्ताश्वमारपुष्पेण मुखं तस्य निरोधयेत् ।
कर्णोपरि स्थितं तेन दृष्ट्वा स्त्री द्रवति ध्रुवम् ॥ २८ ॥

टिट्टिभकी बांई जघा लाकर शुद्ध करके फिर उसके बीचमे ओंकार लिखाभोजपत्र डाल चारो ओर लेप कर रक्खे और लाल कनेरके फूलसे इसका मुख बद कर दे । उसे चतुरपुरुष कानपर रक्ख लेवे तो देखतेही स्त्री द्रवीभूत होजाती है ॥ २७ ॥ २८ ॥

जलेन लाङ्गलीमूलं पिष्ट्वा हस्ते प्रलेपयेत् ।
हस्तेन स्त्रीकरस्पर्शे द्रवत्यग्नौ घृतं यथा ॥ २९ ॥

कलिहारीकी जडको जलसे पीसकर हाथमें लेप कर ७स ८ ।स छूतेही इस प्रकार स्त्री द्रवीभूत हो जाती है जैसे अग्निसे घृत ।। २९ ।।

मरिचकनकबीजैः पिप्पलीलोध्रयुक्तै-
र्विमलमधुविमिश्रैर्मानवो लिप्तलिङ्गः।
स्मरति रतिविलासे कष्टसाध्यां च नारी
समुचितरतिरागां संविदध्यादवश्यम् ।। ३० ।।

कालीमिरच, धतूरेके बीज, पीपल, लोध ये सब पीस शहदमें मिलाकर कामध्वजपर लेप करनेसे रतियुद्धमें कठिन स्त्रीभीअवश्य पराजित होजाती है ।। ३० ।।

सर्वेषा द्रवयोगाना मन्त्रराजं शिवोदितम् ।
जपेदष्टोत्तरशतं तत्र योगस्य सिद्धये ।। ३१ ।।

इन सब द्रवीभूत होनेके योगोका एक मत्र शिवजीने कहा है जिससे ये योग सिद्ध होते है । इस योगकी सिद्धिके निमित्त एक सौ आठ वार मन्त्र जपना चाहिये ।। ३१ ।।

मन्त्र–"ॐनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय
द्रावय२स्त्रीणां मदं पातय२स्वाहा ठः ठः" ।।इति।।३२

मन्त्र यह है कि–"ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय द्रावय २ स्त्रीणा मद पातय २ स्वाहा ठ· ठ" ।इति ।। ३२ ।।

अथ कामध्वजस्थूलीकरणम्

दृढीकरण च

सकुष्ठमातङ्गबलाबलानां वचा श्वगन्धागजपिप्पलीनाम्।
तुरङ्गशत्रोर्नवनीतयोगाल्लेपेन लिङ्गं मुसलत्वमेति।।३३।

कूठ, पीपल, दोनो खरेटी, वच, असगन्धा,गजपीपल, कनेर, इनका मक्खनके साथ लेप करनेसे ध्वजा मूसलके समान कठोर होती हे ॥ ३३ ॥

दिनेदिने यदा ह्येवं सुधीः कुर्यात्प्रयत्नतः ।
तदास्थूलं भवेल्लिङ्गं निश्चितं नात्र संशयः ॥ ३४ ॥

जो बुद्धिमान् दिन दिन यत्नपूर्वक यह प्रयोग करता है तब उसकी ध्वजा स्थूल होजाती हे इसमें सन्देह नहीं ॥ ३४ ॥

सलोध्रकाश्मीरतुङ्गगन्धा मातङ्गगन्धापरिपाचि-
तेन । तैलेन वृद्धि खलु याति लिङ्गं वाराङ्गनालो-
कमनोहरं तत् ॥ ३५ ॥

लोध, केशर, असगध,पीपल, शालपर्णी इनको तेलमें पकाकर लेप करनेसे ध्वजाकी वृद्धि होती है । यह वैश्याओको मनोहर है ।

भल्लातकास्थिजलशूकमथाजपत्रमन्तर्विदाह्य
मतिमान् सह सैन्धवेन । एतद्विरूढबृहती-
फलतोयपिष्टमालेपनं महिषवद्विमलीकृतेऽङ्गे ॥
स्थूलं महत्तरतुरङ्गमतुल्यमाशु शेफः करोत्यभिमतं
न हि संशयोऽस्ति ॥ ३६ ॥

भिलावेकी मींगी, शेवाल, कमलपत्र इन तीनोको जलाकर सेंधा-निमक मिलाय और बडी कटेहरीके साथ जलसे पीसकरके आलेपन करे तो महिषकी सदृश ध्वजा होती है और तुरगके समान ध्वजा हो जाती है और दृढ होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३६ ॥

सूतकं मरिचं कुष्ठं नागरं कण्टकारिका ॥
अश्वगन्धा तिलं क्षौद्रं सैन्धवं श्वेतसर्षपाः ॥ ३७ ॥

अपामार्गो यवा माषाः पिप्पली पेषयेज्ज
लेपोऽयं कुरुते वृद्धि लिङ्गस्य दृढतां ध्रुवम् ।
मासमात्रं सदा लिप्त्वा मर्दयेच्च दिवानिशम् ।। ३८ ।।

पारा, कालीमिर्च, कूट, सोठ, कटेहरी, असगंध, तिल, शहद, सेंधा, श्वेतसरसो, चिरचिटा, जौ, उडद, पीपल इनको जलके साथ पीसकर लेप करनेमे ध्वजाकी वृद्धि और दृढता होती है, एक महीनेमात्र इसका लेप और मालिश दिन रात करना चाहिये ।। ३७ ।। ३८ ।।

वराहवसया लिङ्गं मधुना सह लेपयेत् ।
स्थूल दृढं च दीर्घ च मासाल्लिङ्गं प्रजायते ।। ३९ ।।

सूकरकी चरबी शहदसे मिलाय लेप करनेसे एक महीनेमें ध्वजा स्थूल और दृढ होजाती है ।। ३९ ।।

अश्वगन्धा वचा कुष्ठं बृहती च शतावरी ।
तिलं तैलेन संपक्वं तल्लेपः स्थूललिङ्गकृत् ।। ४० ।।

असगध, वच, कूठ, कटेरी, शतावरी, इनको तिलके तेलसे पकाकर लेप करनेसे लिग स्थूल होता है ।। ४० ।।

अश्वगंधा वरी कुष्ठं मासी सिहीफलान्वितम् ।
चतुर्गुणेन दुग्धेन तिलतैलं विपाचयेत् ।
स्तनलिङ्गकर्णपाणिवर्द्धनं भक्षणादितः ।। ४१ ।।

असगध, शतावरी, कूट, जटामांसी, कटेरीके फल इनको चौगुने दूध और तिलके तेलसे पकावे । इसके सेवनसे स्तन, ध्वज, कान, पाणि आदिकी वृद्धि हो जाती है ।। ४१ ।।

टङ्कणं च महाराष्ट्री जम्वूसूकरतैलकम् ।
मधुना सह लेपेन लिङ्गं स्यान्मुसलोपमम् ।। ४२ ।।

सुहागा, जलपीपल, जामुन, सूकरका तेल इनको शहदके साथ लेपन करनेसे ध्वजा मूसलके समान होजाती है ॥ ४२ ॥

महिषीनवनीतं च मुशलीचूर्णमिश्रितम् ॥ ४३ ॥
धान्यराशिस्थितं भाण्डे सप्ताहाच्च समुद्धरेत् ।
तेन प्रलेपयेल्लिङ्गं मासैकाद्वर्द्धते ध्रुवम् ॥ ४४ ॥

भैसके मक्खनमें मूशलीका चूर्ण मिलाकर बर्तनमें डाल धान्यमें रख दे, फिर सात दिनमे उघारकर लिगपर एक महीने लेप करनेसे अवश्य ध्वजकी वृद्धि होती है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

मुशली शीतला भक्ष्या लिङ्गवृद्धिकरी मता ।
मार*णोत्थं कृमि चैव कण्टकारीफलं जलैः ॥ ४५ ॥
पिष्ट्वा लिंगप्रलेपेन स्थूलं भवति निश्चितम् ।
तद्वच्च मुशली साज्या लेपाल्लिगस्य दार्ढ्यकृत् ॥ ४६ ॥

मुशली, आरामशीतला खानेसे लिंगकी वृद्धि करनेवाली है । धतूरा, लाख, कृमि, कटेहरीके फल इनको जलसे पीसकर लेप करनेसे कामध्वजा अवश्य स्थूल होजाती है । इसी प्रकार मुशली घृतका लेप ध्वजाको दृढ करता है ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

पिप्पलीलवणक्षीरसितालेपोपि दीर्घकृत् ।
मांसी वाक्षफलं कुष्ठमश्वगंधा शतावरी ।
तैले पक्त्वा प्रलेपेन लिङ्गंस्थौल्यकरं ध्रुवम् ॥ ४७ ॥

पीपल, सेंधालवण, दूध, मिश्री इनका लेप करनेसे ध्वजा दृढ होती है । अथवा जटामासी, बहेडा, कूठ, असगध, शतावरी इनको तेलमें पकाकर लेप करनेसे ध्वजा स्थूल हो जाती है।इसमे सन्देह नही॥४७॥

* वमनोत्थ इति वा पाठ ।

रोहितामत्स्यपित्तं तु जलौका लाङ्गली सदा ।
अनेन मर्दयेल्लिङ्गं वर्द्धते मुसलोपमम् ॥ ४८ ॥

रोहू मछलीका पित्ता, जोक और कलिहारीको ध्वजाकी जडमें मर्दन करनेसे ध्वजा मूसलके समान वृद्धिको प्राप्त होती है । ४८ ।

सूतको ह्यश्वगन्धा च रजनी गजपिप्पली ।
सितायुक्तं जलैः पिष्ट्वा मासैकं लेपयेत्तदा ॥ ४९ ॥
अद्भुतं वर्द्धयेल्लिङ्गं योनिकर्णस्तनानि च ॥ ५० ॥

पारा, असगंध, हलदी,गजपीपल, मिश्री ये सब वस्तु जलके साथ पीसकर एक महीने पर्यंत लेप करनेसे ध्वजा अद्भुत प्रकारसे बढती है तथा योनि, कान स्तन, बढते है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

यो मर्कटीमूलमजाजलेन व्यालुप्तकोशः शयने
निशायाम् । पिष्ट्वा ध्वजं लिम्पति तस्य कामं
भवेदयोदण्डमिव क्षणेन ॥ ५१ ॥

जो कौंचकी जडको अजा (मेढासिगी) औषधीके साथ (या बकरीके मूत्रके साथ) पीसकर शयनके समय रात्रिमें लेप करता है उसका मदनध्वज लोहदण्डके समान होजाता है ॥ ५१ ॥

हयारिपत्नीनवनीतमध्ये वचाबलाभागरसामयैश्च ।
लेपेन लिङ्गं सहसैव पुंसां लोहोपमं स्यादिति दृष्टमेतत् ५२

जो मनुष्य भैसीके मक्खनमें वच, खरेंटी और पारा मिलाय लेपन करे तो तत्काल मदनध्वज लोहदण्डके समान हो जाता है । यह देखा हुआ योग है ॥ ५२ ॥

कृष्णापराजितामूलं ग्राह्यं खदिरकीलकैः ।
कृष्णसूत्रैः कटि बद्ध्वा उर्द्धलिङ्गं करोति च ॥ ५३ ॥

कृष्णा, विष्णुक्रान्ताकी जड, खदिर की कीलकसे ग्रहण कर काले तागेसे कमरमें बांधे तो रतिध्वजको दृढ करती है ।। ५३ ।।

देवदालीरसं धात्री क्षीरपानत्स्थिरो ध्वजः ।
इत्येवं सर्वयागानां मन्त्रराजः शिवोदितः ।
अनेन मंत्रितं कृत्वा मासैकं लेपयेत्ततः ।। ५४ ।।

वन्दालीका रस, आमला और दूध पीनेसे ध्वजा स्थिर होती है इस प्रकार इन सब योगोमें शिवजीका कहा हुआ मंत्रराज है, इस मत्रसे अभिमंत्रित कर एक मास पर्यन्त लेपन करे ।। ५४ ।।

मंत्रराज :-"ॐनमो भगवतेउड्डामहेश्वराय सव
सव प्रसव कुरु स्वाहा ठःठः" ।।

मंत्रराज·-"!ॐनमो भगवते उड्डामहेश्वराय सव सव प्रसव प्रसव कुरु कुरु स्वाहा ठः ठ." ।।

दृढीकरणं तु विनामंत्रेण कार्यम् ।। इति लिङ्ग-
स्थूली कारणम् (दृढीकरणम्) ।।

दृढीकरण तो विना मंत्रसेही करे ।।

इतिलिङ्गस्थूलीकरणम्

अथ स्तनवर्द्धनम्

उत्थापनच

मातङ्गकृष्णाप्यधवाजगन्धा वचायुता पर्युषिताम्बुमिश्रा ।
हयारिपत्नीनवनीतयोगात्कुर्वन्ति पीनं कुचकुम्भयुग्मम् ।।५५

गजपीपल, असगंध, वचा इन सबोको मिलाकर भैसके मक्खनके साथ कुचोमें लगानेसे ये शीघ्र दोनो स्तनोको कुम्भके समान दृढ करते है ।। ५५ ।।

तैलं वचादाडिमकल्कसिद्धं सिद्धार्थजं लेपनतो
नितान्तम् । नारीकुचौ चारुतरौ च पीनौ कुर्या-
दसौ योगवरः प्रदिष्टः ।। ५६ ।।

वच, दाडिम इनको सरसोके तेलमें पकाय इनका लेप करनेसे स्त्रीके स्तन अत्यन्त सुन्दर पुष्ट होते हैं, यह प्रयोग बहुत श्रेष्ठ कहा है ।। ५६ ।।

श्रीपर्णिकाया रसकं तु सिद्धं तिलोद्भवं तैलवरं
प्रदिष्टम् । लेपेन वक्षोजयुगे च शीघ्रं वृद्धिं प्रयातः
पतिते रमण्याः ।। ५७ ।।

श्रीपर्णी (कम्भारीके) रसमें सिद्ध कर तेल बनाले इसको दोनो उरोजोपर लगानेसे गिरे हुए भी स्त्रीके कुच उठ आते हैं ।। ५७ ।।

प्रथमकुसुमकाले नस्ययोगेन पीतं
सनियममथवा स्यात्तन्दुलाम्भो युवत्याः ।
कुचयुगलसपीनंक्वापि नो याति पातं
कथित इति पुरैवं चक्रदत्तेन योगः ।। ५८ ।।
शालितन्दुलोदकं कर्षमात्रं वामदक्षिणा नासाभ्यां
नस्यं देयम् ।।

अथवा प्रथम रजोदर्शनके समय युवती चावलोका जल नस्य योगसे नियमपूर्वक सेवन करे तो किसी समयमेंभी उसके कुचोकापतन नहीं होता है यह योग चक्रदत्तने कहा है । शालितण्डुलका जल एक कर्ष बांई दाहिनी नासिकाके छिद्रसे नासलेना चाहिये ।। ५८ ।।

*मुण्डीचूर्णं दशपलं तोयैश्चतुर्गुणैः पचेत् ।
अर्द्धशेषं हरेत्क्वाथं क्वाथार्द्धं तिलतैलकम् ॥ ५९ ॥
तैलशेषं पचेत्तेन नस्यं पानं च कारयेत् ।
पतितं यौवनं स्त्रीणां मासादुत्तिष्ठते ध्रुवम् ॥ ६० ॥

दश पल मुण्डी वा सोठका चूर्ण लेकर उसे चौगुने जलमें पकावे आधा रहजाय तब इसमें तिलका तेल डालदे जब क्वाथ जलजाय तेलमात्र रसजाय तब उसको नस्य और काममें लावे, इसके गिरे हुये स्त्रीके कुच एक महीनेसे फिर उठ आते है ॥५९-६० ॥

श्यामा निशा बला लाजा लवणं क्वाथयेत्समम् ।
तोये चतुर्गुणे पाच्यं पादशेषं समाहरेत् ॥ ६१ ॥
तिलतैलं क्वाथपादं तैलार्द्धं महिषीघृतम् ।
स्नेहशेषं पचेत्तैलं नस्येन मासमात्रतः ॥ ६२ ॥
बालास्त्रीवृद्धनारीणां यौवनं कुरुतेऽद्भुतम् ॥ ६३ ॥

प्रियगु, हलदी, खिरेंटी, खील, सैंध इनका क्वाथ करके चौगुने पानीमें पकावे जब चौथाई रहजाय तब तिलका तेल उसमें डालकर क्वाथ करे तेलसे आधा भैंसका घी ले और जब रस जल जाय तेलमात्र रह जाय तब एक मासेभर नस्य लेय तो बाला स्त्री और वृद्ध स्त्रियोंके यौवन अद्भुत होजाते है ॥ ६१-६३ ॥

एरण्डतैलं शकुलस्य तैलं तथामबिल्वस्य रसं गृहीत्वा ।
संसर्द्दयेदूर्ध्वगहस्तकेन तदा स्तनं स्यात्पतितं नवं वै ॥६४॥

एरण्डका तेल, शीलमत्स्यका तेल और बेलका रस इनको ग्रहण कर ऊपर किये हुए हाथसे कुचोपर मर्दन करनेसे गिरे हुये स्तनभी नवीन होजाते हैं ॥ ६४ ॥

---

* शण्डी चूर्ण इति वा पाठ ।

श्रीपर्णीरसकर्काभ्यां तैलं सिद्धं तिलोद्भवम् ।
तत्तैलं तिलके नापि स्तनस्योपरि दापयेत् ।। ६५ ।।
काठिन्यं वृद्धतां यातः पतितौ चोत्थितौ च तौ ।
वृद्धायाः कन्यकाया वा ह्यबलायाः पयोधरौ ।। ६६ ।।

श्रीपर्णी (गभारी) का, रस ककट वृक्ष और तिलका तेल लेकर पकावे और उसे स्तनपर लगावे तो स्तन कठिन और वृद्धिको प्राप्त होते हैं और वृद्ध वा कन्याके पयोधर पतित होजाय तो भी वे उठि आते हैं ।। ६५ ।। ६६ ।।

श्वेतोब्दकुसुमं नित्यं कृष्णधेनुपयोयुतम् ।
पिष्ट्वा स्तनयुगे देयं भवेत्पीनपयोधरा ।। ६७ ।।

श्वेत मोथेके फूलको काली गौके दूधके साथ पीसकर दोनो स्तनो पर लेप करनेसे पुष्ट होजाते हैं ।। ६७ ।।

वचाश्वगन्धासंयुक्ता चाश्वारिपत्रकं तथा ।
गजपिप्पलिकायुक्तं सद्योभिन्नजलेन च ।। ६८ ।।
पेषयित्वा विधानेन लेपयेत्स्तनमण्डले ।
नयत्ते तु कदाचिद्वै ताम्रतालफलं तथा ।। ६९ ।।

वच, असगन्ध, असगन्धके पत्ते, गजपीपलके सहित जलसे पीसकर स्तनमण्डलमें लेप करनेसे स्तन पके हुए ताल फलके समान उन्नत होजाते हैं ।। ६८ ।। ६९ ।।

गंभारिपत्रसुरसं तत्समं तिलतैलकम् ।
समानं जलभागं च दत्त्वा पाकं समाचरेत् ।। ७० ।।
तैलशेषं परिज्ञाय वस्त्रेण शोधयेत्कुचौ ।
दिवाप्रलेपनादेव लोहत्वं जायतेऽचिरात् ।। ७१ ।।

गंभारीके पत्रका रस, तिलका तेल इनके बराबर जल लेकर पाक करे तब तेलमात्र शेष रहजाय तब वस्त्रसे छानकर स्तनपर लेप करनेसे स्तन लोहके समान कठोर हो जाते है ॥७०-७१ ॥
इति स्तनवर्द्धनं स्तनोत्थापनम् ॥

अथ योनिसंस्कारः

प्रक्षालयेन्निम्बकषायतोयैर्निशाज्यकृष्णागुरु-
गुग्गुलूनाम् । धूपेन योनिं निशि धूपयित्वा
नारी प्रमोदं विदधाति भर्तुः ॥ ७२ ॥

नीमके काढेसे योनिको धोना चाहिये अथवा नीम, हलदी, घृत, काला अगुरु, गूगल इनकी धूप योनिमें देनेसे स्त्री अपने भर्ताको प्रमोद प्राप्त करती है ॥ ७२ ॥

प्रक्षाल्य निम्बस्य जलेन भूयस्तस्यैव वल्केन
विलेपयेच्च । त्यजेच्च रत्याश्चिरकालभूतं गन्धं वरा-
ङ्गस्य न संशयोऽत्र ॥ ७३ ॥

नीमके जलसे प्रक्षालन करके और नीमके छालका लेप करनेसे चिरकाल योनिकी दुर्गन्ध नष्ट होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ७३ ॥

लोमशातनविधि

पलाशभस्मान्विततालचूर्णं रम्भाम्बुमिश्रैरुप-
लिप्य भूयः । कन्दर्पगेहं मृगलोचनानां रोमाणि
रोहन्ति कदापि नैव ॥ ७४ ॥

ढाककी भस्म, हरतालकी भस्म इन दोनोको केलेके जलसे पीस लेप करनेसे स्त्रियोके मदनमदिरके रोम कदापि नहीं जमते है ॥ ७४ ॥

एकः प्रदेयो हरितालभागः पञ्च प्रदेया जलजस्य

भागाः । सवस्तरोर्भस्मन एव पञ्च प्रोक्ताश्च भागाः कदलोजलार्द्राः ।। ७५ ।। संसिद्धपात्रेषु च सप्त-घस्रं कृत्वा स्मरागारविलेपनं च । रोमाणि सर्वाणि विलासिनीना पुनर्न रोहंति कदाचिदेव ।। ७६ ।।

हरिताल एक भाग, शखकीभस्म पाच भाग, सवस्तरु (पिलखन) की भस्म पाच भाग इनको केलेके जलमें अच्छे पात्रमें छानकर उसको सात दिन लेप करने स्त्रियोके मदनस्थानमें कभी रोम नहीं जमते है ।। ७५-७६ ।।

रम्भाजलैस्सप्तदिनं विभाव्य भस्मानि कम्बोर्म-सृणानि पश्चात् । नलेन युक्तानि विलेपनेन रोमाणि निर्मुलयति क्षणेन ।। ७७ ।।

केलेके जलमें सात दिनतक शंखकी भस्मको भावना दे और नल (खस) तृणसे युक्त कर लेप करनेसे फिर रोम कभी नहीं जमते और क्षणमात्रमें निर्मूल होजाते है ।। ७७ ।।

तालकं शङ्खचूर्ण तु मंजिष्ठाभस्म किंशुकम् ।
समभागप्रलेपेन रोमखण्डनमुत्तमम् ।। ७८ ।।

हरताल, शखका चूर्ण, मंजीठ, टेसूकी भस्म इनको समान भाग लेकर जलसे लेप करनेसे रोम दूर हो जाते है ।। ७८ ।।

तालकं शंखचूर्णं तु पिष्ट्वा च क्षारतोयकैः ।
तेन लिप्त्वा कचा घर्मे स्थिते गच्छन्ति तत्क्षणात् ।। ७९ ।।

हरताल, शंखका चूर्ण इनको खारी जलसे साथ पीसकर लेप करके-धूपमें स्थित होनेसे बाल उखड जाते है ।। ७९ ।।

पूगवृक्षस्य पत्रोत्थद्रवैः पिष्ट्वा तु गन्धकम् ।
तेन लिप्त्वा स्थिते घर्मे रोमखण्डनमुत्तमम् ॥ ८० ॥

सुपारीके पेडके पत्तोके रसमें गधक पीसकर लेप कर धूपमें स्थित होनेसे रोम उड जाते है ॥ ८० ॥

नराणां खण्डकेशाना छुच्छुन्दर्याश्च तैलतः ।
न निर्यान्ति पुनर्लेपात्त्रिसप्ताहे कृते सति ॥ ८१ ॥

जिनके खण्डकेश होगये हो उनको छुछुदरके तेलको तीन सप्ताहतक लगानेसे बाल नहीं जमते है ॥ ८१ ॥

कुसुंभतैलतप्तानां सप्तवारं तथा गुणम् ॥ ८२ ॥

कुसुम्भके तेलको तप्त करके सातवार लगानेसे भी यही गुण है ॥ ८२ ॥

सद्योजातस्य महिषीवत्सस्य मलमाहरेत् ।
तल्लिप्त्वा वेष्टयेद्रात्रौ केशान्वातारिपत्रताः ॥
प्रातस्तप्तोदकैः शष्पाः पतंत्यामूलतोत्थिताः ॥ ८३ ॥

तत्कालमें उत्पन्न हुए भैसके बच्चेका गोबर लावे रात्रिमें इसको बालोपर लेपकर एरण्डके पत्तोसे ढक देवे फिर प्रात.काल गरम पानीसे धोनेसे बाल जडसे गिरजाते है ॥ ८३ ॥

पिपीलिकानां कृष्णानां स्थूलानां भूगृहं हरेत् ।
छायाशुष्कं च तच्चूर्णं पञ्चाहं लेपयेत्सदा ॥ ८४ ॥
पूर्ववत्खण्डकेशानां न पुना रोहणं भवेत् ॥ ८५ ॥

बडी काली चैंटीके रहनेके स्थानकी मट्टी लाय छायामें सुखावे उसका चूर्ण करले फिर पांच दिन लेप करे तो पूर्वमें खण्ड हुए बाल फिर नही जमते है । ॥ ८४ ॥८५॥

शंखं तालं यवं गुञ्जां काञ्जिकैः पेषयेत्सदा ।
लेपात्पतन्तिरोमाणि पक्वपत्रमिव द्रुमात् ।
लेपानाद्धन्ति केशाश्च कटुतैलेर्मनश्शिला ।। ८६ ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने गाढीकरणादिवर्णन नाम सप्तमोपदेश ।।

शंखकीभस्म, हरताल, इन्द्रजौ, गुंजा इनको कांचीके साथ सदा पीस इसके लेपसे तथा बालोपर कडवा तेल और मनशिलाका लेप करनेसे बाल गिरजाते हैं । इति लोमशातन ।। ८६ ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-भाषाटीकाया गाढीकरणादि वर्णन नाम सप्तमोपदेश ।। १ ।।

अष्टमोपदेशः

अथ षण्डीकरणम्

तच्छमन च

नरो मूत्रयते यत्र कृष्णं तत्र तु वृश्चिकम् ।
निखन्याज्जायते षण्ढ उद्धृते तु पुनः सुखी ।। १ ।।

जहा मनुष्य मूत्र करता है वहां काला बिच्छू गाड देनेसे नपुंसक हो जाता है फिर उखाडनेसे सुखी होता है ।। १ ।।

अजामूत्रेण संभाव्यं निशि षड्बिन्दुचूर्णितम् ।
खानपानप्रयोगेण षण्ढत्वं जायते नृणाम् ।। २ ।।

षड्बिन्दुका चूर्ण बकरीके मूत्रमें भावना देकर रात्रिमें खान पानमें प्रयोग करनेसे मनुष्यको नपुंसकता होती है ।। २ ।।

तिलगोक्षुरयोश्चूर्णं छागदुग्धेन पाचितम् ।
शीतलं मधुना युक्तं पिबेत् षण्ढत्वशान्तये ॥ ३ ॥

तिल, गोखरूका चूर्ण, बकरीके दूधमें पकाय शीतल कर शहदके साथ पिये तो षढपन शांत हो जाता है ॥ ३ ॥

जलौकादग्धचूर्णं तु नवनीतेन भक्षितम् ।
यावज्जीवं न सन्देहः षण्ढत्वं प्राप्नुयान्नरः ॥ ४ ॥

जलौका और कत्तृणका चूर्ण मक्खनके साथ भक्षण करनेसे मनुष्य जीवनपर्यन्त षढ हो जाता है, इसमें सन्देह नही ॥ ४ ॥

धत्तूरपुष्पभक्ष्येण पुनः संपद्यते सुखम् ॥ ५ ॥

फिर धतूरेके फूलोका भक्षण करनेसे सुखी होता है ॥ ५ ॥

यो गोविषाणं पतितं च घृष्ट्वा लिपेद्रतौ स्वस्य
मनोभवास्त्रे । एकान्तकं तत्कुरुतेऽन्यपत्न्या
नोत्तिष्ठते तामपहाय पत्नीम् ॥ ६ ॥

गिरेहुए गौके सींगको घिसकर रति करनेके समय कामास्त्र (शिश्न) पर लेप करनेसे फिर वह उस स्त्रीको छोडकर कभी दूसरेसे रति नहीं कर सकता है ॥ ६ ॥

अत्युन्नतं चापरगोविषाणं घृष्ट्वा पुनस्तेन विलिप्य
लिङ्गम् । प्रयाति भूयः प्रकृतं तदङ्गं दृष्टो नरैरेष
सदा प्रयोगः ॥ ७ ॥

फिर उससे बडे दूसरे सींगको घिसकर कामास्त्रपर लेप करनेस फिर अपनी प्रकृत्तिको प्राप्त होता है, यह प्रयोग देखा हुआ है ॥ ७ ॥

निशाविचूर्णं घनसारचूर्णं समीकृतं बस्तपयो-
वियुक्तम् । भक्तं निपीतं कुरुत्ते निकामं नरस्य
षण्ढत्वमिति प्रसिद्धम् ॥ ८॥

हलदीका चूर्ण, कपूरका चूर्ण ये समान भाग लेकर दूधसे पान करनेसे मनुष्यको षढ अर्थात् हिजडा कर देता है,इसमें सन्देह नहीं ॥ ८ ॥

तिलस्य दण्डाविटपस्य चूर्णं प्रसाधि रम्भापयसो ऽर्द्धमासम् । सयावकं शर्करयान्वितं च पीत्वा हरेत् षण्ढकतामवाप्य ॥ ९ ॥

तिल और नागबलाका चूर्ण करके केलेके रसमें लाक्षा रसके सहित भावित करे, यह आधे महीनेकेतक शर्कराके साथ पीनेसे षढपन दूर होजाता है ॥ ९ ॥ इति षढीकरणं तच्छमनश्च ॥

अथ दुष्टस्त्रीकृतध्वजपातोत्थापनम्

भूमिचम्पकमूलं च सगुवाकं समं तथा ।
तद्भक्षणाद्भवेत्सद्यो लिङ्गोत्थानं न संशयः ॥ १० ॥
रक्तशाल्मलिमूलं तु शिवं दुर्गां विनायकम् ।
सम्पूज्य विविधैर्द्रव्यैर्निमंत्र्य निशि संयतः ॥ ११ ॥
प्रातस्त्वचं हरेत्सम्यक् शुष्कं कुर्याच्च चूर्णकम् ।
घृतेन पेषितं कृत्वा सैन्धवेन सदा रुचिः ॥ १२ ॥
प्रातर्भुक्त्वा च किंचित्तु भोक्तव्यं प्रहरावधि ।
पतितस्य भवेल्लिङ्गस्योत्थानं नात्र संशयः ।
अयोमयं भवेल्लिङ्गं कोद्रवान्नं विवर्जयेत् ॥ १३ ॥

भुईचम्पेकी जड और सुपारी इनको बराबर लेकर भक्षण करनेसे ध्वजा शीघ्र उत्थित होती है ॥ शिव, दुर्गा और गणेशको विधिपूर्वक पूजनकर जितेन्द्रिय हो लालसेमलकी मूलको रात्रिमें निमंत्रण कर प्रभातकालमें रक्तसेमलकी छाल लाकर उसे सुखाय चूर्ण करे, उसको पीसकर उसमें घी और सेंधा मिलाकर कुछ प्रभातसमय फिर

...नके पीछे जाय तो पतित हुई ध्वजा उठती तथा ...के समान ...जावगी इस प्रयोगमें थोडा अत्र न जाय, दुष्ट ...प्रयोग दूर होगा ॥ १०-१२ ॥

अथ योनिबन्धन मोक्षणंच

पूर्वोत्थं लांगलीमूलं वामपादस्य पांसुकम् ।
एकत्र कारयेद्धीमान्द्वयेन गुपितसंपुटं ॥
लेपयेद्भगबन्धः स्यात्तत्रैः प्रक्षाल्य मुच्यते ॥ १४ ॥

पूर्वमें उगी हुई लागलीकी जडको और (साध्याके) वामचरणकी धूरिको एकत्र कर बुद्धिमान् इन दोनोंसे दो सीपोंको गोपित करे, इसके लेप करनेसे योनि बन्धन होती है, फिर मट्ठेसे प्रक्षालन करनेसे छूटती है ॥ १४ ॥

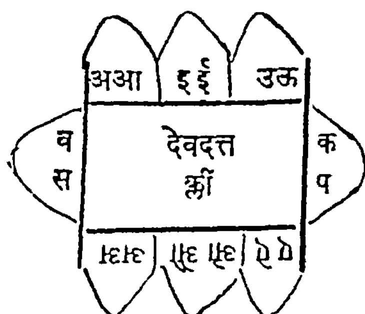
श्मशानचैलमादाय वामपादस्य पांसुकम् ।
सन्ध्यायां बन्धयेत्तेन पोटली भगबन्धनी ॥ १५ ॥
ॐ अमुकीभगं बध्नामि विस्फुरय रन्ध्रशोणितम् ।
मयाकृतं भगबन्धं नास्ति लोके चिकित्सकाः ॥ १६ ॥
पतिर्वा पतिमन्त्रो वा येचान्ये भगमर्दका. ।
सर्वे वै विमुखं यान्ति वर्जयेत्कामुकैस्तथा ॥ १७ ॥
ॐ *चिठिच्चिठिखचिटिखचिटिठःठः: प्रयोगद्वयस्यायंमंत्रः

श्मशानमेंसे वस्त्र लावे उसमें (साध्याके वामचरणके नीचेकी धूरि मिलाकर संध्याके समय पोटली बाधनेसे योनिका बन्धन होता है । "अमुको भगबध्नामि विस्फुरय रन्ध्रशोणितम् ॥ मयाकृत भगबधन नास्ति लोके चिकित्सकाः" इत्यादि ऊपर लिखा मन्त्र पढे कि, मैंने

---

* ॐ चिटि २ खचिटि ठ ठ इति च पाठ ।

अमुक स्त्रीकी योनिबन्धन की है इससे रन्ध्रशोणित स्फुरना रहित होगा, इस मेरे किये बन्धनका लोकमें कोई चिकित्सा करनेवाला नही है, पति वा पतिके मंत्र वा और भगमर्दक चिकित्सा आदि ये सपूर्ण विमुख हो जायगे, इस कारण कामुक इसमें मौन है "। चिठिचिठि खचिठि२ ठ ठ" यह दोनो प्रयोगोका मन्त्र है ।।१५-१७।। इस मत्रको कुंकुम गोरोचनसे लिख कटिमें बांधे तो बन्धन होगा, खोल देनेसे मोक्षण होगा।



वचैलाचन्दनक्षीरैः प्रक्षाल्यामर्द्दयेद्भगम् ।
यन्त्रमन्त्रादितन्त्रेण यत्किञ्चच्छत्रुणा कृतम् ।। १८ ।।
तत्तस्यैव भवेद्येन सिद्धिमन्त्रस्स उच्यते ।।
सप्तभिर्मंत्रितं तोयं शुद्धं पूतं पिबेत्तु यः ।
तस्य शत्रुकृतो दोषः शत्रुगेहे भविष्यति ।। १९ ।।

वच, इलाची, चन्दन इनको पीस दूधमें मिलाय योनिको प्रक्षालन मर्दन करे तो यन्त्र मन्त्र तन्त्र जो कुछ शत्रुने किया है वह सब इस सिद्ध प्रयोगको मन्त्रसहित करनेसे दूर होता है । नीचे लिखे मन्त्रको सात वार अभिमन्त्रित कर जो जल पिये उसके शत्रुका किया हुआ दोष शत्रुकेही मदिरमें होगा ।। १८ ।। १९ ।।

मंत्रः-"ॐ वज्रमुष्टि वज्रकीबाडी वज्रबान्धौ दश-द्वार वज्रपाणीपिबेच्चाङ्गे डाकिनी डापिनी रक्षोव सर्वाङ्गे मंत्रजयो शत्रुभयो डाकिनीवावो जानु-वायौ कालि कालि शामनते ब्रह्माकी धीशुसाशु डाकिनी मिलिकरि वरेयो मोरो जीडुभातकरेती

पत्ने पानीकरे गुआ करे याने करे सूते करे परि-
हासेकर नयन कटाक्षि करे आपोन हाथे परहाते
जियत्ति संचारे किलनी पोलनि अनिन्तुषवरीकरे
एते विज्ञान अहिननगेयो मोहिकरेत्साराकुठिति-
तस्केमसरूपद्रे । "ॐ मोसिद्धि गुरूरपायस्वीलिंगं
महादेवकी आज्ञा ॥"

मंत्र-"ॐ वज्रमुष्टि वज्रकिवाडी वज्रबाधे दश द्वार वज्रपाणी पिवेत् चागे डाकिनी डापिनी रक्षोव सर्वागे मन्त्रजयो शत्रु भयो डापिनी वावो जानुवायो कालिकालि शामनते ब्रह्माके धीशु साशु डाकिनी। मिली करिवरे योमा रोजीटुभातेकरेती पत्नेपानी करे गुआकरे याने-करे सूतेकरे परिहासेकरे नयन कटाक्षिकरे आपोन हाथेपर हाथे जयति सचारे किलनी पोतनी अनितु पवरी करे एते विज्ञान अहिननगे योमोहि करेत्साराकुठि तित्स्के मसरूपद्रे । "ॐ मोसिद्धि गुरुरपाय स्वीलिंग महादेवकी आज्ञा ॥"

एलाफलं वासवगोपचूर्णं गुप्तं क्षिपेद्योषिदुस्यस्थ-
मार्गे । तस्यैव लिंगस्य वरप्रवेशं स्यात्तत्र नान्यस्य
कदाचिदेव ॥ २० ॥

पूर्वो इलायची,इन्द्रगोप (वीरबहूटी) का चूर्ण जो स्त्रीके मदन-मंदिरके मार्गमें गुप्त डालदे तो उससे वह डालनेवाला पुरुषही रति कर सकता है अन्य कदापि कर नहीं सकता है ॥ २० ॥

गव्येन दध्ना मथितं विधाय प्रक्षालयेत्तेन तदङ्गमुच्चैः ।
भवेद्वराङ्गं प्रकृतं युवत्या इत्याह कर्त्ता हरमेखलायाः ॥२१॥

गौके दहीको मथकर उससे कामसदनको प्रक्षालन करनेसे फिर पूर्ववत् होजाता है, यह वच न हरमेखलाके कर्त्ताने कहा है ॥ २१ ॥

आकाशदेशे पतितं गृहीत्वा योषिन्नखं दन्तमलं सुपिष्ट्वा । लिप्त्वा ध्वजं तेन रमेत्ततो यां तस्याविनाशः पुरुषान्तरेण ॥ २२ ॥

आकाश देशमें गिरेहुए स्त्रीके नख, दांतके मैलको ग्रहण कर फिर पीसकर कामध्वजापर लेप करे तो उसको पुरुषान्तरकी इच्छा नहीं होती है ॥ २२ ॥

*निर्घातलोहस्य जलेन भूयः प्रक्षालनं कामगृहस्य कुर्यात् । पुनः समासादयति प्रदृष्टं नारी तदङ्गं खलु पूर्वरूपम् ॥ २३ ॥

विना घात किये लोहके जलसे कामस्थानका प्रक्षालन करे तो पतिसभोगमें स्त्री पूर्ववत् प्राप्त होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ २३ ॥

मुहुर्मुहुर्या मथितेन नारी प्रक्षालयेत्सप्तदिनानि यत्नात् । तस्यास्तदङ्गं पुनरेव भूयात्पूर्वानुरूपं नहि संशयोस्ति ॥ २४ ॥

वारंवार जो स्त्री मथित (ऊपरकी मलाई निकालकर विना पानीका विलोया हुआ छांछ) से गुप्त स्थानको सात दिनतक प्रक्षालन करे तो उसका गुह्यस्थान पूर्ववत् होजाता है इसमें सन्देह नही ॥ २४ ॥

---

* निर्वान्तलोहस्येति वा पाठ

इति योनिबंधन और उसका मोक्षण

अथ गृहकोदारकनिवारणम् ।

वधूटनीयमूलं तु तस्या हस्तेन बन्धनात् ।
गृहकोदारकं न स्याद्यावद्धस्ते बन्धनम् ॥ २५ ॥

वधूटनी (गौरीसर) की जड हाथमें जबतक बाधे रहे तबतक गृहकोदारक नही रहते है ॥ २५ ॥ इस यत्रको गोरोचन कुकुमसे भूर्जपत्र-पत्रपर लिखकर धान्य राशिमें स्थापन करनेसे गृहमें कीटादि दोष नही होते है।

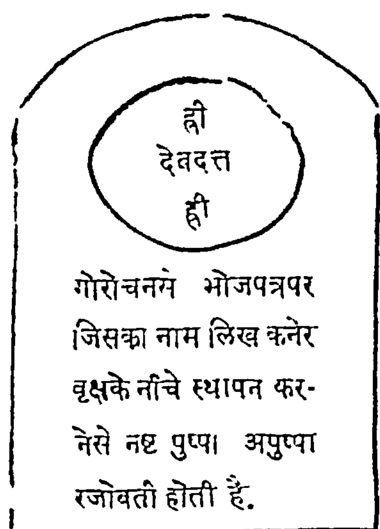
उल्लु	मुल्लु
घल्लु	णसु

अथ नष्टपुष्पाया पुष्पकरणम्

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौ भृष्टं जपायाः कुसुमं
च पिष्टम् । गृहाम्बुना पीतमिदं युवत्याः करोति
पुष्पं स्मरमन्दिरस्य ॥ २६ ॥

ज्योतिष्मती (मालकांगनी) के कोमलपत्तोको अग्निमें भूने और जपा कुसुमसे पीसकर जो स्त्री पान करती है उसका नष्टराज फिर प्रवर्तित होता है ॥ २६ ॥

लाङ्गलीकन्दचूर्ण वा अपामार्गस्य मूलकम् ।
इंद्रवारुणिकामूलं योनिस्थं पुष्पबन्धनुत् ॥ २७ ॥
पारावतपुरीषं च मधुना संपिबेत्तु यः ।
रजस्वला भवेन्नारी मूलदेवेन भाषितम् ॥ २८ ॥
तिलमूलकषायं तु ब्रह्मदण्डीयमूलकम् ।
यष्टी त्रिकटुकं चूर्णं क्वाथयुक्तं च पाययेत् ।
पुष्परोधे रक्तगुल्मे स्त्रीणां सद्यः प्रशस्यते ॥ २९ ॥



कलिहारी औषधीके कन्दका चूर्ण वा चिरटेकी जड वा इन्द्रायणकी जड योनिमें रखनेसे रजका बंधन छूटजाता है ।। कवूतरकी वीठ जो शहदमें मिलाकर पीवे वह स्त्री अवश्य रजस्वला होती है । ऐसा मूलदेवने कहा है ।। तिलके मूलका काढा वा ब्रह्मदंडीकी जड, मुलैठी, त्रिकुटा इनका चूर्ण क्वाथ करके जो पान करे तो रक्तका रोध, योनिकी ग्रथी यह शीघ्र नष्ट होजाती है ।। २७-२९ ।।

तिलक्वाथे गुडं त्र्यूषं तिलभागयुतं पिबेत् ।
क्वाथं रक्तभवे गुल्मे नष्टपुष्पे च योजयेत् ।। ३० ।।

तिलके क्वाथमें गुड, सोठ, मिरच, पीपल तिलके भागके साथ पीवे अर्थात् क्वाथ बनाय पिये तो गुल्म, नष्टपुष्प सब दूर होजाते है ।३०।।

दूर्वादलं तन्दुलतुल्यभागं निष्पिष्य पिष्टं परि-
पाचितञ्च । तद्भक्षयित्वा वनिता प्रनष्टं पुष्पं
लभेत स्वबलानुरूपम् ।। ३१ ।।

दूर्वादिल और चावल बराबर पीसकर भूने उसे खानेसे स्त्री नष्ट हुए पुष्पको अपने बलके अनुरूप प्राप्त कर लेती है यानी रजोवती होती है ।। ३१ ।। इति रजस्वलाकरणम् ।।

अथ गर्भस्रावणम्

तत्राभिनवगर्भस्रावणम्

कृते जारे क्षिपेद्योनौ तिलतैलाक्तसैन्धवम् ।
द्रवते तत्क्षणादेव शुक्रपुष्पं स्रवत्यपि ।। ३२ ।।

अथ गर्भपातनम्

जो विधवाके जारसे तत्कालका गर्भ हो तो तिलके तेलमें सेंधेको घोल कर योनिमें धरे तो उसी समय शुद्ध पुष्पका मेल पृथक् हो स्राव हो जाता है ॥ ३२ ॥

काण्डमेरण्डपत्रस्य योनावष्टाङ्गुलं क्षिपेत् ।
चातुर्मास्यो भवेद्गर्भः स्रवते तत्क्षणादपि ॥ ३३ ॥

अरंडके पत्तोंका मूठा योनिमें आठ अंगुल पर्यन्त रखनेसे चार महीनेका गर्भ उसी समय पतित होजाता है ॥ ३३ ॥

देवदालीयचूर्णं तु कर्षकं तोयपेषितम् ।
पिबेद्गर्भवती नारी गर्भं स्रवति तत्क्षणात् ॥ ३४ ॥

देवदालीका चूर्ण एक कर्ष (सोलह मासे) गर्भवती स्त्री पीवे तो उसी समय गर्भ पतित होजाता है ॥ ३४ ॥

धत्तूरमूलिका पुष्ये गृहीता कटिसंस्थिता ।
गर्भं निवारयत्येव रण्डावेश्यादियोषिताम् ॥ ३५ ॥
राजिकां तिलतैलञ्च पिष्ट्वा नारी ऋतौ पिबेत् ॥
त्रिदिनं तेन गर्भस्य संभवो नैव जायते ॥ ३६ ॥

पुष्य नक्षत्रमें लाई धतूरेकी जड कमरमें बाधनेसे रंडा वेश्यादिका गर्भ दूर करती हे । राई, तिलका तेल पीसकर स्त्री ऋतुसमयमें तीन दिन पान करे तो फिर गर्भ नहीं रहता ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

बब्बूलस्य तु पुष्पाणि गोदुग्धेन पिबेदृतौ ।
या नारी गर्भसंभूतिः पुनस्तस्या न जायते ॥ ३७ ॥
पिबेत्प्रसूतिसमये काञ्जियुक्तं जयाभवम् ।
पुष्पं न सा प्रसूति च धत्ते नो गर्भसंभवः ॥ ३८ ॥

बबूलके फूल गौके दुग्धसे ऋतुकालमें पीनेसे गर्भ नहीं रहता ॥ प्रसूति समयमें कांजीके सहित नील दूर्वा पीनेसे गर्भ नहीं रहता ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

गृहीतं रेवतीऋक्षे पिप्पलस्य च वन्दकम् ।
गोदुग्धे सोऽपि भोक्तारं महागर्भं निवारयेत् ॥ ३९ ॥

रेवती नक्षत्रमें पीपलका बन्दा लाकर गोदूधके साथ पीनेसे महागर्भ निवारण होता है ॥ ३९ ॥

निर्गुण्डीद्रवसंपिष्टं चित्रमूलं मधुप्लुतम् ॥
कर्षं भुक्त्वा पातयति गर्भं रण्डाकुलोद्भवा ॥ ४० ॥

निर्गुण्डी (सिन्धुवार) के रसमें चीतेकी जड पीस शहद मिलाय एक कर्ष मात्र खाय तो उसी समय रंडाका गर्भ गिर जाता है ॥४०॥

इति गर्भस्रावणम्

अथ रक्त-निवारणम्

धात्रीं च पथ्यांच रसाञ्जनं च कृत्वा विचूर्णं सजलं
निपीतम् । अत्यन्तरक्तोत्थितमुग्रवेगं निबारयेत्
सेतुनिवाम्बुपूरम् ॥ ४१ ॥

आमले, हरड, रसौंत इनका चूर्ण कर जलके साथसे पीने अत्यन्त रक्त जिसका जाता हो वह निवारण हो जाता है ॥ ४१ ॥

शेलुत्वचा मिश्रिततन्दुलेन विधाय पिष्टं विन-
योजनीयम् । कन्दर्पगेहे मृगलोचनाया रक्तं निह-
न्त्याशु हठेन योगः ॥ ४२ ॥

शेलु (ल्हसौडा) वृक्षकी त्वचा और सांठीके मिलाकर मृगलोचनीके योनिमें रखनेसे रक्तका वेग निवारण होता है ॥ ४२ ॥

मूलं तु शरपुङ्खायाः पेषयेत्तन्दुलोदकैः ।
पाययेत्कर्षमात्रं तदतिरक्तप्रशान्तये ॥ ४३ ॥

सरफोंकेकी जड चावलके जलके साथ पीसकर कर्षमात्र पीनेसे अधिक रक्त शान्त होजाता है ॥ ४३ ॥

कुशस्य मूलं कदलीदलं वा वला निफा वा
बदरीफलं वा । गुडूचिका तण्डुलवारिपीता
स्त्रीणामनेकं रुधिरं जयेच्च ॥ ४४ ॥

कुशकी जड, केलेका पत्ता, खिरैंटी, जटामासी, गुडूची, बदरीफल इनको चावलके जलके साथ पीनेसे रुधिरका अधिक निकलना बन्द होता है ॥ ४४ ॥

कुरण्टकस्य मूलानि मधुकः श्वेतचन्दनम् ।
युक्त्या * पिष्ट्वाक्षमात्रं तु पाययेत्तन्दुलाम्बुना ॥ ४५ ॥

कुरट (कुटज) की जड, मुलहटी, श्वेत चन्दन इनको बारीक पीस चावलके जलके साथ अक्षमात्र पीवे ॥ ४५ ॥

सकृत्पीत्वा माषयूषं प्रदरात्परिमुच्यते ।
घृतभृष्टं माषयूषभोजनं श्वेतचन्दनम् ॥ ४६ ॥
चन्दनं क्षीरसंयुक्तं सघृतं पाययेद्भिषक् ।
शर्करामधुसंयुक्तमसृक्स्रवविनाशनम् ॥ ४७ ॥

एक वारही उडदोंका क्वाथ कर उसका रस पीनेसे प्रदरसे छूट जाती है । घीमें भुना हुआ यह उडदोंका यूष और श्वेतचन्दन लेना चाहिये । क्षीरके सहित लालचन्दन और घृत पान करनेसे अथवा शर्करा और मधु पान करनेसे रुधिर पित्तविकार शान्त हो जाते है । इसमें जहा चन्दन है वहा लालचन्दन लेना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

---

* अक्षमात्रम्–कर्षमात्रम ।

दार्वीरसाञ्जनवृषाब्दकिराततबिल्वभल्लातकैरथ
कृतो मधुना कषायः । पीतो जयत्यतिबलं प्रदरं
सशूलं पीतं वितारुणविलोहितनीलकृष्णम् ।। ४८ ।।

देवदारु, रसौत, चिरायता, बेल, भिलावा, अडूसा, नागरमोथा इनका क्वाथ, कर घृत मधु डालकर पीवे तो कठिन शूल सहित पीत, श्वेत, अरुण, लाल, नील, कृष्ण सब प्रकार प्रदरके उपद्रवकी शान्ति हो जाती है ।। ४८ ।।

अशोकस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं रक्तहरं पिबेत् ।
पेटारिकायाः पत्रं च माषचूर्णेन संयुतम् ।। ४९ ।।
रम्भादलैर्वेष्टयित्वा दाहयेच्च प्रयत्नतः ।।
तस्य भक्षणमात्रेण ह्यतिरक्तनिवारणम् ।। ५० ।।

अशोककी छाल, वच इनसे सिद्ध किया दूध पीनेसे रक्तनाश हो जाता है । पेटारिकाके पत्ते उडदोके चूर्णके सहित केलेके दलसे वेष्टन करके यत्नपूर्वक जलावे, इसके भक्षणमात्रसे अतिरक्तकी निवृत्ति होती है ।। ४९ ।। ५० ।।

तन्मूलं तन्दुलै. पिष्ट्वा पिष्टकं भर्ज्जयेद्बुधः ।
तस्य भक्षणमात्रेण रक्तादिविकृतिं हरेत् ।। ५१ ।।

इस पेटारिकाकी जड चावलके साथ पीसकर इस पिट्ठीको भूनकर खाय तो खातेही रक्तादि विकृति दूर होजाती है ।। ५१ ।।

तस्य वल्कलचूर्णं तु भृष्टतन्दुलचूर्णकम् ।
भक्षणादेव तद्रक्तं स्त्रीणां शमयति ध्रुवम् ।। ५२ ।।

इसीके छालका चूर्ण तथा भूने चावलोका चूर्ण मिलाकर भक्षण करनेसे अवश्यही स्त्रियोका अतिरुधिर निकलना बन्द होजाता है ५२

शतावर्यास्तु मूलस्य निजद्रावं समाहरेत् ।
चत्वारिंशत्पलान्येवं वस्त्रपूतं प्रयत्नतः ॥ ५३ ॥
द्रवतुल्यगवां क्षीरं क्षीरस्य द्विगुणं घृतम् ।
❀ जीवंतिकोलमन्दारा अतसी क्षीरकाकुली ॥ ५४ ॥
मुद्गपर्णी माषपर्णी महामेदा शतावरी ।
द्राक्षापारशुकोर्यष्टिजीरकं प्रतिकार्षिकम् ॥ ५५ ॥
पलार्द्धं मधुकं पुष्पं सर्वमेकत्र पाचयेत् ।
घृतशेषं समुत्तार्य शीते जाते च निक्षिपेत् ॥ ५६ ॥

शतावरीकी जडका स्वरस चालीस पल ले वस्त्रसे छानलेवे, इस द्रवके तुल्य गौका क्षीर ले दूधसे दूना घृत ले और जीवन्ती, कोलमन्दार, अलसी,क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, महामेदा, शतावरी, दाख, मुनक्का, मुलहठी, जीरा इनको एक एक कर्ष, आधापल महुएके फूल इन सबको एकत्र कर पकावे । जब घृतजाय तब उतार ले ठढा होने पर पात्रामें रख छोडे ॥ ५३–५६ ॥

पलाष्टकं कणाचूर्णं क्षौद्रं वा पिप्पलाष्टकम् ।
सितादशपलं योज्यमिदं शतावरीघृतम् ॥ ५७ ॥

पीपलका चूर्ण आठ पल अथवा शहद आठ पल, मिश्री दश, पल इसमें डाल दे तो यह शतावरी घृत सिद्धि होता है ॥ ५७ ॥

लेह्यं कर्षं शमेदाशु दुस्साध्यमतिरक्तजम् ।
दोषं क्षयं च मन्दाग्नि हृद्रोगं ग्रहणीग्रहम् ।
कामलां वातरोगांश्च अश्मरी च शिरोग्रहम् ।

१ जीवन्तीशैलमज्जा ~ ‐ ।तको क्षीरकाकुली इति वा

इसका एक कर्ष सेवन करे तो रक्तदोष दूर होता है । क्षतक्षय मन्दाग्नि हृद्रोग ग्रहणीरोग दूर होता है तथा कामला वातरोग अश्मरी रोग दूर होता है ।। ५८ ।। इति रक्त निवारण ।।

अथ वन्ध्याना गर्भधारणम्

जन्मवन्ध्या काकवन्ध्या मृतवत्सा क्वचित्स्त्रियः ।
तासां पुत्रोदयार्थाय शम्भुना सूचितं पुरा ।। ५९ ।।

वन्ध्या कई प्रकारकी होती है अर्थात् जन्मवध्या काकवध्न्या मृतवत्सा (जिसके बालक नही जीते हैं) । उनके पुत्र होनेके निमित्त शिवजीने विधान सूचित किया है ।। ५९ ।।

तब प्रथम जन्मवन्ध्याचिकित्सा

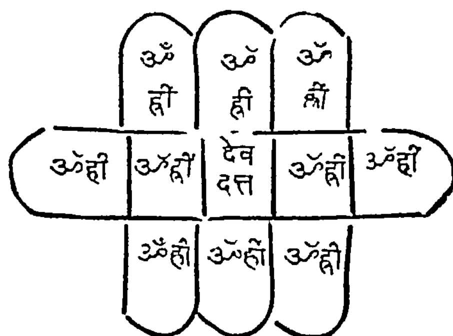
समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवा क्षीरे कन्या हस्तेन पेषयेत् ।। ६० ।।
ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या पलार्द्धं तद्दिनेदिने ।
क्षीरशाल्यमुद्गं च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ।। ६१ ।।
एवं सप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या भवति गर्भिणी ।
उद्वेगं भयशोकं च दिवानिद्रां विवर्ज्जयेत् ।। ६२ ।।

पहले जन्मवंध्याकी चिकित्सा कहते हैं—जड पत्ते सहित सुगन्ध रास्नाको रविवारके दिन उखाडकर लावे, उसको एक रंगवाली गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसवावे । ऋतुकालमें वंध्या प्रतिदिन दो दो पल इसको पान करे । दूध, शालिधान्य, मुग आदि लघु आहार करे । इस प्रकार सात दिन करनेसे वध्या स्त्री भी गर्भिणी होजाती है । औषध सेवनके समय उद्वेग भय शोक और दिनमें सोना त्याग दे । ६०–६२ ।।

न कर्म कारयेत्किञ्चिद्वर्ज्जयेच्छीतमातपम् ।
न तया परमां सेवां कारयेत्पूर्ववत्क्रियाम् ।

पतिसङ्गागदर्भलाभो नात्र कार्या विचारणा ।।६३।।

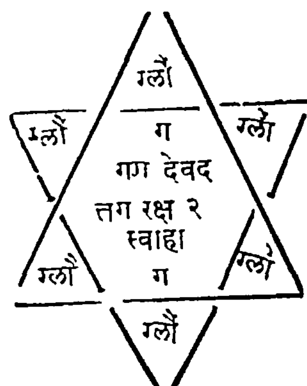
कोई काम न करे, शीत घामादिको न सहे और न कोई सेवा करावे। पूर्ववत् फिर दूसरे महीने क्रियाको करे । फिर पतिके सगसे वह गर्भको प्राप्त होती है। इसमें सन्देह नहीं ।। ६३ ।। इस यत्रको गोरोचन कुकुम और लाखसे भोजपत्रपर साध्यानाम सहित लिख पचा-



मृतमें स्थापन करे तो वह वन्ध्या गर्भणी हो, पुत्रवती हो और गर्भ रक्षा भी होती है, यह सत्य है ।।

एकमेव तु रुद्राक्षं सर्पाक्षीकर्षमात्रकम् ।। ६४ ।।
पूर्ववच्च गवां क्षीरैर्ऋतुका ले प्रदापयेत् ।
महागणेशमन्त्रेण रक्षा तस्यानुबन्धयेत् ।। ६५ ।।
एवं तप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या भवति पुत्रिणी ।
ॐ ददन्महागणपते रक्षामृतं मत्सुतं देहि ।। ६६ ।।

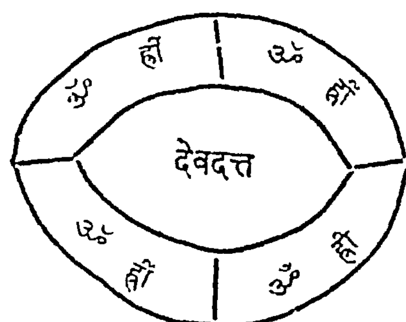
एक रुद्राक्ष और एक कर्ष सुगन्धरास्ना इनको पूर्ववत्ऋतुकालमेंगौ के दूधसे पीस कर और महाभागेशके मन्त्रसे रक्षा करै। इस प्रकार सात दिन करनेसे वन्ध्या पुत्रिणी होती है । महा-गणपति रक्षा देते है।। ६४–६६ ।। इस यन्त्रको गोरोचन और कुकुमसे



भोजपत्रपर साध्यानाम सहित लिख कण्ठमें धारण करे तो गर्भकी महा रक्षा होती है ।। यह महागणपति विद्या ।

पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम् ।
पीत्वा च लभते पुत्रं रूपवन्तं न संशयः ।
पथ्यमुक्तं यथापूर्वं तद्वत्सप्तदिनावधि ।। ६७ ।।

एक कोमल ढाकके पत्रको गर्भिणीके दूधके साथ पीनेसे रूपवान् पुत्रको प्राप्त करती है इसमें सन्देह नहो । पथ्य–जैसे पूर्वमें कहा है उसी प्रकार सात दिन पर्यन्त करे ।। ६७ ।। इस यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्रमें जिस (साध्या) का नामसहित लिख भुजामें धारण करे तो वह वन्ध्या गर्भिणी होती है, निश्चय पुत्र होता है ।।



देवदालीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।। ६८ ।।
निष्कत्रयं गवा क्षीरैः पूर्ववत्क्रमयोगतः ।
वन्ध्या च लभते पुत्रं देयं पथ्यं यथापुरा ।। ६९ ।।

जब पुष्य नक्षत्रमें सूर्य आवे तो देवदाली (बडी तोरई) की मूल ग्रहण करे । उसे गौके दूधसे तीन मासे पिये, पूर्ववत् क्रियाके योग करे तो पूर्ववत् पुत्रको प्राप्त होती है । पथ्य पूर्ववत् दे ।। ६८ ।। ६९ ।।

इस यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर साध्या-नामसहित लिख बाहु कठ या कमरमें धारण करनेसे वन्ध्या पुत्रिणी होती है ।

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०९	०३

शीततोयेन संपिष्टं शरपुंखीयमूलकम् ।
कर्षं पीत्वा लभेद्गर्भं पूर्ववत्क्रमयोगतः ।। ७० ।।

शरफोकेकी जड शीतल जलसे पीसे उस पूर्वक्रमसे एक कर्ष पीकर वन्ध्या स्त्री पुत्रको पासकती है ।। ७० ।।

मुस्ता प्रियंगुसौवीरं लाक्षाक्षौद्र समं पिवेत् ।
कर्ष तन्दुलतोयेन वन्ध्या भवति पुत्रिणी ।
पथ्यमुक्तं यथापूर्व तद्वत्सप्तदिनं पिवेत् ।। ७१ ।।

मोथा प्रियगु, सौवीर, लाख, शहद सब समान लेकर चावलके जलसे एक कर्ष पीकर सात दिन पथ्यमे रहे तो वंध्या पुत्रवती होती है ।। ७१ ।।

समूलां सहदेवी च संगृह्य पुष्यभास्करे ।। ७२ ।।
छायाशुष्कं च तच्चूर्णमेकवर्णगवां पय· ।
पूर्ववत्पिवते नारी वन्ध्या भवति गुर्विणी ।। ७३ ।।

जव सूर्य पुष्यनक्षत्रमें हो तव जडसहित सहदेईको ग्रहण कर-छायामें सुखाय चूर्ण करे । उसे गौके दूधसे वध्या स्त्री पीवे तो गर्भिणी होती है ।। ७२ ।। ७३ ।।

मूलं शिफा वा किल लक्ष्मणाया ऋतौ निपीय
त्रिदिनं पयोभिः । क्षीरान्नचर्या नियमेन भुंक्ते पुत्रं
प्रसूते वनिता न चित्रम् ।। ७४ ।।

लक्ष्मणा (श्वेतकटेरी) की जड और जटामासीके पत्ते इनको ऋतु-कालमें दूधसे तीन दिन स्त्री पान करे और दिनमें भी क्षीरादि लघु आहार करे तो उसके पुत्र होता हे, इसमें आश्चर्य नहीं ।। ७४ ।।

सपिप्पलीकेशरशृङ्गवेरं क्षुद्रोपणं गव्यघृतेन
पीतम् । वन्ध्यापि पुत्रं लभते हठेन योगस्तु सोऽयं
मुनिभिः प्रदिष्टः ।। ७५ ।।

पीपल, नागकेशर, अदरख, छोटी गोल मिर्च इनको गौके घीसे

पान करनेसे वध्याभी पुत्रको प्राप्त होती है, यह योग मुनियोंने कहा है ॥ ७५ ॥

तुरङ्गगन्धा घृतवारिसिद्धमाज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा । प्राप्नोति गर्भं नियमं चरन्ती वन्ध्या च नूनं पुरुषप्रसङ्गात् ॥ ७६ ॥

असगन्धको घृतसे भूनकर या जलसे औटाकर घृत और दूधके साथ स्नानके दिनमे पान कर नियमसे रहनेसे अवश्य वध्यास्त्री पुत्रवती होती है । इसको शयनकालमें पीवे ॥ ७६ ॥

पुष्यार्कयोगोद्धृतलक्ष्मणाया मूलं तथा वज्रतरोश्च पिष्ट्वा । अप्येकवर्णापयसा निपीतं स्त्रियः स्मृतं पुत्रकरं मुनीन्द्रैः ॥ ७७ ॥

पुष्य और सूर्यके योगमें लक्ष्मणाकी जड और सेहुंड वा थूहरकी जड उखाडकर लावे, इनको पीसकर एकरंगकी गौके दूधके साथ पीनेसे अवश्य पुत्र होता है ॥ ७७ ॥

कन्दमूलं घृतैः पिष्ट्वा ऋतौ सा गर्भिणी भवेत् ॥७८॥

जो ऋतुमें वाराहीकन्दकी जडको पीस घीके साथ खाय तो वह गर्भिणी होती है ॥ ७८ ॥

पुष्योद्धृतं लाक्ष्मणमेव चूर्णं पुंसा निपिष्टं सघृतं निपीतम् । क्षीरोदनं प्राश्य पतिप्रसङ्गाद्गर्भं विदध्यात्तरुणी न चित्रम् ॥ ७९ ॥

पुष्य नक्षत्रमें उखाडी हुई लक्ष्मणाका चूर्ण कर उसे घीके साथ पानकर पीछे दूधपान करे तो तरुणी अवश्य गर्भवती होती है, इसमें सन्देह नही ॥ ७९ ॥

शृङ्गाटकजटाकल्कं घृतक्षीरेण संपिबेत् ।
ऋतुस्नाता स्त्रियो या तु वन्ध्या गर्भवती भवेत् ॥ ८० ॥

ज्वाली त्रिपुष्पाकी जड दूधमें पीसकर ऋतुमें स्नान कर तीन दिन पिवे तो वन्ध्या स्त्री गर्भवती होती है ॥ ८० ॥

नागकेशरकं चूर्णं घृतेन सह पाययेत् ।
पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ।
सद्यो लभते गर्भं सा नारी पतिसंगता ॥ ८१ ॥

नागकेशरका चूर्ण घीके साथमें दूधके साथ सात दिन पर्यन्त पीवे और अधिक घृतयुक्त भोजन करे तो वह स्त्री पतिके संग करके अवश्य पुत्रको प्राप्त होती है ॥ ८१ ॥

पुत्रजीवकमूलं वा पिबेत्क्षीरेण ऋतौ च या ॥ ८२ ॥
पतिसंगाच्च सा नारी सत्यं पुत्रवती भवेत् ।
तस्य मूलं चैकवर्णाक्षीरैः पीत्वा च पुत्रिणी ॥ ८३ ॥

जो स्त्री ऋतुमें जियापोतेका एक पत्र दूधके साथ पान करती है वह स्त्री पतिके संगसे अवश्य पुत्रवती होती है अथवा इसकी जड एक वर्णवाली गायके दूधके साथ बहुत महीन पीसकर पीनेसे पुत्रवती होती है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

काकोल्यौ लक्ष्मणामूलं षष्टिकस्य च तन्दुलम् ।
नार्येकवर्णापयसा पीत्वा गर्भवती ऋतौ ॥ ८४ ॥

क्षीरकाकोली, काकोली, श्वेत कटेरीकी जड और साठीके चावल ऋतु कालमें महीन पीस कर पूर्ववत् दूधके साथ पीनेसे गर्भवती होती है ॥ ८४ ॥

अश्विन्यां बोधिवृक्षस्य वन्दाकं ग्राहयेद्बुधः
गोक्षीरैः पानमात्रेण वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥ ८५ ॥

अश्विनी नक्षत्रमें पीपलके वृक्षका वन्दा ग्रहण कर गौके दूधसे पीवे, इसके पानमात्रसे स्त्री गर्भवती होती है ॥ ८५ ॥

तिलरसगुडकं वै गोपुरीषाग्नियोगात्
तरुणवृषभमूत्रं प्रस्थयुक्तं विपक्वम् ।
ऋतुदिवसविमध्ये सप्तवारैश्च पीतं
जनयति सुतमेकं निश्चितं पुष्पितैव ॥ ८६ ॥ ॥

तिलरस, गुड, तरुण बैलका मूत्र एक सेर इनको गौके गोबरके उपलोकी अग्निमें पकावे इसको ऋतुके दिनोमें सात वार पीवे तो अवश्य उत्तम पुत्र होता है, इसमें सन्देह नही ॥ ८६ ॥

कदम्बपत्रं श्वेतं च बृहतीमूलमेव च ।
एतानि समभागानि ह्यजाक्षीरेण पेषयेत् ॥ ८७ ॥
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा पिबेदेतन्महौषधम् ।
ऋतौ निपीयमाने तु गर्भो भवति निश्चितम् ॥ ८८ ॥

कदम्बपत्र, श्वेतचन्दन, कटेरीकी जड इनको बराबर ले बकरीके दूधसे पीसे इस महौषधिको ऋतुके अन्तमें तीन रात या पांच रात पीनेसे अवश्य गर्भवती होती है ॥ ८७–८८ ॥

गोक्षुरस्य तु बीजं च पिबेन्निर्गुण्डिकारसैः ।
त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ ८९ ॥

निर्गुण्डीके रसयुक्त गाखरूके बीज तीन वा सात रात पीनेसे वध्या अवश्य पुत्रवती होती है ॥ ८९ ॥

कर्कोटबीजचूर्णं तु एकवर्णं गवां पयः ।
ऋतौ निपीयमाने तु गर्भो भवति निश्चितम् ॥ ९०॥

कर्कोटकके बीजोका चूर्ण बारीक कर एकरंगकी गौके दूधसे रात्रिमें पीवे तो अवश्य गर्भवती होती है ॥ ९० ॥

भगाख्ये चैव नक्षत्रे वटवृक्षस्य मूलकम् ।
हस्ते बद्ध्वा लभेत्पुत्रं सुन्दर कुलवर्द्धनम् ॥ ९१ ॥

भगदेवतावाले नक्षत्र (पूर्वाफाल्गुनी) में वटकी जड हाथमें बाधनेसे वन्ध्या उत्तम पुत्र पाती है ॥ ९१ ॥

अश्वत्थस्य तु वन्दाकं पूर्वेद्यु र्मुनिमंत्रितम् ।
ऋतुस्नाते तु पीत स्यादपि वन्ध्या लभेत्सुतम् ॥ ९२ ॥
एकवर्णसवत्साया गो क्षीरेण सुपेषितम् ।
भावितं वटवन्दाकं पीतं वन्ध्या सुत लभेत् ॥ ९३ ॥

पर्पीलके वन्देको पहले दिन निमत्रण कर दूसरे दिन लाकर ऋतु स्नानकर पीनेसे वध्या पुत्रवती होती है । एकवर्ण वछडेवाली गौके दूधमें वडके वन्देको भावना देकर पीवे वध्याके पुत्र होता है ॥९२ ॥ ॥ ९३ ॥

काकवन्ध्याचिकित्सा

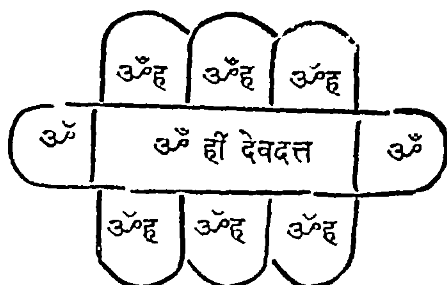
पूर्व पुत्रवती या सा क्वचिद्वन्ध्या भवेद्यदि ।
काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सास्यास्तु कथ्यते ॥ ९४ ॥

जो पहले पुत्रवती होकर यदि फिर वंध्या हो जाय उसको काकवंध्या कहते है । उसकी चिकित्सा इस प्रकार कही जाती है ॥ ९४ ॥

विष्णुक्रान्ता समूलां तु पिष्ट्वा दुग्धैस्तु माहिषैः ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भक्षयेत् ॥ ९५ ॥
एवं सप्तदिन कुर्यात्पथ्यमुक्तं च पूर्ववत् ।
गर्भ सा लभते नारी काकवन्ध्या सुशोभनम् ॥ ९६ ॥

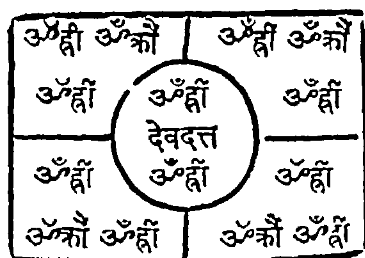
विष्णुक्राताको जडसहित भैंसके दूधमें पीसकर और भैंसके मक्खनके साथ ऋतुकालमें भक्षण करे इस प्रकार सात दिन करे और पथ्यसे रहे तो वह काकवध्या अवश्य गर्भवती होती है ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

इस यत्रको गोरोचन, कुंकुम और लाखसे जिसका नाम सहित लिख पचामृतमें स्थापन करे तो काकवध्या प्रसूती गर्भवती होती है ।



अश्वगन्धीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।। ९७ ।।
पेषयन्महिषीक्षीरैः पलार्द्धं भक्षयेत्सदा ।
सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवन्ध्या चिरायुषम् ।। ९८ ।।

पुष्य नक्षत्रमें सूर्य हो तो असगधकी जडको ग्रहण करके भैंसके दूधसे पीसकर आधे पल भक्षण करे तो सात दिनो काकवंध्या गर्भवती हो चिरायुष्य पुत्रको उत्पन्न करती है ।।९७।।९८।।



इस यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नामसहित लिख हाथमें धारण करे तो काकवंध्या प्रसूती होती है तथा दुर्भगा सुभगा होती है ।।

अथ मृतवत्साचिकित्सा

गर्भं संजातमात्रेण पक्षान्मासाच्च वत्सरात् ।
म्रियते द्वित्रिवर्षाद्वा यस्याः सा मृतवत्सका ।
तत्र योगः प्रकर्त्तव्यो यथा शङ्करभाषितम् ।। ९९ ।।

जिसके बालक उत्पन्न होतेही पक्ष, महीने, वर्ष, दो वर्ष वा तीन वर्षमें मर जाते हैं वह मृतवत्सा कहलाती है । इसमें शंकरका कहा योग करना चाहिये ।। ९९ ।।

मार्गशीर्षेऽथवा ज्येष्ठे पूर्णाया लेपिते गृहे ।। १०० ।।

नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयेन कारयेत् ।
शाखाफलसमायुक्तं नवरत्नसमन्वितम् ।। १०१ ।।
सुवर्णसूत्रिकायुक्तं षट्कोणमण्डले स्थितम् ।
तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकान्ती नाम विश्रुताम् ।। १०२ ।।
गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपैर्नैवेद्यसंयुतैः ।
अर्चयेद्भक्तिभावेन मद्यमांसं समत्स्यकं: ।। १०३ ।।

मार्गशीर्ष अथवा ज्येष्ठकी पूर्णिमाको अपना घर लीपकर नये कलशमें जल भरकर उसमें सुगन्धित द्रव्य डाले । आम्रशाखा तथा नवरत्न उसमें डाले । सुवर्णसूत्रिका सहित छः कोण मण्डलकी रचना करे । उसके मध्यमें एकांती नाम देवीकी पूजा करे । गन्ध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यसे संयुक्त कर भक्तिभावसे अर्चन करे । मत्स्य भी दे दें ।। १००–१०३ ।।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।
वाराही च तथेन्द्राणी षट्सु पत्रेषु मातरः ।। १०४ ।।

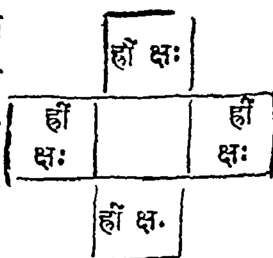
ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी यह छः माता है ।। १०४ ।।

पूजयेन्मन्त्रबीजैश्च* फंकारैर्नामविश्रुतैः ।
पूजामंत्रः–"ॐ ह्रीं फं एकान्तिदेवतायै नमः ।"
अनेन मन्त्रेण पूजा जपश्च कार्यः ।।
दधिभक्तैश्च पिण्डानि सप्तसंख्यानि कारयेत् ।।१०५।
षट्संख्याः षट्सु पत्रेषु मातृभ्यः कल्पयेत्पृथक् ।
बिल्वाभं सप्तमं पिण्डं शुचिस्थाने बहिःक्षिपेत् ।। १०६ ।।

* 'ओंकारेण विधि श्रुत ' इति वा पाठ ।

तद्भुक्त्वा गृहमागच्छेच्चक्राग्रे * यागमाचरेत् ।
कन्यका योगिनी वामा भोजयेत्सकुटुम्बकैः ।। १०७ ।।
दक्षिणां दापयेत्तासां देवताग्रे च नान्यथा ।
विसृज्य देवतां चाथ नद्यांतत्कलशोदकम् ।। १०८ ।।
सकुलं वीक्षयेद्धीमाञ्छुभेन शुभमादिशेत् ।
विपरीते पुनः कार्य यावत्तावत्सुसिद्धिदम् ।। १०९ ।।
× प्रतिवर्षमिदं कुर्य्याद्दीर्घजीवीसुतं लभेत् ।। ११० ।।

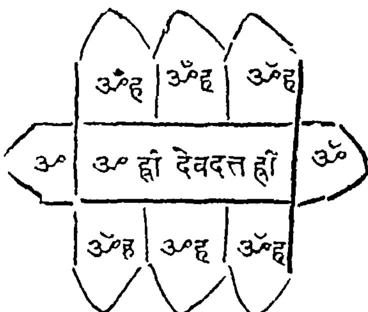
इनको "ॐ ह्रीं फैं एकान्तिदेवतायै नमः" इस बीजमंत्रसे छः पत्रोमें पूजन कर फैंकारका उच्चारण करे और सात पिण्ड दधिभक्तके निर्माण कर जप भी करे । छः तो छहो माताओको पत्रोमें प्रदान करे और बेलके समान सातवा पिण्ड पवित्र स्थानमें बाहर रक्खे फिर उसको भक्षण कर घरमें आवे और उस चक्रके आगे याग करे फिर कन्या योगिनी वामा स्त्रियोको सकुटुम्ब भोजन दे और देवताके आगे उनको दक्षिणा दे फिर देवताको विसर्जनकर उस कलशके जलको नदीमें डाल दे और कुटुम्ब सहित बुद्धिमान् उसको देखे । शुभ देखे तो शुभ कहना, विपरीत देखे तो फिर करना । जबतक सिद्धि न हो तबतक करे । प्रतिवर्ष ऐसा करे तो दीर्घजीवी पुत्रकी प्राप्ति होती है ।। १०५–११० ।। इस यन्त्रको कुकुमसे भोजपत्रपर साध्या नामसहित लिख उस स्त्रीके हाथमें बाधे तो मृतवत्सा जीवत्पुत्रिणी होती है ।



* चक्राङ्ग यावदाचरेत् । इति पाठान्तरम् २ प्रतिमासम् ऐसा पाठ है । अर्थ–प्रत्येक महीने ऐसा करे ।

प्राङ्मुखी कृत्तिकाऋक्षे वन्ध्याकर्कोटकी हरेत् ।
तत्कन्दं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रं सदा पिबेत् ।
ऋतुकाले तु सप्ताहं दीर्घजीवी सुतो भवेत् ।। १११ ।।

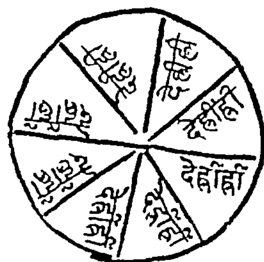
कृत्तिका नक्षत्रमें पूर्वदिशाको मुख कर वध्या स्त्री कर्कोटकीको लावे। उसकी जडको जलसे पीसकर एक कर्ष सदा पीवे इस प्रकार सात दिन ऋतुकालमें करनेसे दीर्घजीवी पुत्रकी प्राप्ति होती है ।। १११ ।।



इस यंत्रको गोरोचनसे साध्या नामसहित भोजपत्र पर लिख धारण करे तो मृतवत्सा जीववत्सा तथा ऋतुमती गर्भवती और सौभाग्यवती होती है ।।

या बीजपूरद्रुममूलमेकं क्षीरेण सिद्धं हविषा वमिश्रम् । ऋतौ तु पीत्वा सुपतिं प्रयाति दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ।। ११२ ।।

जो स्त्री बीजपूरकी एक कर्ष जडको दूधमें सिद्धि कर हविष अन्नमें मिलाय ऋतुकालमें पान कर पतिके निकट जाती है वह दीर्घायु पुत्रको उत्पन्न करती है ।। ११२ ।। इस यंत्रको गोरोचन, कुंकुम और लाख रंगसे जिसका नाम सहित लिख पंचामृतमें स्थापन करे तो मृतवत्सा पुत्रिणी होती है ।।



फलघृतम्

मञ्जिष्ठा मधुकं कुष्ठं त्रिफला शर्करा बला ।

मेदा * पयस्या काकोली मूलं चैवाश्वगन्धजम् ।
अजमोदा हरिद्रे द्वे हिंगुः कटुकरोहिणी ॥ ११३ ॥
× उत्पलं कुमुदं द्राक्षा काकोल्यौ चन्दनद्वयम् ।
एतेषां कार्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ११४ ॥
शतावरीरसं क्षीरं घृतं देयं चतुर्गुणम् ।
सर्पिरेतन्नरः पीत्वा नित्यं स्त्रीषु वृषायते ॥ ११५ ॥

मँजीठ मुलहठी कूठ त्रिफला मिश्री खरैंटी महामेदा क्षीरकाकोली असगंधकी मूली अजमोदा दोनो हलदी हिंगु कुटकी नीलकमल कुमुद दाख काकोली क्षीरकाकोली दोनो चन्दन इन सबको एक कर्ष लेकर एक सेर घी में पकावे, शतावरीका रस दूध घी यह चौगुना डाल विद्ध करे इस घृतको पान करके मनुष्य रतिमें स्त्रीसे प्रबल होता है ॥ ११३-११५ ॥

पुत्राञ्जनयते नारी मेधाविप्रियदर्शनान् ।
या चैवास्थिरगर्भा स्याद्या नारी जनयेन्मृतम् ॥ ११६ ॥
अल्पायुषं वा जनयेद्या च कन्यां प्रसूयते ।
योनिदोषे रजोदोषे गर्भस्रावे च शस्यते ॥ ११७ ॥

स्त्री इसके सेवनसे बुद्धिमान् पुत्रोंको उत्पन्न करती है जो प्रिय दर्शन होता है । जिस स्त्रीका गर्भ स्थिर न रहता हो वा जिसके मृतक संतान होती हो वा जिसके अल्पायु संतान होती हो वा जिसके कन्या ही होती हो वा जिसके योनि और रजमें दोष हो वा जिसके गर्भ-स्राव होता हो उन सबके निमित्त यह प्रयोग उत्तम है । वैद्य लोग इसमें लक्ष्मणाकी जड भी डालते हैं ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

---

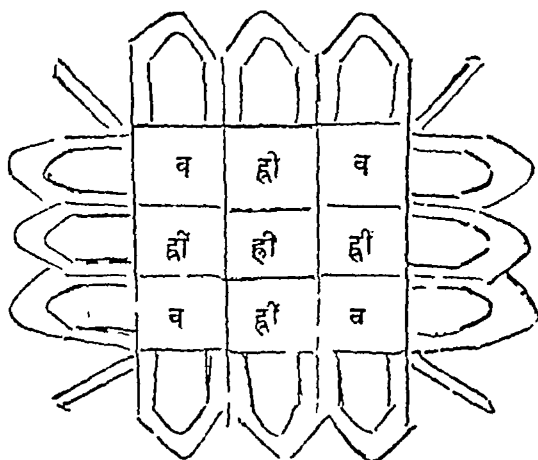
*पयस्या–क्षीरयुक्ता भूमिकूष्माण्डा । ×उत्पलम्–नीलम् ।

प्रजावर्द्धनमायुष्यं सर्वग्रहनिवारणम् ।
नाम्ना फलघृतं ह्येतद्रहस्यं परिकीर्तितम् ।। ११८ ।।
जीवद्वत्सैकवर्णाया घृतमत्र तु दीयते ।
अरण्यगोमयेनात्र वह्निर्ज्वाला प्रदीयते ।। ११९ ।।

यह प्रजाका बढानेवाला आयुदाता सब ग्रहका निवारण करनेवाला फलघृत है, अश्विनीकुमारोका कहा हुआ है । जीते बछडेवाली और एक वर्णवाली गौका घी इसमें लेना चाहिये । इसको अरण्य उपलोकी आंचसे बनावे । घृतपात्र शेष रहनेसे उतार ले, सेवन करे ।। ११८ ।। ११९ ।।

वन्ध्याना सर्वारिष्टनिवारणयत्रम्

इस यंत्रको गोरोचन और कुंकुमसे भोजपत्रपर साध्याका नामसहित लिख कठ या शिरमें धारण करनेसे मृत अपत्या तथा वंध्या (अपुत्रिणी) के सब अरिष्ट दूर होते हैं। ज्वर भी नष्ट होता है ।।



अथ गर्भरक्षा

अकस्मात्प्रथमे मासि गर्भे भवति वेदना ।
गोक्षीरैः पेषयेत्तुल्यं पद्मकोशीरचन्दनम् ।
पलमात्रं पिबेन्नारी त्र्यहाद्गर्भः स्थिरो भवेत् ।।१२०।।

पहले महीनेमें–अकस्मात् गर्भमें वेदना होती है तो उस समय

पद्माख, खस, लाल चन्दन इनको गौके दूधमें पीसकर एक पलमात्र तीन दिन पान करनेसे गर्भ स्थिर हो जाता है ।। १२० ।।

अथवा मधुकं दारु शाकवृक्षस्य बीजकम् ।
संपिष्य क्षीरकाकोली पिबेत्क्षीरैस्तु गोभवैः ।। १२१ ।।

अथवा मुलहठी, देवदारु, शाकवृक्षके बीज और क्षीरकाकोली इनको पीस गौके दूधसे पान करे ।। १२१ ।।

नीलोत्पलं मृणालं च यष्टीकर्कट शृङ्गिका ।
गोक्षीरैस्तु द्वितीये च पीत्वा शाम्यन्ति वेदनाः।।१२२।।

दूसरे महीनेमें—नीलकमलकी जड, मुलैठी, काकडासिंगी इनको बराबर ले गौके दूधके साथ पिये तो दूसरे महीनेकी वेदना शान्त हो जाती है ।। १२२ ।।

अथवाश्वत्थवल्कं च तिलं कृष्णं शतावरीम् ।
मञ्जिष्ठासहिता पिष्ट्वा पिबेत्क्षीरैश्चतुर्गुणैः ।। १२३ ।।

अथवा पीपलकी छाल, काले तिल, शतावरी, मंजीठ इनको बराबर ले पीसकर चौगुने दूधके साथ पीवे ।। १२३ ।।

श्रीखण्डं तगरं कुष्ठं मृणालं पद्मकेशरम् ।
पिबेच्छीतोदकैः पिष्टं तृतीये वेदनावती ।। १२४ ।।

तीसरे महीनेमें—चन्दन, तगर, कूठ, मृणाल (कमलकी जड), कमल केशर इनको ठडे जलके साथ पिये तो तीसरे महीनेकी वेदना शान्त हो जाती है ।। १२४ ।।

अथवा क्षीरकाकोलीं बलां पिष्ट्वा पयः पिबेत् ।।१२५।।

अथवा क्षीरकाकोली और सुगंधवाला जलसे पीवे ।। १२५ ।।

नीलोत्पलं मृणालानि गोक्षुरं च कशेरुकम् ।
तुर्यमासे गवां क्षीरैः पिबेच्छाम्यति वेदना ॥ १२६॥

चौथे महीनेमें—नीलोत्पल, कमलकी जड, गोखरू, कसेरू इनको पीसके गौके दूधके साथ पीनेसे चौथे महीनेकी वेदना शान्त होजाती है ॥ १२६ ॥

अथवा मधुकं रास्ना श्यामा ब्राह्मणयष्टिकाः ।
अनन्तां पेषयित्वा तु गव्यक्षीरैश्च संपिबेत् ॥ १२७ ॥

अथवा मुलैठी, श्यामाक, ब्राह्मणयष्टि, अनन्तमूल इनको पीसकर गौके दूधके साथ सेवन करे तो चतुर्थमासकी वेदना शान्त हो जाती है ॥ १२७ ॥

पुनर्नवां सकाकोली तगरं नीलमुत्पलम् ।
गोक्षुरं पञ्चमे मासे गर्भक्लेशहरं पिबेत् ॥ १२८ ॥

पचममासमें—पुनर्नवा, काकोली, तगर, नीलोत्पल इनको लेकर गौके दूधसे पिये तो पचममासकी वेदना दूर होती है ॥ १२८ ॥

अथवा बृहतीयुग्मं यज्ञाङ्गं *कुट्मलं वरम् ।
गोघृतं क्षीरसंयुक्तं पिबेत्पिष्ट्वा च पञ्चमे ॥ १२९ ॥

अथवा दोनो कटेरी, ब्राह्मणयष्टिका, कमलनाल गौके घी और दूधके साथ पंचम मासमें सेवन करे ॥ १२९ ॥

सितां कपित्थमज्जां च शीततोयेन पेषयेत् ।
षष्ठे मासि गवां क्षीरैः पिबेत्क्लेशनिवृत्तये ॥ १३० ॥

छटे महीनेमें—मिश्री, कैथका गूदा, ठंढे जलके साथ पीसकर पिये वा गौके दूधके साथ पीनेसे वेदना शान्त होती है ॥ १३० ॥

---

* कटक्त्वच भी पाठ है, अर्थात् कुटकी तज ।

अथवा गोक्षुरं शिग्रुमधुकं पृश्निपर्णिकाम् ।
बलायुक्तं पिबेत्पिष्ट्वा गोदुग्धैः षष्ठमासके ॥ १३१ ॥

अथवा गोखरू, सहिजना, मुलहठी, पृश्निपर्णी, खरैंटी इनको दूधसे पीस छठे महीनेमें सेवन करे ॥ १३१ ॥

कशेरुं पौष्करं मूलं शृङ्गाटं नीलमुत्पलम् ।
पिष्ट्वा च सप्तमे मासिक्षीरैः पीत्वा प्रशाम्यति॥१३२॥

सातवें महीनेमें-कसेरू, पुष्करमूल, सिंघाडा, नीलोफर इनको पीसकर दूधके साथ पीनेसे सातवें मासकी व्यथा शान्त हो जाती है॥ १३२ ॥

अथवा मधुकं द्राक्षा शृङ्गाटञ्च कशेरुकम् ।
मृणालं शर्करायुक्तं क्षीरैः पेयं तु सप्तमे ॥ १३३ ॥

अथवा मुलैठी, दाख, सिंघाडा कसेरू, कमलकी जड इनको मिश्रीके साथ दूधमें मिलाय पान करे ॥ १३३ ॥

यष्टी पद्माक्षकं मुस्तं केशरं गजपिप्पलीम् ।
नीलोत्पलं गवां क्षीरैः पिबेदष्टममासके ॥ १३४ ॥

आठवें महीनेमें-मुलहठी, पद्माख, मोथा, नागकेशर, गजपीपल, नीलोत्पल इन स को गौके दूधमें पिये ॥ १३४ ॥

अथवा बिल्वमूलं तु कपित्थं बृहतीफलम् ।
इक्षुपटोलयोमूलमेभिः क्षीरं प्रसाधयेत् ॥ १३५ ॥
तत्क्षीरमम्भसा पीत्वा गर्भे शाम्यति वेदना ॥ १३६ ॥

अथवा बेलकी जड, कैथ, दोनो कटेरी अर्थात् छोटी बडी, गन्नेका रस, पटोलकी जड इनको दूधमें सिद्ध करे इस दूधको जलके साथ पीनेसे आठवें मासकी गर्भकी पीडा शान्त हो जाती है ॥१३५॥ १३६।

विशालाबीजसंकोल्लं मधुना सह पेषयेत् ।
वेदना नवमे मासि शान्तिमाप्नोति नान्यथा ॥ १३७ ॥

नौवें महीनेमें–इन्द्रायनके बीज, शीतलचीनी (शीतल चीनी), शहदके साथ पीनेसे नवमें महीनेकी व्यथा शान्त होजाती है ॥ १३७ ॥

अथवा मधुकं श्यामा ह्यनन्ता क्षीरकाकुली ॥
एभिःसिद्धं पिबेत्क्षीरं नवमे वेदनावती ॥ १३८ ॥

अथवा मुलेठी, गुडूची, अनन्तमूल, प्रियंगु इनसे सिद्ध किये हुए दूधको पीनेसे नौवें महीनेकी वेदना शान्त होती है ॥ १३८ ॥

शर्करा गोस्तनी द्राक्षा सक्षौद्रं नीलमुत्पलम् ।
पाययेद्दशमे मासि गवां क्षीरैः प्रशान्तये ॥ १३९ ॥

दशवें महीनेमें–मिश्री, मुनक्का, शहद, नीलकमल इनको गौके दूधसे पान करे तो वेदना शान्त होती है ॥ १३९ ॥

अथवा शुण्ठिसंसिद्धं गोक्षीरं दशमे पिबेत् ।
अथवा मधुकं दारु शुण्ठिक्षीरेण संपिबेत् ॥ १४० ॥

अथवा सोठसे सिद्ध कर गौका दूध दशवें महीनेमें पान करे अथवा मुलेठी, देवदारु, सोठ गौके दूधसे पिये ॥ १४० ॥

सामान्यचिकित्सा

धात्र्यञ्जनं सावरयष्टिकाक्यं त्र्यहं निपीतं प्रमदा
हठेन । सप्ताहमात्रं विनियोज्य नारी स्तम्नाति
गर्भं चलितं न चित्रम् ॥ १४१ ॥

जो नारी लोध (वा आमला) सौवीराजन, मुलैठी सात दिन सावधान होकर पीती है तो उसका गर्भ स्तंभित होता है फिर चलाय मान नहीं होता । वा धनियां, रसौत, लोध, मुलैठी पीवे ॥ १४१ ॥

क्षौद्रं वृषं चन्दनसिन्धुजातं महेन्द्रमाज्यं पयसा
सुपिष्टम् । गर्भं क्षरन्तं प्रतिहन्ति शीघ्रं योगोऽ-
यमुक्तः किल मूलदेवैः ॥ १४२ ॥

शहद अडूसा, चन्दन, सेंधा, इन्द्रजौ, घृत इनको जलसे पीसकर देनेसे गिरता हुआ गर्भ शीघ्र थम जाता है, यह योग मूलदेवने कहा है ॥ १४२ ॥

कुलालहस्तोद्भवकर्दमस्य वत्सीपयः क्षौद्रयुतस्य
मात्रम् । गर्भच्युति शूलमयीं निवार्य करोति
गर्भं प्रकृतं हठेन ॥ १४३ ॥

कुम्हारके चाकपर बर्तन बनाते समय जो पतली मिट्टी हाथमें लगती है उसको ले बकरीके दूधमें डालकर शहदके साथ पिये तो उससे शूलयुक्त गर्भका गिरना बन्द होकर गर्भस्थापन होता है ॥ १४३ ॥

कशेरुभृङ्गाटकजीरकाणि पयोघनैरण्डशतावरीभिः ।
सिद्धं पयःशर्करया विमिश्रं संस्थापयेद्गर्भमुदस्य शूलम् १४४

कशेरू, सिघाडा, जीरा, नागरमोथा, एरण्ड और शतावरी इनसे सिद्ध किया हुआ जल मिश्री डालकर पीनेसे शूल निवारण करता है और गर्भको गिरनेसे रोकता है ॥ १४४ ॥

कन्दं कौमुदकस्य माक्षिकयुतं क्षीराज्यमिश्रं पिबेत्
सप्ताहं सितया सुपक्वसबलाशीतीकृतं वायुना ।
गर्भस्रावमरोचकं सपवनं शोकं त्रिदोषं वमिं ॥
शूलं सर्वविधं निहन्ति नियमादेवं च यत्तत्स्मृतम् ॥ १४५ ।

कुमुदके कन्दको शहद, घी दूध मिलाकर पिये अर्थात् इसमें मिश्री डालकर ठण्डा कर इनको नियमसे सात दिन पिये तो गर्भस्राव, आरोचक, वातरोग, सूजन, त्रिदोष, चमचमाहट, शूल ये सब नष्ट होजाते हैं ॥ १४५ ॥

ह्रीबेरातिविषामुस्तामरिचैः* संभृतं जलम् ।
दद्याद्गर्भे प्रचलिते प्रदरे कुक्षिरुज्यपि ॥ १४६ ॥

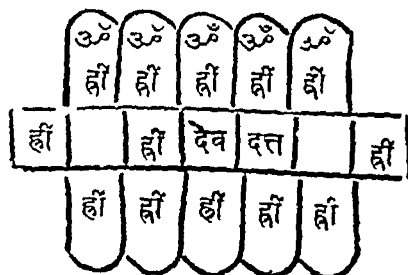
ह्रीबेर, अतीस, मोथा, मोचरस, कुटज, जो इनका क्वाथ कर गिरते हुए गर्भमें, प्रदरमें और कोखरोगमें देनेसे शूलादि नष्ट होजाते हैं ॥ १४६ ॥

कुवलयकन्दं सतिलं पीत्वा क्षीरेण मधुसितायुक्तम् ।
गुरुतरदोषैश्चलितं गर्भं संस्थापयेदाशु ॥ १४७ ॥

कमलका कद, काले तिल इनको शहद मिश्रीयुक्त दूधके साथ पीनेसे भारीदोषसे गिरते हुए गर्भको भी शीघ्र स्तंभन करता है ॥ १४७ ॥

नीलोत्पलमृणालानि मधुकं शर्करातिला: ।
द्रवमाणेषु गर्भेषु गर्भस्थापनमुत्तमम् ॥ १४८ ॥

नील कमलकी नाल, मुलहठी, मिश्री, बडी कटेरी ये गिरते हुए गर्भको स्थापन करती हैं ॥१४८॥ इस यंत्रको गोरोचनसे साध्यानामसहित भोजपत्रपर लिख भुजा या कंठमें धारण करे तो गर्भस्रावकी रक्षा होती है और दुर्भगा सुभगा होती है ॥ इति गर्भस्रावरक्षा ॥



* 'मोचशकैः शृत जलम्' यहभी पाठ है। अर्थ—कदली, कुटजवृक्ष ।

अथ गर्भशुष्कनिवारणम्

गोक्षीरं शर्करायुक्तं गर्भशुष्कप्रशान्तये ।
पिबेद्वा मधुकं चूर्णं गम्भारीफलचूर्णकम् ।
समांशं गव्यदुग्धेन गुर्विणी तत्प्रशान्तये ।। १४९ ।।

शर्कराके सहित गौका दूध सेवन करनेसे शुष्कगर्भकी शान्ति होती है । अथवा गम्भारीके फलका चूर्ण वा मुलहठी चूर्ण शहदके साथ पान करे । अथवा गर्भिणी स्त्री व जिसका गर्भ सूखता हो वह गायका दूध सेवन करे ।। १४९ ।।

अथ सुखप्रसवविधिः

श्वेतपुनर्नवामूलचूर्णं योनौ प्रवेशयेत् ।
क्षणात्प्रसूयते नारी गर्भेणातिप्रपीडिता ।। १५० ।।

श्वेत पुनर्नवाकी जडके चूर्णको स्त्रीकी योनिमें प्रवेश करावे तो तत्काल प्रसव होता है और गर्भकी पीडा नही होती है ।। १५० ।।

उत्तराभिमुखं ग्राह्यं श्वेतगुञ्जीयमूलकम् ।
कटयां बद्ध्वाविमुक्तं च गर्भपुत्रं तु तत्क्षणात्।। १५१ ।।
वासकस्य तु मूलं तु चोत्तरस्थः समुद्धरेत् ।
कटयां बद्ध्वा सप्तसूत्रैः सुखं नारी प्रसूयते ।। १५२ ।।

उत्तरकी ओर मुख कर श्वेत चौटलीकी जड ग्रहण करके कमरमें बांधनेसे सन्तान सुखसे प्रसव होती है । अडूसेकी जडको उत्तर मुख ग्रहण करके उसे सात सूतसे कमरमें बांधे तो स्त्री सुखसे प्रसववती होती है । यहां उत्तरमुखी जड लेनी ।। १५१ ।। १५२ ।।

उत्तरे च समालोडयं श्वेतगुञ्जाफलं कियत् ।
सुखप्रसवमाप्नोति तत्क्षणान्नात्र संशयः ।

योनिं वा लेपयेत्तेन सा सुखेन प्रसूयते ॥ १५३ ॥

उत्तरकी ओरका श्वेत चौंटलीका फल केशोंमें बांधनेसे सुखसे प्रसव करती है इसमें सन्देह नहीं। योनिमें लेप करनेसे सुखसे सन्तान उत्पन्न होती है ॥ १५३ ॥

सहदेव्याश्वमूलं वा कटिस्थं प्रसवेत्सुखम् ॥ १५४ ॥

सहदेई या खरेंटीकी जड कमरमें बाधनेसे स्त्रीके सुखसे बालक उत्पन्न होता है ॥ १५४ ॥

अपामार्गस्य मूलं तु ग्राहयेच्चतुरङ्गुलम् ।
नारी प्रवेशयेद्योनौ तत्क्षणात्सा प्रसूयते ॥ १५५ ॥

चिरचिटेकी जड चार अंगुलकी ग्रहण कर योनिमें रखनेसे स्त्री सुखसे वालक उत्पन्न करती है ॥ १५५ ॥

तोयेन लाङ्गलीकन्दं घृष्ट्वा योनिं प्रलेपयेत् ।
*नाभिं च लेपयेत्तेन तत्क्षणात्सूयते ध्रुवम् ॥ १५६ ॥

कलिहारीकी जडको घिसकर प्रलेप करे तो बहुत शीघ्र सन्तान होती है। या नारियलकी जड जलमें पीस लेप करे ॥ १५६ ॥

गुञ्जाफलार्द्धखण्डं च तोयपूगं तथार्द्धकम् ।
पिबेद्वा तोयपिष्टं च सा सुखेन प्रसूयते ॥ १५७ ॥

चौंटली आधे पल, खाड आधे पल, सुपारी इनको जलके साथ पीसकर पीनेसे सुखसे स्त्री प्रसव करती है ॥ १५७ ॥

गुञ्जातरोमूलयुगं विधानादुत्पाट्य पुष्ये च रवौ
निबद्धम् । कटीतले मूर्द्धनि नीलसूत्रैः शीघ्रं
प्रसूतिं कुरुतेऽङ्गनायाः ॥ १५८ ॥

चौंटलीकी जड और चौंटली इन्हें विधिपूर्वक रविवारके दिन

* नालिकेरस्य मूल । इति पाठान्तरम् ।

पुष्य नक्षत्रमें लावे । उनको कमरके नीचे वा शिरमें नीलसूत्रसे बांधनेसे स्त्री शीघ्र प्रसव करती है ।। १५८ ।।

अगारधूमं गृहवारिणा वा पीत्वाऽबला शीघ्रतरं प्रसूते । अलंबुषामूलमथो निबद्धं योगद्वयं भूपतिरित्यवादीत् ।।१५९ ।। समातुलुंगं मधुकस्य चूर्णं मध्वाज्यमिश्रं प्रमदा निपीय । व्यथाविहीनं प्रसवं हठेन प्राप्नोति नैवात्र विकल्पबुद्धिः ।। १६० ।। अत्र मातुलुङ्गस्य मूलं योज्यम्, न तु फलम् क्वाथयित्वा पेयम् ।।

गृहके धूमको जलके साथ पीनेसे स्त्री शीघ्र प्रसव करती है अथवा लज्जालुकी जड़ कमरमें बाधनेसे शीघ्र प्रसव होता है । यह राजाने कहा है । मातुलुग (नींबू) और मुलहठीके चूर्णको शहद और घीसे मिलाकर स्त्री पान करे तो व्यथाके विनाही सुखसे सन्तान होती है । इसमें सन्देह नहीं । इसमें मातुलुगकी जड ग्रहण करनी, फल नहीं क्वाथ करके पीना चाहिये ।। १५९ ।। १६० ।।

दशमूलीश्रृतं तोयं घृतसैन्धवसंयुतम् ।
शूलातुरा पिबेन्नारी सा सुखेन प्रसूयते ।। १६१ ।।

दशमूलका काढा घृत और सैंधवके सहित पिलानेसे शूलसे व्याकुल स्त्री सुखसे प्रसववती होती है ।। १६१ ।।

सुखप्रसवमन्त्र

"ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ मन्मथवाहिनि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा"

अनेन मन्त्रेण जलं सुतप्तं पातुं प्रदेयं शुचिना

नरेण । तोयाभिपानात् खलु गर्भवत्या प्रसूयते
शीघ्रतरं सुखेन ।। १६२ ।।

"ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ मन्मथवाहिनी लम्बोदर मुंच-मुंच स्वाहा" इस मन्त्रसे पवित्र होकर जल गरम कर स्त्रीको पिलावे तो इस जलके पान करनेसे स्त्री सुखसे प्रसव करती है ।। १६२ ।।

ॐकारं च हंकारं च अकारेण सुपूजितम् ।
ॐकारं शिरसं कृत्वा अन्ते नमस्त्रिमूर्तये ।। १६३ ।।
"अं ॐ हां नमस्त्रिमूर्तये" ।
अनेनैव तु मन्त्रेण जप्तव्यं सूतिकागृहे ।
सुखं प्रसवमाप्नोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ।। १६४ ।।

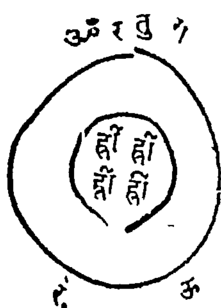
ॐ कार हकार अकारसे युक्तकर अकार शिरपर कर अन्तमें त्रिमूर्तये नम· लगावे । ,अ ॐ हा नमस्त्रिमूर्तये' यह मन्त्र है । इस मन्त्रको प्रसूतिकाके घरमें जपे तो सुखसे प्रसव करती है और सुपुत्रको प्राप्त होती है ।। १६३ ।। १६४ ।। इति सुखप्रसवविधि ।।

अथ बालानां सर्वग्रहनिवारणम्

बिल्वमूलं देवदारुं *गोभृङ्गं च प्रियंगु च ।
मार्जारस्य मलं कुष्ठं वंशत्वगजमूत्रकैः ।। १६५ ।।
पिष्ट्वा धूपो निहन्त्याशु ग्रहभूतज्वरादयः ।
ॐद्रावितं तापे ठं ठः स्वाहा" अनेन धूपं दद्यात् ।
डाकिनी राक्षसाः प्रेता पिशाचा ब्रह्मराक्षसाः ।।
ऐकाहिको द्व्याहिकश्च ज्वरो नश्यति तत्क्षणात् । १६६

* गो भृङ्गम् इति च पाठ

बेलकी जड, देवदारु, बबूर, प्रियंगुफूल, रक्तचीतेकी जड, बिल्लीका मल, कूठ और बांसकी छाल इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर ॐ द्रावितं तापे ठंठः स्वाहा, इस मंत्रसे धूप देनेसे ग्रह, भूतज्वर, डाकिनी, राक्षस, प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस दूर होते हैं। एकांतरा तिजारी दूर होते हैं।।१६५।।



।।१६६।।इस यंत्रको गोरोचन कुंकुमसे भोजपत्रपर लिख (प्रसूताके) बाहु वा कंठमें धारण करे तो डाकिनी प्रेतबाधा और ज्वरादिक नष्ट होजाते हैं । यह अमृतविजया विद्या है ।।

श्रीवासं सर्षपं कुष्टं वचा तैलं घृतं वसा ।
धूपो बालग्रहे देयो बालानां ग्रहशांतये ।। १६७ ।।

चन्दन, सरसो, कूट, वच, तेल, घी, चरबी इनकी धूप बालकोंको ग्रहशान्तिके निमित्त देना चाहिये ।। १६७ ।।

शिरीषनिम्बयोः पत्रं गोशृङ्गस्य त्वचा वचः ।
वंशत्वक् शिखिपिच्छंच कंगुनाच समं घृतम् ।। १६८ ।।
धूपो बालग्रहान् हन्ति स्वयं मन्त्रेण मन्त्रयेत् ।
धूपमन्त्रः–"ॐद्रुतं मुञ्च २ उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा ।।" ।। १६९ ।।

शिरस, नीमके पत्ते, गौके सींगकी त्वचा, वच, बांसकी छाल मोरपंख, मालकांगनीके समान घृत इन सबको एकत्र कर "ॐ द्रुतं मुंच २ उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा" यह मंत्र पढ इनकी धूप देनेसे बालग्रह दूर होने हैं ।। १६८ ।। १६९ ।।

पुनर्नवानिम्बपत्रसर्षपघृतविरचितो धूपः ।
गर्भिण्या बालानां सततं रक्षाकरः कथितः ।। १७० ।।

पुनर्नवा, नीमके पत्ते, सरसो और घी इनकी धूप मत्र पढकर देनेसे गर्भिणी और बालकोकी रक्षा होती है ।। १७० ।।

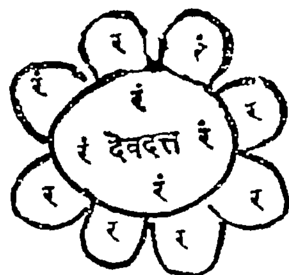
दाडिमस्य तु वन्दाकं ज्येष्ठाऋक्षे समुद्धरेत् ।
द्वारे बद्धं तु बालानां सर्वग्रहनिवारणम् ।। १७१ ।।

ज्येष्ठा नक्षत्रमें दाडिमका वन्दा लावे, उसको बालकोके घरके द्वारमें बांधनेसे सब ग्रहोका निवारण होता है ।। १७१ ।।

पुष्यार्के श्वेतगुञ्जाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ।
बालानां कण्ठदेशे च डाकिनीभयनाशनम् ।। १७२ ।।

रविवारसहित पुष्यनक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड उखाडकर धारण करावे, बालकोके कंठमें बांधनेसे डाकिनीका भय नाश होजाता है ।। १७२ ।।

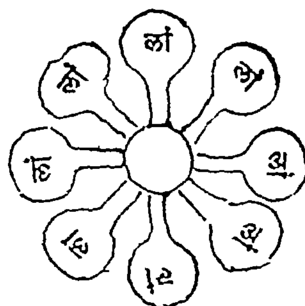
यह यंत्र गोरोचनसे लिखकर धारण करनेसे वैश्वानरमुखी रक्षा बालकोके सब ग्रह नाशिनी है, और बाल ग्रहोसे तिरस्कृत हुओको परम रक्षक है ।।



श्वेतापराजितापत्रं जयापत्रं द्वयो रसम् ।
नस्यं कुर्य्यात्पलायन्ते डाकिनीदानवादयः ।। १७३ ।।

श्वेत विष्णुक्रान्ताके पत्ते और गुडहर (जयन्ती) के पत्ते इन दोनोके रसका हुलास देनेसे डाकिनी दानवादि पलायन कर जाते हैं ।। १७३ ।।

इस यत्रको भोजपत्रपर गोरोचनसे लिख कण्ठमें धारण करे तो पिशाच, डाकिनी, कूष्मांड आदि, बालग्रह, ज्वर, अपस्मारादिरोग शीघ्र नष्ट होते है ।



सर्पत्वक्शिखिजारिष्टपल्लवं रजनी वचा ।
रसोनं हिगु गोलोमश्रृङ्गीमरिचमाक्षिकैः ।
धूपः सर्वज्वरघ्नोऽयं कुमाराणा ज्वरापहः ।। १७४ ।।

सांपकी कैंचली, सीसम, नीमके पत्ते, हलदी वच, लहसन, हिंगु गौके लोम (बाल) काकडासिगी, काली मिचर, शहद इनकी धूप सम्पूर्ण ज्वर तथा कुमारोका ज्वर हरनेवाली है ।। १७४ ।।

छुच्छुन्दरी मलं मांसं हरिद्राबिल्वपत्रकम् ।। १७५ ।।
इन्द्रजं सर्षपं पत्रं धूपयोगेन योजितम् ।
निहन्ति रोदनं रात्रौ बालस्याशु न संशयः ।। १७६ ।।

छुछुदरका मल, मांस, हलदी, बेलपत्र, इन्दजौ, सरसो, तेजपात इनकी धूप देनेसे रातमें बालकका रोना थम-जाता है, इसत्रें संदेह नही ।। १७५ ।।१७६।। इस यंत्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख बालकके कण्ठमे बांधे तो बालकका रोना थम जाता है ।।

०८	०१	२२	१९
१९	२२	००४	०५
७२	०७	१७	१८
२१	२०	०९	०३

मत्स्यराजस्य पित्तेन मरिचे भावयेद्बुधः ।
रविवारे रौद्रशुष्कमञ्जनात्सर्वभूतहृत् ।। १७७ ।।

मत्स्यराजके पित्तमें कालीमिरचकी भावना दे, रविवारके दिन इसको सुखाय आंजनेसे सब ग्रह दूर होते हैं ।। १७७ ।।

नरसिंहस्य मन्त्रं तु सकृदुच्चरितं हरेत् ।
डाकिनीग्रहभूतानि तमः सूर्य्योदये यथा ।। १७८ ।।

नृसिंहका मंत्र एकवारभी पढे तो डाकिनी ग्रह भूतादि ऐसे भाग जाते हैं जैसे सूर्यके उदयमें अंधकार भाग जाता है ।। १७८ ।।

नरसिंहमन्त्र

"ॐनरसिंहाय हिरण्यकशिपुत्रवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनी-कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हर हर विसर २ पच २ हन २ कम्पय २ मथ २ ह्रीं ३ फट् २ ठः ठः ठः एहि २ रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ।।" "ॐ ह्रीह्रींह्रीहूंहूंहंफट् स्वाहा" । अनेन सर्षपमभिमन्त्रितं कृत्वा रोगिणं प्रहारयेत् तदा सर्वे ग्रहाः पलायन्ते ।।

"ॐ नरसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्ष स्थलविदारणाय त्रिभुवनव्याप-काय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलनायस्तभोद्भवाय समस्तदोषान् हर हर विसर २ पच २ हन २ कपय २ मथ मथ ह्री ३ फट् २ ठ ठ.ठ. एहि एहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा",, ओ ह्री ह्रीं ह्रीं हं हूं हू फट् स्वाहा" इन मत्रोसे सरसोको पढकर मारे ताली बजावे तो सम्पूर्ण ग्रह भाग जाते है ।

बालग्रहाभिभूतानां बलि यत्नेन कल्पयेत् ।
शुचि पक्त्वा तु सप्ताहं मत्स्यं मांसं सुराफलम् ।। १७९ ।
पुष्पधूपाक्षतं गन्धं दीपं च दक्षिणोदिकम् ।
चतुष्पथे क्षिपेदात्रौ शुद्धे नूतनखर्परे ।।
शनौ वा कुजवारे वा बालदोषोपशान्तये ।। १८० ।।

बलिदानमन्त्रः—"ॐ सर्वभूतेभ्योबलिंगृह्ण २ स्वाहा ।

जब बालकोको ग्रह आकर्षित करले तो यत्नसे उनकी बलि कल्पित करे । सात दिन पर्यन्त पवित्र हो मत्स्य मांस, सुरा, फल, पुष्प, धूप, अक्षत, गध, दीप, दक्षिणा यह सब वस्तु रात्रिमें शुद्ध और नये

सिकोरेमें लेकर शनिवार या मगलको चौराहेमें "ॐ सर्वभूतेभ्यो बलि गृहाण २ स्वाहा" यह मत्र पढ रख आवे ।। १७९ ।। १८० ।।

इति बालानां सर्वग्रहनिवारणम् ।

अथ बालस्याहितुण्डिकादिनिवारणम् ।

चन्द्रग्रस्ते शिखीमूलं विधानेनोद्धरेद्बुधः ।
बद्धं गले च जघने बालोऽहितुण्डिकां जयेत् ।। १८१ ।।

चन्द्रग्रहण में कलिहारीकी जडको विधिपूर्वक लावे, उसको बालकके गलेमें या कमरमें बाधनेसे अहितुडिका दूर होती है ।। १८१ ।।

श्वेतार्कमूलं सगृह्य गृहस्तम्भे च बन्धयेत् ।
पुष्यार्के वा रवेर्वारे बालोऽहितुण्डिकां जयेत् ।। १८२ ।।

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारमें वा रविवारके दिन श्वेत आककी जड लाकर घरके खम्भेमे बाधनेसे बालकका अहितुडरोग दूर होता है ।। १८२ ।।

उदुम्बरभवं मूलं शिशुकटचां च बन्धयेत् ।
बृहत्कूष्मांडवृत्तं वा तेनाहितुंडिकां जयेत् ।। १८३ ।।

गूलरकी जड लाकर बालककी कमरमें बांधे अथवा बडे पेठेकी डंठली बांधनेसे अहितुण्डिका रोग दूर होता है ।। १८३ ।।

अथ स्त्रीणा पुष्परक्षा

पलाशराजादनयोः फलानि पुष्पाण्यथो शाल्मलि-
पादपस्य । आज्येन मासार्द्धदिनं पिबंति रक्षा भवे-
न्निश्चितमेव पुष्पे ।। १८४ ।।

ढाक और क्षीरिणीवृक्षके फल सेमलके फूल यह घीके साथ पन्द्रह दिन पान करनेसे निश्चयही स्त्रीके पुष्पकी रक्षा होती है ।। १८४ ।।

तुषाम्बुना पावकवृक्षमूलं निःक्वाथयित्वा नियमं

चरन्ती । ऋत्वन्तकाले त्रिदिनं पुरन्ध्री रक्षा भवे-
दामरणान्तमेव ॥ १८५ ॥

चीतेकी जड लेकर तुपके जलसे काढा कर नियमसे ऋतुके अन्त तीन दिन पान करनेसे जन्मपर्यन्त स्त्रीके आर्तवकी रक्षा होती है । कहीं ऋतुसमयमें तीन दिन पीना कहा है ॥ १८५ ॥

फलं कदम्बस्य च माक्षिकानि तुषोदकेन त्रिदिनं
सकृद्वा । स्नानावसाने नियमेन पीत्वा रक्षामवश्यं
कुरुते हठेन ॥ १८६ ॥

कदम्बके फल, सोनामक्खी इनको तुपके जलसे पीसकर स्नानके अन्तमें तीन दिन या एकवार इसे नियमसे सेवन करनेसे ऋतुकी रक्षा होती है ॥ १८६ ॥

त्रैहायनं वा गुडमत्ति नित्यं पलप्रमाणं वनितार्द्ध-
मासम् । जीवान्तिकं निश्चितमेव तस्या वन्ध्यात्व-
मुक्तं कविपुङ्गवेन ॥ १८७ ॥

जो स्त्री पन्द्रह दिन तक नित्य तीन वर्षके पुराना गुडका चार तोले प्रमाण सेवन करती है वह वन्ध्या होजाती है, ऐसा कवि पुंगवोंने कहा है ॥ १८७ ॥

कर्षद्वयं राक्षसवृक्षबीजं सप्ताहमात्रं सितशालि-
धान्यम् । ऋतौ निपीतं मृगशावकाक्ष्या रक्षार्थमे-
तन्नियतं प्रदिष्टम् ॥ १८८ ॥

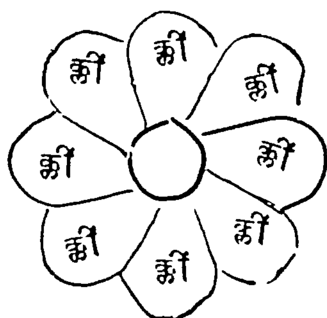
दो कर्ष राक्षसवृक्षके बीज तथा शालिधान्य यह ऋतुके अंतमें सात दिन तक पान करनेसे अवश्य पुष्पकी रक्षा होती है ॥ १८८ ॥

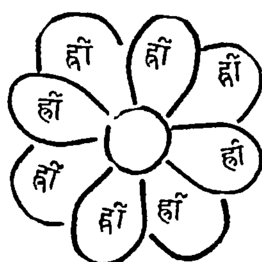
अथ दुर्भगाकरणम्

ज्येष्ठानक्षत्रे निम्बवन्दाकं यस्या अङ्गे दीयते सा दुर्भगा भवति ।। १८९ ।।

ज्येष्ठानक्षत्रमें नीमका वन्दा जिसके अगमें डालाजाय वह दुर्भगा होती है ।। १८९ ।। इति दुर्भगाकरणम् ।

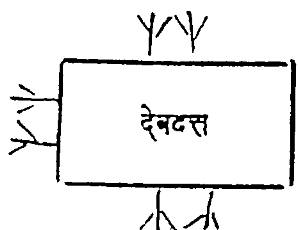
दातृशक्तिप्रदयत्रे





इन यत्रोको गारोचन और अनामिका (कनउँगुली) के रक्तसे भोजपत्रपर साध्यनामसहित लिख शहत या घृतमे स्थापन करे तो अदातापन छूटकर दाता होजाता है, यदि इनके प्रभावसे सब कुछ अर्थात् बेहद्द देने लगे तो नीचे लिखे हुए यन्त्रको विधिपूर्वक बाधनेसे दातापन छूट जायगा ।।

दातृशक्तिनिवारणयन्त्रम्



साध्य (दाता) के चरणकी धूलिको हरितालके साथ मिलाय भोजपत्रपर इस यन्त्रको लिख पाटल मध्य (देवदत्तस्थान) में साध्यके दोनो हाथ लिख भाडमें रख उसपर मूत्रकर धर देवे तो हस्तस्तभन होता है यानी किसीको कुछ नही देता है ।।

अथ कलहकरणम्

विभीतकं तु शाखोटमूलपत्रेण संयुतम् ।
स्थापयेद्यद्गृहद्वारे तस्य वै कलहो भवेत् ॥ १९० ॥

बहेडा, सिहोरेकी जड पत्ते सहित जिसके घरके द्वारमें स्थापित करे, उसके यहा सदा कलह होता है ॥ १९० ॥

मार्जारमूषिकद्विजदिगम्बराणां लोमभिर्धूपात् ।
आर्द्रायां यत्र गृहे तत्र वै जायते वैरम् ॥ १९१ ॥

बिलाव, चूहा, ब्राह्मण, दिगंबर इनके लोमकी धूप आर्द्रा नक्षत्रमें जिस घरमें दे उस घरमें कलह होता है ॥ १९१ ॥

विशाखा नक्षत्रे निम्बवृक्षस्योत्तरमूलं विवस्त्रो विमुखीभूय उत्पाट्य मुखेन यस्य च आलये क्षिपेत्तस्य गृहे प्रत्यहं कलहो भवति ॥ शाखोटमूलं पत्रं च एकीकृत्य स्थापयेत् । तथा दूरीकृते तु तद्गृहे भद्रं भवति । तन्नक्षत्रे शाखोटबदरीबीजद्वयमेकीकृत्य यस्य गृहे स्थापयेत्तस्य नित्यं कलहो भवति ॥ १९२ ॥

विशाखानक्षत्रमें नीमके पेडकी जड उत्तरकी ओर मुखकर नग्न होकर मुखसे उखाडे । उसे जिसके यहा फेंक दे तो प्रतिदिन उसके यहा कलह होता है ॥ सिहोरेकी जड और पत्ते मिलाकर रखनेसे भी कलह होता है, दूर करनेसे दूर होता है ॥ विशाखानक्षत्रमें शाखोट और बेरकी दो गुठली एकत्र कर जिसके घरमें डाले उसके यहा नित्य क्लेश होता है ॥ १९२ ॥

ब्रह्मदण्डीं समूलां च काकमाचीसमन्विताम् ।
जातीपुष्परसैः पिष्ट्वा सप्तरात्रं पुनः पुनः ॥ १९३ ॥
एष धूपः प्रदातव्यः शत्रुगोत्रस्य मध्यतः ।
यथागोत्रं समाघ्राति पिता पुत्रैः समं कलिः ॥ १९४ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने षण्ढीकरणादिककलहकरणान्त-वर्णन नामाष्टमोपदेश ॥ ८ ॥

बल सहित ब्रह्मदण्डी, काकमाची (मकोया) इनको जाईके फूलोंके रसमें सात रात्रितक वारवार पीसे । यह धूप शत्रुके गोत्रमेंदे इस धूपको सूंघनेमात्रसेही पितापुत्रमें भी कलह होजाता है ॥ १९३ ॥ ॥ १९४ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्ने पडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषा-टीकाया षण्ढीकरणादिकलहकरणान्त नामाष्टमोपदेश ॥ ८ ॥

नवमोपदेशः

अथसर्वारिष्टनाशार्थं रक्षाविधिः

ईश्वरेण पुरा देव्यै यद्यत्तत्कथितं तथा ।
कादिद्विरवसानं च ह्यक्षरं स्वरसंयुतम् ॥ १ ॥
ईकारेणापि संपूज्य अधो रेफत्रयान्वितम् ।
ॐकारशिरसं कृत्वा जप्तव्यं सिद्धिमिच्छता ॥ २ ॥
मन्त्रः–"ॐ ह्रीह्रीह्रीॐह्री क्रीख्रींवा"
"ॐ क्री ख्रीं क्ष्रीं ॐ ठ्रीं थ्रीं फ्री ह्री"
स्वसंयमनमन्त्रोऽयं शतार्द्ध जपमात्रतः ।
अशेषारिष्टनाशः स्यादित्याह पुरसूदनः ॥ ३ ॥

ईश्वरने पार्वतीके प्रति जो कुछ कहा है वह यह है । आदि हकार अक्षर और स्वरके सहित वह हकारके सहित और नीचे रेफसे संयुक्त तथा आदिमें ओकार लगाकर सिद्धिकी इच्छा करनेवालेको जपना, चाहिये "ॐ ह्लीं ह्ली ह्लीं ॐह्ली क्री ख्री क्ष्रीं ॐ ठ्री थ्रीं फ्रीं ह्लीं" इस मंत्रको ५० वार कहनेसेहि मत्र सिद्ध होजाता है और सम्पूर्ण अरिष्टको नाश करता है ऐसा शकरने कहा है ।। १–३ ।।

कपरं चपरं चैव ठपरं तपरं तथा ।
पपरं वर्णमाहृत्य इकारेण सुपूजितम् ।
अधोरेफसमायुक्तमोंकारशिरसं तथा ।। ४ ।।
मन्त्रः—"ॐ खूं छूं ठूं थ्रं फ्रं ह्लम् । वा ॐ खूी छ्रीं ठ्रीं थ्री फ्रीं ह्ली" (शुद्धम्)
श्रद्धया तु महामन्त्रं ये पठन्ति सदा मुने ।
सर्वथा तस्य पुंसः स्यात्सर्वारिष्टविनाशनम् ।। ५ ।।

ककार चकार टकार तकार पकार इनसे पर (द्वितीय) जो खादि वर्ण है उनको और हकारको ईकार व उसके नीचे रेफ लगाय प्रथम आकार उच्चारण करे। मंत्र यह है–,ॐ ख्रीं ठ्रीं छ्रीं ह्लीं थ्रीं फ्रीं ह्लीं' (शुद्ध) हे मुने ! इस महा मंत्रका जो सदा श्रद्धासे उच्चारण करते है उनके सब अरिष्ट नाश हो जाते है ।। ४ ।। ५ ।।

हस्तेन रक्तपुष्पेण ग्रथितया च मालया ।
अभिमन्त्र्य शतेनापि दद्याद्देव्यै सदानघे ।। ६ ।।
यावज्जीवं शुभं तस्य सर्वलाभो दिनेदिने ।
न गृहेऽनिष्टपातः स्याल्लिखित्वा स्थापनेऽपि च ।। ७ ।।

हाथमें लाल फूलकी माला लेकर इस मन्त्रको सौ बार अभिमंत्रित कर देवीको चढाते हैं जन्मपर्यन्त शुभ होता है अर्थात् दिनदिन अर्थलाभ होता है, इसे लिखकर स्थापन करनेसे घरमें अरिष्ट नही होता है ।।६।। ।। ७ ।। इस यत्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख धारण करे (या घरमें रखलेवे) तो सब अरिष्टो (उपद्रवो) से रक्षा होती है ।।

ॐ	हृ	ॐ
हृ	ॐ हृ	हृ
ॐ	हृ	ॐ

अक्षराणामन्त्यवर्णाल्लिखित्वा पञ्चधाऽनघे
अधोरेफसमायुक्तमोङकारशिरसं तथा ।। ८ ।।
हकारेण च सम्पूज्यमन्ते फडक्षरं स्मृतम् ।
ईकारेण च सम्पूज्य अन्ते फडक्षरान्तिम् ।
"ॐ क्ष्री क्ष्री क्ष्री क्ष्रीं फट्" ।।
मन्त्रोऽयं मम रूपस्य ध्यान जापं तथैव च ।
ममैव हृदयं तस्य सदा तद्गतमानसः ।। ९ ।।
सदा स्यात्तद्गृहे क्षेमं सहस्त्रार्द्धस्य जापनात् ।
त्रैलोक्ये तत्समो नास्ति नित्यं फलमवाप्नुयात् ।। १० ।।

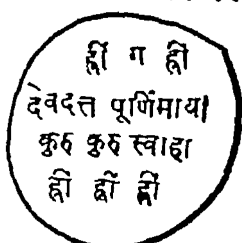
अक्षरोके अन्त्य वर्णोको पचविधिसे करके नीचे रेफ मिलाकर ॐ कार सहित उच्चारण करे । ईकार युक्तकर अन्तमें फट् लगावे । 'ॐ क्षी ५ फट् यह मंत्र है । मेरेही रूपका ध्यान करे और जप करेऔर (तद्गतमन हो) मुझमेंही अपना मन लगावे । इस मंत्रका पाच सौ जप करनेसे उसके घरमें सदा आरोग्यता रहती है, इसके समान त्रिलोकीमें कुछ नहीं, यह नित्य फलका देने वाला है ।। ८।१० ।।

जन्मान्तरे सुखी प्राणी शृणु देवि महाफलम् ।
नित्यं सम्पद्यते राज्ञा पत्न्या पुत्रेण बान्धवैः ।।
ज्ञातिभिः सज्जनैश्चापि शत्रुभिश्च विशेषतः ।। ११ ।।

हे देवि ! इसका महाफल सुनो-जन्मान्तरमें भी वह सुखी होता है। इससे राजा स्त्री पुत्र बांधवोंके सहित नित्य सम्पत्तिमान् होता है। ज्ञाति सज्जन शत्रु सबकी दृष्टिमें विशेष होता है ।। ११ ।।

अन्तद्वयं समागृह्यमधोरेफसमन्वितम् ।। १२ ।।
ॐकारसंयुतं कृत्वा रेखाबिन्दुसमायुतम् ।। १३ ।।
"ॐ क्ष्रौं क्ष्रौं" मन्त्रोयम् ।
अनेनैव तु मन्त्रेण ये जपन्ति महाजनाः ।
ते सर्वे *क्षेममायान्ति सततं तस्य जापनात् ।।१४।।

अन्तके दो अक्षर ग्रहण करे। उसको रेफ लगावे, ॐकारसंयुक्त करके रेखाबिन्दुके सहित मंत्रोद्धार करे । मंत्र यह है- 'ॐ क्ष्रौं क्ष्रौं' इस मंत्रको जो महाजन जप करते हैं वे निरन्तर इस जपके फलसे क्षेम शान्तिको प्राप्त हो जाते हैं ।। १२-१४ ।। इस यंत्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख दक्षिण भुजामें धारण करे तो क्षेम, शांति और रक्षा होती है ।।



श्वेतार्कमूलं पुष्यार्के समुद्धृत्य विधारयेत्
बाहुभ्यां व्याधयो न स्युस्त्वरिष्टानि विशेषतः ।। १५ ।।

रविवार युक्त पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड लावे । उसको भुजामें बांधनेसे व्याधि और अरिष्ट नहीं होता है ।। १५ ।।

---

* शान्तिमायान्ति । इति पाठान्तरम् ।

तद्दर्शनेन नश्यन्ति डाकिनीदानवादयः ।
तद्धूपेन पलायन्ते प्रेताद्या दूरतो ध्रुवम् ।। १६ ।।

उसके दर्शनसेही डाकिनी अथवा दानव आदि नष्ट होजाते हैं और इसकी धूपसेही प्रेतादि दूरसे भाग जाते है ।। १६ ।।

पूर्वभाद्रपदाऋक्षे वन्दाकं तु शिरीषजम् ।
संगृह्य शिरसि क्षिप्ते ह्यभयं भवति ध्रुवम् ।। १७ ।।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें शिरसका वन्दा लावे, उसको शिरपर रखनेसे निश्चयसे अभय होता है ।। १७ ।।

विष्णुक्रांताभवं मूलं हस्तस्थं चौरभीतिजित् ।
* नरसिहस्य मन्त्रेण सकृदुच्चरिते हरेत् ।
डाकिनीग्रहभूतानि तमः सूर्योदये यथा ।। १८ ।।

विष्णुक्रान्ताकी जड हाथमें स्थित रखनेसे चोरका भय नहीं होता है और नृसिहके मन्त्रसे सब दु.ख हर जाते है, एवं डाकिनी ग्रह भूत ऐसे नष्ट होजाते है जैसे सूर्यके सम्मुख अंधकार नहीं रहता ।। १८ ।।

भूतप्रेतपिशाचादिभये स्मृत्वा नरोऽभयः ।। १९ ।।
भैरवीं तु महापूर्वां भवेदेव न संशयः ।। १९ ।।

प्रेत पिशाचादिके भयमे महाभैरवीको स्मरण कर मनुष्य अभय हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं ।। १९ ।।

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्त	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इस यंत्रको गोरोचनसे भोजन पत्रपर साध्य नामसहित लिख कंठमें धारण करे तो उसके अरिष्ट संबंधी सब ज्वर नाश होते हैं ।।

---

* नरसिहमन्त्र १७२ पृष्ठे लिखित ।

अथ निद्राकरणम्

निगडे चौरिकायां च पठेद्वारत्रयं मनुम् ।
सर्वे प्रहरिका यान्ति निद्राया वशमेव च ॥ २० ॥

चोर बेडीको तीन वार मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे तो सब पहरा करनेवाले सो जायंगे ॥ २० ॥

मन्त्रः—"ॐकालकालिका महिषासुरनाशिनी योगनिद्रागी अमुकारपुरियादेवी कालिकामालायोगनिद्राणी उदयपाना ॥ नंदीकाल मायाधरी नागनिद्राणी या अमुकारपुरीदण्डपहरी भूपैं लोटैं कालिकार आज्ञा गडागडी पीठे कालिकार आज्ञा ॥"

इति लौकिकमन्त्रः ॥

"ॐकालकालिका महिषासुरनाशिनी योगनिद्राणी अमुकारपुरिया देवी कालिकामालायोगनिद्राणी उदयपाना ॥ नन्दीकाल मायाधरी नागनिद्राणी या अमुकारपुरी दडपहरी भूपैं लोटैं आज्ञा गडागडी पीठे कालिकार आज्ञा ॥" इति लौकिकमन्त्र ॥

अथ निगमोक्तम्

"ॐ ह्रीं चण्डाचण्ड उग्रचण्डारिका कालिका निद्रय निद्रय । इति मन्त्रेण महानिद्रा भवति ॥ एतन्मन्त्रं पठित्वा तस्य गृहे वा पठित्वा धूलिंकृत्वा क्षिपेत् । कालिका विद्या काल मोहै देवासुरनरके हो स्थिर लहै ॥ कालिका त्रिभुवन जगत कालिकार दासी पहरि । जागंतालि निद्र गेल महि मन्द्रभे यशी । कालिकार आज्ञा निद्राली लागे उदय देषि ।

आनिद्रभागे ॥ गुवाकं खादित्वा तस्यावशिष्टं विवरं कृत्वा संयोज्य तत्र प्रस्त्रावयेत् । तस्मिन् वाटिकायामायाति तस्यानेन मन्त्रेण निद्रां करोति ॥ २१ ॥

अथ शास्त्रमत्र–ॐ 'ह्रीं चण्डाड उग्र चण्डारिका कालिकानिद्रय २, इस मत्रसे महानिद्रा होती है । यह मंत्र पढकर उसके घरमें विद्या निक्षेप करे । वह विद्या यह है–,कालिका विद्या काल मोहै देवासुर नरतकहो स्थिर लहै, कालिका त्रिभुवन जगत कालिकार दासीपहारि-जागंतालि निद्र गेल महि संद्रभे यशी कालिकार आज्ञा निद्राली लागे उदय देषि आनिन्द्र भागे ।' सुपारी खाकर उसके अवशिष्टको विवर करके सयुक्त कर उसपर (प्रस्त्राव) मूत्र कर उसे वाटिकामें रखदे । जो वहां उस वाटिकामें ऊपर जायेगा उसको निद्रा होगी ॥ २१ ॥

काकजंघाजटा निद्रां जनयेच्छिरसि स्थिता ।
मूलं वा काकमाच्याश्च कृष्णायास्तद्गुणं स्मृतम् ॥२२॥

घुंघुची और रुद्रजटा शिरपर डालनेसे निद्रित कर देती है अथवा काकमाची (मकोयकी) जड, पीपल शिरपर डालनेका भी यही गुण है ॥ २२ ॥

मुनिखण्डकशाकं वा शय्यास्थाने खनेदथ ।
करञ्जमूलं शिरसि बंधनात्कुरुते तथा ॥ २३ ॥

बकवृक्ष (इक्षु विशेषका शाक) शय्यास्थानमें खोदकर गाड देनेसे अथवा करंजुएकी जड शिरपर बांधनेसे नींद आजाती है ॥२३॥

निद्राकरणमत्र

"ॐ शुद्धे २ महायोगिनि महानिद्रे स्वाहा"

मंत्र–'ॐशुद्धे२महायोगिनि महानिद्रेस्वाहा' यह महानिद्रायणीका

मंत्र है, इसका ३०० जपकर श्मशानकी गोमूत्रसे प्लावित मृत्तिका घरमें डालनेसे निद्रा होती है । यह निद्राकी विद्या संक्षेपसे कही है ॥

नीलोत्पलं समरिचं नागकेशरमूलकम् ।
पिष्ट्वा तद्रञ्जयेच्चक्षुर्निद्रामाप्नोत्यसंशयम् ॥ २४ ॥

नीलोफर, कालीमिरच, नागकेशर इन सबको बारीक पीसकर नेत्रोंमें आजे तो अवश्य नींद आती है ॥ २४ ॥

निद्रानाशनम्

कूष्माण्डं महिषीश्टृङ्गं पिष्ट्वा तत्समभागकम् ।
लेपयेद्दक्षिणे पृष्ठे तस्य निद्राक्षयो भवेत् ॥ २५ ॥

पेठा और महिषीश्टृंग इन दोनोको बराबर भाग लेकर दहिनी ओर लेप करनेसे निद्राका क्षय होता है ॥ २५ ॥

शोभाञ्जनस्य बीजानि नीलोत्पलसुपुष्पकम् ।
समनागेश्वरं पिष्ट्वा निद्रां मुञ्चति चाञ्जनात् ॥ २६ ॥

सहिजनके बीज, नील कमलका पुष्प और नागकेशर इनको समान भाग ले पीसकर आजनेसे निद्राको छोड देता है ॥ २६ ॥

बृहतीपक्वफलकं पिष्ट्वा च मधुयष्टिभिः ।
यस्य नेत्रेऽञ्जनं दद्यान्निद्रा तस्य विनश्यति ॥ २७ ॥

कटेरीके पक्के फल (मधु) शहद वा मुलैठीसे पीस जिसके नेत्रमें आंजे उसकी निद्रा क्षय होती है ॥ २७ ॥

* कनकधत्तूरमूलं मृताभ्रकेतकीपुष्परजः ।
एतानि पिष्ट्वा कपटन्वेषेन खादयेन्निद्राभञ्जनं भवति ॥ २८ ॥

---

* कृष्णधत्तूरमूलम् ।

कृष्णधतूरेकी जड शोधा अभ्रक केतकीके फूलोका रस ... गो पीसकर श्वेत कटेरीके रसमें खवावे तो नीद नहो आती है ।। २८ ।।

बन्धनयन्त्रम्

साध्यके पैरोकी धूलि और हरताल इनसे साध्यका नाम सहित इस यन्त्रको लिख बरतनमें स्थापन करे श्मशानमें गाडे तो अवश्य वह बंध जाता है ।

नीं नीं नीं नीं

देवदत्त नींनींनीं

अथ बन्धमोचनम्

मार्गशीर्षस्य पूर्ण्या शिखिमूलं समुद्धरेत् ।
बन्धनान्मुच्यते तेन शिखाबद्धो न संशयः ।। २९ ।।

मार्गशीर्ष महीनेकी पूर्णिमाको शिखी (चित्रक) की जड उखाड कर लावे उसे शिखामें बांधनेसे अवश्य बंधनसे छूट जायगा । इसमें सन्देह नहीं ।। २९ ।।

बन्धमोचनमन्त्र

"ॐ नमः कनकपिंगले * रुद्रदहृयांशे रौद्रास्थिधारिणि तिष्ठ तिष्ठ सरसर सर्वान्मोहय २ भगवति शिखिजे तिमिरे महामाये स्वाहा ।।" अष्टोत्तरशतं जप्त्वा शिखायां पूर्वौषधं बन्धयेत्ततः सिद्धिः ।
+ प्लक्षांशेन ककारांतं लिखेद्बन्धनमोचनम् ।। ३० ।।

मन्त्र यह है–,ॐ नमः कनकपिंगले रुद्रहृदयांशे रौद्रास्थिधारिणि तिष्ठ तिष्ठ सर सर सर्वान्मोहय २ भगवति शिखिजे तिमिरे महामाये स्वाहा ।' यह मन्त्र एक सौ आठ वार जपकर शिखामें औषधी बांधनसे सिद्धि होती है ।। प्लक्षांशसे ककार पर्यन्त मंत्र लिखनेसे बन्ध-

---

* रुद्रहृदयाङ्गे वेतालास्थिधारिणि । + लक्षवर्ण ककार च इत्यपि पाठ

मोचन होता है अथवा फथणं एफ लाख लिखनेसे बंधनसे मुक्त होता है ॥ ३० ॥

बन्धमोचनयन्त्राणि ।

इस यन्त्रको हलदी हरतालसे साध्यनामसहित शिलापट्टपर लिख अधोमुख धर दे तो बन्धनसे मुक्त होगा ।

ॐ भद्रराजसचिक्र

गोरोचनसे भोजपत्रपर साध्य नाममहित इस यंत्रको लिख,,सुख नामा पिशाची अमुकं हनहन पच पच शीघ्र वशमानय स्वाहा" इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर सपुटमें स्थापनकर उपरोक्त मंत्र जपे तो बन्धनसे छूट जाता है ।

अ आ इ ई

देवदत्त

ह्रीं क्षः ह्रीं क्षः

ह्रीं क्षः ह्रीं क्षः

इस यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख शिखामें बांधे तो बन्धनसे मुक्त होजायगा ।

इस यंत्रको गोरोचनसे भोजपत्र पर साध्यनामसहित लिख ग्रीवा या शिखामें धारण करे तो निश्चय बन्धनसे मुक्त होजाता है।

अथ निगडादिभजनम्

हस्तार्के सेन्दुवारस्य मूलं चोत्तरगं हरेत् ।
स्पर्शनं बन्धविच्छेदं कुरुते शीघ्र मारुतः ॥ ३१ ॥

हस्तनक्षत्र युक्त रविवारको उत्तर दिशामें जाकर सिन्धुवार (सिम्हालु) की जड लावे, उसके स्पर्शमात्रसे निगड भंग हो जाता है, इसमें सन्देह नही ॥ ३१ ॥

मासी रक्तोत्पलं तुल्यं कृकलासे च भोजयेत् ।
तन्मलैर्गुटिकास्पर्शात्तालयन्त्रं भिनत्यलम् ॥ ३२ ॥

जटामासी (बालछड) लाल कमल इनको बराबर ले कृकलास (घिरघट) को भोजन करावे । उसकी बीटकी गुटिकाके स्पर्श करके लगानेसे तालयत्र टूटजाता है ॥ ३२ ॥

सुपक्वमिष्टिका कृष्णवज्री ग्राह्यस्तु योगिभिः ।
सूक्ष्मचूर्ण तु ता कृत्वा लोहकिट्टमथापि वा ॥ ३३ ॥
सूत्रै रज्जुं दृढीकृत्य तिलतैलेन लेपितम् ।
तच्चूर्ण लोडितं कृत्वा महालोहं भिनत्त्यलम् ॥ ३४ ॥

सुपक्व इष्टिका (ईंट) और थूहरका रस लावे, उसका सूक्ष्म चूर्ण करके अथवा लोहकिट्टको लेकर सूत्रकी रस्सी दृढ करके तिलके तेलसे लिप्त करे । उस चूर्णको लगावे तो यह महालोहेको क्षणमें तोड देता है ऐसा योगिराजोने कहा है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

निगडभञ्जनमत्रा

"ॐ नमोभगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपधराय हस २ नृत्य नृत्य तुद २ नानाकौ-

तुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा ।" अनेन सर्वयोगाभिमन्त्रणात् सिद्धिर्भवति ॥ ३५ ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानरूपधराय हस हस नृत्य नृत्य तुद तुद नाना कौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठ ठ· स्वाहा' इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित करनेसे सब सिद्धि होती है ॥ ३५ ॥

"वाघवाहिनी सिहे या कालि २ कत्वामिका आर्यादेवी मन्त्रितोरदासरणे २ नाहिथ्लिशतो इदवीत्रिभुवनमातु चौसष्ठिमि निबन्धन भागि आपला चण्डाचण्डचामुण्डीचामुण्डविकटकालिकामादशन आगे अमुकाबंधनभाङ्गिया आपलाॅ बाधव २ थायापायेनिश्चलचौसष्ठीबधनविरकाली कामाछांडे हुंकारः चौसष्ठीबधनकाचारंभागीभइलल्या इखमकालिकारआज्ञा । अथवा जाआजा देविर्मांचतोवदासरसेवाननाहिविनासन्तोम्बी देवी त्रिभुवनरणरमापाचौसृष्टिबंधनभागीअम्बेला । चडाचंडचामुण्डाविकट्टकालिकामादनआगेअमुकारबन्धभागीआंफेलावबाधवाघपायात्रनियन चौसष्ठीबन्धन मैलविरलाकालिकामाछडे हुंकार चौशठिबन्धनकाठारभाद्रिभरलक्षारस्वारकालिकारआज्ञा । अथवा ॐ अग्निमुखीपिपाचीअमुकंहन हन पच पच शीघ्रंमेवशमानयस्वाहा" एतन्मत्रद्वयं पूर्वमष्टोत्तरशतं जप्त्वा सप्तवारं जप्ते नानाविध बन्धनच्छेदो भवति ।

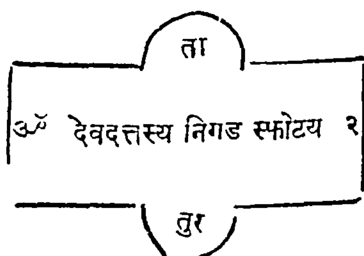
"ॐ वाघ वाहिनि–सिद्धे पाकादि लिका लायि । आआ जा देवीमें चिन्तो वदा सरसे बान नाहि विनाश तोम्विदेवी त्रिभुवन रणरमा पाचौ सृष्टि बन्धन भागी आभ्पेला चण्डा चण्ड चामुण्डा विकट कालिका मादन आगे अमुकार वन धन भायी आफेला व वाघ वाघ पायात्रनि पन चौसठि बन्धनमल विरला कासिका माछडे हूकार चौसठि बन्धन कार ठार भाद्रि भाल क्षार स्वार कालिका आज्ञा ।। यह दोनो मन्त्र पहले एकसौ आठ वार जपै फिर सातवार जपे तो अनेक प्रकारके बन्धन छेदन होजाते है ।।

"ॐ दं हुं ॐ" एतन्मंत्रं पठित्वा करांगुल्या प्रहारे द्वारि दत्ते द्वारं मुक्तं भवति ।।

'ॐ दं हु ॐ' यह मन्त्र पढकर हाथकी अगुलीके प्रहारमात्रसे द्वार मुक्त होता है ।।

"आय, आय चिञ्चिठिचिठिहांलावज्रनन्दिकाकालिका" ।। अनेन मंत्रेण श्वेतसर्षपं श्वेतोदुम्बरपुष्पं त्रिः पठित्वा प्रथमद्वारे क्षिपेत् सर्वद्वाराणि भञ्जन्ति ।। ३६ ।।इति निगडभञ्जनम् ।

'आय आय चि चिठि चिठि हांल वज्र नन्दिका कालिका' इस मन्त्रसे श्वेत सरसो । श्वेत उदुम्बरके फूल तीन वार पढकर पहले द्वारपर फेके तो सब द्वार भग्न होजाते है ।। ३६ ।। इस यंत्रको गोरोचन और कुंकुमसे भोजपत्रपर लिख शंख संपुटमें स्थापनकर त्रिकाल पूजाकर शिरमें धारण करे तो निगड भंजन होगा।।



अथ गृहक्लेशनिवारणम्

तक्रपिष्टेन तालेन लेपयेत्पुत्रिकाकृतिम् ।
तामाघ्राय गृहाद्यान्ति मक्षिका नात्र संशयः ॥ ३७ ॥

हरतालको छाछके साथ पीसकर एक पुतली बनाय उस पुतलीके शरीरमें लेपकर रक्खे, उसको सूंघनेसे मक्खी नहीं आती, इसमें संदेह नहीं ॥ ३७ ॥

श्वेतार्कदुग्धकुल्माष तिलचूर्णसमन्वितम् ।
अर्कपत्रेषु विन्यस्तं मूषकान्तकरं गृहे ॥ ३८ ॥

सफेद आकका दूध, कुल्माष (कुल्थी) उडद वा काँजी, तिल इनका चूर्ण कर आकके पत्तेपर रखनेसे मूषे नष्ट होजाते हे ॥ ३८ ॥

तालकं छागविण्मूत्रं पलाण्डु सह पेषयेत् ।
आलिप्य मूषिकं तेन जीवितं च विसर्जयेत् ।
तं दृष्ट्वा च गृहं त्यक्त्वा पलायन्ते हि कौतुकम् ॥ ३९ ॥

हरताल, छागकी विष्ठा और मूत्र इसको प्याजके साथ पीसे, उससे मूषिकाको आलेपन करके जीताहुआही छोड दे । उसको देखकर घरसे और चूहे कौतुकपूर्वक पलायन कर जाते हैं ॥ ३९ ॥

मार्जारस्य मलं तालं पिष्ट्वा मूषिकमालिपेत् ।
तमाघ्राय गृहं त्यक्त्वा सद्यो निर्यान्ति मूषिकाः ॥ ४० ॥

मार्जारका मल, हरताल इनको पीसकर मूषकपर लपेट छोड दे, उसको सूंघकर घर छोड चूहे अन्यत्र चले जाते है ॥ ४० ॥

गन्धकं हरितालं च ब्राह्मीत्रिकटुसंयुतम् ।
छागलीमूत्रतः पिष्ट्वा पूर्ववन्मूषिकं लिपेत् ॥ ४१ ॥

गन्धक, हरताल, ब्राह्मी, त्रिकुटा छागलीके मूत्रसे पीसकर मूषकपर लपेटकर छोड दे तो चूहे भाग जाते है ॥ ४१ ॥

मघाया ब्रध्नकं क्षेत्रे स्थापयेन्मधुकोद्भवम् ।
मक्षिकामूषकानां च जायते तुण्डबन्धनम् ।। ४२ ।।

मघानक्षत्रमे श्वेत आककी जड मुलैठीके साथ शुभक्षेत्रमें स्थापन करे तो मूषक और मधुमक्खीकी तुण्ड बन्धनमें हो जाती है ।। ४२ ।।

मूषकाकर्षको दीपः सावरीगुडतैलजः ।। ४३ ।।

गुड, तेल, सावरी पडा हुआ हो उसका दीपक मशक निवारण करता है ।। ४३ ।।

"पूर्वे ब्रह्मा मे बद्धः पश्चिमे विष्णुर्मे बद्ध उत्तरे रुद्रो मे बद्ध. दक्षिणे यमो मे बद्धः पाताले वासुकी मे फणिसहस्रे बद्धः हूं अङ्गुष्ठाय नमः" । करसम्पुटं कृत्वा तालत्रयं दद्यात् । ततो मूषिकमशकनिवारणं भवति ।। ४४ ।।

'पूर्वे ब्रह्मा मे बद्धः पश्चिमे विष्णुर्मे बद्ध. उत्तरे रुद्रो मे बद्ध. दक्षिणे यमो मे बद्ध. पाताले वासुकी मे बद्धः फणिसहस्रे बद्ध. हृ अंगुष्ठाय नम' इस मन्त्रसे करसपुट कर तीन ताली दे तो मच्छडोका निवारण होता है ।। ४४ ।।

रोहिपतृणपुष्पं तु वर्तिमध्ये निवेशयेत् ।
तद्दीपदर्शनादेव क्षिप्रं नश्यन्ति मत्कुणाः ।। ४५ ।।

बहेडेका तृण और फूल बत्तीके बीचमें रक्खे, उसके द्वारा दीपक जलावे तो उस दीपकके दर्शनमात्रसे तत्काल खटमल नष्ट होजाते है ।। ४५ ।।

अर्कतूलमयीवर्ति*र्भावयेत्तावकेन च ।

---

* भावयेद्यावकेन च ऐसा पाठ है । अर्थ महावरकी भावना दे ।

दीपं तत्कटुतैलेन निश्शेषा यान्ति मत्कुणाः ।। ४६ ।।

आकके तूलकी वत्तीको कडवे तेलसे सयुक्त कर दीपकमे जलावे तो सब प्रकार खटमल नष्ट हो जाते हे ।। ४६ ।।

अर्ज्जुनस्य फलं पुष्पं लाक्षा श्रीवासगुग्गुलुम् ।
श्वेतापराजितामूलं भल्लातकविडङ्गकम् ।। ४७ ।।
धूपं सर्जरसोपेतं प्रदेयं गृहमध्यतः ।
सर्पाश्च मत्कुणा मूषा गन्धाद्याति दिशो दश ।। ४८ ।।

अर्जुनवृक्षके फल और पुष्प, लाख, श्वेत, चन्दन, गूगल श्वेत अपराजिताकी जड, भिलावा, वायविडग, सर्जरस (राल) इनका चूर्ण कर घरमें धूप दे इसकी गधसे मर्प चूहे खटमल मव नष्ट हो जाते है ।। ४७ ।। ४८ ।।

गुडश्रीवासभल्लातविडङ्गं त्रिफलायुतम् ।
लाक्षारसोऽर्कपुष्पं च धूपो वृश्चिकसर्पहृत् ।। ४९ ।।

गुड, श्वेतचन्दन वा चावल, भिलावा, वायविडग, त्रिफला, लाखका रस, आकका फूल इनकी धूप देनेसे घरमें सर्प और बिच्छू नहीं रहते है ।। ४९ ।।

मुस्तासिद्धार्थभल्लातकपिकच्छूफलं गुडम् ।
चूर्णं भानुफलोपेतं दहेत्सर्जरसैः समम् ।। ५० ।।
मत्कुणा मशकाः सर्पा मूषिका विषकीटकाः ।
पलायन्ते गृहं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ।। ५१ ।।

मोथा, सरसो, भिलावा, करज, कौछके फल, गुड इनका चूर्ण कर आकके फलसे सयुक्त करे और उसके साथ रालकी भस्म मिलाय धूप दे तो खटमल मच्छर सर्प मूषक विषके कीट ये सब युद्धमें कातर हुए मनुष्यके समान घरको छोडकर भाग जाते है ।। ५० ।। ५१ ।।

सर्ज्जरसः *शक्रमेदोर्ज्जुनमूलमरुवककेतकनखबद्धः ।
एतैर्धूपो रचितः कीटभुजगमशकमक्षिकादिहरः ॥५२॥

राल, कुडा, मेदा, अर्जुनकी जड, मरुआ, केतकी, मूल, नखी इनकी धूप देनेसे कीट, सर्प मशक, मच्छर, शहदकी मक्खी ये भागजाती है ॥ ५२ ॥

राजवृक्षफलं बद्धं खट्वाया मत्कुणापहम् ।
लाक्षासर्ज्जरसोशीरं सर्षपः पत्रकं परम् ॥ ५३ ॥

खाटमें कर्णिकार वा अमलतासका फल बाधनेसे खटमल रहने नहीं पाते । लाख, राल, खश, सरसो यह सब (दुःख) दूर करते है ॥ ५३ ॥

सोमराजस्य वृक्षस्य पल्लवाग्रेण वर्तिकाम् ।
कृत्वा दीपं प्रकुर्वीत मत्कुणश्च विनश्यति ॥ ५४ ॥

सोमराज वृक्षके पत्तेके अग्रभाग द्वारा बत्ती बनाकर उसका दीपक जलानेसे खटमलोका नाश होजाता है ॥ ५४ ॥

भल्लातकविडङ्गानि विश्वकं पुष्करं तथा ।
जम्बुलो मशक हन्ति धूपाद्वा गृहमध्यतः ॥ ५५ ॥

बहेडा, वायविडग, सोठ, पुष्करमूल और जम्बु इनकी धूप देनेसे मशक दूर होते है ॥ ५५ ॥ इति गृहक्लेशनिवारण॥

अथ क्षेत्रोपद्रवनाशनम्

अथ क्षेत्रस्य शस्यानां सर्वोपद्रवनाशम् ।
वालुकाश्वेतसिद्धार्थान् प्रक्षिपेत् क्षेत्रमध्यतः ॥ ५६ ॥
शलभाः सर्पकीटाश्च वराहमृगमूषिकाः ।
मशकास्तत्र नो यान्ति मन्त्रविद्याप्रभावतः ॥ ५७ ॥

* कत्कमेद । ऐसा पाठ है अर्थ—मासरोहिणी ।

अब खेतीके सम्पूर्ण उपद्रव नाश करनेवाला विधान कहते हं- वालुका, श्वेतसरसो इनको खेतके वीचमें डालदे तौ शलभ सर्प कीडे वराह मृग मूषक खरगोश ये सब इस मन्त्रविद्याके प्रभावसे वहा नहीं आते हैं ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

मन्त्रः-"ॐ नमः सुरेभ्यः बलज जपपरि परिपरि-रजपरिपरिमिलि स्वाहा ॥ ओं सुरेभ्यो नम ॥" नमस्कृत्य इमां विद्या प्रयोजयेत् ॥ "विद्यां प्रयोजयामीति विद्या मे सिद्ध्यतु स्वाहा । अखिलजम्बूकानां मृगाणां शशकानामन्येषा प्राणिनां शलभादीनामन्येषां प्राणिनां तुण्डबन्धनं करोमीत्यत्र प्राणे कृतघ्नस्य तेन पापेन लिप्यते यत्र मन्त्रं व्यतिक्रमति स्वाहा ॥ एतन्मन्त्रद्वयेन वालुकाभिः सह श्वेतसर्षपान्सप्तवारमभिमन्त्र्य क्षेत्रमध्ये क्षिपेत्सर्वोपद्रवो नश्यति ॥

मूषजम्बूककोटानां कुरुते तुण्डबेधनम् ।

'ॐ नमः सुरेभ्यः बलज जप परि परि परि रज परि परि मिलि स्वाहा ॐ सुरेभ्योनमः' इस प्रकार देवताओको नमस्कार कर इस विद्याका प्रयोग करे । 'विद्यांप्रयोजयामीति' इन दो मन्त्रोसे वालूके साथ श्वेत सरसोको सात वार अभिमंत्रित कर क्षेत्रके मध्यमें डालनेसे सब उपद्रव शांत होजाते हैं ॥ मूषक गीदड कीटादि जीवोकी तुण्ड-बधित होजाती है ॥

विद्यामङ्कुशनाथस्य मन्त्रं वा भैरवस्य च ॥

"नमोनगरनाथाय हयहरहरशिल २ सर्वेषां प्राणिनां

तुण्डबन्धनं कुरुकुरु ह्लुंफट्स्वाहा उज्जयनीनगरी भैरबोले महादेवभण्डारफूलवोले हनुमन्तसाक्षी अस्तिअस्तु" अनेन मन्त्रेण सप्ताथिमत्रितं चन्दनं वाटिकामध्ये नि·क्षिपेत् । पुष्पफलं समस्तं निरुपद्रवं भवति ।। ५८ ।।

अकुशनाथकी विद्या या भैरवका मंत्र पढे—ॐ नमो नगरनाथाय हय हरहर शिलशिल तदेवा प्राणिना तुण्डबधनकुरु २ ह्ल ुं फट् स्वाहा। उज्जरनीनगरी भैरव बोले महादेव भण्डार फूल वोले हनुमन्त साक्षी अस्ति अस्तु' इस मत्रसे सात वार अभिमत्रित कर चन्दन बगीचेके मध्यमें डालनेसे पुष्प फल सब निरुपद्रव होते है ।। ५८ ।।

देवदालीं च सिद्धार्थं गुटिका कारयेद्बुधः ।
क्षेत्रमध्ये तु निक्षिप्य सर्वपक्षिभयं हरेत् ।। ५९ ।।

देवदाली सरसो इन दोनो वस्तुओकी गुटिका करे । खेतके मध्यमें डाल देनेसे सब पक्षियोका भय बुद्धिमान् दूर कर सकता है ।। फूलवाडीमें भी यह डालनेसे सब उपद्रव शान्त होजाते है ।। ५९ ।।

पूर्वाषाढाख्यऋक्षे तु वन्दा विभीतवृक्षजाम् ।
शस्यमध्ये क्षिपेत्तेन शस्यवृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।। ६० ।।

पूर्वाषाढा नक्षत्रमें बहेडेका बन्दा लेकर खेतीके मध्यमें डालनेसे शस्यकी वृद्धि होती है ।। ६० ।। इति शस्योके सर्व उपद्रवनाशन ।।

अथ गोमहिष्यादिदुग्धवर्द्धनम्

"ॐ हुंकारिणीप्रसव ॐ शीतलम्" अनेन सप्तवारं तृणादिकमभिमन्त्र्य भोक्तुं दद्यात् तदा बहुलं दुग्धं प्रसवति ।। ६१ ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने नवमोपदेश ।।

'ॐ हुकारिणी प्रसन ॐ शीतलम्' इस मंत्रसे तृण आदिको सातवार अभिमन्त्रित कर गौ आदिके खानेको दे तो बहुत दूध गौ भैंस आदि देवेंगी ।। ६१ ।। इति गोमहिषीआदिदुग्धवर्द्धन ।।

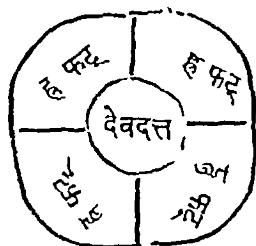
इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पडितज्वालाप्रसादमिश्र-कृतभाषाटीकाया अरिष्टनाशादिशस्योपद्रवनाशन गोमहिष्या दिदुग्धवर्धन नाम नवमोपदेश ।। ९ ।।

अथ दशमोपदेशः

अथोच्चाटनम्

मङ्गलवारे रात्रौ श्मशानाङ्गारं कृष्णवस्त्रेण कृत्वा रक्तसूत्रेण संवेष्टय यस्य गृहोपरि क्षिपेत्सप्ताहाभ्य-न्तरे तस्योच्चाटनं भवति ।। पञ्चाङ्गुलं चित्रकस्य कीलं ग्राह्यम् पुनर्वसौ सप्ताभिमन्त्रितं गेहे खनेत् । उच्चाटनं भवेत् । "ॐलोहितमुखेस्वाहा" अस्य अष्टोत्तरसहस्रजपेन पुरश्चरणम् ।। १ ।।

मगलके दिन रातको श्मशानसे काले वस्त्रमें अगार लावे । लाल सूतमे लपेट जिसके घरमें डाले उसका उच्चाटन सात दिनमें हो ।। पुनर्वसुनक्षत्रमें चित्रक (अण्ड) की पाच अगुल कील ग्रहण करे । सात वार मत्र पढकर जिस घरमें डाले उसे उच्चा-टन होजायगा ।।'ॐ लोहितमुखे स्वाहा' इसको १००८ जप पुरश्चरण करे ।।१।। श्मशानके अगारसे श्मशानके (चैल) वस्त्रपर इसयन्त्रको लिख शत्रुके स्थान पर रखदे तो एक रात्रिमें ही उच्चाटन हो जाता है ।।



भरण्यामंगुलैकं तु उलूकस्यास्थिकीलकम् ।
सप्ताभिमन्त्रितं यस्य खनेदुच्चाटनं भवेत् ।
मन्त्रः—"ॐ दहदहहलहलस्वाहा ॥ २ ॥

भरणीनक्षत्रें एक अगुल उल्लूकी अस्थि लेकर सात वार मत्र पढकर जिसके यहा गाडदे उसका उच्चाटन होजाता है। यह मंत्र पडे ,ॐ दह दह हल हल स्वाहा ॥ २ ॥'

काकोलूकस्य पक्षास्तु हुत्वा ह्यष्टोत्तरं शतम् ।
यन्नाम्ना मन्त्रयोगेन समस्तोच्चाटनं भवेत् ॥
"ॐनमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं
सपुत्रबान्धवैः सह हन २ दह २ पच २ शीघ्रं
उच्चाटय २ हुं फट् स्वाहा ठः ठ." ॥ ३ ॥

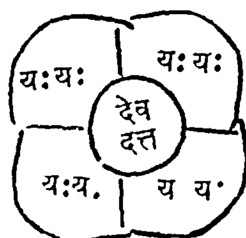
कौए और उल्लूके पख एकसौ आठ लेकर जिसके नामसे मंत्र पढ हवन करे, उसका अवश्य उच्चाटन होगा। मत्र यह है—'ॐ नमो भगवते रुद्राय दष्ट्राकरालाय अमुक सपुत्रबाधवैः सह हन २ दह २ पच २ शीघ्र उच्चाटय २ हु फट् स्वाहा ठःठः' ॥ ३ ॥

विष, राई, धतूरा, लवण और निम्बसे साध्यका नाम उहित श्मशानके वस्त्रपर इस यत्रको लिख श्मशानमें गाड देनेसें उसका उच्चाटन होता है, इसमें सदेह नही है, इसका मंत्र यह है कि, ॐ तारे २ ॐ तुरे स्वाहा"।

ॐ तारे ॐ तारे तुरे चल २ शीघ्रगामिनी अमुकमुच्चाट य २ स्वाहा

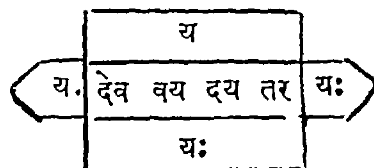
लेपयेत्काकपित्तेन कीलमंगु लसम्भवम् ।
निखनेद्यस्य भवने तस्यचोच्चाटनं भवेत् ।
"ॐह्रीं दंडिन् २ महादण्डिन्नमोस्तुते ठः ठः" ॥ ४ ॥

कौएके पित्तसे एक अगुल कीलको लिप्त करे और उसे लिखकर जिसके द्वारपर डालदे उसका उच्चाटन हो जाता है। मन्त्र–ॐ ह्री दंडिन् २ महादण्डिन् नमोस्तु ते ठ ठ. ॥ ४ ॥ इस यत्रको उलूकके रुधिरसे ध्वजवस्त्रपर पक्षकी लेखनीसे लिख कागके गलेमे बाध छोडदे तो उच्चाटन होजाता है ॥



नरास्थिकीलकं द्वारे निखन्याच्चतुरंगुलम् ।
मन्त्रयुक्तमरेर्द्वारे सत्यमुच्चाटनं भवेत् ॥
"ॐनमो भगवते रुद्राय अमुकं गृह्ण २ पच २
त्रासय २ त्रोटय २ नाशय २ पशुपतिराज्ञापयति ठः ठः" ॥ ५ ॥

मनुष्यकी अस्थि (हड्डी) चार अगुल मत्र पढकर जिस शत्रुके द्वारपर गाड़दे उसका अवश्य उच्चाटन होजायगा। मन्त्र यह है–,ॐ नमो भगवते रुद्राय अमुक गृह्ण २ पच २ त्रासय २ त्रोटय २ नाशय २ पशुपतिराज्ञापयति ठ ठ. ।५। स यत्रको बहेडेके पत्तोके रससे भोजपत्रपर जिसका नामसहित खरमूत्रमें डालकर तपा दे तो शीघ्र उसका उच्चाटन होता है ॥



मृतकस्य पुरुषस्य निर्माल्यं चैलमेव च ।
प्रेतालयात् समागृह्य यस्य गेहे निधापयेत् ॥
अष्टम्यां च चतुर्दश्या तस्यैवोच्चाटनं भवेत् ।
एष योगो मया ख्यातो विना मन्त्रेण सिद्ध्यति ।
उद्धृते सति शान्तिर्भवति ॥ ६ ॥

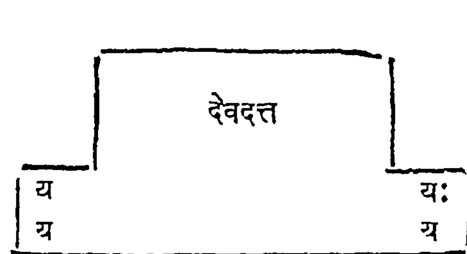
मृतक पुरुषका निर्माल्य और चैलवस्त्र मरघटसे ग्रहण करके वैरीके घरमें डालदे । अष्टमी और चौदसके दिन यह कृत्य करनेसे उसका उच्चाटन होजाता है, यह योग विनाही मन्त्रके सिद्ध होता है। उखाडनेसे शान्ति होती है ।। ६ ।।

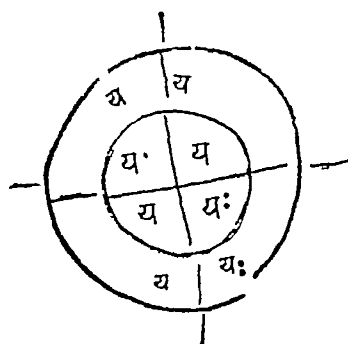
श्वेतलाङ्गलिकामूलं स्थापयेद्यस्य वेश्मनि ।
निखनेत्तु भवेत्तस्य सद्य उच्चाटनं ध्रुवम् ।। ७ ।।

श्वेत कलहारीकी जडको जिसके घरमे डालदे, वा गाडदे उसको उस समय शीघ्र ही उच्चाटन होता है ।। ७ ।।

सिद्धार्थं शिवनिर्माल्यं यद्गेहे निखनेद्बुधः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य ह्युद्धृते तु पुनः सुखी ।। ८ ।।

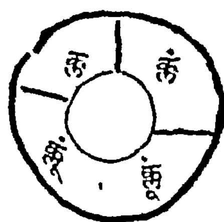
सरसों और शिवका निर्माल्य इनको जिसके घरमे गाडदे उसका उच्चाटन होजाता है और उखाडनेसे सुखी होता है ।। ८ ।।

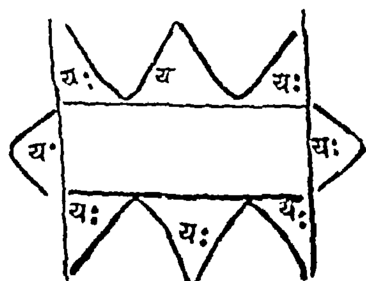




इस यत्रको रक्तसे ध्वजपीठपर लिखकर देवदत्तके स्थानमें साध्य नाम लिखकर, उसे काकके गलेमें बांध काकको छोड दे तो उसका उच्चाटन होजाता है,

इस यन्त्रको बहेडेके पत्तोंके रससे भोजपत्रमें साध्यनामसहित लिखकर गधेके मूत्रमें डाल तपावे तो उसका उच्चाटन होजायगा ।





आकके पत्तेके रससे भोजपत्र-पर साध्यका नाम सहित इस मन्त्रको लिखकर मधुमें स्थापन करे तो उसका उच्चाटन होगा।

इस यत्रको बहेडेके रस व खर-मूत्रमे भोजपत्रपर साध्यनाम स-सहित लिखे उसका उच्चाटन होगा।

संगृह्य वृक्षात्काकस्य निलयं प्रदहेच्च तम् ।
चिताग्नौ भस्मतः शत्रोर्दत्तं शिरसि सुन्दरी ।।
तमुच्चाटयते देवि शृणु योगमनुत्तमम् ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ।। ९ ।।

वृक्षपरसे कौएका घोसला लाकर उसे जलादे । उस चिताकी भस्म शत्रुके शिरपर डाल्नेसे अवश्य उच्चाटन हो जाता है । हे देवि ? यह उत्तम योग है; फिर उसको वहासे अलग करनेसे सुखी होता है ।। ९ ।। हरतालसे पीपलके पत्रपर इस यन्त्रको लिख रखे तो जिसके नामसे लिखा है उसका उच्चाटन होजाता है ।।



कीलमौदुम्बरं शिन्या मन्त्रितं चतुरङ्गुलम
तं यस्य निखनेद्गेहे तस्यैवोच्चाटनं भवेत् ।। १० ।।

'ॐ शिनी २ स्वाहा' इस मन्त्रसे उदुबरकी चार अगुल कील जिसके घरमें गाड दे उसका उच्चाटन होता है ।। १० ।।

अथ उच्चाटनप्रकारान्तरमाह

उच्चाटनविधिं वक्ष्ये यथोक्तं श्रीमतोत्तरे ।
निम्बपत्रे लिखेन्नाम महिषाश्वपुरीषकैः ।
काकपक्षस्य लेखन्या लेखनीयमनन्तरम् ।
मन्त्रस्तु–"ॐकाकतुण्डिधवलामुखि देवि अमुक-
मुच्चाटय अमुकमुच्चाटय हूं फट् स्वाहा" ।। ११ ।।
एतं मन्त्रं महादेवि लिखित्वा पूर्ववस्तुभिः
निम्बवृक्षस्थितं सर्वं काकगेहं खनेदथ ।
श्मशानवह्निमानीय धत्तूरकाष्ठदीपितम् ।
वह्निं कृत्वा महातैलैरथवा कटुवस्तुभिः ।
पूर्वोक्तमनुना तस्य होमयेद्विधिपूर्वकम् ।। १२ ।।

अब दूसरी उच्चाटन विधिको कहते हैं । भैंसे और घोडेकी लीदसे कौएके पखकी कलमसे नीमके पत्तेपर शत्रुका नाम लिखे ,ॐकाकतुडि यह मत्र पढकर पूर्व वस्तुओसे लिखकर नीमके पेडपर स्थित कौएका घोसला लाकर धतूरेकी लकडियोमें उसकी श्मशानकी अग्निसे भस्म करे । महातेल अथवा कटु वस्तुओसे ऊपर लिखे मंत्रसे विधिपूर्वक होम करे ।। ११–१२ ।।

धवलामुखी च संपूज्य पञ्चोपचारयोगतः ।
तस्माद्भस्म प्रक्षिपेच्च शत्रोश्च मन्दिरोपरि ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य सपुत्रपशुबान्धवैः ।। १३ ।।

धवलामुखी देवीका पंचोपचार योगसे पूजन करे, उसमेंसे भस्म लेकर शत्रुके मन्दिरपर डाले तो पुत्र पशु बांधव सहित उसका

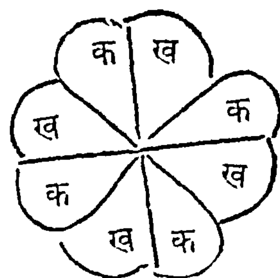


उच्चाटन होगा ।। १३ ।। इस यन्त्रको कोएके रक्तसे सध्यनाम सहित धतूरेके पत्ते या ध्वजवस्त्रमें लिख कोएके गलेमें बांध पश्चिम दिशामें प्रेषण करे तो उस शत्रुका उच्चाटन हो जाता है ।।

धवलाध्यानम्

धूम्रवर्णां महादेवीं त्रिनेत्रां शशिशेखराम् ।
जटाजूटसमायुक्तां　व्याघ्रचर्मपरिच्छदाम् ।
कृशाङ्गीमस्थिमालां च कर्त्रिकां च तथाम्बुजाम् ।।१४।।
कोटराक्षीं भीमदंष्ट्रां पातालसदृशोदराम् ।
स्वान्ते ध्यात्वा पूजयेद्वै योगध्यानपरो जनः ।
एष योगविधिः ख्यातो वीरतन्त्रे महेश्वरी ।। १५ ।।

देवीका ध्यान यह है कि, धूम्रवर्णा महादेवी तीन नेत्र, मस्तकपर चन्द्रमा, जटाजूटसे युक्त, व्याघ्र चर्म धारण किये, कृशशरीर, अस्थि-



माला पहरे, कतरनी कमल लिये, खखोडलके समान नेत्रवाली भयकर डाढें, पातालवत् गभीर उदर है ऐसा ध्यान कर पूजे, हे महेश्वरि ? यह योग वीरतंत्रमें लिखा है ।। १४ ।। १५ ।। बहेडेके पत्तोमें रससे भोजपत्रपर साध्यका नाम सहित इस यन्त्रको लिख गधेके मूत्रमें स्थापन करे तो उसका उचचाटन होजाता है ।। इत्युच्चाटनम् ।।

अथ विद्वेषणम्

कपिरोमाहिगुदार्वीखरचर्माणि चूर्णयेत् ।
तच्चूर्ण मन्त्रसंजप्तं नामकर्मविदर्भितम् ।
त्रिसहस्रं पुनस्तेन स्निग्धयोरन्तरात्मनो· ।
धूपैरतीव विद्विष्टौ स्निग्धावपि भविष्यतः ।। १६ ।।

वानरके रोम, हिंगु, दारुहलदी, गर्दभचर्म इन सबको चूर्ण करे उस चूर्णको शत्रुके नाम सहित ३००० तीन हजार बार जपकर धूप देनेसे अति स्नेहयुक्त मित्रोकाभी परस्पर द्वेष होजाता है ।। १६ ।। इस यत्रको भोजपत्र-पर काक उलूकके रुधिर और लाक्षा रससे जिनदोनोकानाम लिख विषमे स्थापन करे उन दोनो का विद्वेषण होगा ।



तालपत्रे लिखेन्मन्त्रं नामकर्मविदर्भितम् ।
कृतप्राणप्रतिष्ठान्तं प्रजप्त त्रिसहस्रकम् ।
विषालिप्तं द्विधा कृत्वा निखनेत्सिन्धुरोधसि ।
स्निग्धयोराशु विद्वेष स्यादुमेशानयोरपि ।। १७ ।।

तालपत्र पर मत्र लिख शत्रुका नाम कर्म लिखे उसकी प्राणप्रतिष्ठा कर ३००० मत्र जपे उसे विष लिप्तकर दो खण्ड कर समुद्रके किनारे गडा दे तो शिवा-शिवकाभी विद्वेष हो जाय और तो क्या है ? ।। १७ ।।

एकहस्ते काकपक्षमुलूकस्य तथापरे ।
मन्त्रयित्वा मिलित्वाग्रं कृष्णसूत्रेण बन्धयेत् ।। १८ ।।
अञ्जलिं च जले चैव तर्पयेद्धस्तपक्षकै. ।

एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ।
विद्वेषो जायते तत्र महाकौतुकमद्भुतम् ॥ १९ ॥

एक हाथमें काकपक्ष, दूसरेमें उल्लूका पख ले मंत्रसे इनके अग्र भागको मिलाय काले सूत्रसे बाधे फिर उस पक्षसहित हाथसेही जलसे सात दिन तर्पण कर १०८ वार जपे तो विद्वेषण होगा ॥ १८ ॥ १९ ॥




विष और धतूरेके जलसे कौआ और उलूक लिखे इनका जैसा वैर है वैसा हो 'ॐ देवदत्तयज्ञ दत्तयोस्तु स्वाहा' इससे एक घरमें नित्य जपकर भोजपत्रपर लिखे तो विद्वेषण होगा । तथा विष और बिडालके रुधिरसे श्मशानके अगारेसे जिनका नाम लिख ,काकोलूकीये यादृश वैरं तादृशं वैर देवदत्तयज्ञत्तयोर्भवतु स्वाहा इस मंत्रसे काक उलूकको भोजपत्रपर लिखे तो विद्वेषण होगा ॥

मार्जारमूषिकाविष्ठासाध्यपुत्तलिका कृता ।
नीलवस्त्रेण संवेष्टच्य मन्त्रयित्वा शतेन च ।
विद्वेषो जायते तत्र भ्रातरौ तातपुत्रकौ ।
मन्त्रः–"ॐ नमो महाभैरवाय च श्मशानवासिन्यै
अमुकामुकयोर्विद्वेषं कुरु कुरु क्रूं फट्" ॥ २० ॥

बिलाव और मूषकी विष्ठासे साध्यकी पुतली बनाय नीले वस्त्रसे लपेट सौबार मत्र पढे तो भ्राता पिता पुत्रमेंभी विद्वेष हो । मंत्र– ,ॐ नमो महाभैरवायच श्मशानवासिन्यै अमुकामुकयोर्विद्वेषं कुरु२ क्रूं फट्' ॥ २० ॥

एकहस्तेच काकपक्षमुलूकस्य तथापरे ।

दर्भेण धारयेद्यत्नात् त्रिसप्ताहं जलाञ्जलिम् ।
रक्ताश्वमारपुष्पैकं मन्त्रयुक्तं जलाञ्जलिम् ॥ २१ ॥
नित्यं नित्यं प्रदातव्यमष्टोत्तरसहस्रकम् ।
परस्परं भवेद्द्वेषः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ २२ ॥

एक हाथमें काक, दूसरेमें उल्लूका पंख ले कुशके साथ धारण कर तीन सप्ताहतक जलकी अंजलि दे। देतीवार लाल कनेरका फूल एक लेकर मंत्र पढकर हाथमें धारण कर एक सहस्र आठ बार नित्य अंजली दे तो परस्पर द्वेश होजाता है, यह सिद्धयोग कहा है ॥ २१ ॥ २२ ॥

निवापाञ्जलिमन्त्र

"ॐ नमः कटीटनीप्रमोटनीकी गौरी गौरी अमुकस्यामुकेन सह काकोलूकादिवत्कुरु २ स्वाहा"

ॐ नमः कटीटनी प्रमोटनीकी गौरी २ अमुकस्यामुकेन सह काकोलूकादिवत्कुरुकुरु स्वाहा" । यह जलांजलिका मन्त्र है ॥ इति विद्वेषणम् ॥

अथ व्याधिकरणम्

तन्निवारण च

"ॐ अमुकं हन २ स्वाहा" अनेन मन्त्रेण कटुतैलाक्तं त्रिकटुं जुहुयात्तदा शत्रुर्बधिरो भवति ॥ २३ ॥

'ॐ अमुकं हन हन स्वाहा' इस मन्त्रसे कडुवे तेलके साथ त्रिकुका हवन करनेसे शत्रु बहरा हो जाता है ॥ २३ ॥

भल्लातकरसैर्गुञ्जां कुर्यादतिसुचूर्णिताम् ।
क्षिपेद्गात्रे भवेत्कुष्ठ सिताक्षीरं पिबेत्सुखी ॥२४॥

भिलावेका रस और गुजा इनका बहुत महीन चूर्ण करके जिसके शरीरपर फेंके वह कुष्ठी होता है, फिर मिश्री और दूध पीनेसे सुखी होता है ॥ २४ ॥

इस मत्रको नीमके रससे भोजनपत्रपर लिख उसे शत्रुके द्वारपर गाडे तो शत्रुका गात्र सिकुड जाता है ॥



वानरीफलरोमाणि विषं भल्लातचूर्णकम् ।
गुञ्जायुतं क्षिपेद्गात्रे स्याल्लूता वेदनान्विता ॥
उशीरं चन्दनं चैव प्रियंगु रक्तचन्दनम् ।
तगरं पेषयेत्तोयैर्लेपाल्लूतादिनाशनम् ॥ २५ ॥

कौचकी फलीके रोम, विष और भिलावेका चूर्ण इनमें चौटली मिलाकर जिसके शरीर डाल दे उसके गात्रमें महापीडायुक्त मकडीके फैलनेकी समान वेदना होती है। खास, चन्दन और प्रियंगु, लालचन्दन और तगर यह चलसे पीसकर लगावे तो लूताकी वेदना शान्त होजायगी ॥ २५ ॥

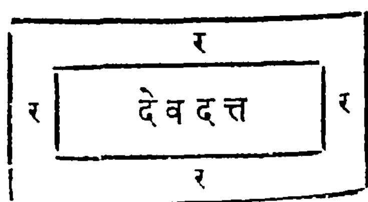
अथ ज्वरानयनम्

"ॐचामुण्डे हन हन दह२ पच पच मथ २ चलह २ अमुकं गृह्ण २ स्वाहा" अनेन कटुतैलेनाक्तनिम्बपत्राणि यस्य नाम्ना हूयन्ते तस्य शीघ्रं ज्वरो भवति । चित्रकपुष्पसहस्रं हुनेत् चातुर्थिकज्वरो भवति । लवणमष्टाधिकसहस्रं हुनेत् दाहज्वरो भवति ॥

'ॐ चामुंडे हन २ दहदह पच पच मथ २ चल्ह २ अमुक गृह्.ण गृह्.ण स्वाहा' यह मन्त्र पढकर कडुवे तेलके साथनीमके पत्तोसे जिसका नाम लेकर हवन किया जाय उसको तत्काल ज्वर होता है; चीतेके फूल एक सहस्र शत्रुका नाम लेकर सहस्र आठ वार लवण हवन करनेसे दाहज्वरहोता है ॥२६॥ यह यन्त्र कुकुम गोरोचनसे भूर्जपत्रपर लिखे कठमें बाधनेसे तिजारी नष्ट होती है ।







इस यन्त्रको चीतेके फूलके रससे भोजपत्रपर जिसका नाम सहित लिख आककी नलिकामें स्थापन करे उसे ज्वर होगा ।

इस यंत्रको चित्रक पुष्पके रससे भोजपत्रपर लिख आककी नलिकामें रखनेसे तत्काल ज्वर होता है ।

इस यत्रको कपिलाके दूधसे साध्यका नाम सहित लिखकर कहीं गुप्त स्थानमें रक्खे तो ज्वर हो ।



ॐ चामुण्डे हन २ दह दह पच २ अमुकं गृह्ण गृह्ण स्वाहा" अनेन मन्त्रेण निम्बपत्रकटुतैलं साध्यनाम गृहीत्वा जुहुयात्स ज्वरेण गृह्यते । अनेन लवणाहुतीरष्टसहस्रं जुहुयात्स शूलेन गृह्यते ॥ २७ ॥

'ॐ चामुण्डे हन हन दह २ पच२ अमुक गृह्ण २ स्वाहा इस मन्त्रसे नीमके पत्ते लेकर कडुवे तेलद्वारा साध्यका नाम लेकर हवन करे तो ज्वरसे ग्रसित होता है, इसी मन्त्रसे लवणकी आहुति अष्टोत्तर सहस्र हवन करनेसे शूलसे और ज्वरसे ग्रसित होता है ॥ २७ ॥

	ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं सा ह्रौं ह्रौं	ह्रौं
सा		ॐ	ह्रीं दे ॐ ह्रौंव ॐ ह्रौंद ॐ ह्रौंत ॐ ह्रौं	सा
	ह्रौं	ह्रौं	ह्रौ सा ह्रौं ह्रौं	ह्रौं

सहिजना, विष ,रुधिर, और राईको एकत्रकर जिसका नाम लिख सहिजनेकी नलिकामें डालकर तपावे तो वह ज्वरसे गृहीत होता है अथवा उपरोक्त वस्तुओंमें राई भी मिलावे । यह अनुभव किया है ।

तेनैव वेत्रपत्रमष्टसहस्रं जुहुयात्स चतुर्थज्वरेण गृह्यते ।
रक्तपुष्पचित्रकरसेन यस्य नामाभिलिख्य भूर्जे ॥
अर्कलतिकायां स्थापयेत्स दाहज्वरेण गृह्यते ॥
मन्त्रः--"ॐ नमः श्रीनृसिंहाय देवाय दनुजारये
नमः कृष्णाय " ॥ २८ ॥

वेत्रपत्र आठ सहस्र हवन करनेसे चातुर्थिकज्वरसे ग्रसित होता है । लालफूल और चीतेके रससे जिसका नाम लिख भोजपत्रको आकको बेलपर स्थापन कर दे उसे दाहज्वर होगा । मन्त्र--"ॐ नमः श्रीनृसिंहाय देवाय दनुजारये नम कृष्णाय" ॥ २८ ॥

*स्नुक्पयोलेपनेनैव पानेन श्वेतकुष्ठकृत् ।
ताम्बूले इन्द्रगोपं च दत्त्वासौ श्वेतकुष्ठजित् ।
पीत्वा यत्ने यथापूर्वं भक्षेद्वा सोमराजिकाम् ।।
"ॐनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय अमुकं रोगेण गृह्ण २ पच २ ताडय २ क्लेदय २ हूं फट् स्वाहा ठः ठः" उक्तयोगानामयं मन्त्रः ।। २९ ।।

थूहरके दूधसे लेपवा पानसे श्वेत कुष्ठ होता है ताम्बूलमें वीरब हूटी खाय फिर सोमराजीके पीनेसे श्वेतकुष्ठ दूर होता है ।। मन्त्र यह है–"ॐनमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय अमुकं रोगेणगृह्ण २ पच २ ताडय २ क्लेदय २ हूं फट् स्वाहा ठः ठः' उपरोक्तयोगोका यह मंत्र है ।। २९ ।।

क्षिपेदृक्षे मृगशिरे तिन्तिकाष्ठस्य कीलकम् ।
पञ्चांगुलं रिपोर्गेहे वह्निमान्द्यं प्रजायते ।। ३० ।।
सामुद्रं लवणं वह्नि केवलं वा समुद्रजम् ।
बन्धक्या उदरं न्यस्तं सर्वमंतः पुटे पचेत् ।। ३१ ।।

मृगशिर नक्षत्रमें पांच अगुल तेंदूवृक्षके काठकी कील शत्रुके घरमें डालनेसे अग्नि मन्द होती है । समुद्रलवण चीता अथवा केवल सेंधा-नोन बन्धकीमें रखकर सब अन्तरपुटसे जलादे ।। ३० ।। ३१ ।।

अथाक्षिरोगजननम्

करवीरार्द्रकाष्ठेन तमादाय सुचूर्णयेत् ।
खाने पानेऽर्पयेद्यस्य तस्य चक्षुः प्रणश्यति ।।३२।।

*सूकरस्य पयस्तैललेपेन इति वा पाठ । अर्थात् सूकरका दूध और तेल यह एकत्र कर शरीरमे लगाने और पीनेसे श्वेतकुष्ठ हो जाता है ।

अनेकमें गोके गरमतैल उसमें लेकर पूर्ण करे जिसके नाम धानमें डालदे उसके नेत्र नाश होजाते हैं ॥ ३२ ॥

दृष्टिस्तम्भनयन्तु तन्त्र सौभाग्यफल यथा ॥

दृष्टिके स्तम्भ करनेसे सौभाग्य बढ़नेका फल और यश है ॥

कर्पासपुष्पमल्लिकामूलमन्त्रेण हुनेत् ।

अक्षिरोगो भवन्ति ॥

आक नागर कनेरके फूल उलटकंटके बयका नाम ले हवन करनेसे नेत्ररोग होता है ॥

उलूकमस्तकं ग्राह्यं लवणेन प्रपूरयेत् ।

मृत्पात्रस्थं सप्तवस्त्रमक्षकाष्ठेन चालयेत् ॥ ३३ ॥

उल्लूका मस्तक लेकर लवणसे पूर्ण करे । सात दिनतक मट्टीके पात्रमें रखकर बहेडेकी लकडीसे घोटे तो नेत्ररोग होता है ॥ ३३ ॥

अथ शत्रुभ्रामणम्

अश्वत्थकीलमश्विन्या यस्य गेहे दशाङ्गुलम्

स्थापयेद्दीर्घयात्रा स्यात्तस्यापि न हि संशयः ॥ ३४ ॥

अश्विनीनक्षत्रमें पीपलकी दश अंगुलकी कील जिसके घरमेंस्थापित कर दे उसकी दीर्घ यात्रा होजाती है। इसमें सन्देह नहीं ॥३४॥ इस यत्रको रक्तसे शवके उडाया हुआ वस्त्रमें लिख देवदत्त स्थानमें साध्यनाम अंकितकरवाव्य दिशामें डालेनेसे वैरीभ्रमताफिरेगा ॥



शृगालस्यास्थिकीलं च स्थाप्यं स्याच्चतुरङ्गुलम् ।

रिपोर्गेहे सोमऋक्षे दीर्घयात्रा च तस्य वै ॥ ३५ ॥

सोमदेवताके नक्षत्र मृगशिरमें शत्रुके त रमेंचार अंगुलकी गीदडकी अस्थिस्थापन करनेसे दीर्घयात्रा होजाय, इसमें हन्देह नहीं ।। ३६ ।।

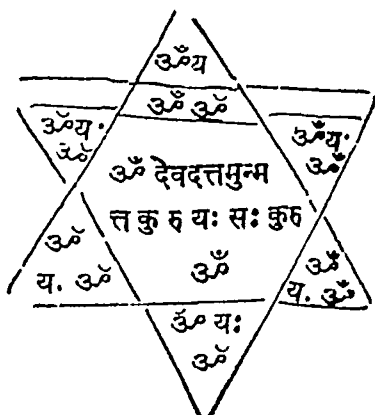
अथ उन्मत्तीकरणम् ।

तालकं धूर्तबीजं च घनचूर्णं तु भक्षयेत् ।
दत्त्वोन्मत्तो भवेच्छत्रुः सिताक्षीरैः पुनः सुखी ।। ३६ ।।

हरताल, धतूरेके बीज, मोथेका चूर्ण इनको देतेही शत्रु उन्मत्त हो जाता है । फिर मिश्री और दूध पीनेसे सुखी होता है ।। ३६ ।।

तालकं लशुनं मूर्ध्नि क्षिप्तं यस्य पिशाचकृत् ।
सुरामांसताक्षीरं भक्षणाच्च सुखावहम् ।।

हरताल और लहसन जिसके ऊपर डालाजाय वह पिशाच तुल्य होजाता है । सुरामांस सिता (मिश्री) औय दूध पान करनेसे उसी समय सुखी होता है । धतूरेके रस और काकके रुधिरसे धतूरेके पत्रपर साध्यनामसहितइस यत्रको लिख नीमकी शाखामें वायव्य दिशामें धारण करे तो उन्मत्त होजायगा यह अनुभव किया है सत्य है ।।



मध्वाज्याभ्यां स्वर्णमाक्षीं पिष्ट्वा तत्कृतकज्जलम् ।
दत्तं यस्याञ्जनं नेत्रे उन्मत्तोऽसौ प्रजायते ।। ३७ ।।

मधु घृत इनसे सोनामक्खीको पीसकर इसका काजर कर अंजन करनेसे वह उत्तम होजाता है ।।३७ ।।

गोघृतं सैन्धवं तुल्यं वराहस्य तु पित्तकम् ।
अजाक्षीरेण संयोज्यं पानेनोन्मत्तनाशनम् ।। ३८ ।।

गौका घी, सेंधा यह बराबर ले वाराहका पित्त बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे उन्मत्तपन नाश होजाता है ।। ३८ ।।

मयूरपारावतकुक्कुटाना ग्राह्य पुरीषं कनकं च तालम् । तन्मूर्ध्नि दत्तं कुरुते पिशाचवन्निवर्त्तते मण्डितमस्तकेन ।। ३९ ।।

मोर, कुक्कुट (मुरगा), कबूतरकी बीट इनको ग्रहण कर और हरतालको शिरपर डालनेसे वह प्राणी पिशाचवत् हो फिर शिर मुण्डानेसे सुखी होता हे ।। ३९ ।।

गुडं करञ्जबीजं च घनचूर्ण समंसमस् ।
फलस्यान्ते प्रदातव्यमुन्मत्तो भक्षणाद्भवेत् ।। ४० ।।

गुड, करजुएके बीज,माथेका चूर्ण इनको समानभाग लेकर फलमें दे तो भक्षण करतेही उन्मत्त होजाता है ।। ४० ।।

शर्कराशतपुष्पाज्यक्षीरपाने सुखावहम् ।।

शक्कर, सोफ घृत, दूध इनका पान करनेसे सुखी होता है ।।

"ॐ नमः उन्मत्तकारिणी विद्ये ठः ठः । उक्तयोगानामयमेव मन्त्रः ।। ४१ ।।

'ॐ नमः उन्मत्तकारिणी विद्ये ठः ठः' पूर्वोक्त योगोका यही मत्र है ।। ४१ ।। इति उन्मत्तीकरण ।।

अथ मारणम्

नरास्थिकीलकं पुष्ये गृह्णीयाच्चतुरंगुलम् ।
निखनेद्यस्य गेहे तु भवेत्तस्य कुलक्षयः ।। ४२ ।।

"ॐ ह्लूं ह्लीं फट् स्वाहा" ।।

पुष्यनक्षत्रमें मनुष्यकी अस्थिकीलक चार अंगुलकी ग्रहण कर, ॐ ह्लूं ह्लीं फट् स्वाहा' से जिसके घरमें गाडदे उसका कुलक्षय हो जाता है ।। ४२ ।।

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां निखनेच्चतुरंगुलम् ।
शत्रुगेहे निहन्त्याशु कुटुम्बं वैरिणां कुलम् ।।
"हुं हुं फट् स्वाहा" सप्ताभिमन्त्रितं शत्रुगेहे निख-
नेत् कुलक्षयं याति ।। ४३ ।।

घोडेकी अस्थि कील चार अगुलकी अश्विनी नक्षत्रमें ग्रहणकर शत्रुके घरमें गाडनेसे वैरीके कुटुब और कुलका नाश होजाता है 'हुं हुं फट् स्वाहा'इससे सात वार मन्त्र पढकर गाडे तो कुलक्षय हो ।। ४३ ।।

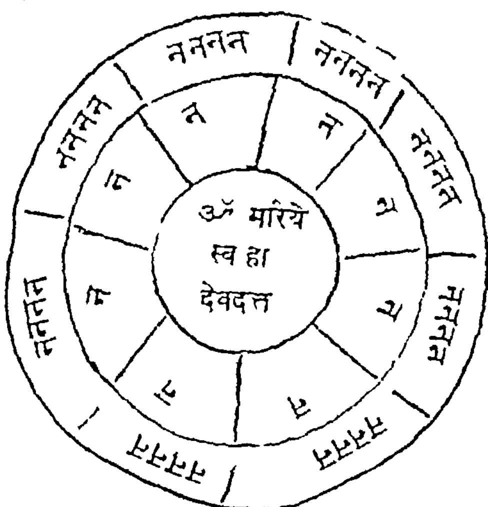
"ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृह्ण २ हुं हुं ठः २ " अनेन नरास्थिकीलकं सहस्रा-
भिमन्त्रितं चितामध्ये निखनेत् स ज्वरेण नश्यति ।।

'ॐ डं डां' इस मन्त्रसे मनुष्यकी हड्डीकी कील सहस्रवार अभिमंत्रित कर चितामें गाडनेसे ज्वरसे नष्ट होता है । वा जिसका नाम लेकर जिसके घर वा श्मशान में गाडे उसका नाश हो ।।

गोरोचनसे भोजपत्रपर शत्रुके नामसहित लिख पात्रमें रख दूधसे प्लावित कर जलमें डाल दे तो शत्रुकी शांति अर्थात् मरण हो ।।

"ॐ ण णां णि णी णुं णू णे णं णो णौ णं णः ठः ठः"
अनेन नरास्थिषडंगुलकीलकं सहस्राभिमन्त्रित यस्य नाम्ना गृहे श्मशाने वा निखनेत्तस्य सर्वनाशो भवति ॥

ॐणंणा' इस मन्त्रसे छ अंगुल नरास्थिकील ले हजारवार पढकर जिसके नामसे घर वा श्मशानमें गाडे तो उसका नाशहो॥भोजपत्रमें इष्टका, हरिद्रा और हरितालसे जिसका नामसहित इस यत्रको लिख प्रच्छन्न स्थापन करे वह नष्ट होजायगा निकालनेसे स्वस्थहोगा नष्ट मन्त्र और यत्र दोनोहीके करनेसे शीघ्र सिद्धि होती है.



निजिनिज विधिके मन्त्र विधिसे समझ लेना चाहिये ॥

"ॐसुरेश्वराय स्वाहा"

सर्पास्थ्यङ्गुलमेकं तु चाश्लेषाया रिपोर्गृहे ।
निखनेत्सप्तधा जप्तं मारयेद्रिपुसंततिम् ॥ ४४ ॥

आश्लेषानक्षत्रमें सापकी हड्डी एक अंगुलकी लेकर 'ॐ सुरेश्वराय स्वाहा' यह मन्त्र सात वार जपकर शत्रुके घरमें गाडनेसे शत्रुके सन्तानका नाश होजाता है ॥ ४४ ॥

"ॐ सीं शोषणे स्वाहा"

निम्बषड्बिन्दुकौ ग्राह्यौ विषं त्वग्वानरीफले ।
एतच्चूर्णं प्रदातव्यं शत्रुशय्यासनादिषु ।
जायन्ते स्फोटकास्तीव्रा दशाहान्मरणं भवेत् ।। ४५ ।।

नीब, षड्बिन्दु, विष, कौचके फल और छाल इनका चूर्ण 'ॐ सीं शोषणे स्वाहा' इस मन्त्रसे जपकर शत्रुकी शय्या आसनादिमें प्रदान करे तो तीव्र स्फोटक हो जाते हैं; जिससे दशही दिनमें मरण हो जाता है ।। ४५ ।।

स्नानभूमूत्र भूमृत्स्नां सर्पवक्त्रे विनिःक्षिपेत् ।। ४६ ।।
वेष्टयेत्कृष्णसूत्रेण मार्गमध्ये ह्यधोमुखम् ।
निखनेन्म्रियते शत्रुस्समुत्थाने सुखी भवेत् ।। ४७ ।।

शत्रुके स्नानस्थान मूत्रस्थानकी मट्टीको सर्पके मुखमें डाल उसे काले सूत्रसे वेष्टित करके मार्गके मध्यमें नीचेको मुख कर डाले तो शत्रु मरने लगता है और उखाडे तो सुखी होता है ।। ४६ ।। ४७ ।।

बामदन्तं कुलीरस्य ह्यधोभागस्य चाहरेत् ।
शराग्रे फलकं कुर्याद्धनुषश्चित्रकेन्धनैः ।।४८।।
गवां शिरागुणं कृत्वा शत्रुं कुर्याच्च मृन्मयम् ।
तद्वज्जातेन बाणेन म्रियते तत्क्षणाद्रिपुः ।। ४९ ।।

कॅंकडेके नीचेका बायां दांत लावे, उसको बाणके आगे फलमें लगावे और सावधानीसे रक्षा करे, चित्रकका धनुष बनावे । धेनुकी शिराका डोरा डाले । शत्रुकी मट्टीकी मूर्ति बनाकर उसपर इस बाणका प्रहार करे तो उस बाणसे प्रहार करतेही उसी समय शत्रु मरजाता है ।। ४८ ।। ४९ ।।

आर्द्रायां निम्बवन्दाकं शत्रोः शयनमन्दिरे ।
निखनेन्म्रियते शत्रुरुद्धृते च पुनः सुखी ।। ५० ।।
तथा शिरीषवन्दाकं पूर्वोक्तेनोडुना हरेत् ।
शत्रोर्गेहे स्थापयित्वा रिपोर्नाशो भविष्यति ।। ५१ ।।

आर्द्रानक्षत्रमें नीमका वन्दा लाकर शत्रुके शयनस्थानमें गाडनेसे शत्रु मरजाता है, उखाडनेसे सुखी होता है । उसी प्रकार शिरसका वंदा लाकर उसी नक्षत्रमें शत्रुके घरमें स्थापन करनेसे शत्रुका नाश हो जाता है ।। ५० ।। ५१ ।।

कृष्णवृषभरक्तेन गङ्गामृत्तिकया सह ।
तिलकं भालदेशे च कृत्वा सम्भावयेत्तु यम् ।
विद्धः स्यात्तत्क्षणादेव प्रोञ्छिते च शुभं भवेत् ।। ५२ ।।

काले बैलका रक्त और गंगाकी मृत्तिकाका माथेपर तिलक कर जिसको संभावित करे वह विद्ध होता है । फिर तिलकको दूर करनेसे शुभ होता है ।। ५२ ।।

कृष्णछागाश्वपादस्य खुरस्थं रोमकं हरेत् ।। ५३ ।।
कृष्णकुक्कुटकाकस्य ग्राह्यं पक्षचतुष्टयम् ।
सर्वं दग्ध्वा तु भाण्डान्तस्तद्भस्म जलसंयुतम् ।। ५४ ।।
ललाटे तिलकं कृत्वा वामहस्तकनिष्ठया ।
यं शिरो नम्यते तस्य वेधो भवति निश्चितम् ।। ५५ ।।

काले बकरे और घोडेके पैरोंके खुरके बाल और काले मुरगे तथा कौएके चार पंख लेकर इन्हें जलाय इसकी भस्म बरतनमें धरे । उसे पानीमें मिलाय वाम हाथकी कनि अंगुलीसे माथेपर तिलक कर जिसके आगे झुके उसका अवश्य वेध होगा ।। ५३–५५ ।।

ऊर्णनाभिश्च षड्बिन्दुः समांशं कृष्णवृश्चिकम्
यस्याङ्गे तत्क्षिपेच्चूर्णं सप्ताहात्स्फोटकं भवेत् ।
मयूरपुच्छनीलाब्जं पिष्ट्वा लेपैः सुखावहम् ।। ५६ ।।

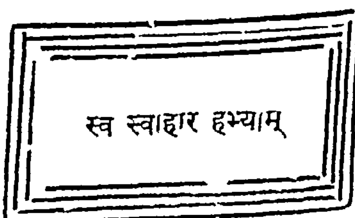
ऊर्णनाभि ,षड्बिन्दुकीट और उसकी बराबर काले वृक्षकका चूर्ण कर जिसके शरीरमें डाले तो सात दिनमें फोडे होजाते हैं । फिर मोरपिच्छ और नीलकमलका लेप करनेसे वह सुखी होता है ।।५६।।

रिपुविष्ठां वृश्चिकं च खनित्वा भुवि निःक्षिपेत् ।। ५७ ।।
आच्छाद्य प्रावरेणाथ तत्पृष्ठे मृत्तिका क्षिपेत् ।
म्रियते मलरोधेन उद्धृते च पुनः सुखी ।। ५८ ।।

वृश्चिक और शत्रुकी विष्ठा पृथ्वीमें खोदकर डाल दे तो शत्रुका मल रुक जायगा, वह मृत्युको प्राप्त होगा । उखाडनेसे सुखी होगा ।। ५७ ।। ५८ ।।

ॐ" ह्रीं क्षः अमुकं क्षम्" । अनेन मन्त्रेण राजि-
कालवणशिवनिर्माल्यानि कटुतैलेन सहस्रहो-
मात् शत्रोर्वधः ।। ५९ ।।

'ॐ ह्री क्ष' अमुकं क्षम्' इस मन्त्रसे राई, नोन, शिवनिर्माल्य इनकी कटु तेलके साथ सहस्र आहुति देनेसे शत्रुका वध होता है ।। ५९ ।।



इस यंत्रको साध्यके रक्त से (शत्रुका) नाम सहित भोजपत्रपर लिखे सिकोरेमें डाल ज्वलित अग्निमें स्थापन करे तो उसी समय शत्रु नष्ट होजायगा ।।

अथ अश्वनाशनम्

कृष्णजीरकचूर्णेन अञ्जिताश्वो न पश्यति ।
तक्रेण क्षालयेच्चक्षुः सुस्थो भवति घोटकः ।। ६० ।।

काले जीरेका चूर्ण आखमे डालनेसे घोडा अंधा होजाता है, फिर मट्ठेसे आखें धोनेसे स्वस्थ हो जाता है ।। ६० ।।

घ्राणे छुछुन्दरीचूर्णं दत्ते पतति घोटकः
सुस्थश्चन्दनपानेन नस्यं प्राप्य न संशयः ।। ६१ ।।

मरी छछुंदरको सुखाय उसका चूर्णकर सुघातेही घोडा गिरजाता है । फिर चन्दनकी नस्य देनेसे वा पान करनेसे स्वस्थ होजाता है । इसमें सन्देह नही ।। ६१ ।।

अश्वास्थिकीलमश्विन्या कुर्यात्सप्तांगुलं पुनः ।
निखनेदश्वशालायां मारयत्येव घोटाकान् ।। ६२ ।।

अश्विनीनक्षत्रमें घोडेकी अस्थिकी कील सात अगुली बनावे उसे अश्वशालामें गाडनेसे घोड़े मर जाते है ।। ६२ ।।

भरण्यामुक्तमन्त्रेण चितिकाष्ठस्य कीलकम् ।
अष्टागुलं तु निखनेदश्वशाला विनश्यति ।।६३ ।।
"ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अश्वान् हन २
स्वाहा ॐ पच पच स्वाहा" ।।

भरणीमें आगे लिखे हुए मन्त्रसे चितिकाष्ठकी अष्टागुल कीलक अश्वशालामें गाडनेसे घुडसाल नष्ट होती है । मन्त्र यह है–,ॐ नमो भगवतेरुद्राय ॐ अश्वान् हन २ स्वाहा ॐ पच पच स्वाहा' ।। ६३ ।।

इति अश्वनाशन

अथ सस्यनाशनम्

पुनर्वसौ चित्यकाष्ठकीलकं त्र्यंगुलं क्षिपेत् ।
शताभिमन्त्रितं क्षेत्रे सस्यं तत्र विनश्यति ॥ ६४ ॥
"ॐ लोहितमुखे स्वाहा" ॥

पुनर्वसुनक्षत्रमें (चित्यके) चिताके काष्ठकी कील तीन अंगुलके प्रमाणकी लावे उसको सौ वार "ॐ लोहितमुखे स्वाहा" इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर खेतमें डालनेसे खेती नष्ट होजाती है ॥ ६४ ॥ दे

आर्द्रायां निःक्षिपेत्कीलं भल्लूकस्यास्थिसम्भवम् ।
क्षेत्रमध्ये तदा शत्रोः शस्यं सर्वं विनश्यति ॥ ६५ ॥

आर्द्रानक्षत्रमे भल्लूककी अस्थिकी कील शत्रुकी खेतीमें डाल तो सब खेती नष्ट होजाती है ॥ ६५ ॥

विशाखायां कालिकाष्ठकीलमष्टागुलं क्षिपेत् ।
कदलीवाटिकामध्ये नाशयेत्कदली फलम् ॥ ६६ ॥

विशाखानक्षत्रमें बेरीके काष्ठकी आठ अंगुली कदलीकी वाटिकामें डालनेसे केलेकी फली नष्ट होजाती है ॥ ६६ ॥

अथ रजकस्य वस्त्रनाशनम्

पूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रे जातिकाष्ठस्य कीलकम् ।
अष्टांगुलप्रमाणं तु निखनेद्रजकस्थले ।
शताभिमन्त्रितं तेन तस्य वस्त्राणि नाशयेत् ॥ ६७ ॥
"ॐ कुम्भं स्वाहा ॥

पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें जातीफलकाठकी आठ अंगुली प्रमाणकी कील 'ॐ कुंभ स्वाहा' इस मंत्रसे सौ वार अभिमन्त्रित कर धोबीके घरमें

गाडनेसे रजकके वस्त्र नष्ट होजाते है ।। ६७ ।। इति रजकवस्त्र-नाशनम् ।।

अथ धीवरस्य मत्स्यनाशनम्

संग्राह्य पूर्वफाल्गुन्यां बदरीकाष्ठकीलकम् ।
अष्टांगुलं च निखनेन्नाशयेद्धिवरे गृहे ।। ६८ ।।
"ॐ जले स्वाहा ।। ॐ मत्स्यका स्वाहा" ।।
मन्त्रद्वयस्य तुल्यं फलम् ।

पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें बेरीकी लकडी आठ अंगुलकी कील ग्रहण कर धीवरके घरमें गाडनेसे मच्छियोका नाश होजाता है । 'ॐ ज्वल स्वाहा अथवा ॐ जले स्वाहा ' ' ॐ मत्स्यका स्वाहा ' । इन दोनो मन्त्रोका समान फल है ।। ६८ ।।

सप्तांगुलं मघाऋक्षे भल्लात काष्ठकीलकम् ।। ६९ ।।
गृहीत्वा दाशगेहे तु देयं मत्स्यान् विनाशयेत् ।

मघा नक्षत्रमें सात अगुलका भिलावेका काष्ठ धीवरके घरमें गाडनेसे मच्छियोका नाश हो जाता है ।। ६९ ।।

कृत्तिकायामर्ककाष्ठकीलकं त्र्यंगुलं क्षिपेत् ।
शत्रोर्वापीह्रदादौ च मत्स्यस्तत्र विनश्यति ।। ७० ।।

कृत्तिकानक्षत्रमें आककी लकडी तीन अंगुलकी लेकर शत्रु धीवरके बावडी वा ह्रदादिमें डालनेसे उसमेंकी मछली नष्ट होजाती है ।। ७० ।।

अथ कुम्भकारस्य भाण्डनाशनम्

हस्ते वै त्र्यंगुलं कीलं करवीरस्य काष्ठजम् ।
निखनेत्कुम्भकारस्य शालायां भाण्डनाशकृत् ।। ७१ ।।

हस्तनक्षत्रमें तीन अंगुल कनेरकी लकडी लेकर कुम्हारके घरमें गाडनेसे उसके बरतन टूट जाते है ।। ७१ ।।

पञ्चांगुलं निम्बकीलं तदृक्षे पूर्ववत्फलम् ।। ७२ ।।

पूर्वोक्त नक्षत्रमें पाच अंगुल नीमकी कील गाडनेसे पूर्ववत् फल होता है ।। ७२ ।।

गोक्षुरं मेषशृङ्गं च बीजं वा कोकिलाक्षकम् ।
शूकरस्य मलं वाथ मूलं वा श्वेतगुञ्जकम् ।
पाकस्थाने तु भाण्डानां क्षिप्तं स्फोटयते ध्रुवम् ।। ७३ ।।

गोखरू, मेढाशिंगी, तालमखाने, शूकरका मल अथवा श्वेत चौंटलीकी जड डालनेसे अवश्य बरतन फूटजाते है ।। ७३ ।।

तालं करञ्जबीजं च टङ्कणेन समन्वितम् ।
कृत्वा भाण्डारस्फुटंत्येवमुक्तानां मन्त्र उच्यते ।। ७४ ।।

हरताल और करंजके बीज, सुहागा यह सब वस्तु डालनेसे आवेके बरतन टूट जाते है इन प्रयोगोके मन्त्र कहते है ।। ७४ ।।

"ॐ मद मद स्वाहा" ।। "ॐ गुरु हर स्वाहा" अथवा
"ॐदमन्य दमन्य स्वाहा" मन्त्रत्रयस्यतुल्यं फलम् ।।

मन्त्र–'ॐ मद मद स्वाहा, ॐ गुरु हर स्वाहा' 'ॐ दमन्य दमन्य स्वाहा' इन तीनो मत्रोका बराबर फल है । इति कुंभकारभाण्डनाशन ।।

अथ तैलिकस्य तैलनाशनम्

मधुकस्य तु कीलं तु चित्रायां चतुरंगुलम् ।
निखनेत्तैलशालायं तैलं तत्र विनश्यति ।। ७५ ।।

चित्रानक्षत्रमें चार अंगुल मुलैठीकी कील तैल शालामें डालनेसे तेल नष्ट हो जाता है ।। ७५ ।।

"ॐ दह दह स्वाहा" सहस्रजपः ।।

भल्लातकाष्ठं चित्रायां निखनेत्तैलिके गृहे ।

अष्टांगुलं तदा तत्र ग्राहको नहि गच्छति ।। ७६ ।।

'ॐ दह दह स्वाहा' इस मन्त्रका सहस्र जप कर भिलावेकी लकडी चित्रा नक्षत्रमें आठ अगुलकी तेलीके घर गाडदे तो उसके यहां कोई ग्राहक नहीं जाता ।। ७६ ।।

अथ गोपाना गवा क्षीरनाशनम्

निक्षिपेदनुराधायां जम्बुकाष्ठस्य कीलकम् ।

अष्टांगुलं गोपगेहे गोदुग्धं च विनश्यति ।। ७७ ।।

अनुराधा नक्षत्रमें जामुनकी कील आठ अगुलकी घोसीके घरमें डालनेसे उसका दूध नष्ट हो जाता है ।। ७७ ।।

अथ ताम्बूलपर्णनाशनम्

नवांगुलं पूगकाष्ठकीलकं निक्षिपेद्गृहे ।

ताम्बूलिकस्य क्षेत्रे वा ऋक्षे शतभिषाह्वये ।

तदा तस्य च ताम्बूलं नाशमायाति निश्चितम् ।। ७८ ।।

नौ अंगुलकी सुपारीके काठकी कील शतभिषा नक्षत्रमें तंबोलीके घरमें या तांबूलके खेतमें डालनेसे अवश्य ताम्बूलोका नाश हो जाता है ।। ७८ ।।

अथ शाकनाशनम्

गन्धकं चूर्णकं तत्र क्षिपेज्जलयुतेन वै ।

नश्यन्ति सर्वशाकानि शेषाण्यल्पबलानि च ।।७९।।

गन्धकका चूर्ण जलके साथ डालनेसे खेतमेंके सर्व शाक नष्ट हो जाते है, क्रमसे निस्तेज हो शाक सूख जायगा ॥ ७९ ॥

तन्तुवायस्य सूत्रनाशनम्

अश्विन्यां जाम्बिरं काष्ठं तन्तुवायगृहे क्षिपेत् ।
द्वादशांगुलमानं तु सूत्रं तत्र विनश्यति ॥ ८० ॥

अश्विनीनक्षत्रमें बारह अगुल जबीरीकी कील जुलाहेके घरमें डालनेसे उसके तागे नष्ट हो जाते है ॥ ८० ॥

अथ शौण्डिकस्य मदिरानाशनम्

कृत्तिकायामर्ककाष्ठं षोडशांगुलकं क्षिपेत् ।
शौण्डिकस्य च गेहे च मदिरा तत्र नश्यति ॥ ८१ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें आककी लकडी सोलह अंगुल कलालके घरमें डालनेसे उसकी मदिरा नष्ट हो जाती है ॥ ८१ ॥

अथ कर्मकारस्य लोहनाशनम्

रोहिण्यां बदरीकाष्ठं कीलमेकादशांगुलम् ।
कर्मकारगृहे क्षिप्तं लोहं तप्तं भवेन्नहि ॥ ८२ ॥

रोहिणीनक्षत्रमें बेरीके काष्ठकी ग्यारह अंगुलकी कील लुहारकी दूकानमें गाडनेसे लोहा तप्तन हो होता है ॥ ८२ ॥ इति कर्मकार-लोहनाशन ॥

शरीरवेधमोचनमत्र

अत्र* पारीशसंभ्रमणकाय वेधच्छेदकज्ञानविज्ञानना-फूटै । अमुकारकायंहूंकलिकाचण्डीतुइमारेम-

---

* दूसरी लिपिमे इस प्रकार है अब पारीस सभ्रम कायवेध छेदका ज्ञानविज्ञान फूटै अमुकारगाय ह्लकाचण्दीतो हमारेमाशिल पाथरपरे अमुकार गासे मारैस-समारे मुमारै रोडाब उलटावेधे विरूपाक्ष विराली उलटावेधे पिंडोमानापै । मोरे पिडेकरे घाउलटावेधे डाक्तुलखा फोड २ दण्डी बिरूपाक्षरे आज्ञा वारत्रय पडिआ प्रात काल तीन गण्डूष पानी पिय ।

शिलपाथरपडे अमुकारगामे नारससमारें पुत्री-
मारीं तारकउलटावेधे विरूपाक्षरिवानी उलटा-
वेधे पित्र पानी जे मोर पिडे करे घाउलटावेधे
ताककतातुजी खा फोटफोकटण्डीविरूपाक्षेर
आज्ञा" वारत्रयं पठित्वा प्रतिप्रातः त्रिगण्डूषजलं
पेयम् यदि केनापि विद्धं स्यात् शरीरं तदैव
तेन कार्यमिति ॥ ८३ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने उच्चाटनादिवर्णन
नाम दशमोपदेश ॥ १० ॥

मंत्र—अमु पानीरा शम्भुकाय वेध छेदक ज्ञान विज्ञाननाफूटै अमुकार कार्यं हूं कलिका चंडीतु इमोरमा शिल पाथरपडे अमुकार गामे नार ससमारें पुत्री मारीं तारक उलटा वेधे विरूपाक्ष रिबानी उलटावेधे पित्र पानी जे मोर पिडे करे। घा उलटा वेधे ताक ताकतुजी खा फोट फोट डण्डी विरूपाक्षेर आज्ञा। यह तीन वार प्रति प्रातःकाल पढे और तीन घूट जल पिये जो किसीसे विद्ध हो तो शरीरका वेध छूट जाता है ॥ ८३ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत
भाषाटीकाया उच्चाटनादिवर्णन नाम दशमोपदेश ॥१०॥

एकादशोपदेशः

अथ नानाकौतुकम्

शिखिनस्तु शिखाचूर्णं भोजयेद्दिनसप्तकम् ।
तद्विष्ठालिप्तहस्तस्य द्रव्यं लुप्यति तत्क्षणात् ॥ १ ॥

मोरको मोरकी शिखा (कालिहारी) का चूर्ण सात दिनतक भोजन करावे उसकी विष्ठासे हाथ लपेटनसे तत्काल द्रव्य लुप्तरूप होजाता है ॥ १ ॥

सप्ताहं तिलतैलेन भावयेदातपे खरे ।
अङ्कोलिबीजचूर्णं तु योज्यं पेष्यं पुनः पुनः ॥ २ ॥
तत्तैलं ग्राहयेद्यत्नात्तैलकारस्य यन्त्रतः ।
अथवा कांस्यपात्रे द्वे तेन कल्केन लेपयेत् ॥ ३ ॥
उत्थाप्य स्थापयेद्धर्मे सम्मुखन्तु परस्परम् ।
तयोरधः कांस्यपात्रे पतितं तैलमाहरेत् ॥ ४ ॥

सात दिनतक तिलके तेलसे ढेराके बीजोके चूर्णको भावना देकर धूपमें सुखावे और वारंवार सुखाय पीसे ॥ उसके तेलको कोल्हूमें पिलवा ले अथवा कांसीके दो पात्र उसके कल्पसे लेप करें फिर इसको उठाकर धूपमें रक्खे और सामने रक्खे उसके नीचे कांसेका बर्तन रखदे, उसमें जो तेल गिरे उसे ग्रहण करले ॥ २-४ ॥

इदमेवाङ्गुलीतैलं विद्धं सर्वत्र योजयेत् ।
लिप्तमङ्गुलितैलेन मण्डितं तत्क्षणाद्दिशेत् ।
सफलो जायते वृक्षस्तत्क्षणान्नात्र संशयः ॥ ५ ॥

यह अंगुली तेल सिद्ध और सब कार्य योगोमें प्रयोग करे । उँगलीमें तेल लगाकर फेरनेसे उसी समय मण्डन होता है । वृक्षपर लगानेसे उसी समय वृक्ष सफल हो जाता है । इसमें सन्देह नहीं ॥ ५ ॥

पद्मिनीबीजचूर्णं तु भाव्यमङ्गुलितैलतः ।
न्यस्तं जले महाश्चर्यस्तत्क्षणात्पद्मसम्भवः ॥ ६ ॥

एक अंगुली तेलमें कमलगट्टेकी भावना दे जलमें रखनेसे उसी समय कमलकी उत्पत्ति हो जाती है ॥ ६ ॥

यानि कानि च बीजानि जलजस्थलजानि च ।
अङ्गुलीतैललिप्तानि तानि तान्युद्भवन्ति च ॥ ७ ॥

जितने जलस्थलके वृक्षोंके बीज हैं एक अंगुली तैल मात्र लगानेसे उसी समय जम जाते हैं ॥ ७ ॥

यत्किञ्चित्काण्डमूलोत्थं पत्रपुष्पफलादिकम् ।
अङ्गुलीतैललिप्तं तु तुल्यरूपं भवेद्ध्रुवम् ॥ ८ ॥

जो कुछ काण्ड मूलसे उठे हुए पत्र पुष्प फल आदिका है, वे अँगुली तेलमात्र लगादेनेसे निश्चय तुल्यरूप हो जाते हैं ॥ ८ ॥

गुञ्जाफलाम्बुपिष्टं च लेपयेत्पादुकाद्वयम् ।
विना क्लेशं नरो गच्छेत् क्रोशमेकं न संशयः ॥ ९ ॥

जलमें चौंटली पीसकर खडाउओंपर उसका लेप करनेसे उसके ऊपर मनुष्य चढकर एक कोश जा सकता है, इसमें सन्देह नही ॥ ९ ॥

लघु दारुमयं पीठं गुञ्जापिष्टेन लेपयेत् ।
शुष्कमन्तर्जलैः सार्द्धमुपविष्टं न मज्जति ॥ १० ॥

छोटी काठकी चौकीको चौंटली पीसकर लेपित करे और सुखाकर जलमें चौकीपर बैठनेसे चौकी नही डूबती है ॥ १० ॥

गुञ्जाबीजं त्वचोन्मुक्तं चूर्ण भाव्यं नृमूत्रकैः ।
सप्तवारं ततः काष्ठं लिप्तमङ्गुलिसम्भवम् ॥ ११ ॥
तैलमादाय तल्लिप्तं पूर्ववत्पादुकागतिः ॥ १२ ॥

चौटलीके बीजोकी छाल अलग कर मनुष्यके मूत्रमें चूर्ण कर सातवार काष्ठ पर लेप कर अंगुली तेल लेकर पूर्ववत् दोनो खडाउओको लिप्त करे तो पूर्ववत् खडाऊँपर जासकता है ।। ११ ।। १२ ।।

वर्तिस्सर्ज्जरसैः पूर्णा तैललिप्ता जले स्थिता ।
ज्वालिता दीपवर्तिस्तु ज्वलत्येव न संशयः ।। १३ ।।

रालकी बत्ती कर तेलसे लिप्तकरके जलाय जलमें रखनेसे वह बत्ती बराबर जलती रहेगी, इसमें सदेह नही ।। १३ ।।

कटुतुम्ब्युत्थतैलेन पारावतचटोद्भवम् ।
मलं च शिखिमूलं च पेषितं गर्धभास्थिनाम् ।। १४ ।।
ललाटे तिलकं तेन कृत्वा संदृश्यते पुनः ।
दशास्यो नात्र सन्देहो यथा लङ्केश्वरो नृपः ।। १५ ।।

जो कडवी तुम्बीके तेलसे कबूतर और चटककी बीट तथा मूलशिखाकी जड गर्दभकी हड्डीके साथ पीसकर माथेपर तिलक लगावे वह पुरुष दश शिरके रावणके समान निश्चयही दीखता है ।। १४ ।। १५ ।।

शिग्रुबीजोत्थितं तैलं पारावतपुरीषकम् ।
वराहस्य वसायुक्तं शिखिमूलं समं समम् ।। १६ ।।
ललाटे तिलकं तेन यः करोति स वै जनः ।
दृश्यते पञ्चवक्त्रोऽसौ यथा साक्षान्महेश्वरः ।। १७ ।।

सहँजनेके बीजोका तेल और कबूतरकी बीट सुअरकी चरबी शिखिमूल इनको समान भाग लेकर जो मनुष्य माथेपर तिलक करे वह पांच मुखवाला साक्षात् महेश्वरके समान दीखता है ।।१६।।१७।।

रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां मयूरास्ये विनिःक्षिपेत् ।
भृङ्गीबीजमदः कृष्णां कृष्णभूमौनिवापयेत् ।। १८ ।।
तज्जातभार्ङ्गीं संगृह्य तया कुर्यात्तु रज्जुकम् ।
तद्रज्जुबद्धः पुरुषो मयूरो दृश्यते जनैः ।। १९ ।।

कृष्ण चतुर्दशीकी रात्रिमें मोरके मुखमें अतिविषाके बीज, सोमराजी, भारंगी इनको डालकर उन्हें काली मिट्टीमें बोवे । जब वह उत्पन्न होजाय तब उसकी रस्सी वटकर जिस मनुष्यको उससे बाधे वह मनुष्योको मोर दीखता है ।१८।।१९।।

तद्योगे कृष्णमार्जारवक्त्रे वैरण्डबीजकम् ।
तज्जातैरण्डबीजानामेकवक्त्रेण धारयेत् ।
तं प्रपश्यन्ति मार्जारं मनुष्या नात्र संशयः ।। २० ।।

उसी योगमें कृष्ण बिलावके मुखमें अडके बीजबोवे, उससे उत्पन्न हुए अडके बीजोको एककरके मुखमें धारण करे तो उसको मनुष्य बिलावकी सूरतका देखते है, इसमें संदेह नहीं ।।२०।।

श्रृगालश्वानमेषांश्च यद्दिने वापयेत्पृथक् ।
मयूरास्ये यथा भार्ङ्गी याति सिद्धिश्च तादृशी ।।२१।।

गीदड कुत्ता, मेंढा इनके मुखमें पृथक् पृथक् डालनेसे मोरके मुखमें जैसे भृंगी सिद्ध होती हैं वैसी सिद्धि होती है ।।२१।।

रक्तगुञ्जाफलं वाप्यं स्त्रीकपालेऽथ सेचयेत्
जातं फलं क्षिपेद्वक्त्रे स्त्रीरूपो दृश्यते पुमान् ।।२२ ।।

लाल चौंटलीके फलको धोकर स्त्रीके कपालमें बोकर उसको सींचन करे,उससे जो फल उत्पन्न हो उसे मुखमें रखनेसे स्त्रीरूप दीखता है।२२

नरादिसर्वजन्तूनां ग्राह्यं सद्योहतं शिरः।
तच्च कृष्णचतुर्दश्यां सर्वबीजान्वितं वपेत् ।। २३ ।।
भृङ्गीधत्तरबीजानि * गुञ्जानीवैकसंयुतम् ।
निखनेत्कृष्णभूम्यां तु बलिपूजासमन्वितम् ।। २४ ।।
सेचयेत्फलपर्यन्तं यावद्बीजानि चाहरेत् ।
तत्तद्बीजे कृते वक्त्रे तत्तद्रूपं भवेद्ध्रुवम् ।। २५ ।।
इत्येवं कौतुकं लोके नानारूपस्य दर्शनम् ।
मुक्तबीजो भवेत्स्वस्थो नात्र कार्या विचारणा ।। २६ ।।

मनुष्यादि सम्पूर्ण जन्तुओका तत्काल हत हुआ शिर ग्रहण कर कृष्णपक्षकी चौदसको उसमें सब प्रकारके बीज बोवे, भांगरा, धतूरा, एरण्ड, चौंटली यह सब एकत्र कर कृष्णभूमिमें बलिपूजाके सहित उसको गाडदे और फलपर्यन्त सीचता रहे। उसीके समान बीजोको लेकर जैसे जैसे बीज मुखमें रखते जाय वैसा २ रूप दीखता है, इस प्रकार लोकमें रखते अनेकरूपका दर्शन होता है। बीजोको त्यागनेसे स्वस्थ हो जाता है, इसमें संदेह नहीं ।।२३-२६।।

हरितालं शिलाचूर्णमंगुलीतैलभावितम् ।
तल्लिप्तवस्त्रं शिरसि स्थितं पश्यति वह्निवत्।। २७ ।।
तथैव वाङ्कोलतैलेन स्फुरत्येव न संशयः ।। २८ ।।

हरिताल, मनशिलका चूर्ण मालकांगनीके तेलमें भावित कर उसे वस्त्रपर लगाय शिरपर धारण करे तो अग्निके समान दीखता है। इसी प्रकार अंकोलके तेलसेभी दीखता है, इसमें सन्देह नहीं ।।२७।।२८।।

* गुल्म निम्बफल युक्तम् इति पाठान्तरम् ।

सिन्दूरं गन्धकं तालं समं पिष्ट्वा मनश्शिलाम् ।
तल्लिप्तवस्त्रधृक् चासौ रात्रौ संदृश्यतेऽग्निवत् ॥२९॥

सिंदूर और गंधक हरताल मनशिलको पीसकर उसे कपडेमें लगाय धारण कर रातमें जाय तो अग्निके समान दीखता है॥२९॥

दूरेऽपि स्थितलोकैश्च रात्रौ तु कौतुकं महत् ।
खद्योतभूलताचूर्णे ललाटे तिलके कृते ।
रात्रौ संदृश्यते ज्योतिस्तस्मिन्स्थाने तु कौतुकम् ॥ ३० ॥

इससे दूरसे स्थित हुए पुरुषोको रात्रिमें बडा कौतुक दीखता है । खद्योत और हरतालके चूर्णको माथेपर तिलक करने से रात्रिमें बडी ज्योतिसी दीखेगी और कौतुक होगा ॥३०॥

मुनिपुष्परसैः पुष्पैर्घृष्ट्वा श्वेताञ्जनं ततः ।
अञ्जिताक्षो नरः पश्येन्मध्याह्ने तारकामयम् ॥ ३१ ॥

अगस्त्यके फूलोके रससे या फूलोसे श्वेत अंजन घिसकर आँखोमें लगानेसे मनुष्यको मध्याह्नसमयमें तारे दीखने लगते है ॥ ३१ ॥

वाप्यं वार्त्ताकुबीजं च नृकपाले मृदा सह ॥ ३२॥
तज्जातबीजमूलं वा मुखं प्रक्षिप्य मानवः ।
शतयोजनपर्यन्तं पश्येत्सर्वं * यथान्तिकम् ॥ ३३ ॥

बेंगनके बीज मनुष्यकी खोपडीमें मिट्टीके साथ बोदेवे उससे उत्पन्न बीज वा जडको मुखमें रखे तो सौ योजनकी वस्तु निकट दीखने लगती है ।३२॥३३॥

---

* 'स पश्येद्गरुडो यथा' इति पाठ. ।

वारि मक्षिकया सार्धं तज्जलं यस्य भक्षणे।
दीयते निःसरेत्तस्य ह्यधोवायौ तु कौतुकम् ।। ३४ ।।

जल मक्षिकाके साथ जिसे भक्षण करने को जल दिया जाय, उसकी अधोवायुमें यही मक्खी निकलती है यह कौतुक है ।।३४।।

उपरोक्तयोगाना मत्र

"ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय * बहुरूपाय नानारूपधराय हसहस नृत्यनृत्य तुदतुद नाना कौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा" ।। अनेन सर्वयोगानामभिमन्त्रणे सिद्धिः अष्टोत्तरशतजपे न पुरश्चरणम् ।। ३५ ।।

'ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपाय हस हस नृत्य नृत्य तुद तुद नानाकौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठःठ स्वाहा इस मत्रको एक सौ आठ बार नित्य जपकर पुरश्चरण करनेसे मत्रकी सिद्धि होती है, इस मंत्रकी सिद्धिसे उपरोक्त योगोकी सिद्धि अवश्य होजाती है। ३५।। इति नानाकौतुकसिद्धिः ।।

अथ खड्गस्तम्भनम्

"सिद्धि +वस्तु सुमति मोहरमाचान्द्र सुरज मोहोवरभाई मोहो वरं आगे कोप खाण्डा फूटै रक्षाकर देवी कालिका चण्डी आई चान्दसुरज तुजि मलेमुजि फूटै रामेर आज्ञा सिद्धि" अनेन

---

*'वज्ररूपाय' इति वा पाठ । + सिद्धिर्वसुमतिमोहीरमावादसुरजमोहोर माइमोरअगे कोप खाडाफूटइहुक्षाकरैदेवीकालिकाचडीआई० चदसुरजइमई लेमुइफटैरोमेर आज्ञासिद्धहलव इति पुस्तकान्तरे पाठोस्ति ।

वारत्रयाभिमन्त्रितम् धूलिना प्रोक्षिते गात्रे कृपाणधारा रेखा भवति नान्यथा ॥ ३६ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने नानाकौतुकनामेकादशोपदेश. ॥ ११ ॥

"वस्तु सुमति मोहोरमाचान्द्र सुरज मोहो वर भाई मोह वर आगे कोप खाडा फूटै रक्षाकर देवी कालिका चण्डी आई चांदसुरनतुजि मले मुजि फूटै रामेर आज्ञा सिद्धि" इस मंत्रसे तीनवार अभिमंत्रित कर धूरिसे शरीरको आच्छादित करे तो कृपाण धारा रेखा हो जाती है, इसमें अन्यथा नहीं है अर्थात् खड्ग बन्धन हो जाता है ॥३६॥

सर्वार्थसिद्धिप्रदयन्त्रम्

ईशान		पूर्व	आग्नेय
	अ अ. क क्ष	अ आ क इ ई ख ग घ ङ च छ ज झ ञ	
उत्तर	ॐ औ श ष स ह ४	ऋ ॠ त थ द ध न	दक्षिण
	ए ऐ य र ल व ४	ऌ ॡ प फ ब भ म ऋ ॠ त थ द ध न	
वायव्य		पश्चिम	नैर्ऋत्य

यह यन्त्र कुंकुमसे भोजपत्रपर लिख दक्षिण भुजामें धारण करे तो सर्वार्थसिद्धि देता है, इसमें सन्देह नहीं है.

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकाया नानाकौतुक नामेकादशोपदेश ॥ ११ ॥

द्वादशोपदेशः

अथ काम्यसिद्धिः

पुष्यार्के तु समागृह्य मूलं श्वेतार्कसम्भवम् ।
अङ्गुष्ठप्रमितां तस्य प्रतिमां तु प्रपूजयेत् ॥ १ ॥
गणनाथस्वरूपां च भक्त्या रक्ताश्वमारजैः
कुसुमैश्चापि गन्धाद्यैर्हविष्याशी जितेन्द्रियः ॥ २ ॥
* पूजयेन्नाममन्त्रैश्च तद्बीजानि नमोऽन्तकैः
यान्यान्प्रार्थयते कामान्मासैकेन तु लभ्यते ॥ ३ ॥
प्रत्येकं काम्यसिद्ध्यर्थं मासमेकं प्रपूजयेत् ॥ ४ ॥

रविवार पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड ग्रहण कर उसकी एक अंगुष्ठके समान गणनाथकी प्रतिमाको बनाकर भक्तिभावसे लाल कनेरकी कुसुम और गन्धादि उपचारों से पूजन कर हविष्य अन्न खाय जितेन्द्रिय रहे ; नाम मन्त्रसे पूजा करे और बीजादिके अन्तमें 'नमः' लगावे इस प्रकार पूजन करे तो जिस वस्तुकी इच्छा करे व एक मासमें पूर्ण होगी । प्रत्येक कामनाकी सिद्धिके निमित्त एक महीनेभर पूजा करे ॥१-४॥

गणेशबीजमाह । "पञ्चान्तकं ॐ अन्तरिक्षायस्वाहा ।" अनेन पूजयेत् । पञ्चान्तकं गणेशशशिधरं बीजं गणपतेर्विदुः । "ॐह्रीं पूर्वंदयां ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ॥" अनेन मन्त्रेण रक्ताश्वमारपुष्पाणि घृतक्षौद्रयुतानि जुहुयात् वांछितं ददाति ॥

---

* वाममन्त्रैरिति च पाठ ।

"ॐ ह्रीं श्रीं मानसेसिद्धिकरि ह्रीं नमः।" अनेन मन्त्रेण रक्तकुसुममेकं जपित्वा नद्यां क्षिपेत्। एवं लक्षं जपेत्ततो भगवती वरदा अष्टगुणानामेकं गुणं ददाति ॥

गणेशबीज कहते हैं–'ॐ पंचातक ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा' इससे पूजन करे। पांच अक्षर नीचे लिखे यह गणपतिबीज हैं ॐ ह्रीं पूर्व-दया ॐ ह्रीं फट्स्वाहा' इस मन्त्रसे लाल कनेरका फूल घृत और शहदके सहित हवन करनेसे मनोवाछित फलकी प्राप्ति होती है। 'ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धिकरि ह्रीं नम.' इस मन्त्रसे एक लाल फूल मंत्रित कर नदीमें डालदे। इस प्रकार लक्ष जप करनेसे देवी वरदायिनी होती है, और अष्टगुणोमें एक गुण देती है ॥ इति काम्यसिद्धि. ॥

अथ वाक्सिद्धि

कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षवन्दाकं धारयेत्करे।
वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं स्मृतम् ॥ ५ ॥

कृत्तिकानक्षत्रमें सेहुंड (थूहर) नामके वृक्षका वन्दा हाथमें धारण करनेसे वाक्यसिद्धि होती है यह महाश्चर्य है ॥५॥

मन्त्रेण ग्राहयेत्स्वातीनक्षत्रे बदरीभवम्।
वन्दाकं तत्करे धृत्वा यद्वस्तु प्रार्थ्यते नरैः ॥ ६ ॥
तत्क्षणात्प्राप्यते सर्वं मन्त्रमत्रैव कथ्यते ॥ ७ ॥
"ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा" ॥
अनेन ग्राहयेत्। इति वाक्सिद्धिः॥

स्वातीनक्षत्रमें बेरकी वन्दाको मंत्रसे ग्रहण करे उसे हाथमें धारण कर मनुष्योसे जो जो प्रार्थना करे वह वह सब प्राप्त कर सकता है। मंत्र यह है—'ॐअन्तरिक्षायस्वाहा' इससे ग्रहण करे। इति वाक्सिद्धिः॥६।७।

अथ गुप्तधनगुप्तवेषचौरादिप्रकाशनम्

धनानि यत्र वा सन्ति ये वा चौरादिकास्तथा।
गुप्तवेषा महात्मानो गन्धर्वा यक्षिणीश्वराः॥ ८॥
जन्तुर्धातुश्च वृक्षाद्या मर्त्यलोके स्थिता ध्रुवम्।
प्रकाशं जायते सर्वं तच्छृणुष्व समाहिता॥९॥

हे देवि ? जो मनुष्यलोक (पृथ्वीमें) जहाँ धनादिक, चौरादिक, तथा गुप्तवेष (योगीश्वरादि), गन्धर्व यक्षिणी और ईश्वर आदि यावन्मात्र जन्तु वा लोहादि वृक्षपर्यन्त जो जो छिपे रहते हैं उन सबोका जिस प्रयोगसे प्रकाश हो जाय वह प्रयोग कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन॥८॥९॥

*** वन्दा शाखोटचूतस्था गोक्षुरं लवणं पदम्।**
अजाक्षीरेण संपेष्य ललाटे तिलके कृते॥
गुप्ता प्रकाशमायान्ति तत्क्षणान्नात्र संशयः॥ १०॥

शाखोटका वन्दा, आमका वन्दा, गोखरू इनका चौथाई भाग लवण इन सबको बकरीके दूधमें पीसकर माथेपर तिलक करे तो सब गुप्त वस्तु उसी क्षणमें प्रकाश होजाते है कुछ संदेह नहीं है॥१०॥

आश्लेषायां शनेर्वारे सायं दाडिमबीजकम्।
रसं संगृह्य तुवरी कृष्णाष्टम्यां तु भूमिजे।

* वदा शाखोटवृक्षस्था गोक्षर लक्ष्मणापदम्। त्रा लक्षणापदमितिपाठः।

पद्ममूलं मङ्गलेऽह्न्यञ्जनं कारयेत्सुधीः ।
प्रकाशं पूर्ववत्सर्वं जायते नात्र संशयः ।। ११ ।।

आश्लेषानक्षत्रयुक्त शनिवारके दिन सायंकालमें दाडिमके बीजका रस ग्रहण कर अष्टमी मंगलवारको कमलकी जड और शतावरीका रस ग्रहण करे । इन्हे शुद्ध कर अंजन बनाय लगावे तो पूर्ववत् सब प्रकाश होजाता है इसमें सन्देह नहीं ।।११।।इति गुप्तधनगुप्तवेषचौरादि प्रकाशनम् ।।

अथ धनुर्विद्या

इन्द्रेण पुरार्जुनं प्रति या विद्या कथिता सा सप्तविंशत्यक्षरा–"ॐ कालायुता रक्ता घोरा ॐकारशतगुणआधारे एकादशशतसहस्र इन्द्र आज्ञा ।" एतन्मन्त्रेण शरं धृत्वा नवधा पठित्वा आकर्णपूरितेधनुषि शरं मेलयेत् ।। सहस्रधा भवति ।। कलौ दशधा । महादेवेन इन्द्रं प्रति या कथिता सा सप्तदशाक्षरा ।। "चान्द्रधनुर्गुणरेखा काण्डब्रह्म ज्ञान ॐ ॐॐ" एतन्मन्त्रं पठित्वा पञ्चवारं तदा क्षिपेत्पूर्ववद्भवति ।। १२ ।।

इन्द्रने जो विद्या पहले अर्जुनसे कही है वह सत्ताइस अक्षरकी है । 'ॐ कलायुता रक्ताघोरा ॐ कारशतगुण आधारे एकादशशत सहस्र इन्द्रआज्ञा' । इस मन्त्रसे धनुषपर बाण धारण कर कर्णपर्यन्त नौबार पढकर खैंचे तो सहस्रप्रकार बाण होता है । कलियुगमें दश प्रकारसे होता है । महादेवजीने जो इन्द्रसे कही है वह सत्रह अक्षरकी विद्या

है। 'चान्द्रधनुर्गुणरेखाकाण्ड ब्रह्मज्ञान ॐ ॐ ॐ' यह मन्त्र पाचबार पढकर बाण चढावे तो पूर्ववत् होता है ।।१२।।

सर्पैः कवलितं भेकमर्धमात्रं समुद्धरेत् ।
छित्त्वा सर्पस्य मुण्डं च आतपे शोषयेत्पृथक् ।। १३ ।।
पिष्ट्वा पृथग्वटी कार्या लक्ष्यलाभप्रदा स्मृता ।
लक्ष्ये तु भेकतिलकं शराग्रे सर्पमुण्डजम् ।। १४ ।।
दत्त्वा तिलकमाकर्णं गुणं धनुषि वेधयेत् ।
लक्ष्यस्य तिलकं बाणो विन्दत्येव न संशयः ।। १५ ।।

सर्पसे अर्ध खाये मेंडकको और सर्पके शिरको काटकर लावे । उसे गरमीमें सुखाय पीस गुटिका करे । यह लक्ष्यलाभकी देनेवाली है । लक्ष्यमें मेंडकका तिलक, बाणके अग्रभागमें सर्पके मुण्डका तिलक करे । फिर डोरा धनुषपर चढाय निशाना लगाय कानतक खैंच कर छोडे तो अवश्य लक्ष्यके तिलकको बाण वेधेगा, इसमें सन्देह नहीं ।।१३–१५।।

"ॐरक्ते धनुरक्ते काण्डरक्ते हलिजा मा मारो अमुकार अमुकआग आमुकटाई मारो त्रिदशदेवगणरुद्रा साक्षीअमुकार मारो देवेन राखी अर्जुन कृष्णभवानीर आज्ञा ।।" एतन्मन्त्रं पठित्वा यस्य यदङ्गे मारयेत्तदङ्गं विध्यति ।। किन्तु प्रथमपरीक्षायां शनिमङ्गलाहनि मृतस्य ब्राह्मणस्य वंशमानीय धनुःकाण्डं सज्जीकृत्वा तत्प्रमाणं गुणं दत्त्वा तत्र तत्समये वा पुष्पहारमेकं दत्त्वा मुष्टिस्थाने हंसजीवमेकं भञ्जयित्वा एकनारिकेलजलेन प्रक्षाल्य काण्डत्रयेण लक्ष्यं विद्ध्वा साधयेत् । यदा द्रुतं

धनुःकाण्डेन लक्ष्यं शत्रोरङ्गसमीपे वेधयेत्तदा वृथा न स्यात् ॥

"ॐ रक्ते धनुरक्ते काण्डरक्ते हालिजामामारो अमुकार अमुकं आमुकटाई मारों त्रिदशदेव गणरुद्र साक्षी अमुकार मारो देवेनराखी अर्जुन कृष्ण भवानीर आज्ञा ।" यह मन्त्र पढकर जिनके शरीर में जहां मारे वहां अंग विद्ध होगा । किन्तु पहली परीक्षामें शनि मंगलके दिनमें मृतक हुए ब्राह्मणकी अर्थीके बांसका धनुष बनाय उसको उसके प्रमाणके डोरेमें चढाकर एक पुष्पहार प्रदान कर मुष्टिस्थानमें हंसशिशु भजन कर नारियलके जलसे धोय तीन काण्डसे लक्ष्य वेधकर साधे तो वृथा नहीं होगी ॥इति धनुर्विद्या॥

अथ धनधान्याक्षयप्रकरणम्

ऋक्षे च पूर्वफाल्गुन्यां दाडिमीवृक्षसम्भवम् ।
वृक्षादनी धने देयमक्षये भवति ध्रुवम् ।
वन्दाकं तु मघाऋक्षं बहुवारकवृक्षजम् ।
धान्यागारे प्रदातव्यमक्षयं भवति ध्रुवम् ॥ १६ ॥

पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें दाडिमके वृक्षका तथा विदारीकदका बंदा रखनेसे धन अक्षय होता है । मघानक्षत्रमें बहुवारके वृक्षका बन्दा लाकर धान्यमें रखनेसे अवश्य धान्य अक्षय होता है ॥ १६ ॥

शेफालिकायां वन्दाकं हस्तर्क्षे च समुद्धरेत् ।
धान्यमध्ये तु संस्थाप्यं तद्धान्यमक्षयं भवेत् ॥ १७ ॥

हस्तनक्षत्रमें निर्गुण्डी वा हारसिंगारका वन्दा ग्रहण कर धान्यमें रक्खे तो धान्य अक्षय होता है ॥१७॥

भरण्यां कुशलवन्दाकं गृहीत्वा स्थापयेद्बुधः
सम्पूर्णं धनधान्यान्तस्थः करोत्यक्षयं ध्रुवम् ॥ १८ ॥

भरणीनक्षत्रमें कुशका वन्दा लेकर स्थापन करनेसे सम्पूर्ण धन धान्य अक्षय होता है ॥१८॥

उदुम्बरस्य वन्दाकं रोहिण्यां ग्राहयेद्बुधः ।
स्थापयेत्संचितार्थं तु सदा भवति चाक्षयम् ।
मन्त्रेण मन्त्रितं कृत्वा मंत्रोप्यत्रैव कथ्यते ।
"ॐ नमो धनदाय स्वाहा" ॥ १९ ॥

रोहिणीनक्षत्रमें गूलरका वन्दा ग्रहण कर "ॐ नमो धनदाय स्वाहा" इस मत्रसे अभिमन्त्रित कर धन धान्यमें स्थापन करे तो अवश्य अक्षय होता है, ॥१९॥ इति धनधान्याक्षयकरण ॥

श्रुतिधरविद्यादिकरणम्

पथ्या पाठा कणा शुण्ठी सैन्धवं मरिचं वचा ।
शिग्रु प्रतिपलं चूर्णं द्वात्रिंशतिपलं घृतम् ॥ २० ॥
घृताच्चतुर्गुणं क्षीरं दत्त्वा सर्वं विपाचयेत् ।
* घृतशेषं समुत्तार्य्य लिहेद्वाग्बुद्धिदायकम् ॥२१॥

हरड, पाठा, पीपल, सोठ, कालीमिर्च, सेंधा निमक, वच, सहँजना ये सब एक एक पल तथा घी बत्तीस पल ले घीसे चौगुना दूध लेकर इन सबको एकत्र पात्रमें पकावे, जब रस जल जाय घृतमात्र

१ घृतशेष पिबेन्नित्य वाङमेधा स्मृति इतिबुद्धिदम् । इति पाठान्तरम् ।

शेष रहजाय तब उतार ले, नित्य इनके पानसे वाणी वुद्धि और स्मृती वढती है ॥ २० ॥ २१ ॥

अथ ब्राह्मीघृतम्

वचा ब्राह्मी फलं कुष्ठं सैन्धवं तिलपुष्पिका ।
चूर्णयित्वा द्रवैर्भाव्यं मण्डूकीब्राह्मिसम्भवै. ॥ २२ ॥
दिनमेकंततः पाच्यं कल्काच्चतुर्गुणं घृतम् ।
घृताच्चतुर्गुणं देयं क्षीरं ब्राह्मीनियोजितम् ।
घृतशेषं समुत्तार्य लिहेद्वाग्बुद्धिदायकम् ॥ २३ ॥

वच ब्राह्मी, फल, कूठ, सेंधा, तिलपुष्प, वा लालचन्दन इनको चूर्ण कर इसको मण्डूकपर्णी और ब्राह्मीके रसकी भावना दे इस प्रकार एक दिन इसको पकाकर इसके कल्कसे चौगुना घी डाले घीसे चौगुना गौका दूध और ब्राह्मी डाले जब रस जल जाय घृत मात्र रह जाय तब उतार ले इसको चाटनेसे बुद्धि वढती है । तीन मासेकी मात्रा है ॥२२॥ २३॥ इति ब्राह्मीघृत ॥

द्वे हरिद्रे वचा कुष्ठं पिप्पली विश्वभेषजम् ।
अजाजी चाऽजमोदा च यष्टी मधुकसंयुतम् ॥ २४॥
एतानि समभागानि शुष्कचूर्णानि कारयेत् ।
तच्चूर्णं सर्पिषा लेह्यं कर्षकं वाक्यशुद्धिकृत् ।
भक्षयेन्मासमेकं तु बृहस्पतिसमो भवेत् ॥ २५ ॥

दोनो हलदी, वच, कूट, पीपल, सोठ, जीरा, अजमोद मुलैठी ये बराबर भाग ले सुखाकर चूर्ण करे यह चूर्ण घृतके साथ एक कर्ष लेनेसे वाक्यसिद्धि होती है । एक महीने इनके सेवनसे बृहस्पतिके समान होती है ॥२४॥२५॥

ब्राह्मी मुण्डी वचा शुण्ठी पिप्पली समचूर्णकम् ।
मधुना भक्षयेत्कर्षं स्पष्टवाग्जायते ध्रुवम् ।। २६ ।।

ब्राह्मी, मुण्डी, वच, सोठ, पीपल इनको समान ले चूर्ण कर शहदके साथ एक कर्ष सेवन करनेसे मनुष्य स्पष्ट बोलनेवाला हो जाता है इसमें सन्देह नही ।।२६।।

वचास्थि कारवी गुन्द्रा मुशली मधुकं बला ।
अपामार्गस्य पञ्चाङ्गं क्षौद्रेण पूर्ववत्फलम् ।। २७ ।।
अपामार्गवचाशुण्ठी विडङ्गं शङ्खपुष्पिका ।
शतावरी गुडूची च समं चूर्णं हरीतकी ।
घृतेन भक्षयेत्कर्षं नित्यं ग्रन्थसहस्रधृक् ।। २८ ।।

वचकी मींगी, हिगुपुत्री, भद्रमोथा, मुसली, मुलहठी, खरेंटी, चिरचिटेका पचांग ,बच, सोठ, वायविडग, शखपुष्पी, शतावरी, गुडूची हरड इनको समान भाग ले चूर्ण कर घृतके साथ एक कर्ष प्रतिदिन खाय तो सहस्र ग्रन्थका धारण करनेवाला होता है ।। २७ ।। २८ ।।

अश्वगन्धाजमोदा च पाठा कुष्ठं कटुत्रयम् ।। २९ ।।
शतपुष्पी विश्वबीजं सैन्धवं च समं समम् ।
एतदर्द्धं वचा चैव चूर्णितं मधुसर्पिषा ।। ३० ।।
भक्षयेत्कर्षमात्रं तु जीर्णान्ते क्षीरभोजनम् ।
सहस्रग्रन्थधारी स्यान्मूकोऽपि वाक्पतिर्भवेत् ।।३१।।

असगन्ध, अजमोद, पाठा, कुटकी (कूठ) त्रिकुटा, सौंफ, सोठ, सेंधा यह समान भाग लेकर चूर्ण कर इससे आधी वच ले शहद और घीमें मिलाय एक-कर्ष खाय ऊपरसे दूधका भोजन करे तो यह सहस्र ग्रन्थका धारण करनेवाला वाक्पति होता है ।। २९–३१ ।।

लिहेज्ज्योतिष्मतीतैलं वलया वचया सह ।
स्तोकं स्तोकं क्रमेणैव यावन्निष्कचतुष्टयम् ।।
निर्वाते मधुसेवी स्याद्ब्रह्मचारी कविर्भवेत् ।। ३२ ।।

मालकागनीके तेलको खरेंटी और वचके सहित चाटे थोडा २ क्रमसे चार निष्कतक बढावे । निर्वातस्थानमें रहे शहद चाटे वह ब्रह्मचारी कवि होता है । ३२ ।।

सूर्यस्य ग्रहणे वेन्दोः समन्त्रामाहरेद्वचाम् ।
चूर्णितां सघृतां भुक्त्वा सप्ताहे वाक्पतिर्भवेत् ।। ३३ ।।

सूर्य वा चन्द्रग्रहणमें मन्त्रके सहित वचका वन्दा लावे । इसे चूर्ण कर घीके साथ खानेसे एक सप्ताहमे वाक्पति होता है । ३३ ।।

इत्येवमादि योगानां मन्त्रराजः शिवोदितः ।
जप्त्वायुतं च सिद्धिः स्यात्पश्चात्तैरेव भक्षयेत् ।। ३४।।
"ओं ह्लूं हयशीर्षवागीश्वराय नमः ।"

इन योगोको मन्त्रराज 'ॐ ह्लूं हयशीर्षवागीश्वराय नमः' शिवने कहा है । इस मन्त्रको १०००० वार जपनेसे सिद्धि होती है । पीछे इस मन्त्रसेही उक्त पदार्थ भोजन करें ।। ३४ ।।

धात्रीफलरसैर्भाव्यं वचाचूर्ण दिनावधि ।
घृतेन लेहयेन्निष्कं वाक्शुद्धिस्मृतिबुद्धिकृत् ।। ३५ ।।

वचका चूर्ण आमलेके रसमें एक दिन भावित कर एक निष्क घृतके साथ चाटनेसेवाणीकी शुद्धि और बुद्धि स्मरण शक्ति होती है ।। ३५।।

वचाचूर्णं क्षिपेत्क्षीरे पुनर्मंत्रेण मन्त्रितम् ।
भोज्यं क्षीरेण शाल्यन्नं सप्ताहे वाक्पतिर्भवेत् ।। ३६ ।।

उक्त मत्रको पढकर वचका चूर्ण दूधके साथ लेनेसे वाक्पति होता है ।। ३६ ।।

सप्तमे अष्टमे चैव साक्षाच्छ्रुतिधरो भवेत् ।
वचाचूर्ण पीबेत्क्षीरैर्घृतैः क्षौद्रैश्च यत्पुनः ।
सप्ताहक्रमयोगेन लेह्यं स्यात्पूर्ववत्फलम् ।। ३७ ।।

सात दिन वा आठ दिन इसे सेवन करनेसे वेदका धारण करनेवाला होता है, अथवा वचका चूर्ण शहद और घृतके साथ चाटनेसे सप्ताहमें बुद्धि तीव्र हो जाती है ।। ३७ ।।

पुष्यार्कयोगे संगृह्य श्वेतार्कस्य तु मूलकम् ।
छायाशुष्कं च तच्चूर्ण मन्त्रेणैवाभिमंत्रितम् ।। ३८ ।।
कर्षमर्द्ध पलं वापि प्रातरुत्थाय संपिबेत् ।
"ॐमहेश्वराय नमः" अनेन मन्त्रेणाभिमन्त्र्य पिबेत् ।।
तक्रेण सर्पिषा वापि जीर्णान्ते क्षीरभोजनम् ।। ३९ ।।
एवं सप्ताहमात्रेण कविर्भवति बालकः ।। ४० ।।

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड ग्रहण कर उसे छायामें सुखाय चूर्ण कर एक कर्ष वा आधे पल प्रात.काल उठकर "ॐमहेश्वरायनमः" इस मत्रसे अभिमंत्रण कर मट्ठेके साथ या घीके साथ खावे । यह औषधि पचनेपर दूध भात खावे । ऐसा सात दिन खानेसे बालकभी कवि हो जाता है ।। ३८-४० ।।

अथ किन्नरीकरणम्

हरिद्रा च वचा कुष्ठं पिप्पली च यवानिका ।
मरिचं सैन्धवं शुण्ठी चैषां चूर्णं तु कारयेत् ।
मधुना सहितं चूर्णं पेषयित्वा शिलातले ।। ४१ ।।

दिनैश्च सप्तभिश्चैव भक्षितव्यं निरन्तरम् ।
जायते सुस्वरः पुंसां किन्नरैः सह गीयते ।। ४२।।

हलदी, वच, कूठ, पीपल, अजवायन कालीमिर्च, सेंधानोन, सोंठ इनका चूर्ण कर इसे शहदसे मिलाय पत्थरमें पीस सात दिन निरन्तर खानेसे किन्नरीके समान कंठ होता है ।। ४१ ।। ४२ ।।

विभीतकं कणा शुण्ठी सैन्धवं त्वक्समं समम् ।
गोमूत्रेण पिबेत्कर्षं किन्नरैः सह गीयते ।। ४३ ।।

बहेडा, पीपल, सोंठ, सेंधा, तज ये समान भाग ले एक वर्ष गोमूत्रके साथ पान करनेसे किन्नरोंके साथ गान कर सकता है यानी उनके समान स्वर हो जाता है ।। ४३ ।।

जातीपत्रं कणा लाजा मातुलुङ्गदलं मधु ।
पलं लेह्यं भवेन्नादः किन्नराधिक एव च ।। ४४ ।।

जाती वृक्षके पत्ते, जीरा, खीलें और बिजोरेनिंबूके पत्ते इनको मर्दन कर ८ तोले शहदसे चाटनेसे किन्नरसेभी उत्तम स्वर होता है ।। ४४ ।।

देवदारुकणाव्योषं शताह्वा पत्रकं निशा ।
वचा सैन्धवशिग्रूत्थं मूलं पेष्यं समंसमम् ।। ४५ ।।
कर्षकं मधुसर्पिभ्यां मासमात्रं सदा लिहेत् ।।
कण्ठशुद्धिर्भवेत्तस्य किन्नरैः सह गीयते ।। ४६ ।।

देवदारु, सोंठ, मिर्च, पीपल, जीरा, सौंफ, पत्रज, हलदी, वच, सेंधानिमक, सहँजनेकी मूली ये सब वस्तु समान भाग लेकर एक कर्ष मधु और घृतके साथ एक महीने चाटे तो कंठकी शुद्धि होती है किन्नरोंके साथ गा सकता है। ४५ ।। ४६ ।।

शुण्ठी च शर्करा चैव क्षौद्रेणसह संयुता।
कोकिलस्वर एव स्याद्गुटिकाभुक्तिमात्रतः ॥ ४७ ॥

सोठ और मिश्री शहदके साथ मिलाय इसकी गोली बनाय सेवन करे तो स्वर कोकिलाके समान अच्छा होजाता है ॥ ४७ ॥

आर्द्रकं भृङ्गकोरण्टवासा ब्राह्मी वचा तथा।
वचाचूर्णं समांशेन पलैकं वारिणा पिबेत् ॥ ४८ ॥
*मासि मासि चतुर्दश्यां कृष्णपक्षे द्विसप्तकम्।
गन्धर्वसदृशं गानं कोकिलानां स्वरो यथा ॥ ४९ ॥

अदरख, भांगरा, दालचीनी, पीपल, अडूसा, ब्राह्मी, वचका चूर्ण ये समान भाग ले जलके साथ एक कर्ष पीवे, पीतेबार महीने २ कृष्णपक्षकी चतुर्दशीतक चौदह दिन खाय तो गन्धर्व और कोकिलाके स्वरके समान गान कर सकता है ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

निर्गुण्डीमूलचूर्णं तु तितलतैलेन यो लिहेत्।
कण्ठशुद्धिर्भवेत्तस्य किन्नरैः सह गीयते ॥ ५० ॥

निर्गुण्डीकी जडका चूर्ण तिलके तेलके साथ चाटनेसे कंठकी शुद्धि होती है किन्नरोंके साथ गा सकता है ॥ ५० ॥ इति किन्नरीकरण ॥

अथ चक्षुष्यम्

वर्षाकाले काकमाची समूला तैलपाचिता।
खादेत्समासतश्चक्षुर्गृध्रदृष्टिसमं भवेत् ॥ ५१ ॥

वर्षाकालमें समूल काकमाचीको तेलमें पकावे, इसे एक महीने खानेसे गृध्रके समान दृष्टि होती है। ५१ ॥

---

* माघमासि चतुर्दश्या। इति पाठान्तरम्।

श्वेतं पुनर्नवामूलं घृतघृष्टं सदाऽञ्जयेत् ।
जलस्रावं निहंत्याशु तन्मूलं तु निशायुतम् ॥
अञ्जने चक्षुरोगाश्च न भवन्ति कदाचन ॥ ५२ ॥

श्वेतपुनर्नवाकी जड घीमें पीसकर सदा आंजनेसे नेत्रोसे जलका निकलना बंद हो जाता है । अथवा यही जड दारुहलदीके साथ नेत्रमें आंजे तो किसी प्रकारसे नेत्ररोग नहीं होता है ॥ ५२ ॥

द्विनिशा सैन्धवं त्र्यूषं बीजं कारञ्जकं समम् ।
भृङ्गीद्रवैर्युतं वापि तिमिरं पटलं हरेत् ॥ ५३ ॥

दोनों हलदी, सेंधा, त्रिकुटा, करंजके बीज यह समान भाग लेकर अतीसके रसमें बत्ती बनाय नेत्रोमें आंजनेसे तिमिर दूर होता है ।५३॥

शम्बूकं वा वराटं वा दग्धं शुष्कं विचूर्णितम् ।
अञ्जयन्नवनीतेन हन्ति पुष्पं चिरन्तनम् ॥ ५४ ॥

घोंघा या कौडी इन्हें जलाय चूर्ण कर मक्खनके साथ नेत्रोंमें आंजे तो बहुत दिनों का फूला दूर होता है । ५४ ॥

अजामूत्रेण भूधात्रीमूलं पिष्ट्वा च वर्तिका ॥ ५५ ॥
नवनीतसमायुक्ता हन्ति पुष्पं चिरन्तनम् ।
अञ्जनान्नाशयेत्पुष्पं क्षौद्रैर्वा स्वर्णमाक्षिकम् ॥५६॥

छागके मूत्रमें भुईआमलेकी जड पीस उसकी बत्तीको मक्खनके साथ लगानेसे पुराना फूल नष्ट हो जाता है अथवा शहदके साथ सोना-मक्खी मिलाय आजनेसे फूला नष्ट हो जाता है । ५५ ॥ ५६ ॥

मरिचैर्मर्दने रक्ते वर्ती रात्र्यन्धताञ्जयेत् ।
जयन्ती वाभया वाथ घृष्ट्वा स्तन्यैर्निशान्धहृत् ।
शोणितं चर्मकोपं च मांसवृद्धि च नाशयेत् ॥ ५७ ॥

कालीमिर्चके साथ चीनेको मर्दन कर बत्ती बनाय लगावे तो नेत्रोका रतौंधा दूर होता है अथवा जयन्ती वा हरडको पीस लगावे तो रतौंधा दूर होजाता है। रुधिर विकार चर्मकोप और मांसवृद्धि भी इससे दूर होती है ॥ ५७ ॥

कृष्णाजस्य च मासान्तः पिप्पलीं मरिचं क्षिपेत् ॥ ५८ ॥
कारयित्वा घृते पच्याद्घटिकान्ते तमुद्धरेत्।
मध्याज्यस्तन्यसंपिष्टं रात्र्यन्धहरमञ्जनम् ॥ ५९ ॥

काले बकरेके मांसमें पीपल और कालीमिर्च डाले। फिर एक घडी तक घीसे पकाय उसकी वटिका बनावे। उसे शहद घी या स्त्रीके दूधसे पीस लगावे तो रतौंधा दूर हो जाता है ॥५८॥५९॥

अजापित्तगतं व्योषं धूमस्थाने विशोषयेत्।
चिरबिल्वरसैर्घृष्टं रात्र्यन्धहरमञ्जनम् ॥ ६० ॥

बकरीके पित्तमें रखा हुआ सोठ मिरच पीपल इनको धूमस्थानमें सुखावे। करजके रसमे इसे घिसकर लगावे तो रतौंधा दूरहो जाता है ॥ ६० ॥

घृतेन पुष्पं मधुनाश्रुपातं तैलेन कण्डूं तिमिरं
जलेन। राज्यन्धकं काञ्जिकया निहन्ति *पुनर्नवा
नेत्रपुनर्नवङ्करी ॥ ६१ ॥

पुनर्नवाको घृतसे लगावे तो फूला, शहतसे अश्रुपात, तेलसे खुजली, जलसे तिमिर, कांजीसे रतौंधा दूर होताहै। पुनर्नवा नेत्रोको फिर नवीन कर देती है। इसमें श्वेतपुनर्नवा लेनी ॥ ६१ ॥

---

* अत्र श्वेतपुनर्नवा ग्राह्या।

चन्द्रोदया वटी

हरीतकी वचा कुष्ठं पिप्पली मरिचानि च ।
विभीतकस्य मज्जा च शंखनाभिर्मनश्शिला ।। ६२ ।।
सर्वमेतत्समं कृत्वा गव्यक्षीरेण पेषयेत् ।।
नाशयेत्तिमिरं कण्डूं पटलान्यर्बुदानि च ।। ६३ ।।
अपि द्विवार्षिकं पुष्पं मासैकेनैव नाशयेत् ।।
अधिकानि च मांसानि यश्च रात्रौ न पश्यति ।। ६४ ।।
वर्तिश्चन्द्रोदया नाम नृणा दृष्टिप्रसादिनी ।
छायाशुष्का वटी कार्या नाम्ना चन्द्रोदया वटी ।।६५ ।।

हरड, वच, कूठ, पीपल, कालीमिर्च, वहेडेकी मीगी, शखनाभि, मैनशिल यह सवको वरावर ले गौके दूधसे पीस लगावे तो तिमिर, अर्वुद, दो वर्षका फूला जो नेत्रोमें अधिक मास वढजाता है तथा जो रात्रिमें नहीं देखता है ये सव रोग एक मासमें अवश्य नष्ट होजाता है। मनुष्योकी दृष्टिको शुद्ध करनेवाली इस वटीको छायामें सुखाकर मनुष्यको प्रयोग करनी चाहिये ।। ६२–६५ ।। इति चन्द्रोदयावटी ।

यस्त्रैफलं चूर्णमपथ्यवर्ज्यं सायं समश्नाति हवि-
र्मधुभ्याम् । सम्युच्यते नेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथा
क्षीणधनो मनुष्यः ।। ६६ ।। इति चक्षुष्यम् ।।

जो मनुष्य त्रिफलेके चूर्णको संध्या समय घृत और शहदके साथ खाता है उसको नेत्रविकार ऐसा छोड देता है जैसे धनहीन पुरुषको नौकर छोड जाते है। ६६ ।। इति चक्षुरोगनिवारण ।।

अथ कर्णस्य बधिरत्वनाशनम्

शिखरिक्षारजलेन तत्कृतकल्केन साधितं तिलजम् ।
अपहरति कर्णनादं बाधिर्यं चापि पूरणात् ।। ६७ ।।

चिरचिरेके खारयुक्त जलसे वा इसीके साथ तिलके तेलका कल्क कर कानोमें डाले तो बधिरता नाश होती है ।। ६७ ।।

दशमूलीकषायेण तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
एतत्कल्कं प्रदायैव बाधिर्ये परमौषधम् ।।६८ ।।

* देशमूलके काढेको एक सेर तेलमें पकावे जब तेलमात्र रहजाय तो उतारले । कर्णबधिरता नाश करनेकी यह परम औषधी है ।।६८।।

नीलीब्रध्नरसस्तैलं सिद्धकाञ्जिकसंयुतम् ।
कदुष्णपूरणात्कर्णे निश्शेषकृमिनाशनः ।। ६९ ।।

नीली, आक वृक्षकी जड कांजीमें मिलाकर तेलमें पकाय कुछ गरमा गरम कानोमें पूर्ण करनेसे सब कृमि नाश होजाते हैं ।। ६९ ।।

दन्तेन चर्वयेन्मूलं ×नन्द्यावर्त्तपलाशकम् ।
तन्नालीपूरिते कर्णे ध्रुवं गोमक्षिकाञ्जयेत् ।। ७० ।।

धव, सोनामक्खी और पलाशकी जड इनको दांतोसे चबानेसे वा उसका रस कर्णमें पूरित करनेसे गोमक्षिका दूर होती है (कहीं तगर और ढाकको चबाना लिखा है) ।। ७० ।।

ताम्बूलभक्षणं कृत्वा तत्र सन्दापयेद्बुधः ।
तत्र स्थितास्तु कृमयो नाशमायान्ति निश्चितम् ।।७१।।

---

* बेल, सोनापाठा, कमारी, पाढल, अरणी, सरवन, पिठवन, छोटी कटेरी और गोखरू ये दश मूल हैं ।। × तगर च पलाशकम् इति पाठान्तरम् ।

तांबूल भक्षण कर सेचन करे तो कानके कृमि अवश्य नाश हो जाते हैं ।। ७१ ।।

मूषलीबाकुचीचूर्णं खादेद्बाधिर्यशान्तये ।
मनः शिलापामार्गोऽथ मूलं चूर्णं मधुप्लुतम् ।
भक्षयेत्कर्षमात्रं तु बधिरत्वप्रशान्तयें ।। ७२ ।।

मूषली और बाकुचीका चूर्ण खानेसे बधिरता नाश हो जाती है । मैनशिल अपामार्गके मूलका चूर्ण इनको शहतमें मिलाकर एक कर्षमात्र खानेसे बहरापन शान्त हो जाता है ।। ७२ ।।

लशुनामलकं तालं पिष्ट्वा तैले चतुर्गुणे ।। ७३ ।।
तैलाच्चतुर्गुणं क्षीरं पाच्यं तैलावशेषितम् ।
तत्तैलं निक्षिपेत्कर्णे बाधिर्यं च विनाशयेत् ।। ७४ ।।

लहसन, आमला, हरताल इनको पीसकर इससे चौगुना तेल ले तेलसे चौगुना दूध डालकर इसको पकावे । जब रस जल जाय तेल मात्र रहजाय तब उतारलेवे, इस तेलको कानमें डालनेसे बहरापन शान्त हो जाता है ।। ७३ ।। ७४ ।।

अथ कर्णपालीबर्द्धनम्

सिद्धार्थं बृहती चैव ह्यपामार्गं समं समम् ।
छागी क्षीरैः प्रलेपोऽयं कर्णपाली विवर्द्धयेत् ।। ७५ ।।

सफेद सरसों, कटेरी, चिरचिटा इनको समान भाग लेकर चूर्णकर बकरीके दूधसे लेप करे तो कर्णपाली बढती है ।। ७५ ।।

मूषलीकन्दचूर्णं च महिषीक्षीरसंयुतम् ।
लोडयेत्स्निग्धभाण्डे तु धान्यराशौ निवेशयेत् ।
सप्ताहादुत्थिते लेप्यं कर्णपाली विवर्द्धते ।।७६।।

मूषलीकन्दका चूर्ण कर भैंसके दूधके साथ बरतनमें मिलाय धान्यराशी में धरे । फिरसात दिनमें निकाल लेप करनेसे कर्णपाली बढती है ।। ७६ ।।

गुञ्जामूलकृतं चूर्णं महिषीक्षीरसंयुतम् ।। ७७।।
श्रृतं दधि ततः कुर्यान्नवनीतं तदुद्भवम् ।
कर्णयोर्लेपयेन्नित्यं वर्द्धयेन्नात्र संशयः ।। ७८ ।।

चौंटलीकी जडका चूर्ण कर उसमें दूध मिलाय दही जमाय उसका मक्खन निकालकर कानो पर लेप करे तो कर्णपाली बढती है।।७७।७८

अश्वगन्धा वचा कुष्ठं गजपिप्पलिका समम् ।
महिषीनवनीतेन लेपात्कर्णो विवर्द्धते ।। ७९ ।।

असगन्ध, वच, कूठ, गजपीपल इनको भैंसके मक्खनके साथ मिलाय लेप करनेसे कान बढता है ।। ७९ ।।

वराहोत्थेन तैलेन लेपः कर्णविवर्धनः ।
चर्मचटकस्य रक्तेन लेपात्कर्णो विवर्द्धते ।। ८० ।।

बराहके तेलका कानो पर लेप करनेसे कान बढता है अथवा चर्मचटक चिडियेका रक्त लेप करने से कर्णवृद्धि होती है ।। ८० ।।

अथ दन्तदृढीकरणम्

यमचिञ्चाजयापुङ्खामूलं वा हयमारजम् ।
चलदन्ता दृढायन्ते प्रत्यहं दन्तधावनात् ।। ८१ ।।

इमली, जयन्ती, शरफोका, कनेरकी जड इनसे रोज दन्तधावन करनेसे कैसे भी दात हिलते हो सो दृढ होजाते हैं ।। ८१ ।।

ताम्रपात्रे क्षणं पाच्यमभया चूर्णकं मधु ।
पिष्ट्वा च गुटिका कार्या दन्तैर्धार्या कृमीन् हरेत् ।। ८२ ।

हरडका चूर्ण और शहद इनको ताम्रके पात्रमें क्षणमात्र पका गुटिका कर दांतोमें धारण करे तो दातोके कृमि नष्ट होते हैं ॥ ८२ ॥

दन्तैर्धार्यं स्नुहीमूलं कृमिनाशं करोत्यलम् ।
काशीशं घृतसंपक्वं धार्यं दन्ते व्यथापहम् ॥ ८३ ॥

थूहरकी जड वा कसीसको जड दातोमें धारण करनेसे कृमि नाश होजाते है । कसीसको घृतमें पकाकर दातोमें धारण करनेसे दातोकी व्यथा दूर होती है ॥ ८३ ॥

विशाल्यो पलं चूर्णं तप्तलोहे परिक्षिपेत् ।
तद्धूमस्पृष्टदन्तानां कीटपातो भवन्त्यलम् ॥ ८४ ॥

इन्द्रायण और महेन्द्रवारुणीका चूर्ण एक पल तप्त लोहेपर डाल दे । उसका धुआ छूतेही दातोके कीडा मरजाते है ॥ ८४ ॥

जातिकोरकपत्रं च चर्वयेत् प्रातरुत्थितः ।
स्थिराः स्युश्चलिता दन्तास्तत्काष्ठैर्दन्तधावनात् ८५॥

प्रातःकाल उठकर जाती और कंकोल मिर्चके पत्तोको चबावे तो हिलते हुए दात स्थिर हो जाते है । इन्हीं वृक्षोकी दँतौन करे ॥ ८५॥

गुंजामूलं तु कर्णाभ्यां बद्धं दन्तकृमिप्रणुत् ।
त्रिसूतं रौप्य मेकं तु जम्बीररसमर्दितम् ।
जम्वीरफलमध्यस्थं वस्त्रैर्बद्ध्वात्र्यहं पचेत् ॥ ८६ ॥
क्षीरमध्ये समुद्धृत्य गुटिकां तां ततः पुनः ।
भावितं भानुदुग्धेन तालकं सूक्ष्मपेषितम् ॥ ८७ ॥
तन्मध्ये गुटिकां क्षिप्त्वा वस्त्रे बद्ध्वा दिनत्रयम् ।
मधुभाण्डगतं पश्चादुद्धृता चास्यधारिता ।
घर्षणाच्चलितान् दन्तांस्तत्क्षणात्कुरुते दृढान् ॥ ८८॥

चौंटलीकी जड कानोमें बांधनेसे दातके कीडे नष्ट होजाते हैं ॥ एक रूपयेभर पारा जम्बीरीके रसमें मर्दित करे, फिर उसे जम्बीरी नींबूमें रख वस्त्रमें बांध तीन दिनतक दूधमें पकावे फिर उसे निकाल गुटिका करे । इसे काली मिर्च, आकका दूध और हरतालसे सूक्ष्म पीसकर गुटिका वनाय वस्त्रमें तीन दिन बांध रक्खे, फिर शहतके पात्रमें रक्खे । फिर इसको निकालकर दांतोमें घिसे तो हिलते हुए दांत दृढ हो जाते हैं ॥ ८६-८८ ॥

तालकं भानुदुग्धेन दिनमेकं विमर्दयेत् ।
तद्गर्भरसहोमोत्थां पिंडिकां तारसंयुताम् ॥८९॥
जम्बीरफलमध्यस्थां दोलायन्त्रे त्र्यहं पचेत् ॥९०॥
तैलक्षौद्रयुते भाण्डे समुद्धृत्य विधारयेत् ।
दन्तरोगान् हरेत्सर्वान् घर्षणाच्चलिता दृढाः ॥ ९१ ॥

हरतालको आकके दूधमें एक दिन खरल करे, फिर उसको पारेके साथ पिंडी करके एक स्थानमें रक्खे और जम्बीरीके फलके बीचमें रखकर तीन दिन दोलायन्त्रमें पचावे । फिर तेल और शहद मिलाय इसको बरतनमें रख छोडे । इसको मलतेही सम्पूर्ण दाँतोके रोगोंको दूर करता है ॥ ८९-९१ ॥

चलद्दन्तस्थिरकरं कार्यं बकुलचर्वणम् ॥

बकुलको चबाना दातोंको स्थिर और बलयुक्त करता है ॥

बकुलस्य तु बीजं तु पिष्ट्वा कोष्णेन वारिणा ।
मुखे च धारयेद्धीमान् दन्तदार्ढ्य करं परम् ॥ ९२ ॥

बकुल (मौलसिरी) के बीजको कुछ गरम पानीके साथ पीसकर बुद्धिमान् धारण करे तो दात दृढ हो जाते हैं ॥ ९२ ॥

बकुलस्य त्वचा क्वाथमुष्णं वक्त्रेण धारयेत् ।

दृढाः स्युश्चलिता दन्ताः सप्ताहान्नात्र संशयः ॥९३ ॥

बकुल (मौलसिरी) की छालका क्वाथ गरम गरम मुखमें धारण करनेसे हिलते हुए दांत सात दिनमें दृढ होजाते हैं। इसमें सन्देह नहीं ॥ ९३ ॥ इति दन्तदृढीकरणम् ॥

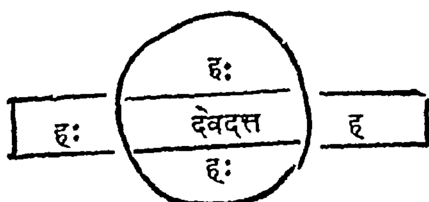
अथ गण्डमालानिवारणम्

कर्कन्धुकोलामलकप्रमाणै कक्षांसमन्यागलवंक्षणेषु । मेदःकफाभ्यां चिरमन्दपाकैः स्याद्गण्डमाला बहुभिश्च गण्डैः ॥

कोखमें, कन्धोंमें अथवा खवोंमें, नाडके पीछे मन्यानाडीमें, गलेमें तथा वंक्षण स्थानमें मेद और कफसे छोटे बेरके समान या बडे बडे बेरके समान बहुतसी गाठें उत्पन्न हो उनको गण्डमाला कहते हैं, ये गाठें बहुत दिनों में थोडे थोडे पकते हैं ॥

काञ्चनारत्वचः क्वाथः शुण्ठीचूर्णेन संयुतः ।
माक्षिकाढ्यः सकृत्पीतः क्वाथो वरुणमूलकः ।
गण्डमाला हरत्याशु चिरकालानुबन्धिनीम् ॥

कचनारकी छालका क्वाथ बनाकर उसमें सोठका चूर्ण डालकर पीवे तो एकही वारमें गण्डमाला नष्ट होती है। वरनाकी जडका क्वाथबनाय उसमें शहद डालकर पीवे तो एकही वारमें बहुत दिनो की पुरानी गंडमाला तत्काल नष्ट होती है ॥ इस यन्त्रको गोरोचन और लाल चन्दनसे भोजपत्रपर लिख (रोगीके नामदेवदत्तस्थानमें लिखकर) रोगीके कंठमें बांधे तो गण्डमाला (कण्ठमाला) दूर होती है ॥



अथ आहारकरणम्

ब्रध्नकेनापि वृक्षस्य पीठं कृत्वा शनैः स्थितः ।
योऽसौ भुंक्ते घृतैः सार्द्ध भोजनं भीमसेनवत् ।।९४।।

आकके वृक्षका पीढा कर शनै शनै उसपर बैठ घृतके सहित भोजन करे तो भीमसेनके समान भोजन करेगा ।। ९४ ।।

*संध्यायामाम्रवृक्षस्य कर्त्तव्यमभिमंत्रितम् ।
प्रात पुष्पाणि संगृह्य मालां शिरसि धारयेत् ।।
कौपीनं संपरित्यज्य भुङक्तेऽसौ भीमसेनवत् ।। ९५ ।।

संध्याके समय आमके वृक्षको अभिमन्त्रित कर प्रात काल उसके मौरकी माला शिरपर धारण करे । (कही प्लक्षका अभिमत्रण कहा है) कौपीन त्याग भोजन करनेसे बैठे तो भीमसेनके समान भोजन करे ।। ९५ ।।

उद्भ्रांतपत्रमादाय कपिला श्वानदन्तकम् ।
कट्यामेव द्वयं बद्ध्वा भुङक्तेऽसौ भीमसेनवत् ।।९६।।

मूषकपर्णीके पत्तोको रेणुका श्वानदन्त इनके साथ कमरमें बाधे तो भीमसेनके समान भोजन करे ।। ९६ ।।

गृहीत्वा मन्त्रितान् मन्त्री विभीततरुपल्लवान् ।
आक्रम्य दक्षिणां जङघां विशत्याहारभुग्भवेत् ।।९७ ।।

मत्रका जाननेवाला मन्त्रपूर्वक बहेडेके पत्तेको दहिनी जाघसे आक्रमण कर ग्रहण करे अर्थात् जांघके तले रखकर भोजन करनेसे बीसगुना भोजन करनेवाला होता है ।। ९७ ।।

---

* सन्ध्याया प्लक्ष इति वा पाठ. ।

"ॐनमः सर्वभूताधिपतये ग्रस २ शोषय २ भैरवी
आज्ञापयति स्वाहा।" उक्तयोगानामयं मन्त्रः ॥

मन्त्र–'ॐ नम सर्वभूताधिपतये ग्रस २ शोषय २ भैरवी आज्ञापयति स्वाहा' उपरोक्त योगोका यह मन्त्र है ॥

अधरं कृकलासस्य शिखास्थाने विवन्धयेत्।
वायुपुत्र इवाश्चर्यमसौ भुङ्क्ते न संशयः ॥ ९८ ॥
"ॐ नाभिवेगेन उर्वशी स्वाहा ॥"

गिरगटके अधरको शिखास्थानमें बाधनेसे भीमसेनके समान भोजन करता है, इसमें सन्देह नही "ॐ नाभिवेगेन उर्वशी स्वाहा" यह मन्त्र है ॥ ९८ ॥ इति आहारकरणम् ॥

अथानाहारकरणम्

अन्त्राणि कृकलासस्य मज्जा कारञ्जबीजकम्।
पिष्ट्वा तद्गुटिकां कुर्यात् त्रिलोहेन तु वेष्टयेत् ॥
ता वक्त्रे धारयेद्यस्तं क्षुत्पिपासा न बाधते ॥
"ॐ * सांसाशरीरममृतमाकर्षय स्वाहा॥"

गिरगटकी अन्त्र और करंजके बीजोकी मींगी गुटिका बना चादी सोने अथवा तांबेमें मढाकर मुखमें भूख और प्यास नहीं लगती है 'ॐ सांसाशरीर... स्वाहा' ॥ ९९ –॥ १०० ॥

पद्मबीजमहाशाली छागीदुग्धेन पाचयेत्
साज्यं च पायसं भुक्त्वा द्वादशाहं क्षुधा...

---

* शा चा इति वा पाठः ।

कमलगट्टेकी गिरी महाशालिचावल इनको छागीके दूधसे पकावे। घृत सहित वह खीर खाय तो बारह दिनतक भूख नहीं लगती है॥१०१

उदुम्बरस्य जम्बीरशालिशिम्बीशिरीषजम्।
बीजं संचूर्ण्य चाज्येन भुक्त्वा पक्षं क्षुधापहम् ॥ १०२ ॥

गूलर, जम्बीरी, शालिचावल, शिम्बी, शिरहके बीज इनका चूर्ण कर घीके साथ खानेसे पन्द्रह दिन भूँख नहीं लगती है ॥ १०२ ॥

उदुम्बरफलं पक्वमिङ्गुदीतैलभावितम्।
भुक्त्वा मासं क्षुधां हन्ति पिपासां च न संशयः ॥१०३॥

गूलरका पक्का फल इंगुदीके तेलमें भावित कर खानेसे एक महीने-तक भूँख और प्यास नहीं लगती है। इसमें सन्देह नहीं ॥ १०३ ॥

अपामार्गस्य बीजानि त्वग्वर्ज्यानि प्रपाचयेत्।
पायसं छागलीक्षीरैर्भुक्तं मासक्षुधापहम् ॥ १०४ ॥
"ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतार्कमध्ये संस्थि-
ताय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु सः स्वाहा"
उक्तयोगानामयं मन्त्रः ॥ १०५ ॥

अपामार्गके बीजोका छिलका दूर कर बकरीके दूधमें पकाय इसकी खीर बनाय खानेसे एक महीनेतक भूख नही लगती ॥ 'ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतार्कमध्ये सस्थिताय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु स.स्वाहा उपरोक्त योगका यह मन्त्र है ॥१०४॥१०५॥ इत्यनाहारकरणम् ॥

अथ पादुकासाधनम्।

अश्वनालांगुलीतैलैः पेषयेच्छ्वेतसर्षपम्।
तल्लिप्तपादहस्तस्तु योजनानां शतं व्रजेत् ॥ १०६ ॥

अश्वनाल, अंगुलीका तेल इनके साथ श्वेत सरसो पीसे उसको हाथ पैरोमें सम्यक् लपेटकर सौ योजन जा सकता है ॥ १०६ ॥

अङ्कोलस्य तु मूलं तु तिलतैलेन पाचयेत् ।
पादौ तु जानुपर्यन्तं लिप्त्वा दूराध्वगो भवेत् ॥ १०७ ॥

अंकोलके जड तिलके तेलमें पकावे उसको जंघापर्यन्त लेप करे तो मनुष्य बहुत दूरतक जासकता है ॥ १०७ ॥

"ॐ ह्री नमः ॐ नमश्चंडिकायै गगनं गगनं चालय चालय वेशय हिलि २ वेगवाहिनीह्लींह्ली स्वाहा ।" उक्तयोगद्वयस्यापमेव मन्त्रः ॥

'ॐ नमश्चंडिकायै गगन २ चालय२ वेशय हिलि २ वेगवाहिनी ह्लीं ह्लीं स्वाहा' उक्त योगोका यह मन्त्र है ॥

काकस्य हृदयं नेत्रे जिह्वा चैव मनश्शिलाम् ।
गैरिकं सिन्धुजं चैव अजामारी च मालती ॥ १०८ ॥
समं रुद्रजटा चैव विदार्या सह पेषयेत् ।
तल्लिप्तपादः सहसा सहस्रं योजनं व्रजेत् ॥ १०९ ॥
वलीपलितनिर्मुक्त यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ११० ॥

काकका हृदय, दोनो नेत्र और जिह्वा, मनशिल, गेरू, सेंधानोन, शूक शिम्बी, मालती इनके समान रुद्रजटा, विदारीकन्द इन सबको पीसकर उसको हाथ पैरमें लपेटकर सहस्र योजन दूर जा सकते हैं । वलीपलितसे निर्मुक्त होकर प्रलयतक विचरण करेगा ॥ १०८-११० ।

"ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो हरितगदाधराय त्रासय २ क्षोभय २ चालने २ स्वाहा ॥"

काकजिह्वा ब्रह्मचारी गुडलोहेन वेष्टयेत् ।।
मुखे प्रक्षिप्य गच्छन्ति योजनं शतमेव च ।। १११ ।।
आगच्छन्ति तदा तूर्ण ते नरा नात्र संशयः ।। ११२ ।।

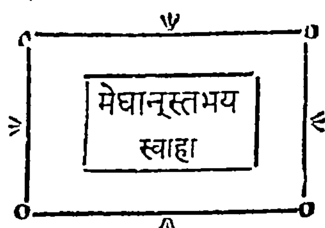
" ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो हरितगदाधराय त्रासय २ क्षोभय २ चालने २ स्वाहा " काकजिह्वा, भारगी, गुड इनको लोहसे वेष्टित कर मुखमें डालकर सौ योजन जा सकते है और बहुत शीघ्र आसकते हे इसमें सदेह नहीं ।। १११ ।। ११२ ।।

अङ्कोलतैलसंपिष्टा श्वेतसर्षपलेपिताम् ।
पादुकामुष्ट्रचर्मोत्था समारुह्य शतं व्रजेत् ।। ११३ ।।

अकोलके तेल और सरसोके तेलसे ऊटके चर्मकी पादुका लेपन कर उसपर चढ सौ कोस जा सकता है ।। ११३ ।।इति पादुकासाधन ।

अनावृष्टिकरणयत्रम्

दो ईटें सपुटकर उसपर श्मशानकी अगारसे इस यत्रको लिखकर स्थापन कर देवे । यह यंत्र मेघोको स्तभन कर देता है, इससे अनावृष्टि हो जाती है ।।



अनावृष्टिहरणम्

'हं ह्रीं' (अथवा) 'हुं श्री हुं' इमं मन्त्रं जलमध्ये प्रविश्य यदि जपेत् तदा अनावृष्टि हरति । महावृष्टिर्भवति ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्न काम्यसिद्ध्यादिकथन नाम द्वादशोपदेश ।। १२ ।।

'हुं श्री हुं' इस मन्त्रको जलके मध्यमें खडा होकर जपे तो अना-

वृष्टि जाती रहती है महावृष्टि होती है ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पडितज्वालाप्रमादमिश्रकृत-भाषाटीकाया काम्यसिद्धयादिकथन नाम द्वादशोपदेश ।। १२ ।।

त्रयोदशोपदेश·

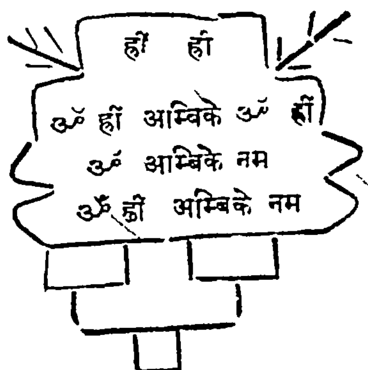
अथ निधिदर्शकमञ्जनम् ।

अञ्जनानां तु सर्वेषां मन्त्रं साध्यमघोरकम् ।
विना मन्त्रेण विद्याश्च नाशयन्ति पदेपदे ।। १ ।।

सब अजनोमें अघोरमंत्र साधन करना उचित है । बिना मत्रके पद पदमें विद्या नष्ट होती है ।। १ ।।

***अम्बिकायन्त्रमाश्रित्य जपेदष्टहसस्रकम् ।**
ततः सर्वविधानानि सुसाध्यानि च प्रारभेत् ।। २ ।।

अबिकामूर्तिके आश्रित होकर आठ सहस्र जप करे तो सब निधि उसको सुखपूर्वक विदित हो जायगी ।। २ ।। यह चन्दनकर्पूर लेप देकर दर्भांकुर मूल नाम यन्त्र लिखकर वलयाकार करे " ॐ सिद्धो लि नमः ॐ शं सो लिं नमः ॐ यं शो लि नमः ॐ कं को लि नमः ४ ॐ खिद खिद विन्द विन्द जोलीनमहानमद २ महा धरण-वर्णने नमः सर्व सुखदाराय धरण मड तो रोमा धरण ॐ ह्रीं अम्बिके ॐ ही अंबिके नमः "इति यंत्रमध्ये लिखित्वा पश्चात् 'ॐ अम्बे अम्बाले अम्बिके अवतारय ठ. ठ· स्वाहा' इस मंत्रसे (३६०००) छत्तीस सहस्र जपनेसे सिद्धि होती है,फिर जपकर २१ चमे



---

* यक्षिणामूर्तिमाश्रित्य इति पाठान्तरम् ।

मत्रसे बत्तीको अभिमन्त्रित करे। 'ॐ नमो भगवते सिद्धसाधकाय ज्वल २ पच २ पातय २ बन्ध २ सहर २ दर्शयदर्शय र्निधि नम'। इस मत्रसे दीपक जलावे। 'ॐ ऐं मत्र सर्वसिद्धेभ्यो नमो विश्वेभ्य' स्वाहा' इस मत्रसे कज्जल ग्रहण करे। 'ॐ कालि कालि महाकालि रक्षेदमजन नमो विश्वेभ्य स्वाहा' इस मत्रसे अजन द्रव्यको अभिमन्त्रित करे। 'ॐ सर्वे सर्वहिते क्ली सर्वे सर्वहिते सर्वोषधी प्रियाहि ते विरते नमो नम स्वाहा' इस मत्रसे अजन योग्यवर्तिको अभिमन्त्रित करे। प्रथम सुवर्णशलाकासे नेत्रोको आजकर उस शलाकासे अजन द्रव्यको अभिमन्त्रित करे। इस प्रकार अजनको आजकर सातधारके पत्रको प्रतिनेत्रको अच्छिद्र और अधोमुख बधित करे॥ ५॥

तस्योपरि सितं वस्त्रं पट्टजं चापि बन्धयेत्।
नाञ्ज्यादधिकहीनाङ्गं श्वदष्टं चाग्निदग्धकम्॥६॥

उसके ऊपर सम्यक् प्रकारसे रक्खे हुए श्वेतवस्त्रको वेष्टन कर वा रेशमीवस्त्रको बाधे। और उस अजनको अधिक और हीन अगवालोको न आजे तथा श्वदष्ट अग्निदग्दको न आजे॥ ६॥

सम्पूर्णाङ्गं शुचि स्नात्वा द्विदिनं नक्तभोजनम्।
भोक्तव्यं क्षीरशाल्यन्नं त्रिदिनान्ते ततोऽञ्जयेत्॥७॥

सम्पूर्ण प्रकारसे पवित्र हो स्नान करके दो दिनपर्यन्त रात्रिमें नक्त भोजन करे। दूध शालिधान खाय। इस प्रकार तीन दिनके उपरान्त फिर आंजे॥ ७॥

अञ्जितस्य शिखाबन्धं कर्त्तव्यं मन्त्र उच्यते॥८॥
"ॐ नमो भगवते रुद्राय तुलतुल महेश्वर
माहेश्वर नुज्वल २ विज्वल २ मिज्वल २ हर २

यक्षरक्षपूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ नन्न २ महेन्नविहेन्न
विहेन्नमिहेन्न २ हरहररक्ष २ पूजिते यक्षकुमारिसु-
लोचने स्वाहा ।
यक्षाणां मूर्तिमाश्रित्य उदयास्तं मनुं जपेत् ।
पूर्वमेव समाख्यातं शिखाबन्धं शिवोदितम् ॥ ९ ॥
इदं सर्वाञ्जने ज्ञातव्यम् ।

आजकर शिखाबंधन करे । उसका मत्र कहते है–' ॐ नमो भगवते रुद्राय तुल तुल महेश्वर माहेश्वर नुज्वल २ विज्वल २ मिज्वल २ हर २ यक्षरक्ष पूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ' यक्षोकी मूर्तिके आश्रित होकर उदय और अस्तमें इसका जप करें । शिखाबधन शिवने पूर्वही कह दिया है । यह सब अजनमें जानना चाहिये॥८॥९॥

शरत्काले तु संग्राह्या भूतला रक्तवर्णका ।
सिन्दूरपूरितां कृत्वा वर्ति तूलेन वेष्टयेत् ॥ १० ॥
अतिकृष्णतिलातैलं ग्राहयेद्रक्षयेत्सुधीः ।
तैलवर्त्याः प्रयोगेण कज्जलं चोत्तरायणे ॥११ ॥
ग्राहयित्वाञ्जनं चक्षुर्निधि पश्यति साधकः ।
प्रमाणं च विजानाति गृह्णाति च यथेप्सितम् ॥ १२ ॥

शरत्कालमें पृथ्वीसे इन्द्रगोप (वीरबहूटी) ग्रहण करनी चाहिये उसमे सिंदूर पूरित करके आककी रुईकी बत्ती करे और बहुत काले तिलोका तेल लेकर उसको रक्षित करे । उसी प्रयोगसे बत्ती बाल उत्त-रायणमें कज्जल ग्रहण करके आजे तो निधिका दर्शन होता है और उसका प्रमाण जानकर यथेष्ट ग्रहण कर सकता है ॥ १०–१२ ॥

अतिकृष्णस्य काकस्य जिह्वामांसं समाहरेत् ।
वेष्टयद्रवितूलेन वर्ति तेनैव कारयेत् ।। १३ ।।
अजाघृतेन दीपं तु प्रज्वाल्यादाय कज्जलम् ।
अञ्जिताक्षो नरस्तेन निधि पश्यति पूर्ववत् ।। १४ ।।

बहुत काले कौएकी जिह्वाका मास लावे उसको आककी रुईसे लपेटकर बत्तीके समान कर बकरीके घीमें उसका दीपक जलाय कज्जल ग्रहण करे । उसको लगानेसे मनुष्य अज्ञात निधिको पूर्ववत् देखता है ।। १३ ।। १४ ।।

सप्तधा पद्मसूत्राणि भावयेदिक्षुजै रसैः ।
उद्धृत्य ज्वालयेद्दीपमङगुलीतैलसंयुतम् ।। १५ ।।
ग्राह्यं कृष्णत्रयोदश्यां कज्जलं निधिदर्शकम् ।
सर्वाञ्जनमिदं सिद्धं शम्भुना परिकीर्तितम् ।। १६ ।।

ईखके रसमें पद्मसूत्रको सात वार भावना दे । फिर उसे लेकर अगुलीके तेलसे दीपक जलावे । कृष्णपक्षकी त्रयोदशीको कज्जल ग्रहण करनेसे निधिका दर्शन होता है । यह सर्व सिद्ध अजन शिवजीने कहा है । १५ ।। १६ ।।

दीपकज्जलयोः पात्रं कर्त्तव्यं नरमुण्डजम् ।
सर्वेषां कज्जलानां तु सत्यं स्याच्छिवभाषितम् ।। १७ ।।

परन्तु इस सब प्रकारके दीपक और काजर पारनेका पात्र मनुष्यकी खोपडी ग्रहण करनी चाहिये । यह शिवजीने कहा है ।। १७ ।।

रक्तेन कृकलासस्य भावयित्वा मनःशिलाम् ।
तेनैवाञ्जितनेत्रस्तु निधिं पश्यति पूर्ववत् ।।१८।।

गिरगटके रक्त मे मनशिलाको भावना देकर उससे नेत्र रंजित करके पूर्ववत् निधिको देख सकता है ।। १८ ।।

गृहीत्वा चानुराधायां वन्दा शाखोटवृक्षजाम् ।
गोरोचनसमं पिष्ट्वा त्वञ्जनं निधिदर्शकम् ।
एतत्सर्वाञ्जनं ख्यातं प्रसिद्धं शिवभाषितम् ।। १९ ।।

शाखोटवृक्षकी वन्दा अनुराधानक्षत्रमें ग्रहण करके गोरोचनके साथपीसकर आजनेसे निधिका दर्शन होता है। यह सब अजन प्रसिद्ध और शिवजीके कहे हुए है। १९ ।। ।

अगस्त्यवृक्षजां कुर्यात्पादुका निधिदर्शकाम् ।।
पादुकाञ्जनयोगेन सिद्धयोगा भवन्ति वै ।।
"ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय शिलि २ धूमरे नागवेतालिनी स्वाहा ।।" अनेन पादुका-मभिमंत्रयेत् ।। २० ।।

अगस्त्यके पेडकी पादुका बनानेसे निधिका दर्शन होता है। पादुका अजनके योगसे सिद्धयोग होता है ।। 'ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय शिलि २ धूमरे नागवेतालिनी स्वाहा इससे पादुकाको अभिमत्रित करे ।। २० ।।

तुलसीमूलिकां पुष्ये शनिवारे समुद्धरेत् ।
निष्पिष्य काञ्जिकेनाथ मधुना पुनरञ्जयेत् ।। २१ ।।
पादजातं कुमारं वा कन्यका वा तदा निधिः ।
दृश्यते नात्र संदेहः पातालं गतवानपि ।। २२ ।।

तुलसीकी जड पुष्यनक्षत्र शनिवारके दिन ग्रहण करे । उसे काजीमें पीस शहतमें मिलाय आजे, अजन उन्ही लोगोको लगाना चाहिये कि,

जो उलटे उत्पन्न हुए हो ऐसे कुमार वा कन्याको पातालपर्यन्तगतभी निधिका दर्शन हो सकता है। इसमें सन्देह नहीं है ॥२१॥२२॥

"ॐ नमोभगवते रुद्राय कज्जललेपाञ्जनं दर्शय २ स्वाहा ठःठः।" अनेन मन्त्रेण कज्जललेपाञ्जनमभिमन्त्रयेत् ॥

खन्यमाने च सर्पाश्च निस्सरन्ति पदे पदे ॥ २३ ॥

'ॐनमो भगवते रुद्राय कज्जललेपाजन दर्शय २ स्वाहा ठः ठ.' इस मन्त्रसे कज्जललेपाजनको अभिमन्त्रित करे। फिर खनन करनेसे पद पदमें बडे बडे सर्प निकलते है। ॥ २३ ॥

औषधेन विना तेभ्यो भयं स्यान्मन्त्रिणामपि।
तस्मादौषधयोगेन पादलेपेन ताञ्जयेत् ॥ २४ ॥

औषधीसे विना मन्त्रवालोको भी इनसे भय हो सकता है इस कारण औषधिके योगसे चरणमें लेप करके इनको जय करे ॥ २४ ॥

अर्कस्य करवीरस्य *पनसस्य तु मूलिकाम्।
पिष्ट्वा पादप्रलेपाच्च दूरे गच्छन्ति पन्नगाः ॥ २५ ॥

आक, करवीर और पनसकी जडको पीसकर चरणोमें लेप करनेसे सर्प दूर भागजाते है ॥ २५ ॥ इतिनिधिदर्शकअंजन ॥

अथ अदृश्यकरणम्।

चतुर्लक्षमिमं मन्त्रं श्मशाने प्रजपेच्छुचिः।
नग्नवृत्तिस्ततस्तुष्टा पटं यच्छति यक्षिणी ॥ २६ ॥
तेनावृतो नरोऽदृश्यो विचरेद्वसुधातले।
निधिं पश्यति गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥ २७ ॥

* पनसोत्पलमूलिकम्। ऐसा पाठ है तहाँ कमलकी जड लेना।

पवित्र होकर आगे कहाहुआ मन्त्र श्मशानमें नग्न होकर ४००००० जपे तब यक्षिणी इसको एक वस्त्र देती है। उससे आवृत मनुष्य किसीको न दीखता हुआ पृथ्वीतलमे विचरता है और निधि देखकर ग्रहण करसकता है कहीं विघ्नोसे इसका तिरस्कार नहीं होता है ॥ २६ ॥ २७ ॥

"ॐ ह्रां ह्रीं स्फें श्मशानवासिनी स्वाहा ॥"

निशाचरीं निशि ध्यात्वा जप्त्वा वामेन पाणिना।
अदृश्यकरिणी विद्यां लक्षजाप्ये प्रयच्छति ॥ २८ ॥

'ॐ ह्रां ह्रीं स्फें श्मशानवासिनी स्वाहा' रात्रिमे ध्यान कर वाम-हाथसे जप करता हुआ एक लक्ष जप करके इस अदृष्टकारणी विद्याको प्राप्त होता है ॥ २८ ॥

"ॐ नमो निशाचरमहामहेश्वर मम पर्यटतः सर्वलो-कलोचनानि बन्धय २ देव्याज्ञापयति स्वाहा।

रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां श्मशानान्त. शिवालये।
बलिना चोपहारेण कुर्यादर्चनमुत्तमम् ॥ २९ ॥
ततो दीपाङ्गुलीतैलैर्वर्तिः स्यादर्कतन्तुभिः।
प्रज्वाल्य नृकपाले तु तत्पात्रे धृतकज्जलम्।
अञ्जयेन्नेत्रयुगलं देवैरपि न दृश्यते ॥ ३० ॥

'ॐ नमो निशाचर महामहेश्वर मम पर्यटत· सर्वलोकलोचनानि बन्धय बन्धय देव्याज्ञापयति स्वाहा' कृष्णचतुर्दशीकी रात्रिमें श्मशानके बीच शिवालयमें बली उपहार आदिसे उत्तम अर्चन करे ॥ फिर अंगुलीके तेलसे युक्त आकके तन्तुओकी बत्ती बनावे, मनुष्यकी खोपडीमें बालकर खोपडीपरही काजल पारे, उसको दोनो आंखोमें लगानेसे देवताओकोभी नहीं दीखता है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अर्कशाल्मलिकार्पासपट्टपद्मजतन्तुभिः ।। ३१ ।।
पञ्चभिर्वर्तिकाभिश्च नृकपालेषु पञ्चसु ।
*नवनीतेन दीपाः स्युः कज्जलं नृकपालतः ।। ३२ ।।
ग्राहयेत्पञ्चभिर्यत्नात्पूर्ववच्च शिवालये ।
पञ्चस्थानीयजातं तु एकीकुर्यात्तु तं पुनः ।
मन्त्रयित्वाञ्जयेन्नेत्रे देवैरपि न दृश्यते ।। ३३ ।।

"ॐहूंफट्स्वाहाकालि २ महाकालि मांसशोणित-भक्षिणि रक्तकृष्णमुखे देवी मा मे पश्यतु मानुषेति ॐ हूंफट् स्वाहा ।।" एतन्मन्त्रायुतजपात्सिद्धिर्भवति ।। उक्तादृश्यप्रयोगाणामयमेव मंत्रः । अनेन मन्त्रेणाष्टोत्तरशताभिमन्त्रिताङ्गुलितैल-प्रयोगात्सिद्धा भवन्ति ।। ३४ ।।

आक, शेमल, कपास, वस्त्र, कमलके तन्तु इनसे पांच बत्ती करके अलग २ पांच मनुष्योंकी खोपडीमें मक्खनके घीसे वा नरतेलसे काजर पारे ।। इन पांचोको पूर्ववत् शिवालयमें पांचों स्थानों से लेकर फिर उसे एकत्र करे ।। फिर इस मन्त्रसे अभिमंत्रितकर नेत्रोमें लगानेसे देवताओकोभी नहीं दीखता है । मन्त्र-"ॐ हूं फट् स्वाहा कालि२महा-कालि मांसशोणितभक्षिणि रक्तकृष्णमुखे देवी मामे पश्यतु मानुषेति ओ हूं फट्स्वाहा" इस मन्त्रको १०००० जपनेसे सिद्धि होती है । यह मन्त्र सब अदृश्यकरणके प्रयोगमें जानलेना । इस मन्त्रसे एक सौ आठ वार अभिमंत्रित अंगुली तेलके प्रयोगसे सब सिद्ध होते हैं ।।३१-३४।।

* नरतैलेन इति वा पाठ । अर्थ-नरका तेल ।

अंगुलीतैलसंसिक्ता यवाः सप्तदिनावधि।
त्रिलोहवेष्टितास्तेषां गुटिकां कारयेच्छुभाम्।
अदृश्यकारिणी सा तु मुखस्था नात्र संशयः ॥ ३५ ॥

अगुली (गजगर्णी) के तेलमे सात दिनपर्यन्त जौको सिंचन करे और उसको त्रिलोहसे वेष्टित कर सुन्दर गुटिका बनाय उसको मुखमें रखनेसे अदृश्य हो जाता है, इसमे सन्देह नही ॥ ३५ ॥

तत्तैले सर्षपाः श्वेतास्त्रिलोहेन तु वेष्टिता.
गुटिका मुखमध्यस्था साऽदृश्यकरिणी मता ॥ ३६ ॥

उस तेलमें श्वेत सरसोको पूर्ववत् भावना दे गुटिका बनाय (चांदी तावे आदि) से मढाय मुखमें रखनेसे अदृश्य होजाता हे ॥ ३६ ॥

कृष्णकाकस्य रुधिरं पित्तं गोमायुसम्भवम्।
काकारिनखचञ्च्वापि समभागं विचूर्णयेत् ॥ ३७ ॥
ऋक्षे पुनर्वसौ वर्ति कृत्वा नेत्रे च रंजयेत्।
अदृश्यो भवति क्षिप्रे सर्वकार्यप्रसाधकः ॥ ३८ ॥

काले कौएका रुधिर, गीदडका पित्ता, उलूकके नख, चोच इनको समान भाग लेकर चूर्ण करे और पुनर्वसु नक्षत्रमें इसकी बत्ती बनाय नेत्रोमें आजे तो वह शीघ्र अदृश्य हो जाता है तथा सब कार्यको सिद्ध हो कर सकता है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

कृष्णकुक्कुटपुच्छाग्रं निर्माल्यं मृतकस्य* च।
काकनेत्रं च मरिचं पिष्ट्वा कार्यम् च मूत्रकैः ॥ ३९ ॥
कलायार्द्धप्रमाणेन वटी कृत्वा प्रशोषयेत्।
तेनैवाञ्जितनेत्रस्तु अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ४० ॥

---

* शकरस्य च।

काले मुर्गेकी पूछका अग्रभाग, मृतकका निर्माल्य, कौएका नेत्र, काली मिर्च, अश्ववला इनको गोमूत्रके साथ पीसकर बेरकी बराबर गोली बनाकर सुखाले । इससे नेत्रोंको आजे तो निश्चयही अदृश्य हो जाता है ।। ३९ ।। ४० ।।

कृष्णमार्जारांतरस्थं रक्तं संगृह्यभावयेत् ।
नक्तमालस्य तैलेन तत्र श्वेतार्कसूत्रजाम् ।। ४१।।
वर्ति प्रज्वाल्य वज्रस्य* दले संगृह्य कज्जलम् ।
तेनाञ्जनेन मनुजस्त्वदृश्यो भवति ध्रुवम् ।। ४२ ।।

काली बिल्लीका रक्त ग्रहण कर नक्तमाल (करंज) तेलद्वारा भावना दे यत्नपूर्वक श्वेत आककी कपासकी वत्ती बालकर वज्रवृक्ष (सेहुण्ड) के पत्तेमे काजर ग्रहण कर उससे अजन करनेसे अवश्यही मनुष्य अदृश्य हो जाता है ।। ४१ ।। ४२ ।।

सुकृष्णं चैव मार्जारं मारयित्वा चतुष्पथे ।। ४३ ।।
प्रोक्षणं कारयित्वा तु दिनानां पंचविंशतिः ।
तत्संगृह्य प्रयत्नेन क्षालयेच्छीतवारिणा ।। ४४ ।।
यदस्थि च श्रोत्रभेदि स्याद्ग्राह्यं यत्नतोऽभयम् ।
पूजयित्वा महाकाली गोरोचनसमन्वितम् ।। ४५ ।।
नकुलस्य तु पित्तेन भावयित्वा प्रपेषयेत् ।
तद्वर्त्तितिलकादेव नरोऽदृश्यो भवेद्ध्रुवम् ।। ४६ ।।

चौराहेमें काली बिल्लीको वध कर पच्चीस दिनपर्यन्त उसे प्रोक्षण करे अर्थात् ग्रहण कर शीतल जलसे धोवे । यदि अस्थि श्रोत्रभेदी हो तो यत्नसे ग्रहण कर महाकालीकी पूजा और जप कर गोरोचनसे

* बदरस्य इति च पाठान्तरम् ।

उसे नौलेकी पित्तेकी भावना देकर पीसे उसकी बत्तीसे तिलक करे तो अवश्यही मनुष्य अदृश्य हो जाता है ॥ ४३–४६ ॥

नृमांसं च शिवामांसं यत्नतो ग्राहयेद्बुधः ॥
प्रथमरजस्वलायाश्च रुधिरेण वटी कुरु ॥
त्रिलोहवेष्टिता सा तु मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ४७ ॥

मनुष्य और गीदडीका मांस यत्नसे ग्रहण करके प्रथम रजस्वला हुई स्त्रीके रुधिरसे उसकी वटिका बनावे । उसे चादी तांबे अथवा सोनेसे मढाकर मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य हो जाता है ॥ ४७ ॥

कृष्णमार्ज्जारमुण्डे तु कृष्णगुञ्जा प्रवापयेत् ।
तत्फलं वदनस्थं हि साक्षाददृश्यकारकम् ॥ ४८ ॥

काली बिल्लीके मुण्ड (खोपडी) में काली चौंटली बोवे । उससे उत्पन्न हुआ उसका फल मुखमे रखनेसे मनुश्य अदृश्य होजाता है।४८।

कोकाया नयनं वामं त्रिलोहेन प्रवेष्टयेत् ।
सा वटी मुखमध्यस्था अदृश्यं कुरुते ध्रुवम् ॥ ४९ ॥

कोयलके बायें नेत्रकी वटी बनाय त्रिलोहसे वेष्टित कर मुखमे रखनेसे प्राणी अदृश्य होजाता है । ४९ ॥

दिवाभीतस्य नयनं त्रिलोहेन प्रवेष्टयेत् ।
मुखस्थं कुरुतेऽदृश्यं यथेच्छं विचरेन्महीम् ॥ ५० ॥

उल्लूके नेत्रको चांदी सोने आदिसे मढाकर मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है । फिर जहा इच्छा हो वहा विचरने लगे ॥ ५० ॥

ऋक्षे चैवानुराधाया वन्दां रासलवृक्षकाम् ।
मुखे प्रक्षिप्य च नरोऽदृश्यः स्यान्नहि संशयः ॥ ५१ ॥

अनुराधानक्षत्रमें रोहित वृक्षका वन्दा ग्रहणकर मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है इसमें सन्देह नही ।।५१।।

शाखोटस्य च वन्दाकं नक्षत्रे मृगशीर्षके ।
गृहीत्वा पानपात्रेण अदृश्यो जायते नरः ।। ५२ ।।

मृगशिरनक्षत्रमें शाखोट वृक्षके वन्दाको पानपात्रद्वारा ग्रहण करके मुखमें रखनेसे मनुष्य अवश्यही अदृश्य होजाता है ।। ५२ ।।

भरण्यां तु समागृह्य वन्दां कार्पाससम्भवाम् ।। ५३ ।।
हस्ते बद्ध्वा ह्यदृश्यः स्यात्स्वात्यां वा निम्बवृक्षजाम् ।
पिबेदुत्तरषाढायामशोकवृक्षसम्भवाम् ।। ५४ ।।
वन्दां तदा अदृश्यः स्यादश्विन्यां बिल्ववृक्षजाम् ।
वन्दाकं वा करे धृत्वा अदृश्यो जायते नरः ।। ५५ ।।

भरणीनक्षत्रमें कपासका वन्दा लेकर हाथमें बांधनेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है अथवा स्वातीनक्षत्रमें नीमका वन्दा ग्रहण करे तथा उत्तराषाढामें अशोकवृक्षका वन्दा ग्रहण कर पीवे एवं अश्विनीनक्षत्रमें बेलके पेडका वन्दा लावे और इनको हाथमें धारण करनेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है ।। ५३–५५ ।। इति अदृश्यकरण ।।

अथ मृतसञ्जीवनी

मृतसञ्जीवनीविद्यां प्रवक्ष्यामि समासतः ।
लिङ्गमङ्कोल्वृक्षाधः स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ।५६ ।।

संक्षेपसे मृतसंजीवनी विद्याको कहता हूं–ढेरेके वृक्षके नीचे शिवलिंगको स्थापन कर पूजा करे ।। ५६ ।।

नवं घटं च तत्रैव पूजयेल्लिङ्गसंनिधौ ।
वृक्षं लिङ्गं घटं चैव सूत्रेनैकेन वेष्टयेत् ।। ५७ ।।

उन्हीके निकट नवीन कलश वा घटको स्थापन करके पूजन करे। उस वृक्ष लिंग और घटको एकही सूत्रसे वेष्टित करे ॥ ५७ ॥

चतुर्भिस्साधकैर्नित्यं प्रणिपत्य क्रमेणतु ।
एवं *द्विद्विदिनं कुर्यादघोरेण समर्चयेत् ॥ ५८ ॥
"ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ।" उक्तयोगानामयंमन्त्रः ॥

चार साधकोसे नित्य प्रणाम करके दो दिन बराबर यह विधान कर 'अघोरेभ्यो०" इस मत्रसे शकरका आराधन करे। कहीं दो तीन दिन करना कहा है ॥इस प्रयोगमें यह अघोर मंत्रकाही विधान है।५८।

पुष्पादिफलपाकान्तं साधनं कारयेद्बुधः ।
फलानि पक्वान्यादाय पूर्वोक्तं पूरयेद्घटम् ॥५९॥

पुष्प फल पाकतक इस साधनको करे अर्थात् फूल फल लाकर पूर्वोक्त घटको समर्पणकर पूर्ण करे ॥ ५९ ॥

तद्घटं पूजयेन्नित्यं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ।
तुषवर्ज्जम् ततः कुर्याद्बीजानां घट्टयेन्मुखम् ॥ ६० ॥

उस घटको नित्य गध अक्षतसे पूजन करे और छुलका रहित बीजोको मुखपर ढकदे ॥ ६० ॥

तन्मुखं बृहणं वृत्तं किंचित् किञ्चित्प्रलेपयेत् ।
विस्तीर्णमुखभागान्तः कुम्भकारकरोद्भवाम् ॥६१॥

मुख वृद्धिमें किंचित् किंचित् लेप करे—कुम्हारके हाथमें रखी हुई (मिट्टी) लाय ॥ ६१ ॥

---

* द्वित्रिदिनम् इत्यपि पाठ ।

मृत्तिकां लेपयेत्तत्र तानि बीजानि रोपयेत् ।
कुंडल्याकारयोगेन यत्नादूद्ध्र्वमुखानि वै ।। ६२ ।।

उसपर मृत्तिका लेपन कर पश्चात् बीजोंका रोपण करे अर्थात् कुण्डलीके आकार बोवे ।। ६२ ।।

शुष्कं तं ताम्रपात्रोद्ध्र्वं भाण्डं देयमधोमुखम् ।
आतपे धारयेत्तैलं ग्राहयेत्तं च रक्षयेत् ।। ६३ ।।

जब वह सूख जाय तब उसपर ताबेका पात्र रखकर नीचेको उसका मुख कर दे आतपमें रखकर उससे तेल ग्रहण कर उसकी रक्षा करे ।। ६३ ।।

मासार्द्ध चैव तत्तैलं मासार्द्ध तिलतैलकम् ।
नस्यं देयं मृतस्यैव कालदष्टस्य तत्क्षणात् ।। ६४ ।।

आधा मासा यह तेल और आधा मासा तिलका तेल ग्रहण कर इनकी नास देनेसे कालरूपी राक्षसका काटा पुरुष जीवित होजाता है ।। ६४ ।।

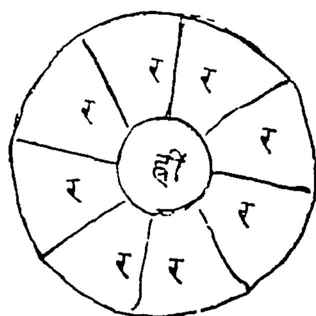
अथवा—पुंशुक्रं पारदे तुल्यं तेन तैलेन मर्दयेत् ।
नस्यं देयं मृतस्यैकं कालदष्टस्य वा क्षणात् ।। ६५ ।।
तत्कृत्वा जीव्यते सत्यं गतेनापि यमालयम् ।
रोगापमृत्युसर्पादिमृतो जीवति हि स्वयम् ।
जीवमायाति नो चित्रं महादेवेन भाषितम् ।। ६६ ।।

अथवा पुरुषका शुक्र, पारा रस यह तेलमें मर्दन कर नास दे तो काल दष्ट हुआभी जीवित होजाता है यमालयको गया हुआ तथा अपमृत्यु रोग और सर्पादिका काटा हुआभी अच्छा होता है, इसमें सन्देह नही । यह महादेवजीने कहा है ।। ६५ ।। ६६ ।।

पुष्यभास्करयोगेन गुडूचीमूलमाहरत् ।
कर्षमुष्णजलैः पीतो मृते मृत्युहरो भवेत् ॥ ६७ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचित्ते कामरत्ने निधिदर्शनाजनादिमृत्युसजीवनी कथन नाम त्रयोदशोपदेश ॥ १३ ॥

पुष्पनक्षत्रसे जब सूर्यका योग हो तब गिलोयकी जड लावे इसको आठ कर्ष जलके साथ पीनेसे मृत्युका भय दूर होजाता है । ६७ ॥गोरोचन कुकुमसे भोजपत्रमें इस यन्त्रको लिख भुजामें धारण करे तो अपमृत्यु दूर हो, 'मृत्युञ्जयायनम' यह मूल मत्र है ।यह यन्त्र सिद्धिदायक है ।



ति श्रीनित्यनाथत्र विरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकाया निधिदर्शनाजनादिमृत्युसजीवनी कथन नाम त्रयोदशोपदेश ॥ १३ ॥

चतुर्दशोपदेशः

अथ विषनिवारणम्

शम्भुनोक्तं समासेन विषं स्थावरजङगमम् ।
कृत्रिमं योगजं चैव वृश्चिकाद्यं तु सम्भवम् ।। १ ।।

शिवजीने जो सक्षेपसे स्थावर, जगम, कृत्रिम, योगसे उत्पन्न तथा वृश्चिकादि विष कहा हे ।। १ ।।

क्रमाल्लक्षणमेतेषा मन्त्रक्युतं वदाम्यहम् ।
नाम वक्ष्ये विषाणा तु शम्भुना कीर्तितं पुरा ।। २ ।।

क्रमसे उनके लक्षण और मन्त्र वर्णन करताहू तथा उन विषोके नाम कहताहू जो पहले शिवजीने कहे हे ।। २ ।।

दरदो वत्सनाभश्चमुस्तकं पुष्करं विषम् ।
क्रूरं शठं कर्मठं च हरिद्रं कालकूटकम् ।। ३ ।।
इन्द्रबीजं चित्रबीजं हरितं गालवं विषम् ।
श्रृङ्गी कर्कटश्रृङ्गी च च मेषश्रृङ्गी हलाहलम् ।। ४ ।।
शाकूटं रक्तश्रृङ्गी च ह्यञ्जनं पुण्डरीककम् ।
संकोचं मधुपाकं च रोहिणं मेदुरं तथा ।। ५ ।।
पंचविंशतिभिर्भेदैर्विज्ञेयं स्थावरं विषम् ।
एतन्मध्ये ह्यतिक्रूरं संकोचं कालकूटकम् ।। ६ ।।

दरद (हिंगुल), वत्सनाभ, मुस्तक, पुष्कर, क्रूर, शठ, कर्मठ-हरिद्र, कालकूट, इन्द्रबीज, चित्रबीज, हरित, गालवविष, श्रृंगी, का.कडाशिगी, मेंढासिगी, हलाहलविष, शाकूटः रक्तश्रृगी, अजन, पुण्ड-

रीक, संकोच, मधुपाक, रोहिण, मेदूर, ये नामवाले पच्चीस स्थावरवि-विष जानने चाहिये। इनमें सकोच और कालकूट विष बडा तीक्ष्ण है ॥ ३–६ ॥

भृङ्गी मुस्तं वत्सनाभं पञ्चमं तु विषाद्विषम्।
एषां देहप्रविष्टानां शृणु लक्षणमुच्यते ॥ ७ ॥

भृंगी मुस्त वत्सनाभ विष पाचवां विषसे विष है। देहमें प्रविष्ट हुए इन विषोका लक्षण कहता हू सुनो ॥ ७ ॥

वान्तिमूर्च्छातिसारं च भ्रान्तिश्शूलं च कम्पनम्।
कासश्वासौ तीव्रदाहो लक्षयेद्गद्गदस्वरम् ॥ ८ ॥

वान्ति, मूर्च्छा, अतिसार, भ्रान्ति, शूल, कम्प, खासी, श्वास, तीव्र दाह गद्गदस्वर होना यह विष खायेहुएके लक्षण है ॥ ८ ॥

पुत्रजीवफलामज्जां शीततोयेन पेषयेत्।
भोजने चाञ्जने पाने लेपे सर्वविषापहम् ॥ ९ ॥
स्थावरं जङ्गमं क्रूरं कृत्रिमं योगजं तथा। ।।
निष्कमात्रं न सन्देहः कालदष्टोऽपि जीवति ॥ १० ॥

जियापोतेकी मीगी शीतलजलके साथ पीसकर भोजन पान लेपन अंजनमें देनेसे सब प्रकारके विष दूर होजाते है तथा स्थावर, जंगम, कृत्रिम, योगज, आदि विष भी उपरोक्त औषधीके एक निष्क सेवन करनेसे जाते रहते हैं। वहुत क्या ? इसके प्रतापसे कालदष्टभी जीवित होता है ॥ ९ ॥ १० ॥

शाड्वलं कडङकणं तुत्थं कट्फलं रजनी वचा।
नरमूत्रेण संपीत्वा एकैकं तु विषं हरेत् ॥ ११ ॥

शाड्वल, शुद्ध सुहागा, तूतिया, वट्फल, हलदी, वच, इनको मनुष्यके मूत्रमें पीस पीनेसे एक एक विषको भी दूर करते है ॥ ११ ॥

समूलपत्रां सपाक्षी तथैव देवदालिकाम् ।
गिरिकण्याश्च वा मूलं नरमूत्रेण पूर्ववत् ।। १२ ।।
त्रिकटुं देवीदालिं च नस्ये सर्वविषापहम्
ब्रह्मदण्डीयमूलं तु मधुना सह भक्षयेत् ।। १३ ।।

पत्ते जडके सहित सहदेई और देवदाली अथवा विष्णुक्रान्ताकी जड इनको मनुष्यके मूत्रसे पूर्ववत् पीसकर वा त्रिकुटा, देवदाली इनको पीसकर नास लेनेसे भी सब विष दूर हो जाते हैं अथवा ब्रह्मदडीकी जड मधुके सहित भक्षण करे ।। १२ ।। १३ ।।

श्वेताङ्कोलस्य मूलं तु मुखस्थे तिलकेऽथवा ।
मुखस्थैरण्डमूलं वा छायाशुष्कं विषापहम् ।। १४ ।।

श्वेत अकोलकी जड मुखमें रखनेसे अथवा तिलक करनेसे तथा छायामें सुखाई अडकी जड मुखमें रखनेसे विषको दूर करती है।।१४।।

टङ्कणं देवदालिं च जलैः पाने विषापहम् ।
नीलसर्पस्य पुच्छं तु कृकलासस्य पुच्छकम् ।। १५ ।।
ताम्रेण वेष्टितं कृत्वा मुद्रिकां तां च धारयेत् ।
तया स्पृष्टजलं पीतं स्थावरं जङ्गमं हरेत् ।। १६ ।।

सुहागा, देवदाली (घ ग्र बेल) इनको जलके साथ पानमें देनेसे विषको दूर करनेवाली है । नीले साँपकी पुच्छ और गिरगटकी पूछ तांबेसे लपेट मुद्रिका बनाय हाथमे धारण करे । उससे स्पर्श किया जल पान करनेसे स्थावर और जगम विष दूर होजाता है ।।१५।।१६।।

मन्त्र :–आतरथाकी यातरथा श्लातोहाते उपजीलो वृक्षसुंचचुलु करपापियो सिंदूरसावाणी कालकूटविष श्रीगोरक्षेर वाणीमुखे दिले हये अमृतवाणी

विषखाउ विषजारो विषकरोति भर विषहरि आछे त्रिदशर ईश्वर महादेवेर आज्ञा गोरक्षेर वाणी ।। १ ।। सिन्दूरसार वाणी कालकूट विषशरीरमध्ये हया पानी श्रीगोरक्षेर आज्ञा ।। २ ।। खेदाय गुरु आदम सिख आमुकारे कान्देनाही कालकूट विष ।। ३ ।। महादेवेर आज्ञा गोरक्षेर वाणी कालकूट विष शरीरमध्ये हयापानी कालकूटविष दृष्टि हन २ ॐ पार्णा । मन्त्राभ्युक्षितं विषं मंत्रेण वारत्रयमभिमन्त्रितं भक्षयेत् ।। ४ ।। यदि किञ्चित्तथापि विक्रियते तर्हि चतुर्थमन्त्रेण वारत्रयमभिमन्त्रयेत् ।। जलं वारत्रयं गण्डूषमात्रं पेयम् ।।

मन्त्र–'आतरथाकी यातरथा इलाता हारत उपजीले वृक्षमुजि चलुक चिजा पिजो सिन्दूर सारणी कालकूट विष शरीर मध्ये हयापानी श्रीगोरक्षेर आज्ञा । विषउखाड विषाजारो विषाकरोति भर विषहारी आछे त्रिदश ईश्वर महादेवेर आज्ञा गोरक्षेर वाणी सिन्दूर सारवाणी कालकूट विष शरीरमध्ये हयापानी' इस मन्त्रसे विष खायेहुएके मुखमें तीनवार मन्त्र पढकर जल दे और जो कुछ विकार होय तो चौथा मत्र पढकर तीनवार अभिमंत्रित कर कुल्ले मात्र जलपान करनेसे विष दूर हो जायगा ।।

भूनागसत्त्वसंजातां मुद्रिका धारयेत्करे ।
न तस्याक्रमते सत्यं विषं स्थावरजङ्गमम् ।
तत्स्पृष्टोदकपानेन विषं सर्वं विनश्यति ।। १७ ।।

गण्डूषपदी और भूनागके सत्त्वकी मुद्रिका हाथमे धारण करनेसे स्थावर जङगम विष इसको आक्रमण नही कर सकता है । इसी मुद्रिकाका स्पर्श किया जलपान करनेसे सब प्रकारके विष नाश हो जाते हैं ।। १७ ।।

शिरीषबध्नकं ग्राह्यं रेवत्या चन्दनान्वितम् ।
तद्घृष्टं मर्दितं गात्रे तस्याङ्गे विषनाशनम् ।। १८ ।।

जब रेवती नक्षत्रमें चन्द्रमा हो तब शिरसका वन्दा लावे, उसको घिसकर चदनके साथ शरीरमें मलनेसे विष नाश होता है ।। १८ ।।

वराहगोधानकुलशशकुक्कुटपित्तिकम् ।
श्वेत्ताया गिरिकर्ण्याश्च फलमूलं विपेषयेत् ।। १९ ।।
पाने सर्वविषं हन्ति मृतोप्युत्तिष्ठते क्षणात् ।
नाम्ना चामृतयोगोयं पुरा रुद्रेण भाषितः ।। २० ।।

शूकर, गोय, नौला खरगोश, कुत्ता, इन सबका पित्त तथा श्वेत विष्णुक्रान्ताके फल और मूल दोनोको पीसले इसके पान करनेसे सब विष दूर होकर मृतक पुरुष भी उसी समय उठ बैठता है, यह अमृतयोग प्रथम शिवजीने कहा है ।। १९ ।। २० ।।

पणवं पटहं चैव ह्यनेनैव प्रलेपयेत् ।
मृतोऽपि विषयोगेन श्रुत्वा वाद्यं प्रबुध्यते ।। २१ ।।

पणव और पटह बाजेपर इसीका लेप करे, विष योगसे मरा हुआ इस बाजेको सुनकर जाग उठेगा ।। २१ ।।

श्वेतापराजितामूलं पीत्वा दुग्धेन मानवः ।
स्थावरं च विषं हन्ति उदरस्थं न संशयः ।। २२ ।।
ससिंधुकाञ्जिकं पीत्वा स्थावरादिविषं हरेत् ।। २३ ।।

श्वेत अपराजिताकी जड दूधके साथ पीसकर पान करनेसे उदरमें स्थित स्थावरविष दूर होता है इसमें सन्देह नही । सेंधानोन मिलाय काजोको पीनेसे स्थावर विष जाता रहता है इसमें सदेह नहीं।२२।२३।

"ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुञ्चितामृत मर्चतजटाय ठः ठः स्वाहा ।।" अनेन सर्वौषधमभिमंत्रयेत् ।। इति स्थावरविषनिवारणम् ।।

मन्त्र–'ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुचितामृतमर्चतजटाय ठ ठ स्वाहा' इससे सब औषधियो को अभिमन्त्रित करे ।।इति स्थावर विषनि ० ।।

अथ (जङ्गम) सर्पविषनिवारणम् ।

जातीनां नाम रूपं च जंगमानामिहोच्यते ।
ब्राह्मणाः श्वेतवर्णाः स्युः क्षत्रिया रक्तवर्णकाः ।।
वैश्यास्तु पीतवर्णाश्च कृष्णवर्णास्तु शूद्रकाः ।। २४ ।।

अब जंगमविषकी जाति और स्वरूप कहते है–श्वेतवर्णका सर्प ब्राह्मण, लाल वर्णका क्षत्रिय, पीतवर्णका वैश्य और कृष्णवर्णका शूद्र होता है ।। २४ ।

सर्पविषहरणमन्त्र

ॐ मेघमालेधिमाले हरहरविषवेगं हाहाहहासवारिहं अंबे लंबे सर्वविषनाशिनि महामाये हूं हूं लं स. ठः ठः स्वाहा । जः जः जः सर्वविषनाशिनीमेघमाला नाम विद्याॐ प्रौठः नील कंठाय स्वाहा । ॐ नमो भगवति रक्ताङ्गे रक्तलोचने कपिलजटे कपिल-

शरीरे कट्कट्कहकहभंजभंजशूलाग्रपाणि उग्र-
चण्डतर्पेमहातर्पे कृष्णे अतिकृष्णे इदं मानुषं
शरीर मनुप्रविश्य भ्रम २ भ्रम २ भ्रामय २ नृत्य २
बहुरूपे विलासिनिभक्ते कृष्णाङ्गी पूरय २
वेशय२ विश्वरूपिणी रक्तपट्टिरुद्रे आज्ञापयति हूं
फट् ठ ठ. एषा स्वास्थावेषाविद्या ॐ नमो भग-
वते पार्श्वयक्षाय ह्री २ ह्लू २ धेनु २ कंप २
पुराणं दृष्ट्वा मावेशय २ स्वाहा ।।" ।। २५ ।।

"ॐ मेघमाले" यह मन्त्र सर्पोकेविषको नाश करनेवाला मन्त्र है ।२५।

अष्टकुलनागा

अनन्तः कुलिकश्चैव वासुकी शङखपालक. ।
तक्षकश्च महापद्मः कर्कोट. पद्म एव च ।
कुलनागाष्टक ह्येते तेषां चिन्हं शिवोदितम् ।। २६ ।।

अनन्त कुलिक, वासुकी, शखपालक, तक्षक, महापद्म, कर्कोटक, पद्म ये आठ कुलनाग है। इनके चिन्ह शिवजीने कहे है ।। २६ ।।

श्वेतपद्ममनन्तस्य मूर्ध्नि पृष्ठे च दृश्यते ।
शङ खं शेषस्य शिरसि वासुकेः पृष्ठ उत्पलम् ।। २७ ।।

अनन्तनागके शिर और पीठमे श्वेत पद्म देखा जाता है शेषके शिर पर शखका चिन्ह, वासुकीके पृष्ठपर कमलका चिन्ह होता है ।।२७।।

त्रिनेत्राङकस्तु कर्कोटस्तक्षक. शशाङिकतः ।
ज्वलत्रिशूलचन्द्रार्द्ध शङखपालस्य मूर्द्धनि ।। २८ ।।

कर्कोटक नागपर त्रिनेत्रका चिह्न, तक्षकपर शशका चिह्न, शख-पालके शिरपर जलते हुए त्रिशूलका और अर्धचन्द्रका चिन्ह है ।।२८।।

राजवत्तु समो बिन्दुर्महापद्मस्य पृष्ठत ।
पद्मपृष्ठे च दृश्यन्ते सुरक्ताः पञ्चबिन्दव ॥ २९ ॥

महापद्मकी पीठपर राजाके समान बिन्दु होते है। पद्मनागकी पीठ पर लाल पचबिन्दु होते हैं इन लक्षणोसे इन्हे पहचाने ॥ २९ ॥

एवं यो वेत्ति जात्यादीन्नाम बिन्दु शिवोदितम् ।
तस्य मन्त्रौषधान्येव सिद्ध्यन्ते नान्यथा पुन ॥ ३० ॥
दूरतस्तस्य सर्पाद्याः पतन्ति गरुडे यथा ।
कालाख्या नामतश्चिन्हं शिवेनोक्तं यथापुरा ॥ ३१ ॥

इस प्रकार शिवजीके कहे नाम बिन्दु जाति आदिको जो जानता है उसीको मत्र औषधी सिद्ध होती है अन्यथा नहीं, सर्पादि उससे ऐसे दूर रहते है जैसे गरुडसे, यह वार्ता पूर्वमे शिवने कही है ॥३० ॥ ३१ ॥

दशभेदा

ज्ञेयो दशविधो दंशो भुजङ्गाना भिषग्वरैः ।
भीतोन्मत्त· क्षुधार्तश्च आक्रान्तो विषदर्पित· ॥ ३२ ॥
आहारेच्छुः क्षुधार्तश्च स्वास्थानपरिरक्षण· ।
नवमो वैरिसन्धानो दशम· कालसंज्ञकः ॥ ३३ ॥

सर्पोका दश दशविधका होता है, ऐसा वैद्योको जानना उचित है। भीत, उन्मत्त, क्षुधार्दित, आक्रान्त, विषदर्पित, आहारकी इच्छावाला, भूखा, अपने स्थानको रक्षा करनेवाला, नवम वैरिसधान, दशम कालसज्ञक है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

स्थानभेदेन दशफलम्

उद्याने जीर्णकूपे च वटश्टृङ्गाटचत्वरे ।
शुष्के वृक्षे श्मशाने च प्लक्षश्लेष्मातशिग्रुके ॥ ३४ ॥

देवतायतनागारे तथा च शाकवृक्षके* ।
एषु स्थानेषु ये दष्टास्ते न जीवन्ति मानवा । ३५ ॥
भ्रूमध्ये चाधरे मूर्ध्नि जङ्घे नेत्रे भ्रुवौ तथा ।
ग्रीवाचिबुककण्ठेषु करमध्ये च तालुके ॥ ३६॥
स्तनयोः संधयोः कुक्षौ लिङ्गवृषणनाभिषु ।
मर्मसंधिषु सर्वत्र सर्पदष्टो न जीवति ॥ ३७ ॥

बगीचेमें, जीर्ण कूपमें, वट, शृगाट, चौराहा, सूखे वृक्ष, श्मशान, शेलुवृक्ष, सहिजने, देवताओके स्थान, शाकवृक्ष इतने स्थानोमे जो काटे गये है वे मनुष्य जीवित नही होसकते है । शाक-आकवृक्ष वा सेगुन वृक्ष, भ्रूमध्य, अधर (होठ), शिर, जघा, नेत्र, दोनो भौ, गर्दन, ठोडी, कठ, हथेली, तालु, दोनो स्तनोकी सधि, कोख, लिग वृषण, नाभि, सब मर्मकी सन्धियोमें सर्पका काटाहुआ नही जीता है ॥३४-३७ ॥

रवौ भौमे शनेर्वारे सर्पदष्टो न जीवति ।
अष्टमी पञ्चमी पूर्णा ह्यमावास्या चतुर्दशी ।
अशुभास्तिथय. प्रोक्तास्सर्पदष्टो न जीवति ॥३८॥

रवि, मगल और शनिवारको सर्पका काटा नहीं जीता है । अष्टमी, पंचमी, पूर्णा, अमावास्या, चतुर्दशी यह अशुभ तिथि है, इनमें सर्पका काटा नही जाता है ॥ ३८ ॥

कृत्तिका श्रवणं मूलं विशाखा भरणी तथा ।
पूर्वास्तिस्रस्तथा चित्राश्लेषाभेषु न जीवति ॥ ३९ ॥

कृत्तिका, श्रवण, मूल, विशाखा, भरणी, तीना पूर्वा, चित्रा, आश्लेषा इनमें काटा हुआ नही जाता है ॥ ३९ ॥

---

* रसाल इति वा पाठ । अर्थ-आम ।

मध्याह्ने सन्ध्ययोश्चैव ह्यर्द्धरात्रे निशात्यये।
कालवेला वारवेला सर्पदष्टो न जीवति ।। ४० ।।

मध्याह्न, दिन रातकी संधि, अर्धरात, निशाके अवसान होनेमें और कालवेला, वारवेला इसमें सर्पसे काटा हुआ नही जीता है ।। ४० ।।

सर्पस्य तालुमध्ये तु यो दन्तोऽङ्कुशसन्निभः।
विमुञ्चति विषं घोरं तेनायं कालसंज्ञकः ।। ४१ ।।
चक्राकृतिश्चि वा दंशः पक्वजम्बूफलाकृतिः ।। ४२ ।।
सुनीलः श्वेतरक्तो वा त्रिदशोऽपि न जीवति।
स्रवेन्मूत्रपुरीषं वा हृच्छूलं छर्दिदाहकृत् ।। ४३ ।।

सर्पके तालुमूलमें अकुशके समान एक दात है। उसीमेंसे यह कालसज्ञक घोर विषको त्यागता है। जहा सर्प काटे उस स्थानमें चक्राकार होजाय या पकी जामुनसा होजाय। नीलवर्ण श्वेत अथवा लालवर्ण होनेसे देवताभी उसको रक्षा नहीं करसकते। जिसका मूत्र निकलने लगे, हृदयमें शूल दाह हो, वह नही जीता है ।। ४१–४३ ।।

सानुनासिकया वाक्यं संधिभेदमथापि वा।
ताम्राभं नेत्रयुगलमथवा काकनीलकम् ।।
वियोगो देवदष्टाख्यं तं विद्यात्कालपाशगम् ।। ४४ ।।

जिसके गुनगुना शब्द सन्धिभेद होता है, जिसके दोनो नेत्र ताम्रवर्ण अथवा काकके समान नीलवर्ण होजाय, यह देवदष्टाख्य वियोग है। इससे जान लेना कि, यह कालपाशको प्राप्त है ।। ४४ ।।

सेचनादुदकेनाङ्गे शीतलेन मुहुर्मुहुः।
रोमाञ्चा न भवेद्यस्य तं विद्यात्कालपाशगम् ।। ४५।।

जिसके शरीरमे शीतल जल छिडकनेसे रोमाच न हो उसको कालपाशमें प्राप्त जानो ।। ४५ ।।

वेदना दंक्षमूले वा नष्टदंशोऽथवा भवेत् ।
तत्क्षणात्तीव्रदाहश्च सोऽपि कालेन भक्षितः ।। ४६ ।।

जिसके दशमे वेदना हो जिसके दशमूल न देखा हो और जलन (महादाह-विसज्ञा) हो उसे भी कालसे भक्षित जानो ।। ४६ ।।

सोमं सूर्य यदा दीप्तं न पश्यति च तारकम् ।। ४७।।
दर्पणे सलिले वाथ घृततैलेन वा मुखम् ।
न पश्येद्वीक्ष्यमाणोऽपि कालदष्टो न संशयः ।। ४८ ।।

जब चन्द्रमा सूर्य दीप्तिमान् तारोको न देखे तथा घृत तेल जलमें मुखकी परछाँई जिसको न दीखे उसे भी नि सन्देह कालका काटाहुआ जानो ।। ४७ ।। ४८ ।।

ज्ञात्वा कालमकालं च पश्चाद्भेषजमाचरेत् ।
सर्पदंशे विषं नास्ति कालदष्टो न जीवति ।। ४९ ।।
तस्य तत्रापि कर्त्तव्या चिकित्सा जीवनावधि ।
रसदिव्यौषधीनां तु प्रभावात्कालजिद्भवेत् ।। ५० ।।

काल अकालको जानकर औषधी करनी चाहिये कारण कि, सर्पके काटेमे विष नही है, परन्तु जिसको काल काट ले वह नही जीता है । तोभी प्राणीके जीनेतक चिकित्सा करे तो रस मात्रा तथा औषधियोके प्रभावसे काल भी जीता जा सकता है ।। ४९ ।। ५० ।।

विषचिकित्सा

सूतकं गन्धकं तुल्यं टङ्कणं रजनीसमम् ।

देवदाल्या द्रवैर्मर्थ्य दिनं निष्कं तु भक्षयेत् ।। ५१ ।।
कालशैलाशनिर्नाम रसः सर्वविषापह ।
नरमूत्रं पिबेच्चानु कालदष्टोपि जीवति ।। ५२ ।।

शोधा पारा, गन्धक बराबर ले तथा हलदी और सुहागा बराबर ले इसे देवदालीके रसमें युक्त कर प्रतिदिन एक कर्ष भक्षण करे । यह कालशैलाशनि नामक रस सब विषोका हरनेवाला है, इसको मनुष्यके मूत्रके साथ लेनेसे कालका काटाभी जीवता है ।। ५१ ।। ५२ ।।

श्वेतापराजितामूलं देवदालीयमूलकम् ।
वारिणा पेषित नस्यं कालदष्टोपि जीवति ।। ५३ ।।

श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड, देवदाली (बडी तोरई) की जड जल पीस नास देनेसे कालका काटाभी जी सकता है ।। ५३ ।।

दधिमधुनवनीतं पिप्पलीशृङ्गवेर
मरिचमपि च कुष्ठं चाष्टमं सैन्धवं स्यात् ।।
यदि दशति सरोषस्तक्षको वासुकिर्वा
यमसदनगत. स्यादानयेत्तत्क्षणेन ।। ५४ ।।

दही, शहत, मक्खन, पीपल, अदरख, काली मिरच, कूठ इनसे आठवा भाग सेंधा मिलाया सेवन करनसे साक्षात् तक्षक और वासुकीका काटाभी क्षणमें मृत्युसे लौट आता है ।। ५४ ।।

कुटकी मुशलीमूलं पीत्वा तोयैर्विषापहम् ।
वृश्चिका वीरणामूलं लेपात्सर्वविषापहम् ।। ५५ ।।

कुटकी और ताल मुशलीकी जड जलके साथ पीनेसे सब विष दूर होजाते है ।। ५५ ।।

वारिणा टङ्कणं पीतमथवार्कस्य मूलकम् ।
सैन्धवं वा नृमूत्रेण प्रत्येकं विषनाशनम् ।। ५६ ।।

जलके साथ सुहागा पीनेसे अथवा आककी जड पीनेसे अथवा मनुष्यके मूसे सेंधा पीसकर पान करनेसे विष नाश होजाता है ।।५६।।

इन्द्रवारुणिमूलं तु शुक्ला चाथ पुनर्नवा ।
वन्ध्याकर्कोटकीमूलं मुशलीशिखिमूलकम् ।
तण्डुलोदक पानेन प्रत्येकं विषनाशनम् ।। ५७ ।।

इन्द्रायणकी, जड श्वेत पुनर्नवा, वन्ध्या, कर्कोटकीकी मूली, तालमूली, अपामार्गकी जड इन प्रत्येकको चालवलके जलके साथ पान करनेसे विष दूर होता है ।। ५७ ।।

गौक्षीरै रजनी कुष्ठं क्वाथपानं विषापहम् ।।५८।।

हलदी और कूठ इनका काढा कर गौके दूधमें मिलाकर पीनेसे विष दूर होता है ।। ५८ ।।

भृङ्गराजस्य मूलं तु त्रिशूलिन्यास्तु मूलकम् ।
तोयैर्वा तण्डुलीमूलं प्रत्येकं विषजिद्भवेत् ।। ५९ ।।

भागरेकी जड, त्रिशूलिनी* की जड अथवाचौलाईकी जड जलके साथ पीनेसे विषको हरती है, चावलोके जलके साथ प्रत्येक वस्तु विषहर होती है ।। ५९ ।।

सोमराजीबीजचूर्ण सकृद्गोमूत्रभावितम् ।
चराचरविषघ्नं तन्मृतसंजीवनं पिबेत् ।। ६० ।।

सोमराजीके बीजोका चूर्ण कर एक वार गोमूत्रमें भावित करके दे तो यह चर अचर विषका नाशक एवं साक्षात् मृतसजीवन है ।।६०।।

* शिवलिंगी—औषधी ।

पटुतैलयुतं चूर्णं मूलं सूक्ष्मं गोमयपेषितम् ।
छायाशुष्कवटी मूत्रे पानेनांगविषापहा ॥ ६१ ॥

[illegible] गोलियां बनाय छायामें सुखाले, यह गोमूत्रके साथ पान करने या [illegible] करनेसे विष दूर करती है ॥ ६१ ॥

गोमूत्रेणाम्लमूत्रैर्वा पुराणेन घृतेन वा ।
हरिद्रापानमात्रेण विषं हन्ति [illegible] ॥ ६२ ॥

गोमूत्रसे वा नरमूत्रसे या पुराने घृतसे हलदीको मिलाकर पान मात्रसे स्थावर जंगमका विष दूर होजाता है ॥ ६२ ॥

दशवर्षात्परं सर्पिः पुराणमिति कथ्यते ।
तत्पानादञ्जनाद्वापि हन्त्येव न संशयः ।
यदि सर्पविषार्तानां सर्वस्थानगतं विषम् ॥ ६३ ॥

दशवर्षके बाद घृत पुराना कहलाता है । यदि सर्पादिका विष सब शरीरमें प्राप्त हो गया हो तो भी उसको पीनेसे या आंजनेसे विष दूर होता है यह निश्चय है ॥ ६३ ॥

गोक्षीरैरजनीक्वाथं पिबेत्सर्वविषापहम् ।
हरिद्राकुष्ठमध्वाज्यं भुक्तं सर्वविषापहम् ॥ ६४ ॥

गौके दूधसे हलदीका क्वाथ पीनेसे सब विषका हरनेवाला है ॥ हलदी कूठ, शहत, घृत यह खानेसे सब विष दूर होते हैं ॥ ६४ ॥

मूलं तु श्वेतगुञ्जाया वक्त्रस्थं विषनाशनम् ।
पुष्योद्धृतं तस्य मूलं नस्येन विषनाशनम् ॥ ६५ ॥

श्वेतचौंटलीकी जड मुखमें रखनेसे विष दूर होता हे । पुष्यनक्षत्रमें उखाडी हुई इसकी जडकी नास लेनसे विषका नाश होता है ॥ ६५।

पाठाद्रवेण तन्मूलं पाने स्यात्कालकूटजित् ।
अर्कमूलेन संलिप्य दंशं विषहरं महत् ।। ६६ ।।

पाठाके साथ उसकी जड पान करनेसे कालकूटको जीतनेवाली है । आकको जडके साथ इसीका लेप करनेसे सर्पका विष दूर होता है।।६६।

रक्त चित्रेन्द्रगोपाभ्या तथा विषविनाशकम् ।
सर्प हरितवर्ण च पुच्छाग्रे पाटयेच्छिरः ।। ६७ ।।

लाल चीता, वीरबहूटी ये भी विषका नाश करनेवाली है । हरित वर्ण सर्पकी पूछ और शिर काटले इसे सुखाले ।। ६७ ।।

शुक्ल कृष्णं पृथक्कार्य्यं नस्यं सर्वविषापहम् ।
शुक्लं शुक्ले दक्षिणांगे कृष्णं कृष्णे च वामके ।
मृतसञ्जीवनं ह्येतत्कालदष्टोपि जीवति ।। ६८ ।।

शुक्ल, कृष्ण इनकी पृथक् नास लेनेसे सब प्रकारका सर्पविष दूर होजाता है । शुक्लको शुक्ल दक्षिण अंगमे और कृष्णको कृष्ण वाम अगमें न्यास करे । यह मृतसञ्जीवन है इसके प्रयोगसे कालका काटा हुआ भी जीता है ।। ६८ ।।

तिक्तकोशातकीक्वाथं मध्वाज्यसंयुतं पिबेत् ।
तत्क्षणाद्वमयेद्यस्तु विषयोगाद्विमुञ्चति ।। ६९ ।।

कुडा झिमनीलताका काढा घृत शहतके साथ पीनेसे तत्काल वमन होता है इससे विषके संयोगसे छूट जाता है ।। ६९ ।।

कुटकी जम्बुमूलं वा तक्राम्लैर्वा पिबेज्जलम् ।
तत्क्षणाद्वमते शीघ्रं विषयोगाद्विमुच्यते ।। ७० ।।

कुटकी और जामुनवृक्षकी मूल तक्र और अम्ल पदार्थोंके साथ

पीसकर जलसे पिये तो उसी समय वमन कर विषके सयोगसे छूत जाता है ॥ ७० ॥

राजवृक्षत्वचं ग्राह्यं शुक्लं कृष्णं पृथक्पृथक् ।
शुक्लवृक्षे तु शुक्लान्ता चतुर्विंशतिभिः सह ॥ ७१ ॥
मरिचैः पाननिष्ठस्य कृष्णे कृष्णत्वचं तथा ।
पीत्वा तैर्निर्विषो दष्ट. कथितं हरमेखले ॥ ७२ ॥

अमलतासवृक्षकी छाल ग्रहण करे जो शुक्ल और कृष्ण हो इनको पृथक्पृथक् ग्रहण करे । धववृक्षमें शुक्ल छालको चौबीस पूर्ण दक्षिणी मिरचोके माथ पान करे और कृष्ण मिरचोके साथ काली छालको पीनेसे निर्विष हो जाता है तो हरमेखलामे कहा है ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

कुङ्कुमालक्तकं लोध्र शिला चैवाथ रोचना ।
गुटिकालेपनाद्धन्ति विषं स्थावरजङ्गमम् ॥ ७३ ॥

कुकुम, लाख, लोध, मनशिला, गोरोचन इनकी गुटिका बनाय लेप करे तो स्थावर, जगम सब प्रकारका विष दूर हो जाता है ॥ ७३ ॥

द्वे हरिद्रे शिला ताल कुङ्कुमं कुष्ठकं* जलैः ।
गुटिका लेपमात्रेण विषं हन्ति महाद्भुतम् ॥ ७४ ॥

दोनो हलदी, मैनशिल, ताल, कुंकुम कूठ (वामोथा) इनको जलसे गुटिका बनाय लेप करनेसे स्थावर जगम विष दूर होता है ॥ ७४ ॥

पूतीकरञ्जबीजस्य मज्जान कारवेल्लजम् ।
पिष्ट्वा पिबेत्सर्सर्पिष्कं विषं हन्ति न संशयः ॥ ७५ ॥

पूतीकरजके बीजकी मींग, करेली इनको पीसकर घीके साथ पान करे तो सर्व विष अवश्य दूर होते है इसमें सन्देह नही ॥ ७५ ॥

---

* मुस्तक इति वा पाठ । अर्थ-मोथा ।

पिप्पलीं मरिचं कुष्ठं गृहधूमं मनःशिलाम् ।
तालकं सर्षपाः श्वेता गवां* पित्तेन लोडयेत् ।।७६।।
गुटिकाञ्जननस्येन पानाभ्याञ्जनलेपनात् ।
तक्षकेणापि दष्टस्य निर्विषीकुरुते क्षणात् ।।७७।।

पीपल, कालीमिर्च, कूठ, घरका धूप, मनशिल, हरताल, सफेद सरसो इनको गोपित्तके (वा गोके) दूधके साथ मिलाय इसकी गुटिका बनाय अजन और नास तथा पान वा लेप करे तो तक्षकका काटा हुआ भी क्षणमात्रमें निर्विष होजाता है ।। ७६ ।। ७७ ।।

पथ्या+ क्षौद्रं मरिचं च पत्रं हिङ्गु शिला वचा ।
जलेन गुटिका नस्येत्कालदष्टोऽपि जीवति ।। ७८ ।।

हरड, शहत, कालीमिर्च, तेजपात, हिगु, मनशिल, वच इनको जलसे पीस गुटिका कर नास लेनेसे कालका काटाहुआ भी जीवित हो जाता है ।। ७८ ।।

अश्वगन्धा मेघनादो गोमूत्रं महिषाक्षकम् ।
गृहधूमेन वा लेपः शिरःकण्ठविषं हरेत् ।। ७९ ।।

असगंध, चौलाईकी जड, गोमूत्र, भैंसका मूत्र, गृहधूम इनका लेप शिर और कठ तक प्राप्त हुए विषको दूर करता है ।। ७९ ।।

पञ्चाङ्गमश्वगन्धायाश्छागीमूत्रेण पेषयेत् ।
लेपे पाने न सन्देहो नानाविषविनाशनम् ।। ८० ।।

असगधका पंचाग छागके मूत्रसे पीसकर इसका लेप और पान करनेसे नाना प्रकारके विष नाश होजाते हैं ।। ८० ।।

शिला हिगु वचा व्योषमभयात्वक्च पत्रकम् ।
नस्ये वासुकिदष्टस्य निर्विषं शीतवारिणा ।। ८१ ।।

---

* गवा क्षीरेण लोडयेदिति पाठान्तरम् । + पत्र गलमिनि वा पाठ ।

मनशिल, हिगु, वच, सोठ, मिर्च, पीपल, हरडकी बकली, तज, तेजपात इनकी ठढे जलके सहित नास लेनेसे वासुकीका काटा हुआ भी निर्विष होजाता है ।। ८१ ।।

पुत्रजीवफलान्मज्जां गवा क्षीरेण पेषयेत् ।
लेपनाञ्जननस्येन कालदष्टोऽपि जीवति ।। ८२ ।।

जियापोतेके फलकी मींग, गौके दूधसे पीसे उसके लेप अजन और नाससे कालका काटा हुआ भी जी जाता है ।। ८२ ।।

कृष्णधत्तूरमूलस्य चूर्णं ग्राह्यं पलोन्मितम् ।
करञ्जतैलकर्षेण वटी कृत्वा तु धारयेत् ।
जम्बीरस्य रसैः पीत्वा रौद्रीविषनिवारणम् ।। ८३ ।।

काले धतूरेकी जडका एक पल चूर्ण लेकर एकरजक कर्ष के तेलसे वटी बनाय रखे उसे जम्बीरीके रससे पिये तो कठिन विष नाश होजाता है ।। ८३ ।।

लज्जालुमूलं नील्यां वा मूलं स्वच्छेन वारिणा ।
पीत्वा रौद्रीविषं हन्ति लेपाद्गुञ्जाबलां नतः ।। ८४ ।।
गृहधूमं हरिद्रे द्वे समूलं तन्दुलीयकम् ।
अपि वासुकिना दष्टाः पिबेद्दधिघृतान्वितम् ।। ८५ ।।

लज्जावन्तीकी जड अथवा नीलीकी जड स्वच्छजलसे पीस पीने से महाविष नाश होजाता है और चौंटली, खरेंटी, घरका धुआं, दोनो हलदी, चौलाईकी जड इनको दधि और घीके साथ पीनेसे वासुकीका काटा हुआभी निर्विष होजाता है ।। ८४ ।। ८५ ।।

तन्दुलीयकमूलं तु पीतं तन्दुलवारिणा ।
तक्षकेणापि दष्टस्य निर्विषं कुरुते ध्रुवम् ।। ८६ ।।

चौलाईकी जड चावलके जलके साथ पीनेसे तक्षकका काटा हुआभी क्षणमे निर्विष होजाता है ॥ ८६ ॥

कुलिकामूलनस्येन कालदष्टोऽपि जीवति ।
" ॐ आदित्यचक्षुषा दृष्टोऽहं हर विषं स्वाहा ॥ "
अनेन मन्त्रेणोक्तयोगानभिमन्त्रयेत् ॥ ८७ ॥

कोकिलावृक्ष के जडकी नास लेनेसे कालका काटाभी जीता है । 'ॐ आदित्यचक्षुषा दृष्ट दृष्टोऽह हर विष स्वाहा' इस मंत्रसे पिछले कहे योगोको अभिमत्रित करे ॥ ८७ ॥

अपराजितामूलं तु घृतेन त्वग्गत विषम् ।
पयसा रक्तगं हन्ति मांसगं कुष्ठचूर्णत ॥ ८८ ॥
अस्थिगं रजनीयुक्तं मेदोगं *लाङ्गलीयुतम् ।
मज्जगं पिप्पलीयुक्त चण्डालीमूलसंयुतम् ।
शुक्रग हन्ति लौहित्यं तस्माद्देयापराजिता ॥ ८९ ॥

अपराजिताकी जड–घृतसे युक्त पान करनेसे त्वचामे प्राप्त हुआ विष जाता रहता है, दूधके साथ पान करनेसे रक्तमें प्राप्त हुआ विष दूर होता है, कुष्ठके चूर्णके साथ पीनेसे मासमें प्राप्त हुआ विष दूर होता है, हलदीसे युक्त कर पीनेसे हड्डीमें प्राप्त हुआ विष और कलिहारी (काकिली) की जडसे मेदमे प्राप्त हुआ, पिप्पलीसे मज्जामें प्राप्त हुआ और पचगुगरियाकी जडके साथ वीर्यमें प्राप्त हुआ विष दूर होता है इस कारण अपराजिता देनी चाहिये ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

इति भावो भवेद्यस्य आत्मरूपमिदं जगत् ।
तत्सर्वैर्विषकीटाद्यैर्भक्ष्यमाणो न बाध्यते ॥ ९० ॥

---

* काकलीयुतम् इति वा पाठ ।

जो पुरुष ऐसा समझता है कि, यह जगत् आत्मस्वरूप हे उस पुरुपको किसी कीटादिका विष व्याप्त नही होता हे ॥ ९० ॥

सद्यः सर्पेण दष्टस्य वामनासिकया कृत ।
लेप कर्णमलेनापि नृमूत्रै सेचनेन वा ॥ ९१ ॥
स्तम्भते गरलं तेन नोद्ध्र्व धावति धातुषु ।
वराहकर्णिकामूलं हस्ते बद्धं विषापहम् ॥ ९२ ॥

जिस समय सर्प काटे उसी समय हाथकी अनामिका अगुलीसे बाई नासिकाके मलको दशपर लेपन करनेसे अथवा नरमूत्रसे सेचन करनेसे विष स्तभित होजाता है, धातुओमें फैलता नही। असगधकी जड हाथ में बाधनेसे विषकी हरनेवाली है ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

*शिरीषपुष्पस्वरसैः सप्ताह मरिचं सितम् ।
भावितं सर्पदष्टानां पाने नस्येऽञ्जने हितम् ॥ ९३ ॥

शिरसके फूलके स्वरसमें सात दिन कालीमिरचको रख मिश्रीके साथ लेप करनेसे या पान करनेसे आजनेसे नस्यसे हितकारक है, सर्पविष उतरता है ॥ ९३ ॥

स्वच्छन्दभैरवी विद्या कथ्यते विषनाशिनी ।
"ॐ नमो भगवती स्वच्छन्दभैरवी महाभैरवी कालकूटविषं स्फोटय २ विस्फारय २ खादय २ अवतारय २ नास्ति विषहालाहलविषकृत्रिमं विषं संयोगविषं ह्यत्युग्रविषं स्थावर विषं जङ्गमं विषं कालचंचुयायराइष्टमन्त्रस्तडदर्घायण इथयइथय ॐ कालाय महाकालय कालमर्द्दवो अमृत-

* जयन्तो । इति पाठान्तरम् ।

स्थानको तीक्ष्ण शस्त्रसे छेदन करदे, उसको स्थावर विष दे, क्योंकि काटेसे काटा हुआ हनन होता है वा विषको विष मारता है ॥ ९५ ॥

यस्तु संरोपितः सर्पो धूमं वक्त्राद्विमुञ्चति ।
तुण्डाग्रे पिशितं भुक्त्वा बहुशस्तेन दंशितः ॥ ९६ ॥
अशक्यमगदैरन्यैर्विषेणैव चिकित्सयेत् ॥ ९७ ॥

जो क्रोधित सर्प मुखसे धूम निकालता होउसके मुखके आअगे मास रखकर उसको बहुतवार कटवादे । तो और औषधियोसे अशक्य हो तो यह देकर विशेष चिकित्सा करनी ॥ ९६ ॥ ॥९७ ॥

क्षीरक्षौद्रघृतैर्युक्तं द्विगुञ्जं पाययेद्विषम् ।
विषेण लेपयेद्दंशं कालदष्टोऽपि जीवति ॥ ९८ ॥

दूध शहत घीसे युक्त दो चौंटली भर विष दे और काटे हुए पर विषका लेप करे तो कालका काटाहुआभी जीता है ॥ ९८ ॥

मृतसञ्जीवनं ख्यातं निर्गुण्डी तगरं विषम् ।
पिण्डीतगरमूलं च पुष्येणोत्पाट्य योजितम् ।
दंशे देशं मृतस्यापि दष्टो जीवति तत्क्षणात् ॥ ९९ ॥

यह मृतसजीवननामसे विख्यात है–निर्गुंडी तगर विष गंधक और तगरका मूल पुष्यनक्षत्रमें उखाडकर उसमे मिलावे । जहा सर्पने काटा हो वहा यह वस्तु लगानेसे गुण होगा ॥ ९९ ॥

सर्पदष्टो यदा वीरस्तं सर्पं दशते स्वयम् ।
मुक्तोऽसौ म्रियते सर्पःस्वयं निर्विषतां व्रजेत् ॥ १०० ॥

जब सर्प काटता है तब धीर पुरुष उस सर्पको स्वयं काटले । तबयह विषसे छूटता है, सर्प मर जाता है और यह निर्विष होजाता है। १००।

यद्वा तद्वा फलं दन्तैस्सर्पभावेन भक्षयेत् ॥ १०१ ॥

दन्तैर्वा दंशयेद्भूमि दण्डवत्पतितो नरः।
सर्पभावे न सन्देहो न तस्य क्रमते विषम् ॥ १०२ ॥

सर्पकी भावनासे किसी फलको चबाले, दंडके समान गिरकर दातोसे पृथ्वीको काटे और सर्पकी भावना करे। इसमें सन्देह नहीं, उसको विष नही चढेगा ॥ १०१ ॥ १०२ ॥

अत्यन्तविषयोगार्त्त जलमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ १०३ ॥

जो अत्यन्त विषसे व्याकुल हो उसे जलमें डालदे तो निर्विष हो ॥३०३॥

मूलं तन्दुलवारिणा पिबति यः प्रत्यङ्गिरासम्भवं
निष्पष्टं शुचि भद्रयोगदिवसे तस्याहिभीतिः-कुतः।
दर्पादेव फणी यदा दशति तं मोहान्वितं मानवं
स्थाने तत्र स एव याति नियतं चक्री यमस्याचिरात् १०४

जो श्वेतपुनर्नवाको चावलके पानीके साथ भद्रा मुहूर्त योगमें-पीता है उसको सर्पके काटनेका भय नही होता। जो मोहसे सर्प मनुष्यको दशित करता है तो वह शीघ्रही उसके बदले आपही यमराजके लोकको जाता है ॥ १०४ ॥

आषाढशुक्लपञ्चम्यां कट्यां शिरीषमूलकम्।
तन्दुलोदक पानेन सर्पदंशो न जायते।
भ्रमाद्वा दशते सर्पस्तदा सर्पो विनश्यति ॥ १०५ ॥

आषाढशुक्ल पंचमीके दिन जो अपनी कमरमें शिरसकी जड बांधता है और तन्दुलका जल पान करता है उसको सर्पदंश नहीं होता है और जो कदाचित भ्रमसे साप काट खाय तो वह सर्पही नष्ट होजाता है ॥ १०५ ॥

पुष्ये श्वेतार्कमूलं तु श्वेतवर्षाम्बुमूलकम् ॥ १०६ ॥

संगृह्य पेयं तद्दक्षे स्नात्वा तन्दुलवारिणा ।
सर्पभीतिविनाशार्थं प्रतिसंवत्सरं नरैः ॥ १०७॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड और श्वेत पुनर्नवाकी जड लाकर खान कर तन्दुलके जलके साथ प्रतिवर्ष पिये तो उसको कभी सर्पसे भय नहीं होता है ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

मसूरनिम्बपत्राभ्यां खादेन्मेषगते रवौ ।
अब्दमेकं न भीतिः स्याद्विषार्तस्य न संशयः ।
अतिरोषान्वितस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति ॥ १०८ ॥

मेषके सूर्यमें एक मसूरको दो निम्बके पत्तोंके साथ भक्षण करे तो एक वर्ष तक उसकी सर्पसे भीति नही होती है। तक्षक भी क्रोधकर उसका क्या कर सकता है ? ॥१०८ ॥

कृकलासस्य दन्तांश्च श्वेतसूत्रेण वेष्टयेत् ;
बाहौ बद्ध्वा विषं हन्ति विषं भुक्त्वा न बाध्यते ।
सर्पवृश्चिकमूषाणां मुखस्तम्भः प्रजायते ॥ १०९ ॥
"ॐ शबरी कीर्त्तय सञ्जाव सञ्जाव स्वाहा"
सहस्रजपात्सिद्धिः । अनेन मन्त्रेण हस्ते बन्धयेत् ॥११०

गिरगटके दातको श्वेतसूत्रसे लपेटकर भुजामें बाधनेसे विष दूर हो जाता है, विष खानेपर भी बाधा नही होती तथा सांप बिच्छू और चूहोंका मुख स्तभित हो जाता है। मन्त्र यह है–'ॐ शबरी कीर्तय सजाव सजाव स्वाहा' सहस्र जपसे सिद्धि होती है। इस मन्त्रसे हाथमें बाँधे ॥ १०९ ॥ ११० ॥

पातालगारुडीमूलं लम्बमानं गृहे स्थितम् ।
दृष्ट्वा · सर्पाद्या विषकीटका·

छिरहिटाकी जड घरमें लाकर रख देनेसे सर्पादि विषके कीडे उसे देखकर दूर पलायन करते हैं ।। १११ ।।

"ॐ प्लः सर्पकुलाय स्वाहा ।। वा अशेषसर्पकुलाय स्वाहा" अनेन सप्ताभिमन्त्रितां मृत्तिकां गृहमध्ये क्षिपेत्, तदा सर्पाः पलायन्ते ।।

'ॐ प्ल' सर्पकुलाय स्वाहा' इस मन्त्रसे सात वार अभिमन्त्रित कर मिट्टी घरमें डाल देनेसे सर्पादिक दूरसे पलायन कर जाते हैं ।।

इति सर्पविषनिवारणम् ।

अथ वृश्चिकविषनिवारणम्

शिरीषबीजं गोमेदं दाडिमस्य तु मूलकम् ।
अर्कक्षीरयुतं हन्ति धूपो वृश्चिकजं विषम् ।। ११२ ।।

शिरसके बीज, गोमेद, दाडिमीकी, जड आकका दूध इनकी धूप विच्छूके विषको दूर करती है ।। ११२ ।।

मयूरपारावतकुक्कुटानां ग्राह्यं पुरीषं सह भानु-
मूलैः ।। धूपौ निहन्त्याशु विषं समस्तं चतुर्विधं वृश्चिक
वृश्चिकसर्पजातम् ।। ११३ ।।

मोर, कबूतर, मुरगा इनकी बीट और आककी जड लेकर धूप देनेसे वा लेपसे चार प्रकारके बिच्छू सर्पादिके विषको दूर करती है ।।

रजनीचूर्णधूपेन विषं वृश्चिकजं हरेत् ।
वस्त्रेणाच्छाद्य गात्राणि धूपधूपं च पाययेत् ।
दंशं च धूपयेच्छीघ्रं सर्वधूपेष्वयं विधिः ।। ११४ ।।

हलदीका चूर्ण कर उसकी धूप देनेसे विच्छूका विष उतर जाता है। वस्त्रसे शरीरको ढककर धूपका धुआ प्यावे, शीघ्रतासे दशपर धूप देनी चाहिये। सब धूपोकी यही विधि है॥ ११४ ॥

तोयैर्वा नागरं नस्यं पिबेद्वा सैन्धवं घृतम्।
अर्कधत्तूरमूलं वा जलपाने विषापहम्॥ ११५ ॥

जलके साथ सोंटकी नास दे वा सैंधा और घृतको पान करे अथवा आक धतूरेकी जडको जलके साथ पान करनेसे विष दूर होता है।११५।

पुत्रजीवफलान्मज्जा पलाशोत्था* करञ्जाम्।
मज्जां तोयः प्रलेपोऽयं हन्ति वृश्चिकजं विषम्॥११६॥

जियापोतेके फलोकी मींग तथा ढाककी और करजकी मीगको जलमें पीस लेप करने से बिच्छूका विष उतरता है॥ ११६ ॥

हिङ्गु वा जललेपेन वृश्चिकोत्थं विषं हरेत्।
तिलमात्रं विष खादेल्लेपाद्वा नाशयेद्विषम्॥ ११७॥

हींगको जलसे घिस कर लेप करे तो बिच्छूका विष दूर हो जाता है अथवा तिलमात्र विष खाने वा लेपकरनेसे विष उतरता है।११७।

घृतार्कदुग्धलेपेन यष्ट्या+ वा धूपितेन वा।
बीजपूरकमूलस्य लेपाद्वापि हरीतकी॥ ११८ ॥
सिक्थकं सप्तधा भाव्यं स्नुह्यर्कपयसाऽऽतपे।
तत्तप्तं वह्निना स्पृष्टं दंशस्थाने विषं हरेत्॥ ११९ ॥

घी और आकके दूधके लेपसे वा मुलैठीकी धूप देनेसे अथवा बिजौरेकी जड हरडेके साथ पीस लेप करनेसे वा मोमको थूहर और

---

*त्याकुरजलमिति वा पाठ। + 'पथ्याभिर्धूपितेन वा' इस पाठमे हरडोसे धूपित्र अर्थजानना।

आकके दूधकी सात भावना देकर गरम कर काटे स्थानपर लगानेसे वृश्चिकका विष उतर जायगा ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

लेपो जातीगुडाभ्या वा हरिद्रालेपनेन वा ।
वृश्चिकस्य विषं हन्ति प्रत्येकं नैव संशयः ॥ १२० ॥

जाती गुड वा हलदीके लेपसे बिच्छूका विष दूर हो जाता है, इसमें सन्देह नही ॥ १२० ॥

मातुलुङ्गस्य मूलं तु रविवारे समुद्धरेत् ।
उत्तराभिमुखेनैव ह्रू (क्रूं) मन्त्रोच्चारणात्पृस्शेत् १२१

मातुलुगकीं जड रविवारके दिन लावे और उत्तरको मुख कर 'हूँ वा क्रू' मन्त्रको उच्चारण कर उसे स्पर्श करे ॥ १२१ ॥

वामाङ्गे दक्षिणे दष्टे वामे दष्टे च दक्षिणे ।
मार्जनेन विषं हन्यात्सदंशं दृष्टप्रत्ययम् ।
सप्तधा मार्जनेनैव विषं वृश्चिकजं हरेत् ॥ १२२ ॥

जो दहिने अगमे काटा हो तो वाममें और वाममें काटा हो तो दक्षिणमे उससे मार्जन करनेसे विष उतर जायगा । यह देखा हुआ है । सात वार मार्जन करनेसे बिच्छूका विष नष्ट होजाता है॥१२२॥

असगन्धीयमूलं तु मूलं श्वेतपुनर्नवा ।
रविवारे समुद्धृत्य द्वाभ्यां वृश्चिकदंशनम् ॥१२३॥
मार्जनेन विषं हन्यात्स्वदृशा ह्यनुभावितम् ।
कर्पासमूलं चवित्वा विषजित्कर्णफूत्कृते ॥ १२४ ॥

असगन्धकी जड, श्वेत पुननवाकी जड रविवारके दिन उखाडकर इन दोनोको बिच्छूने जहा काटा हो जहां मार्चन करे तो अवश्य विष उतर जाता है, यह अनुभव देखा है । कपासकी जड जबाकर कानमें फूक मारनेसे विष उतर जाता है ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

ग्राह्यं हंसपदीमूलं प्रातरादित्यवासरे ।
मुखस्थं फूत्कृतं कर्णे विषं वृश्चिकजं हरेत् ।। १२५ ।।

हँसपदीकी जडको रविवारके दिन प्रात कालमें लावे। उसे मुखमे रख कानमे फूक मारनेसे बिच्छूका विष उतर जाता हे ।। १२५ ।।

" ॐ क्षः फट्स्वाहा ।।" अनेनापोमार्जयेन्निर्विषो भवति

'ॐ क्ष फट्स्वाहा ' इस मन्त्रसे मार्जन करनेसे निर्विष होता है। और भी तीन* मन्त्र लिखे हैं। तीसरेसे करनेरकाष्ठसे जल मार्जन करे निर्विष होगा ।।

बकुलत्वचबीजं वा निष्पीडच दंशनस्थले ।
प्रलेपाद्वृश्चिकविषहरणं चाभिमंत्रितात् ।। १२६ ।।

"ॐ झं हुं ऋंड वं वं लं क्षं ए ऐ ओं औ ह् ह "
इति मन्त्रेण अभिमन्त्र्यप्रलेपयेत् ।' हा हीं मं च
ॐ इति मन्त्रेण ओलवृन्तमभिमंत्र्य तेन मार्जनात्
वृश्चिकविषनाशो भवति। अयं शिवेन भाषितो
योगो नावहेलनीयः ।।

मौलसिरीकी छाल और बीज मसलकर पहिले मत्रसे दशपर लेप करनेसे विच्छूका विष उतरता है, दूसरे मन्त्रसे जिमीकन्द और

---

१ 'आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेन च। गरुडपक्षनिपातेन भूम्या गच्छ महाविष ।। ओठ ठ ठ जः ज ज । ओ श्रीपक्षयोगिपादाज्ञा ' इति मन्त्र । इति मन्त्र । दूसरा मत्र ' मत्र '-हिमवत्युत्तरे पार्श्वे कपिलोनाम वृश्चिक । तेनाह प्रेषितो दूतो गच्छ गच्छ महाविष ।। क्ली क्ली स्वाहा । डाकिनी स्वाहा फट् इति ।। इक्कीस वार दशको छूकर छूकर कानमे जपे। अथवा 'शाखा माखा साही खौही ' अनेन गरुडमन्त्रेण वृश्चिकदष्टे करवीरकाष्ठेनापो मार्जयेन्निर्विषो भवति ।।

बैगनको अभिमन्त्रित कर मार्जन करे तो विष उतर जायगा। यह शिवका कहा अवज्ञाके योग्य नहीं है। म्यौडीके पत्तोकी नास देनेसे मोह नाश होय। ज्वर कप होय तो घृत मर्दनसे छूटे। चंदन कर्पूर पानसे वायु छूटे॥ १२६॥ इतिवृश्चिकविषनिवारण।

शतपदी (कानखजूरेका) विषनिवारणम् - कंछला

दीपकोत्सृष्टतैलं तु दंशस्थाने प्रलेपयेत्।
धूपंदत्त्वा गुग्गुलेन अर्कपत्रं च वेष्टयेत्॥ १२७॥

दियेके तेलको दशपर लगावे अथवा गूगलकी धूप दे। पीछे आकके पत्ते लपेट बाधे विष छूटे॥ १२७॥

अथ मूषकनिवारणम्

शिलातालककुष्ठं च भाव्यं निर्गुण्डिकाद्रवैः।
पानं मूषिक दष्टानां दत्तं तीव्रं विषं हरेत्॥ १२८॥

मैनशिल, हरताल, कूठ इनको निर्गुण्डीके रसमें भावित करके पान करनेसे मूसेका विष उतर जाता है॥ १२८॥

गृहगोधा समादाय पिष्ट्वा तन्दुलवारिणा।
लेपादाखुविषं हन्ति पिबेद्वा क्षीरपाचिताम्॥ १२९॥

गृह गोधा लाकर चावलके जलसे पीस लेप करनेसे चूहेका विष शान्त हो जाता है अथवा क्षीर को पाचित कर पीनेसे चूहेका विष शान्त हो जाता है॥ १२९॥

सर्षपं कुङ्कुमं तक्रं समभागं घृतं पिबेत्।
विषं मूषिकदष्टानां शममाप्नोति तत्क्षणात्॥ १३०॥

सरसो, कुकुम, मट्ठा ये समान भाग लेकर घृतके साथ पान करे तो उसी समय चूहेका विष उतर जाता है॥ १३०॥

चिञ्चाफलसमायुक्तं गृहधूमं पलार्द्धकम् ।
पुराणाज्येन सप्ताहं लिहेदाखुविषं हरेत् ।। १३१ ।।

चिंचाफलके साथ आधे पल घरके धूमको पीस सात दिन पुराने घृतके साथ चाटे तो चहेका विष उतर जाता है ।। १३१ ।।

अथ श्वानविषनिवारणम्

शिरीषस्य च बीजं वै स्नुहीक्षीरेण घर्षितम् ।
तल्लेपेन वराहोहे नश्येत्कुक्कुरजं विषम् ।। १३२ ।।

हे वरारोहे पार्वती ? शिरसके बीजको थूहरके दूधमें पीसकर लेप करनेसे कुत्तेका विष दूर हो जाता है ।। १३२ ।।

गुडं तैलार्कदुग्धं च लेपाच्छ्वानविषं हरेत् ।
पिष्ट्वापामार्गमूलं च कर्षैकं मधुना लिहेत् ।
श्वानदष्टविषं हन्ति लेपात्कुक्कुटविष्ठया ।। १३३ ।।

गुड तेल और आकका दूध इनको लेप करनेसे श्वानविष उतर जाता है अथवा चिरचिटेकी जड पीस एक कर्ष शहतके साथ चाटे वा कुक्कुटकी विष्ठाका लेप करे तो कुत्तेकाविष उतर जाता है १३३।।

उन्मत्तश्वानदंष्ट्राणां कुमारीदलसैन्धवम् ।
सुखोष्णं बन्धयेत्पिण्डं त्रिदिनान्ते सुखावहम् ।। १३४ ।।

उन्मत्त कुत्तेके विषपर घीकुंआरका पत्ता सैंधा कुछ गरम कर तीन दिन बांधनेसे विष उत्तर जाता है ।। १३४ ।।

" ॐ हड वड कुत्ता खडवड दांत कुत्तेकी बांधो
सतौडाढ आवै नलाहू पाकै न घाव कुत्तेका
विष उतरजाव वीरहनुमन्तकी दुहाई रामलछ-
मनकी दुहाई फुरोमन्त्रईश्वरोवाच ।।"

'ॐ हड' इस मन्त्रसे सात बार गुड अभिमंत्रित कर कुत्तेके काटे हुएको खानेको दे तो निर्विष हो जाता है ।। इति श्वानविषनिवारण ।।

अथ मत्स्यमेकादिविषनिवारणम्

*शिरीषफलत्वक्क्षीरं पिबेद्भेकविषापहम् ।
त्र्यूषमाज्यं मेघनादो भेकमत्स्यविषा पहम् ।। १३५ ।।

शिरसकी फली और मूल जलके साथ पीनेसे मेंडकका विष दूर होता है । सोठ, मिरच, पीपल, घृत, चौलाई इनको पीवे तो मेंड़क व मत्स्यका विष दूर होता है ।। १३५ ।।

शृङ्गीमत्स्यविषं स्वेदाघृतचिक्का सपिण्डितताम् ।।१३६।।

काकडासिगीको घृतसे घोटकर पीवे तो शृङ्गी मछलीका विष दूर होता है ।। १३६ ।।

गृहगोधाविषं +हन्यात्काश्मीरीफलनस्यतः ।
पिबेन्मधुसितायुक्तं गृहगोधाविषं हरेत् ।। १३७ ।।

गम्भारीके फलकी नास देनेसे घरकी गोयका विष शान्त होजाता है अथवा इसीकोही शहत और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे घरकी गोयका विष दूर करता है ।। १३७ ।।

अथ व्याघ्रविषनिवारणम्

वृकव्याघ्रशृगालाख्यभल्लूकद्विपवाजिनाम् ।
रुधिरं स्त्रावयेद्दंशाद्दहेल्लोहशलाकया ।। १३८ ।।

भेडिया, व्याघ्र, चीता, गीदड, रीछ, गेंडा इनके काटनेपर वहाका रुधिर निकाले वा उस काटे स्थानपर लोहशलाकासे जलावे ।।१३८।।

* सिंडीफलस्नुहीक्षीर इति वा पाठ ।

+ दक्षिणात्य कश्मीरिनाम हरकिडीरको कहते हैं ।

लेपात्सर्पविषं हन्ति मूलं श्वेतपुनर्नवा ।
किमत्र बहुनोक्तेन तत्क्षणाद्विषनाशनम् ।। १३९ ।।

श्वेतपुनर्नवाकी जडका लेप करनेसे सर्पका विष दूर होता है। बहुत कहनेसे क्या है, उसी समय विष नाश होता है ।। १३९ ।।

विडङ्गस्य च पानेन व्याघ्रव्यालविषं हरेत् ।
धत्तूरपत्रतोयेन चूर्णं त्रिकटुसम्भवम् ।। १४० ।।
उदरस्थं विषं हन्ति व्याघ्रव्यालसमुद्भवम् ।
करञ्जतैललेपेन ज्वालां व्याघ्रनखाद्भवाम् ।। १४१ ।।

वायविडगके पानसे व्याघ्र और ब्यालका विष दूर होजाता है। धतूरेके पत्तोका अर्क और त्रिकुटा इनकोपानकरनेसे व्याघ्रविष, व्यालविष पेट में प्राप्त होगया हो तो भी दूर होता है। करजके तैलको लेप करनेसे व्याघ्रके नखोकी ज्वाला शात हो जाती है ।१४०।१४१।

गोजिह्वामूलिकां पिष्ट्वा जलेन मधुना सह ।
लेपो हि सर्वजन्तूनां नखतुण्डविषं हरेत् ।। १४२ ।।

गोजिह्वालताकी मूलिका शहत और जलके साथ पीस लेप करनेसे सब जन्तुओके नख और तुडका विष दूर होजाता है ।। १४२ ।।

तथा निम्बवचा चैव शमी वृक्षत्वचं तथा ।
उष्णोदकेन लेपः स्यान्नखतुण्डविषापहः ।। १४३ ।।
तथा दारुहरिद्राया लेपो दन्तविषापहः ।। १४४ ।।

गोजिह्वा, गवेधुका, नीम, वच, शमीकी छाल इनका लेप गरम जलसे करे तो सब जीवोके नख और मुख लगनेका विष दूर होजाता है। इसी प्रकार देवदारु हलदीका लेप करनेसे दांतोका विष दूर होजाता है ।। १४३ ।। १४४ ।।

अथ कीटविषनिवारणम्

आज्येन तन्दुलीमूलं तुलसीमूलिकापि वा।
तन्दुलोदकपानेन कीटकोत्थं विषं हरेत् ॥ ॥ १४५ ॥

घृतके साथ चौलाईकी जड और तुलसीकी जड चावलके जलके साथ पान करनेसे कीटविष नष्ट होजाता है ॥ १४५ ॥

लाङ्गल्याः कटुतुम्ब्या वा देवदारु निशापि वा।
मूलं बीजं काञ्जिकेन लेपः कीटविषापहः ॥ १४६ ॥

कलिहारी, कडवी तूम्बी, देवदारु, हलदी इनकी मूल बीजकांजीके साथ लेप करनेसे कीटविष दूर होजाता है ॥ १४६ ॥

तिलं च सर्षपं कुष्ठं बीजं करञ्जसम्भवम्।
उद्वर्त्तनात्प्रलेपाद्वा सर्वकीटविकारजित् ॥ १४७ ॥

तिल, सरसो, कूठ, करजके बीज इनके उद्वर्तन वा लेपसेसब प्रकारके कीडोका विष शात होजाता है ॥ १४७ ॥

करञ्जबीजं सिद्धार्थं तिलैर्लेपो विषापहः।
एरण्डतैललेपो वा सर्वकीटविषापहः ॥ १४८ ॥

करजके बीज, सरसो, तिल इनका लेप करनेसे विष दूर होता है अथवा एरण्डके तैलका लेप करनेसे सब कीटोके विषको दूर करता है ॥ १४८ ॥

निशा दारुनिशा चैव मञ्जिष्ठानागकेशरम्।
एषां लेपो निहन्त्याशु विषं लूतादिसम्भवम् ॥ १४९ ॥

हलदी, देवदारु, मँजीठ, नागकेशर इनका लेपकरनेसे लूता (मकडी) आदिका विष दूर होता है ॥ १४९ । इति कीटविषनिवारण

अथ सर्वजन्तूना विषनिवारणम्

पुत्रजीवफलान्मज्जां शीततोयेन पेषिताम्।
लेपनाञ्जननस्यैस्तु पानाद्वा निष्कमात्रतः ॥ १५० ॥
व्याघ्रमूषकगोनासवृश्चिकादिविषं हरेत् ।
दुस्सहं यद्विषं चाशु विस्फोटं च विनाशयेत् ॥ १५१ ॥

जियापोताके फलकी मीगी शीतल जलके साथ पीस लेप करनेसे तथा अजन करनेसे वा एक निष्कमात्र पान करनेसे व्याघ्र, मूषक गोनास (सर्प) वृश्चिकादिका विष दूर होजाताहै । यह दुस्सह विषसे उत्पन्न हुए विस्फोटक रोगकाभी नाश करता है ॥१५० ॥ १५१ ॥

वन्ध्याकर्कोटकीकन्दं जलैः पिष्ट्वा प्रलेपयेत् ।
सर्पमषकमार्ज्जारवृश्चिकादिविषं हरेत् ॥ १५२ ॥

वन्ध्या कर्कोटकी (वनककोडा) का जड जलसे पीस लेप करनेसे ॥ सर्प, चूहा, विलाव, वृश्चिकादिका विष दूर होजाता है ॥१५२॥

अथोपविपादिनिवारणम्

स्नुह्यर्कोन्मत्तकश्चैव करवीरश्च लाङ्गली ।
वज्री जैपालकः कृष्णकुष्ठं गुञ्जा तथैव च ॥ १५३ ॥
महाकालश्च इत्याद्याः स्मृतास्तूपविषा बुधैः ।
ससिन्धुं काञ्जिकं पीत्वा समस्तोपविषं हरेत् ॥ १५४ ॥

स्नुही (थूहर), अक, धतूरा, कनेर लांगली (कलिहारी), हडसघारी (दूसरी थूहर), जलमालगोटे, सुरमा, कूठ, चौंटली, महाकाललता ये वस्तु उपविष है । सेंधा कांजीके साथ पान करनेसे सम्पूर्ण उपविषोकी शान्ति होती है ॥ १५३ ॥ १५४ ॥

करवीरविषं हन्ति घृतेनापि हरीतकी ।
निम्बपत्रं घृतं हन्ति घृतेन मधुपानतः ।। १५५ ।।

घृत और हरडका सेवन करनेसे कनेरका विष शान्त हो जाता है। नीमके पत्तेका घृतसे अथवा घृत और मधुपानसे दूर होजाता है ।।१५५

अथ कृत्रिमविपनिवारणम्

अनेक विषजीवानां चूर्णं ह्युपविषैर्युतम् ।
मिश्रितं नखकेशाद्यैर्लोहाद्यैश्चूर्णसञ्चयम् ।। १५६ ।।
कृत्रिमं च विषं ख्यातं पक्षान्मासाद्विबाध्यते ।।
आलस्यं कुरुते जाड्यं कासं श्वासं बलक्षयम् ।।
रक्तस्रावो ज्वरः शोषः पीतचक्षुश्च लक्षयेत् ।। १५७ ।।

अनेक विषैले जीवोका चूर्ण अर्थात् उनके नख केशादि मिलाकर तथा लोहादि चूर्णके सहित सेवन करनेसे कृत्रिमविष नष्ट होता है। इसका पखवारे तथा महीनेके आगे भी उपाय न करे तो आलस्यके कारण, कास, श्वास होकर बलका क्षय होता है रक्तस्राव ज्वर शोष नेत्रोमें पीलापन होजाता है ।। १५६ ।। १५७ ।।

मृतं सूतं मृतं स्वर्णं शुद्धं वै हेममाक्षिकम् ।
त्रयाणां गन्धकं तुल्यं मर्द्यं कन्याद्रवैर्दिनम् ।। १५८ ।।
तच्च शुष्कं सिताक्षौमैर्मासमेकं लिहेत्सदा ।
वह्निमूलयुतं क्षीरं मनुष्यगरनाशनम् ।। १५९ ।।

शोधा पारा, सोना, शोधी सोनामाखी इन तीनोकी तुल्य गंधक घी-कुवारके रसमें एक दिन खरल करे उसको सुखाय मिश्री और शहदके साथ एक महीनेतक सदाचाटे या पीपलामूल दूधमें औटाय खाय तो मनुष्यका विष नाश होजाता है ।। १५८ ।। १५९ ।।

पुत्रजीवफलान्मज्जां निष्कमात्रं गवां पयः ।
पीत्वा चोग्रगरं हन्यान्नानाकृत्रिमयोगजम् ॥ १६० ॥

जियापोताके फलकी मींग एक निष्क और गौका दूध पान करनेसे तीव्र कृत्रिम और योगजविष दूर होजाता है ॥ १६० ॥

शठीपुष्करमूलस्य पानं मद्यविषापहम् ॥ १६१ ॥

कचूर, पुहकरमूल इनका पान करनेसे अत्यन्त मद्यका विष दूर होता है ॥ १६१ ॥

तत्पिबेत्क्षीरपानेन* गरतृष्णाज्वरापहम् ।
क्षीरं मुद्गयुतं पथ्यं शाल्यन्नं परमं हितम् ॥ १६२ ॥

पुहकर मूलको क्षीरके साथ पान करनेसे विषकी तृषा और ज्वर दूर होता है वारवार दूध मूग शालिअन्न यह इसपर पथ्य और परम हित है ॥ १६२ ॥

गृहधूम जलैः पिष्ट्वा तन्दुलीमूलतुल्यकम् ।
कल्काच्चतुर्गुणं चाज्यं घृतात्क्षीरं चतुर्गुणम् ।
घृतशेषं पचेत्सर्व पिबेत्सर्वगरापहम् ॥ १६३ ॥

घरका धुआ जलके साथ पीसकर तथा चौलाईकी जडकी मूलका कल्क कर कल्कसे चौगुना घृत, उसमे चोगुना दूध डाल पकावे, जब रस जल जाय घृतमात्र शेष रह जाय तब उतारलेवे । इसके खानेसे सर्व प्रकारके विष दूर हो जाते है ॥ १६३ ॥

समूलपत्रां सर्पाक्षी जलेन क्वथितां पिबेत् ।
नरमूत्रैश्चैव पिष्टां पिबेत्सर्वगरापहम् ॥ १६४ ॥

सर्पाक्षी (नाकुली कद) के मूल और पत्तोका लेप करनेसे व

---

* तत्पिबेच्छीतलेपाने । इस पाठमे वा शीतल जलके साथ पीवे ऐसा अर्थ करना ।

क्वाथ कर पान करनेसे अथवा नरमूत्रके साथ पीसकर पान करनेसे सर्व विष दूर होता है। १६४॥

एलातालीशपत्राणि त्र्यूषणं जीरकं समम्।
चूर्णाद्द्विधा सिता योज्या भुक्त्वा गरहरं भवेत् ॥१६५॥

इलायची, तालीसपत्र, सोठ, मिरच, पीपल, जीरा ये समान भाग ले चूर्णकर चूर्णसे दूनी मिश्री मिलाय खानेसे विष दूर होता ॥१६५॥

पयसा रजनीकुष्ठं मध्वाज्यं गृहधूमकम्॥
तन्दुलीमूलसंयुक्तं कर्षं गरहरं लिहेत्॥ १६६ ॥

दूधके साथ हलदी, कूठ, शहद, घृत, गृहका धूम, चौलाईकी जड इनको कर्षमात्र सेवन करनेसे विष दूर होता है॥ १६६॥

अथ योगजविषनिवारणम्

तैलकर्पूरजंबीरसंयोगाद्योगजं विषम्।
समांशेन तु मध्वाज्यमेवं संयोग्जं विषम्॥ १६७॥
नारिकेलाम्बु कर्पूरं संयोगाद्योगजं विषम्।
मरीचतुम्बिकामूलं योगजं विषमेव तत्॥ १६८॥

तेल कपूर और जम्बीरीके योगसे योगज विष होता है, बराबर शहद् और घीसे योगज विष होता है, नारियलका जल कपूरके योगसे योगजविष होता है और कालीमिर्च कडवी तूबीकी जडके योगसे योगज विष होता है, विषम योगसे उत्पन्न विष होता है॥ १६७॥ १६८॥

पुत्रं जीवफलेनैव रजनीमारनालकैः।
देवदालीनृमूत्रैर्वा सर्पाक्षी चेन्द्रवारुणी॥ १६९॥
गिरिकर्णीयमूलं वा प्रत्येकं विषजिद्भवेत्।
मध्वाज्यं*काकजङ्घाया द्रवैः पिष्ट्वा विषं हरेत्॥१७०।

* काकमाच्या वा इति पाठ।

गिरिकर्णी नागपुष्पी मुण्डीपानाद्विषं हरेत् ।। १७१ ।।

इन योगज विषोको नीचे लिखी हुई विधिसे दूर करे–जियापोताके फलको लेकर जलके साथ पीसकर लेनेसे तथा हलदी काजी और देवदाली मनुष्यके मूत्रके साथ, सर्पाक्षी इन्द्रवारणी अथवा गिरिकर्णी (अपराजिता) की जड यह प्रत्येक विषकी जीतनेवाली हे ओर मधु घृतके साथ काकमाचीका रस पीनेसे विष दूर होता हे तथा अपराजिता नागकेशर और मुण्डीके पानसे योगज विष दूर हो जाता है ।। १६९ –१७१ ।। इति योगजविषनिवारण ।

अथ भल्लातकविषनिवारणम्

भल्लाततैलसंपर्कात्स्फोटः सञ्जायते नृणाम् ।
नवनीतं तिल पिष्ट्वा तल्लेपेन तु तं जयेत् ।। १७२ ।।

भिलावेतेलके सम्पर्कसे मनुष्यके शरीरमें फोडे होजाते हैं, मक्खनके साथ तिलोको पीस लगानेसे आराम हो जाता है ।। १७२ ।।

निम्बीपत्रप्रलेपाद्वा तं जयेत्तत्पदेन वा ।
भल्लातकस्य मूलस्य मृत्तिकाभिः प्रलेपनात् ।
तत्सञ्जातविकारांश्च नाशयत्येव निश्चितम् ।। १७३।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने विषनिवारणनाम
चतुर्दशोपदेश ।।१४।।

नीमके पत्तोका लेप करनेसे आराम होता है अथवा भिलावेकी जडका विष मृत्तिका लेपनसे जाता है । यह मृत्तिका उससे उत्पन्न हुए विकारोको अवश्य नाश करती है ।। १७३ ।।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकाया विषनिवारण नाम चतुर्दशोपदेश ।। १४ ।।

पञ्चदशोपदेशः

अथ द्वात्रिंशद्यक्षिणीसाधनम्

तत्र साधकनियमा

सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात्समाहितः ।
भगिनीमातृपुत्रीस्त्रीरूपं तुल्यं यथोप्सितम् ।। १ ।।

यक्षिणी का साधन करे तो सावधान होकर करना चाहिये । इसमें सावधानी होनेसे सिद्धि होती हे । अपनी इच्छानुसार किसीको भगिनी किसी को माता किसीको स्त्री तथा किसीको पुत्रीकी प्रकारसे सम्बोधन देकर ध्यान करे ।। १ ।।

भोज्यं निरामिष चान्नं वर्ज्यं ताबूलभक्षणम् ।
उपविश्याजिनादौ च प्रात स्नात्वा न कं स्पृशेत् ।।२।।
नित्यकृत्यं तु कृत्वा च स्थाने निर्जनके जपेत् ।
यावत्प्रत्यक्षता यान्ति यक्षिण्यो वाञ्छितप्रदाः ।। ३ ।।
जपेल्लक्षद्वयं मन्त्रं श्मशाने निर्भयो मुनिः ।
दशांशं गुग्गुलुं साज्यं हुत्वा तुष्यति यक्षिणी ।। ४ ।।

इसमे निरामिव अन्न खाना चाहिये, ताम्बूलका भक्षण न करे, अजिम (मृगछाला) पर बैठे प्रात गाल स्नान कर किसीको स्पर्श न करें और अपनी नित्यक्रिया करके निर्जन स्थानमें जप करे जवतक प्रत्यक्ष होकर मनवाछित न दे तवतक वरावर जप करता रहे । निर्भय और मौन होकर श्मशानमें नित्य दो लक्ष मत्रका जप करे और इसका घृत और गुगलका दशाश हवन करे तो यक्षिणी प्रसन्न होती है ।। यह नियम सब यक्षिणी साधनमें जाने ।।२-४ ।।

विभ्रमासाधनम् १

विभ्रमासाधनं वक्ष्ये प्रथमं शृणु वल्लभे ।
विभ्रमायां प्रसन्नायां वाञ्छितार्थान्प्रयच्छति ।
पञ्चाशन्मानुषाणां च ददाति भोजनं सदा ।

मन्त्रः–"ॐ ह्रीं वां विभ्रमरूपे एहि २ भगवति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा" (१)

हे वल्लभे पार्वती ? उन यक्षिणियोमें विभ्रमानामक यक्षिणीका साधन पहिले कहता हूं सुनो, विभ्रमा यक्षिणी प्रसन्न होजावे तो सब कामनाओ को देती है और भी५० मनुष्योको सदा भोजन देती है। मंत्र–'ॐ ह्रीं वा विभ्रमरूपे एहि २ भगवति स्वाहा' 'ॐ ह्रीं विभ्रम-रूपे विभ्रम कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा, (१)

रतिप्रियासाधनम् २

शंखलिप्तपटे देवी गौरवर्णां धृतोत्पलाम् ।
सर्वालङ्कारिणीं दिव्यां समालिख्यार्चयेत्ततः ।। ५ ।।

शंखलिप्त पटपर देवीको इस प्रकार लिखे कि, कमल धारण किये गौरवर्ण, सम्पूर्ण अलंकारयुक्त, दिव्यमूर्त्ति है ऐसी बनाकरअर्चनकरे ५

जातीपुष्पैस्सोपचारैः सहस्रैकं ततो जपेत् ।
त्रिसंध्यं सप्तरात्रं तु ततो रात्रिषु निर्जपेत् ।। ६ ।।
अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ।
पञ्चविंशतिदीनारान् प्रत्यहं तोषिता सती ।। ७ ।।

मंत्रः–"ॐ ह्रीं कनकनक मैथुनप्रिये रतिप्रिये स्वाहा" २

षोडशोपचारसे चमेलीके फूलोसे पूजन करे और एक सहस्र मंत्र जपे, सात दिनतक तीनो संध्याओंमें इसी प्रकार जप करे। फिर

रात्रिमें भी इसी प्रकार जपे तो आधी रातके समय आकर देवी प्रत्यक्ष दर्शन देती है और नित्यप्रति पच्चीस दीनारो (अशर्फियो) को संतुष्ट हो प्रदान करती है ।।६।।७ ।। मंत्र–"ॐ ह्रीं कनकनकमैथुन-प्रिये रतिप्रिये स्वाहा" वा ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ।। (२)

सुरसुन्दरीसाधनम् ३

एकलिङ्गं* महादेवं त्रिसंध्यं पूजयेत्सदा ।
धूपं दत्त्वा जपेन्मन्त्रं त्रिसंध्यं त्रिसहस्रकम् ।। ८ ।।
मासमेकं ततो याति यक्षिणी× सुरसुन्दरी ।
दत्त्वार्घ्यं प्रणमेन्मन्त्री ब्रूते सात्वं किमिच्छति ।। ९ ।।
देवि दारिद्र्यदग्धोस्मि मे तन्नाशकरी भव ।
ततो ददाति सा तुष्टा वित्तायुश्चिरजीवितम् ।। १० ।।
मन्त्रः–"ॐ ह्रीं आगच्छ २ सुरसुन्दरि स्वाहा" (३)

एकलिंग महादेवका तीनो सध्याओमें सदा पूजन करे और धूप देकर तीनो संध्याओमें तीन सहस्र मन्त्र जपे ऐसा एक महीने जप करनेसे सुरसुन्दरी यक्षिणी आकर प्राप्त होती है। उसे अर्घ्य देकर प्रणाम करे। तब वह कहने लगती है कि, तू क्या इच्छा करता है? जब देवी ऐसे पूछे तबक है कि, हे देवि ! मै दारिद्र्यादिसे जल रहा हूं मेरे दारिद्र्यका नाश करनेवाली हो, ऐसी प्रार्थना करे। तब वह प्रसन्न होकर वित्त, आयु और चिरकालतक जीवन प्रदान करती है। ।।८–१० ।। मत्र–'ॐ ह्रीं आगच्छ २ सुरसुन्दरि स्वाहा'(३)

अनुरागिणीसाधनम् ४

कुङ्कुमेन समालिख्य भूर्जपत्रे सुलक्षणाम् ।
प्रतिपत्तिथिमारभ्य पूजां कृत्वा जपेत्ततः ।। ११ ।।

---

* कर्पूरागमिति वा पाठः । × प्रत्यक्षम् इति वा पाठ ।

भोजपत्रपर कुंकुमसे सुंदर लक्षणोंसे युक्त अनुरागिणी देवीको लिखे। शुक्ल प्रतिपदासे पूजा आरम्भ कर जप करे ॥ ११ ॥

त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रं तु मासान्ते पूजयेन्निशि।
संजपेदर्द्धरात्रं तु समागत्य प्रयच्छति।
दीनाराणां सहस्रैकं ददाति*परितोषिना ॥१२॥
"ॐ ह्रीं ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा" (४)

तीनो सन्ध्याओंमें तीन सहस्र जप करे एक महीनेके उपरान्त रात्रिमें पूजन करे जप करनेसे अर्धरात्रिमें आकर मनोरथ पूर्ण करती है प्रसन्न होकर एक सहस्र दीनार प्रतिदिन देती है ॥१२॥ मन्त्र–"ॐ ह्रीं ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा (४)

सामुद्रीसाधनम् ५

ध्यात्वा जपेत्ततो रात्रौ सागरस्य तटे शुचिः।
लक्षजापे कृते सिद्धिर्दत्ते सागरचेटकः।
रत्नत्रयं तथा भोज्यं सौम्यो मन्त्री सुखी भवेत् ॥ १३॥
"ॐभगवन् समुद्र देहि रत्नानि जलवासो ह्री नमोऽस्तु ते स्वाहा" (५)

ॐ भगवन् समुद्र देहि रत्नानि जलवासो ह्री नमोस्तु ते स्वाहा इस मन्त्रको ध्यान करके पवित्र होकर सागरके किनारे एक लाख १००००० जपे तो सिद्धि होनेसे सागर चेटक तीन रत्न बडे मोलके देता है भोजन देता है सौम्य रहनेसे मन्त्री सुखी भी होता है ॥१३॥

वटयक्षिणीसाधनम् ६

त्रिपथे तु वटस्थाने रात्रौ मन्त्री जपेत्स्वयम्।

---

* प्रत्यहमिति वा पाठ।

लक्षत्रयं ततः सिद्धा देवी च वटयक्षिणी ।।१४।।

वस्त्रालङकारकं दिव्यं रससिद्धिरसायनम् ।

दिव्याञ्जनं तु सा तुष्टा साधकाय प्रयच्छति ।। १५ ।।

मंत्रः "–ॐह्री वटवासिनि यक्षकुलपताके वटयक्षिणि एह्येहिस्वाहा" (६)

पवित्र होकर त्रिमार्गमें वटके नीचे रात्रिमें अकेला हो इस मन्त्रको तीन लक्ष जप करनेसे सिद्ध होकर देवी वटयक्षिणी वस्त्र दिव्यअलकार रससिद्धि और रसायन दिव्य अंजन प्रसन्न होकर साधकके निमित्त देती है ।। १४।।१५।। मत्र–'ह्री वटवासिनि यक्षकुलपताके वट-यक्षिणि एह्येहि स्वाहा' (६)

वटयक्षिणीसाधनम् ७

ॐ वटवृक्षं समारुह्य लक्षमेकं जपेन्मनुम् ।

ततस्सप्ताभिमन्त्रेण काञ्जिकैः क्षालयेन्मुखम् ।। १६।।

मासत्रयं जपेद्रात्रौ वरं यच्छति यक्षिणी ।

रसं रसायनं दिव्यं क्षुद्रकर्म ह्यनेकधा ।

सिद्धानि सर्वकार्याणि नान्यथा शङकरोऽब्रवीत् ।।१७।।

मंत्रः–"ॐ नमश्चन्द्राद्यावाकर्णकारण क्लीं स्वाहा ।

ॐनमो भगवते रुद्राय चण्डवेगिने स्वाहा" (७)

रातमे वटके वृक्षपर चढकर एक लक्ष मन्त्र जप करे । जप करने उपरात सात बार अभिमन्त्रित कर काजीसे मुख धोडाले । रात्रिमें तीनमहीने जपे तो यक्षिणी वर देती है और इसको दिव्य रसायन,अनेक क्षुद्रकर्म भोज्य पदार्थभी और सब कर्म सिद्ध हो जाते है, इसमें अन्यथा

नही ऐसा शंकरने कहा है ।। १६ ।। ।।१७।। 'ॐ नमश्चन्द्राद्यासाकर्ण-कारण क्लीं स्वाहा ।। वा ॐ नमो भगवते रुद्राय चण्डवेगिने स्वाहा' ७

अथ विशालासाधनम् ८

चिञ्चावृक्षतले लक्षं मन्त्रमावर्त्तयेच्छुचिः ।
शतपुष्पोद्भवैः पुष्पैः सघृतैर्होममाचरेत् ।। १८ ।।
विशाला च ततस्तुष्टा रसं दिव्यं रसायनम् ।
प्रसन्ना यच्छति ततः सर्वसिद्धिर्भविष्यति ।। १९ ।।

मंत्र.–"ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा । अथवा
ॐ ऐं विशाले क्रीं ह्लीं ब्रीं क्ली क्री स्वाहा" (८)

इमली वृक्षके नीचे बैठकर पवित्र होकर मन्त्रको जपे, इसीके वा सौंफके पत्र पुष्पोसे घृतके साथ हवन करे । तव प्रसन्न होकर विशाला दिव्य रस रसायन देती है उससे सब सिद्धि होजायगी ।।१८।।१९।। मत्रत्र–ॐ ऐं विशाले त्रां त्री क्लीं स्वाहा"(८)

अथ महाभयासाधनम् ९

नरास्थिनिर्मिता माला गले पाणौ च कर्णयोः ।
धारयेज्जपमालां च तादृशीं तु श्मशानतः ।। २० ।।
लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं साधको निर्भयश्शुचिः ।
ततो महाभया यक्षी प्रयच्छति रसायनम् ।। २१ ।।
तस्य भक्षणमात्रेण सर्वरत्नानि चालयेत् ।
वलीपलितनिर्मुक्तश्चिरं जीवी भवेन्नरः ।। २२ ।।

"ॐ ह्रीं त्रां महाभये क्लीं स्वाहा ।। वा ॐ क्रीं महा-भये क्लीं स्वाहा" (९)

मनुष्यकी अस्थिसे बनी मालाको गले हाथ और कर्णमें धारणकर पवित्र हो निर्भय हृदयसे अकेला श्मशानमें वास करे, नरास्थि मालाको हाथमें धारण कर एक लक्ष मन्त्र जपे । तब यह महाभया यक्षिणी प्रसन्न होकर साधकको सिद्धिदायक रसायन देती है । उसके भक्षणमात्रसे सब रत्नोको यथास्थानसे चलायमान करनेमें समर्थ हो जाता है और वलीपलितसे निर्मुक्त होकर मनुष्य चिरंजीवी होता है २०-२२
'ॐ ह्रीं त्रां महाभये क्लीं स्वाहा '(९)

चन्द्रिकासाधनम् १०

शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावत्संदृश्यते विधुः ।
प्रतिपत्पूर्वपूर्णान्तं नवलक्षमिदं जपेत् ।। २३ ।।
अमृतं चन्द्रिकादत्तं पीत्वा जीवोऽमरो भवेत् ।। ३४ ।।
" ॐ ह्री चन्द्रिके हं सः क्री क्लीं स्वाहा " (१०)

शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे जप आरंभ करे तबतक जप करे जबतक आकाशमें चन्द्रमा दीखता रहे इस प्रकार प्रतिपदासे पूर्णातक नौ लक्ष इसको जप करे तब चन्द्रिका देवी प्रसन्न हो साधकको अमृत देती है उसके दिये अमृतको पान करनेसे अमर होजाता है ।।२३।।२४।
'ॐ ह्रीं चन्द्रिके हस· क्री क्ली स्वाहा' (१०)

अथ रक्तकबलासाधनम् ११

जप्यं मासत्रयं रक्तकम्बला सा प्रसीदति ।
मृतकोत्थापनं कुर्य्यात्प्रतिमां चालयेत्तथा ।। २५ ।।
" ॐ ह्री रक्तकम्बले महादेवि मृतकमुत्थापय
प्रतिमां चालय पर्वतान्कम्पय २ नीलय नीलय विहस
२ हूंहूं " (११)

रक्तकम्बलाका मन्त्र तीन महीने जपने से लालकम्बला प्रसन्न होती है, इससे मृतके उत्थापन और प्रतिमाचालन कर सकता है।।२५।
'ॐ ह्रीं रक्तलम्बले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान्कम्पय २ नीलय २ विहस २ हूँ हूँ' (११)

अथ विद्युज्जिह्वासाधनम् १२

अष्टोत्तरशतं जप्त्वा यत्किञ्चित्स्वादुभोजनम् ।
तद्बलिर्दीयते तस्यै वटाधो मासमेकतः ।। २६ ।।
ततो देवी समागत्य हस्ताद्गृह्णाति भोजनम् ।
तत्रैव सा वरं दत्ते नित्यं सान्निध्यकारकम् ।। २७ ।।
अतीतानागतं कर्म स्वस्थास्वस्थं ब्रवीति सा ।
प्रतिमाः पर्वतान्सर्वांश्चालयत्येव तत्क्षणात् ।। २८ ।।
*ॐकारमुखे विद्युज्जिह्वे।ॐ ह्रूं चेटके जयजय
स्वाहा (१२)

उक्त मन्त्रको एकसौ आठ वार जप कर जो कुछ अपने निमित्त स्वादु भोजन है उसकी बलि वटके नीचे उस यक्षिणीके निमित्त दे । ऐसा एक मासपर्यन्त करे । तब देवी आकर अपने हाथ से उसका भोजन ग्रहण करती है और नित्य समीप रहती है । अतीत अनागत कर्मको स्वस्थ होकर वह कह देती है, जिससे प्रतिमा और सब पर्वतोंकोभी चलायमान कर सकता है।।२६–२८।। 'ॐ कार मुखे०स्वाहा'×मन्त्र है

कर्णपिशाचिनीसाधनम् १३

पूर्वमेवायुतं जप्त्वा कृष्ण कन्याभिमन्त्रितः ।
हस्तपादप्रलेपेन सुप्ते वक्ति शुभाशुभम् ।

* ॐ समुखे विद्युज्जिह्वेओहू वेटकेश + स्वाहा इति वा पाठ ।

त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम् ॥ २९ ॥
"ॐ ह्रीं सः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चण्ड-
वेगिनि वद वद स्वाहा अथवा ॐ क्रीं
सनामशक्तिभगवति कर्णपिशाचिनि चण्डरोपिणि
वदवद स्वाहा" (१३)

उक्तमन्त्रको पहिले दशसहस्र जप करके कृष्णकन्यासे अभिमंत्रित कर हाथ पावको लेप करके सोनेसे शुभ अशुभ त्रिलोकमें जो वार्ता है उसका फलाफल कहती है ॥२९॥ 'ॐह्रीं सः' यह मंत्र है (१३)

चिचिपिशाचिनीसाधनम् १४

रोचनैः कुंकुमैः क्षीरैः पद्मं चाष्टदलं लिखेत् ।
नीरन्ध्रे भूर्जपत्रे च मायाबीजं दले दले ॥ ३० ॥
लिखित्वा धारयेन्मूर्ध्नि इमं* मन्त्रं ततो जपेत् ॥
पूर्वमेवायुतं जप्त्वा चैवं कुर्यात्प्रयत्नतः ।
अतीतानागतं सर्वं स्वप्ने वदति देवता ॥ ३१ ॥
"ॐ ह्रीं चिचिपिशाचिनि स्वाहा" (१४)

गोरोचन, कुंकुम दूधसे आठ दलका कमल छिद्ररहित भोजपत्रमें लिखे, मायाबीज प्रत्येक दलपर लिखकर शिरपर धारणकर १०००० इस मंत्रको पहिलेही जपे । सात दिन पर्यन्त इस कार्यको करे तो सोतेमें देवी भूत, भविष्य, वर्तमान तीनो कालकी बात कहती है ॥३०॥३१॥ "ॐ ह्रीं चिञ्चिपिशाचिनी स्वाहा" (१४)

---

* सप्ताह्व वा इतिपाठ ।

कर्णयक्षिणीसाधनम् १५

अलाबुमूलिकां पुष्ये तथा सर्पाक्षिमूलिकाम् ।
ग्राह्याभिमन्त्रितां यत्नाद्रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ।
मूर्ध्नि बद्ध्वा तथासुप्तं वदत्येव शुभाशुभम् ।।३२।।
"ॐ नमो भगवत्यै रुद्राण्यै कर्णयक्षिण्यै स्वाहा"।।१५।।

पुष्यनक्षत्रमें कडवी तुबीकी मूल तथा सर्पाक्षीकी मूलको ग्रहण कर लाल सूत्रसे वेष्टन कर इसे शिरपर रखनेसे सोतेमें देवी सम्पूर्ण शुभाशुभ कथन करती है ।। ३२ ।। 'ॐ नमो भगवत्यै–' (१५)

स्वप्नावतीसाधनम् १६

मृद्गोमयैर्लिपेद्भूमिं कुशांस्तत्र समास्तरेत् ।
पञ्चोपचारनैवेद्यैर्देवदेवीं प्रपूजयेत् ।। ३३ ।।
अक्षसूत्रं करे धृत्वा पूर्वमेवायुतं जपेत् ।
सूर्यकोटिसमां ध्यात्वा रात्रौ पाणितले जपेत् ।
अर्द्धरात्रे गते देवी वार्त्तां वक्ति शुभाशुभाम् ।। ३४ ।।
"ॐ ह्रीं आगच्छ २ चामुण्डे श्रीं स्वाहा" (१६)

मिट्टी गोबरसे पृथ्वीको लीपकर कुशोंको बिछावै और पंचोपचार नैवेद्यसे देवदेवीका पूजन करे । अक्षसूत्र (रुद्राक्षमाला) हाथमें रखकर पहले दशसहस्र जपे । कोटिसूर्यके समान प्रकाशमान देवीका ध्यान करे । आधीरातके समय सोने पर देवी शुभ अशुभ कहती है ।।३३।३४ 'ॐ ह्रीं आगच्छ २ चामुण्डे श्रीं स्वाहा' (१६)

विचित्रासाधनम् १७

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं वटवृक्षतले शुचिः ।
बन्धूककुसुमैः पश्चान्मध्वाज्यैः क्षीरमिश्रितैः ।।३५ ।।

दत्ते धूपे दशांशेन जुहुयात्पूर्णयान्वितम् ।
ततः सिद्धा भवेद्देवी विचित्रा वाञ्छितप्रदा ।। ३६ ।।
"ॐ विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धिकुरु२ स्वाहा" (१७)

मंत्री पवित्र होकर वट वृक्षके नीचे एक लक्ष मंत्र जपे । पीछे बंधूक (दुपहरियाके) फूल, मधु, घृत, दूध मिलाकर दशांश धूप दे, कुडम हवन करे । तब विचित्रादेवी सिद्ध होकर विचित्र जयकी देनेवाली होती है ।।३५ ।।३६ ।। 'ॐ विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धि कुरु २ स्वाहा यह मंत्र है ।। (१७)

अथ हसीसाधनम् १८

प्रविश्य नगरस्यान्तं लक्षसंख्यं जपेच्छुचिः ।
पद्मपत्रैः कृतो होमो घृतोपेतैर्दशांशतः ।। ३७ ।।
प्रयच्छत्यञ्जनं हंसी येन पश्यति भूनिधिम् ।
सुखेन तं च गृह्णति न विघ्नैः परिभूयते ।। ३८ ।।
" ॐ हंसि हंसिजने ह्रीं क्लीं स्वाहा "
ॐ नमो हंसिनि हंसगते मां स्वाहा इति वा । (१८)

नगरके अन्तमें जाकर एक लक्ष मन्त्र जपे, कमलपत्रोयुक्त घृतसे दशांश हवन करे ऐसा करनेसे हँसी अंजन देती है, जिससे पृथ्वीका खजाना दीखता है और वह सुखपूर्वक ग्रहण कर ऐश्वर्यसे पूर्ण हो जाता है विघ्न नहीं होते ।।३७।। ।।३८।। 'ॐ हंसिहंसिजने ह्रीं क्लीं स्वाहा वा''ॐ नमो हंसिनि हंसगते मां स्वाहा' यह मंत्र है (१८)

मदनासाधनम् १९

लक्ष संख्यं जपेन्मत्रं राजद्वारे शुचिः स्थिरः ।
सक्षीरैर्मालतीपुष्पैर्घृतहोमो दशांशतः ।। ३९ ।।

मदना यक्षिणी सिद्धिं गुटिकां संप्रयच्छति ।
तया मुखस्थयाऽदृश्यश्चिरस्थायी भवेन्नरः ।। ४० ।।
"ॐ* ऐं मदने मदनविद्रावणे अनङ्गसङ्गमं देहि २ क्रीं क्रीं स्वाहा" (१९)

पवित्र हो स्थिरतासे राजद्वारमें एक लक्ष मन्त्र जपे । दूध, मालतीके फूल और घृतसे दशांश हवन करे तो मदनायक्षिणी सिद्ध होकर गुटिका प्रदान करती है, उसको मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य हो और चिरस्थायी होता है ।। ३९ ।। ४० ।। मन्त्र–'ॐ ऐं मदने मदन-विद्रावणे अनंगसङ्गमदेहिदेहि क्रींक्रीं स्वाहा' (१९)

कालकर्णीसाधनम् २०

लक्षसंख्यं जपेन्मन्त्रं पलाशतरुजेन्धनैः ।
मधुनाज्यैः कृते होमे कालकर्णी प्रसीदति ।। ४१ ।।
सैन्यधारास्त्रबन्धं च गतिस्तम्भकरी भवेत् ।
सततं तां स्मरेन्मंत्री विविधैश्वर्यकारिणीम् ।। ४२ ।।
"ॐ ह्री क्लीं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा" (२०)

उक्त मंत्र एक लक्ष ढाकके पेड़के नीचे बैठकर जपे और शहदसे होम करे तो कालकर्णी प्रसन्न होजाती है, प्रसन्न होकर सैन्यधारा अस्त्रबंध और गतिको स्तंभ करती है । मन्त्र जाननेवाला अनेक ऐश्वर्य करनेवाली भगवतीको निरन्तर स्मरण करे ।। ४१ ।। ४२ ।। 'ॐ ह्री क्लीं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा' यह जपका मत्र है (२०)

लक्ष्मीयक्षिणीसाधनम् २१

स्वगृहे संस्थितो रक्तैः करवीरप्रसूनकैः ।
लक्षमावर्त्तयेन्मन्त्रं होमं कुर्याद्दशांशतः ।। ४३ ।।

---

*ॐऐं मदनेमदनविडम्बिनिआलिंगय २ सङ्गमदेहि २ स्वाहा इति वा पाठः ।

होमे कृते भवेत्सिद्धिर्लक्ष्मीनाम्नी च यक्षिणी ।
रसं रसायनं दिव्यं विधानं च प्रयच्छति ।। ४४ ।।
"ॐ ऐं लक्ष्मीं श्री कमलधारिणी कलहंसी स्वाहा" (२१)

अपने घरमें स्थित हो लाल कनेरके फूलोसे अर्चन कर और लक्ष मत्र जप करके उसके दशाश हवन करनेसे लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्ध होजाती है तथा दिव्य रसायन और विधानको प्रदान करती है ।।४३।। ४४ ।। 'ॐ ऐं लक्ष्मी श्रीं कमलधारिणीं कलहसी स्वाहा' यह मत्र है (२१)

शोभनासाधनम् २२

रक्तमाल्याम्बरो मन्त्रं चतुर्दशिदिने जपेत् ।
ततः सिद्धा भवेद्देवी शोभना भोगदायिनी ।।४५ ।।
"ॐ अशोक पल्लवाकारकरतले शोभनीं श्रीं क्षः स्वाहा" (२२) (

लाल माला और लाल वस्त्र धारण कर यह मन्त्र चतुर्दशीके दिन जपे तब शोभना भोगदायिनी देवी प्रसन्न होजाती है ।। ४५ ।। 'ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभनीं श्रीं क्ष· स्वाहा' (२२) (

नटीसाधनम् २३

पुण्याशोकतलं गत्वा चन्दनेन सुमण्डलम् ।
कृत्वा देवीं समभ्यर्च्य धूपं दत्त्वा सहस्रकम् ।। ४६ ।।
मन्त्रमावर्तयेन्मासं नक्तभोजी नरस्तदा ।
रात्रौ पूजां शुभांकृत्वा जपेन्मत्रं निशार्द्धके ।। ४७ ।।
नटी देवी समागत्य निधानं रसमञ्जनम् ।
ददाति मन्त्रिणेमन्त्रं दिव्ययोगं च निश्चितम्।। ४८ ।।
"ॐ ह्लीं क्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा" (२३)

पवित्र हो अशोकवृक्षके नीचे जाकर चन्दनसे सुन्दर मण्डल कर देवीको पूज धूप दे सहस्र मन्त्र सदा जपे नक्त भोजन करे, रात्रिमें अच्छी प्रकार पूजा प्राप्त होकर निधियुक्त रस और अजन मन्त्रीको देती है तथा दिव्य योग तथा मन्त्र देती है यह निश्चय है ।। ४६-४८।। 'ॐ ह्रीं क्रों यटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा ' यह मन्त्र है (२३)

पद्मिनीसाधनम् २४

स्रक्सुगन्धिगृहस्थाने चन्दनेन सुमण्डलम् ।
कृत्वा हस्तप्रमाणेन पूजयेत्तत्र पद्मिनीम् ।। ४९ ।।
धूपं सगुग्गुलुं दत्त्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रकम् ।
मासमेकं ततः पूजां कृत्वा रात्रौ पुनर्ज्जपेत् ।। ५०।।
अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ।
निधानं दिव्ययोगं* च तस्मान्मन्त्री सुखी भवेत्।।५१।।
"ॐह्रीं (वा क्रो) पद्मिनी स्वाहा" (२४)

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने यक्षिणीसाधन
नाम पचदशोपदेश ।। १५ ।।

माला सुगन्ध द्रव्य और चन्दनसे अपने स्थानमें सुंदर मंडल एक हाथके प्रमाणमें बनाय उसमें पद्मिनीका पूजन करे गुग्गुलुसहित धूप देकर एक सहस्र मंत्र जपै, इस प्रकार एक महीने पूजाकर रात्रिमें फिर जप करे आधीरात बीतनेपर देवी आकर निधि और दिव्य योग देती है उससे मंत्र जपनेवाला सुखी होता है ।। ४९-५१ ।।मंत्र यह है कि-'ॐ ह्रीं पद्मिनी स्वाहा' (२४)

आगे तत्रान्तरमे कहे हुए पुरसुन्दरी आदि आठ यक्षिणियो का साधन केवल भाषामेही लिखा जाता है,उनका मूल तन्त्रान्तरोमे ही देख ले।

---

* 'बल च इति वत्पाठ ।

पुरसुन्दरी, मनोहरी, कलावती, कामेश्वरी, रक्तकरी, पद्मिनी, नटी, अनुरागिणी ये आठ यक्षिणी हैं।

पुरसुन्दरीका साधन २५

" ॐ आगच्छ पुरसुन्दरि स्वाहा " इस मन्त्रको पढ घर जाय गूगलकी धूप देकर तीनो सध्याओमें उपरोक्त मन्त्र सहस्रवार जपे तो एक महीनेमें आती है, उस समय चन्दन जलसे अर्घ्य दे। इसके तीन भाव हैं–माता, भगिनी, पत्नी जो माताका भाव करे तो वस्त्र द्रव्य रस रसायन देती है, भगिनी भावमें भी पूर्ववत् वस्त्र देती है, यदि भार्या हो तो महा ऐश्वर्य आश्चर्य करती है। इन सबको पूजन करे. इसमें दूसरे के साथ शयन तथा मैथुन न करे. यदि करे तो नाश होता है।

मनोहरीसाधन २६

" ॐ आगच्छ मनोहरि स्वाहा " इस मंत्रको पढ नदीतटमें मंडल कर अगर धूप देकर महीने भर पूजन करे, सहस्र जप करे, जप आवे तब चन्द न अर्घ्य दे. फूल वाटिकामें एकचित्तसे अर्चन करे, आधीरातमें अवश्य आती है. आतेही कहे कि, सौभाग्य दे। तब सौ अशरफी प्रतिदिन देती है.

कलावतीसाधन २७

" ॐ ह्रीं कलावति मैथुनप्रिये आगच्छ स्वाहा" वृक्षके नीचे मद्य मांस देकर सुराकी प्रार्थना सहित सात दिनतक जपे। आधी रातको सर्वालंकारसे भूषित परिवार सहित जब आती है तब भार्या होती है। बारह जनोको वस्त्रालंकार भोजन है। आठ फल दिनमें देती है.

कामेश्वरीसाधन २८

"ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा" भोजनपत्रपर गोरोचनसे इसकी प्रतिमा लिखे। देवीका पूजन करे। शय्यामें चढकर एकमास सहस्रमंत्र प्रतिदिन जपे। मासान्तमें देवीकी पूजा करे। घृतमधुयुक्त प्रतिरात्र दे, मौन हो जप करे आधीरातको अवश्य आती है। आनेपर इच्छा करे तो भार्या होती। शयनमें दिव्य अलकारोको छोडकर चलीजाती है. इसमें परस्त्रीसे मैथुन न करे

रतिकरीसाधन २९

"ॐ ह्रीं आगच्छ रतिकरि स्वाहा" अय पटमें चित्ररूपसे लिखकर कनक वस्त्रलंकारसे भूषितकर कमल हाथमें लिये कुमारीको पूजन करे, गूगल धूपदे, आठ सहस्र जप करे, मासान्तपर्यंत पूजाकर घृत धूपदे, तव आधीरातको आकर प्राप्त होती है स्त्री भावसे कामना करे तो भार्या होती है। साधकको सकुटुम्ब रक्षा करती है दिव्यकामनावाले भोजनको देती है

पक्षिनीसाधन ३०

"ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनी स्वाहा" अपने घरमें मडल कर गूगुल धूप देकर एक सहस्र जप करै। पूर्णमासीको विधिपूर्वक पूजाकर जपे तो आधीरातको आती है, कामना करनेसे भार्या होती है। सब कामार्थ सिद्धि करती है। रस रसायन सिद्धिद्रव्य देती है

नटीसाधन ३१

"ॐ ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा" अशोक वृक्षके नीचे जाय मास उपहार गन्ध, पुष्प धूप दीपादि बलि देकर सहस्र जप करे तो एक महीनेमें अवश्य आती है, आनेपर यदि माता हो तो कामिक भोजन देती है, वस्त्र सुवर्ण देती है, भगिनी हो तो सो योजनसे लक्ष्मी ला

ती है, वस्त्र अलंकार भोजन रसायन देती है, जो स्त्री हो तो दिव्य रसायन आठ दिन स्थित हो देती है,

अनुरागिणीसाधन ३२

"ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा" कुंकुमसे यह मंत्र भूर्जपत्र पर लिखे और प्रतिदिन गधादिसे पूजन कर सहस्त्र जप करे। तीनो कालमें एक महीना पूजा कर घृत दीप दे, सम्पूर्ण रात्रि जप करे एक महीने में अवश्य आती है, और सब पूर्ववत् करे।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-भाषाटीकायायक्षिणीसाधन नाम पचदशोपदेश ।। १५ ।।

श्री

षोडशोपदेशः

अथ वाजीकरणादिप्रयोगसिद्धये

रसशोधनम्

पलान्न्यूनं न कर्त्तव्यं रससंस्कारमुत्तमम् ।
अघोरेणैव मन्त्रेण रसराजस्य पूजनम् ।। १ ।।
ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य ।
सर्वत. सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।। २ ।।

एक पलमे न्यून पारेका सस्कार न करे और अघोरमत्रसेही रस राजका पूजन करे ।। १ ।। ॐ अघोरइत्यादि मत्र हे ।। २ ।।

कुमार्य्याश्चनिशाचूर्णैर्दिनं सूतं विमर्दयेत् ।
पातयेत्पातनायन्त्रे सम्यक्शुद्धो भवेद्रसः ।। ३ ।।

घीकुवार और हलदीके चूर्णसे एक दिन पारेकी खरल करे और पातनायत्रसे उसको पातन करे तो भलीप्रकारसे शुद्ध होता है।।३।।

अथवा हिङगुलात्सूतं ग्राहयेत्तन्निगद्यते ।
पारिभद्ररसैः पेष्यं हिगुलं याममात्रकम् ।। ४ ।।

अथवा हिगुल (सिगरफ) मेसे पारा निकाले, उसके निकालनेकी विधि कहते हैं–निम्बके रसमें एक पहर हिगुलकी डलीको खरल करे४

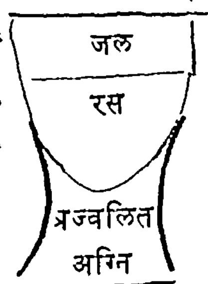
जम्बीराणां द्रवैर्वाथ पात्यं पाताल्यन्त्रके ।
तं सूत योजयेद्योगे सप्तकञ्चुकवर्जितम् ।। ५ ।।

अथवा जम्बीरी नीबूके रसमें खरल कर पातालयत्रसे पातन करे तो सात कंचलीसे वर्जित हुए उसे पारेको कार्यमें प्रयुक्त करे ।। ५ ।।

सूतस्य दशमांशं तु गन्धं दत्त्वा विमर्दयेत् ।
जम्बीरोत्थद्रवैर्यामं पात्यं पातालयन्त्रके ।। ६ ।।
पुनर्मर्द्य पुनः पात्यं सप्तवारं विशुद्धये ।
इत्येवं शुद्धयः ख्यातास्तासामेकां तु कारयेत् ।। ७ ।।
उपर्यापो ह्यधो वह्निर्मध्ये च रसपिष्टिका ।
क्रमादग्निर्विदध्यात्तत्पातालं* यन्त्रमुच्यते ।। ८ ।।

पारेसे दशमांश गंधक मिलाकर खरल करे तथा जंबीरीके रसमें एक पहर मर्दन कर पातालयंत्रमें पातन करे इस प्रकार फिर मर्दन कर फिर पातन करे सात बा विशुद्धिके निमित्त कृत्य करे इस प्रकार पारेकी शुद्धि कही है इनमेंसे कोई एक करे । ऊपर जल, नीचे अग्नि, बीचमें रस-की पोटली रक्खे, क्रमसे अग्नि दे इसका नाम पातालयन्त्र है ।।६–८ ।।इति रसशोधन ।।

पातालयन्त्रम्



अथ रसमारणम्

उक्तं सर्वस्य सूतस्य तप्त खल्वे विमर्दनम् ।
अजाशकृत्तुषाग्नि तु भूगर्ते त्रितयं क्षिपेत् ।।९।।
तस्योपरि स्थितं खल्वं तप्तखल्वमिदं भवेत् ।
खल्वं लोहमयं शस्तं पाषाणोष्णमथापि वा ।। १० ।।

* पातनायन्त्रमुच्यते इति पाठान्तरम् ।

अजीर्णं चाप्यबीजं वा यः सूतं घातयेन्नरः ।
ब्रह्महा सुदुराचारो मन्त्रद्रोही महेश्वरि ।। ११ ।।

हे पार्वती ॐसब प्रकार पारेकी तप्त खल्वमें मर्दन करना श्रेष्ठ कहा है। बकरीकी मेंगनसे, तुषाग्निसे तीन दिन पृथ्वीके गर्तमें पाचित करे, उसके ऊपर लोहेका खरल रक्खे यह तप्तखल्व कहलाता है, अच्छा खरल लोहेका है, वह न हो तो पाषाणकाभी उत्तर है। विना जीर्ण किये अर्थात् अबीज और अजीर्ण पारा जो मनुष्य घात (जारण) करता है, वह ब्रह्महत्या करनेवाला, दुराचारी और महाद्रोही है ।। ९-११ ।।

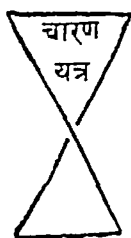
रामठं पञ्चलवणं तथा क्षारचतुष्टयम् ।
त्रिकटुं शृङ्गवेरं च मातुलुङ्गं रसाप्लुतम् ।। १२ ।।
पिण्डमध्ये रसं दत्त्वा स्वेदयेत्सप्तवासरान् ।
सारनाले तु मृद्भाण्डे ग्रासार्थी जायते ध्रुवम् ।। १३ ।।
एतदेव रसं यत्नाज्जम्बीरद्रवसंयुतम् ।
दिनैकं धारयेद्घर्मे मृत्पात्रे वा मृतो भवेत् ।। १४ ।।
ग्रासं तत्रैव दातव्यं स्वर्णशुद्धिः शनैः शनैः ।
चतुष्षष्टयादि तुल्यांशं देय जीर्णञ्च चालयेत् ।।१५।।

हींग और पाचो नोन, चारो खार, सोठ, मिरच, पीपल, अदरख, मातुलुग, (बीजपूर-बिजौरे) के रससे पीस इसको एक अगुलके गाढे स्वच्छ कपडेमें लेप चर उसके मध्यमें पारेकी रखकर सात दिन स्वेदन (औटावे) संस्कार करे और फिर मट्टीके बरतनमें रख काजीके साथ ग्रास स्वीकार करता है इस प्रकारसे यत्नपूर्वक उस रसको जम्बीरीके रसमें खरल कर एक दिन धूपमें सुखाय फिर मट्टीके बरतनमें सुवर्णके

शुद्धग्रास शनै २ देने चाहिये और चौसठवा भाग शुद्ध सुवर्णका दे १२-१५

चतुष्षष्टचंशकं चादौ द्वात्रिंशत्तदनन्तरम् ।
पुनर्विंशतिम ग्राह्यं द्विरष्टद्वादशं क्रमात् ।। १६ ।।
अष्टमाशं चतुर्थं वाप्यर्द्धं चैव समांशकम् ।
प्रतिग्रासे तप्तखल्वे दिनमम्लेन मर्दयेत् ।। १७ ।।
तं क्षिपेच्चारणायंत्रे जम्बीरनीरसयुतम् ।
तद्यन्त्रं धारयेद्घर्मे दिनं स्याज्जारितो रसः ।। १८ ।।
तं छागक्षीरगोमूत्रस्नुक्क्षीराम्लै प्रलेपिते ।
दृढवस्त्रे बहिर्बद्ध्वा मृद्घटे स्वेदयेद्बुधः ।। १९ ।।

पहले चोसठ, पीछे बत्तीस, फिर सोलह, फिर बारह इस क्रमसेग्रास देकर खरल करे । फिर आठवा अश, चौथा अश, आधा अथवा, बराबर दे प्रतिग्रासको तप्त खरलमें अम्लवर्गके साथ एक दिन खर करे । जबीरीके रसके सहित उसको चारणायन्त्रमे डाले और उसको धूपमे रक्खे तो एक दिनमें रस बनें फिर उसको छागके दूध, गोमूत्र, थहरके दूध, अम्लवर्गसे लिप्त करके वस्त्रमें दृढ बाधकर मृत्तिकाके घटमें स्वेदन करे ।। १६–१८

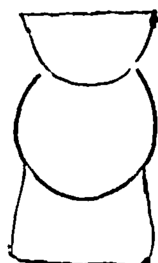


काञ्जिकाक्षारमूत्रैर्वा दोलायन्त्रे त्वहर्निशम् ।
तमुद्धतं रसं देवि खल्वे संशोधयेत्क्षणात् ।। २० ।।
संमर्द्य पूर्ववत्खल्वे यन्त्रे लिप्तपुटे पुन· ।
क्रमेणानेन देवेशि त्रिभिर्ग्रासैः प्रजीर्यते ।। २१ ।।

हे देवि ! काजी क्षार और गोमूत्रके साथ दोलायत्रमें एक दिन-रात स्थित करे फिर उसमें से रसको निकालकर खरलमें शुद्ध

करे । फिर पूर्ववत् खरल करे और वस्त्र आदिमे लपेटकर पुट दे हे देवि ? इस क्रमसे तीन ग्रासो से जीर्ण हो जाता है।।२०।।२१।।

दोलायंत्र ।

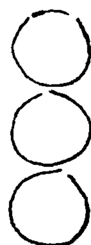


यावत्तेन यदा तस्मात्तावत्तेन विमर्दयेत् ।
प्रतिग्रासे तप्तखल्वे यथाशक्त्या च
चारयेत् ।। २२ ।।

जब तक ठीक न हो बराबर मर्दन करता रहे और प्रतिग्रासमे तप्त खरलमें यथाशक्ति जलावे ।। २२।।

तं जीर्णं मारयेत्सूतं मारणं कथ्यते द्रवैं ।
तं हि सर्वरसोपेतं पिष्ट्वा खल्वे विमर्दयेत् ।। २३ ।।
सूत गन्धकसंयुक्तं दिनान्ते तन्निरोधयेत् ।
पुटयेद्भूधरे यन्त्रे दिनान्ते तत्समुद्धरेत् ।२४ ।।

भूधरयन्त्र ।



उस जीर्ण हुए पारेको मारे । अब द्रवद्वारा उसका मारण कहते हैं उसको रसोके साथ खरलमे डालकर घोटे, पारे और गन्धककी कजली कर पुट देकर भूधरयन्त्रमेंपचानेसे पारा मर जायगा ।।२३–२४।।

कृष्णधत्तूरतैले सूतो मर्द्यो द्वियामकम् ।
दिनैकं तत्पचेद्यन्त्रे कच्छपाख्ये न संशयः ।।२५।।
मृतः सूतो भवेत्सद्यः सर्वरोगेषु योजयेत् ।
रसगन्धं समं मर्द्य दिनं निर्गुण्डिकाद्रवैः ।
चक्रमूषान्विते ध्माते भस्म सूतं भवेन्मलम् ।। २६ ।

एक पैसे भर सिद्ध पारेमें काले धतूरेका रस डालकर कच्छपयंत्र। एक दिन घोटे, एक दिन नियामक औषधी (वन्दालका रस, आकका दूध, कबूतरकी वीठ, गीली हसपदीका रस इन्द्रायनके फलका रस) इनमें घोटे, पीछे गोला बनाय कच्छपयत्रमें रख आच दे तो नि सन्देह पारा मरे। इससे सबीज निर्बीज पारा मरता है इसे सब रोगमें दे। पारे गन्धकको एक दिन निर्गुण्डीके रसमें मर्दन कर मूषामें रखकर फूकनेसे पारेकी भस्म हो जायगी ॥२५॥ २६ ॥

टङ्कण मधु* लाक्षा च कुर्णागुञ्जायुतो रसः ॥२७॥
मर्दयेद्भृङ्गजद्रावैर्दिनैकं चान्धयेत्पुनः।
ध्मातो भस्मत्वमाप्नोति शुद्धः स्फटिकसन्निभः ॥ २८॥

सुहागा, शहद, लाख, पीपल, चौंटली, भागरा इनके, रसमें पारेको खरल कर एक दिन अधरा करे फिर फूंक देनेसे शुद्ध स्फटिकके समान भस्म होती है ॥ २७ ॥ २८ ॥

द्विपलं सूतराजस्य पलैकं गन्धकस्य च।
मर्दयेन्मार्कवद्रावैर्दिनमेकं निरन्तरम् ॥ २९ ॥
रुद्ध्वा तद्भूधरे यन्त्रे दिनैकं मारयेत्पुटात्।
इत्येवं जारिते सूते मारणं परिकीर्तितम् ॥ ३० ॥

दो पल पारा, दो पल गन्धक इनको निरन्तर एक दिन भागरेके रसमें मर्दन करे और भूधरयत्रमें उसको एक दिन पुटित कर मारे इस प्रकार जारित पारेका मारण कहा है ॥ २९ ॥ ३० ॥

---

*मधुलाक्षा वा ऊर्णोति पाठे-ऊर्णा ऊन अर्थ है।

अथवा ग्रासयोग्यं तु निहन्यात्सान्वितं रसम् ।
सूतकं घनसत्त्वं च मर्दयेत्कंगुणीद्रवैः ।।३१ ।।

अथवा ग्रासयोग्य बलिष्ठ रसको (पारेको) मालकांगनीके रससे निरन्तर मर्दन करे ।। ३१ ।।

दिनैकं गोलकं तं च शोषयेदातपे खरे ।
गर्भयंत्रगतं पच्यात् त्रिदिनं हि तुषाग्निना ।। ३२ ।।

इस प्रकार एक दिन मर्दन कर उसका गोला बनाय तीक्ष्ण धूपमें सुखावे फिर गर्भयन्त्रमें रखकर तीन दिन तुष अग्निसे पचावे ।।३२।।

करीषाग्नौ दिवारात्रौ पचेत्तद्भस्मतां नयेत् ।
सूतं स्वर्णं व्योम शङ्खं समं रम्भाद्रवैर्दिनम् ।। ३३।।
मर्दयेद्बीजसंयुक्तं चर्षिचारणयन्त्रके ।
सर्वकैर्मूलिकाद्रावादनमेकं तु मर्दयेत् ।। ३४ ।।

एक दिनरात करीष (उपले गोबर सूखा) अग्निमें पचावे तो पारेकी भस्म हो जायगी । पारा, सुवर्ण, अभ्रक, केलेका रस और बीज इनके साथ मर्दन करे तथा चारणयन्त्रमें पारेको मूलिका रसोके साथ एक दिन मर्दन करे ।। ३३ ।। ३४ ।।

गर्भयन्त्रगतं पाच्यं म्रियते पूर्ववद्रसः ।
ब्रह्मदण्डी मेघनादो चित्रकं कटुतुम्बिका ।। ३५ ।।
वज्रवल्ली बला कन्या त्रिकुटार्के स्नुहीपयः ।
कन्दोरम्भा च निर्गुण्डी लज्जा जाती जयन्तिका।।३६।।
विष्णुक्रान्ता हस्तिशुण्डी दद्रुघ्नो भृङ्गराट् पटुः ।
गुडूची लाङ्गली नीरकणा काली महोरगा ।। ३७ ।।
काकबाची च दन्ती च एताः पारदमारकाः ।

व्यस्ताः समस्ता वा सर्वा देया ह्यष्टदशाधिकाः।
उक्तस्थाने प्रयोक्तव्या रसराजस्य सिद्धये ।। ३८ ।।

गर्भयन्त्रमें रखकर पारेको पचावे तो वह पूर्ववत् मर जाता है। ब्रह्मदडी, चौलाई, चीता, कडवी तुम्बी, वज्रवल्ली, खरैंटी, घीकुवार, सोठ, मिर्च, पीपल, आक, थूहरका दूध, रंभाकन्द, निर्गुण्डी, लाजा (लज्जवन्ती जाती, जयन्ती, विष्णुक्रान्ता, हाथीशुण्डी, पमाड, भागरा, पित्तपापडा, गिलोय, कलिहारी, सुगन्धवाला, नीली, कटसरैया, पीपल, सर्पाक्षी, वा तगर, काकमाची और दन्ती यह सब समस्त वा पृथक् २ पारेकी मारनेवाली अठारह मूलिका है। रसराजकी सिद्धिके निमित्त निजकथित स्थानमें प्रयोग करनी चाहिये ३५-३८

अथ गर्भयन्त्रप्रकार

चतुरङगुलदीर्घा तु मृन्मयी दृढमूषिका ।
त्र्यङगुलीमध्यवितारे वर्तुलं कारयेन्मुखम् ।। ३९ ।।
लोनस्य विंशतिर्भागा एको भागस्तु गुग्गुलोः ।
सुश्लक्ष्णं पेषयित्वा तु तोयं दत्त्वा पुनः पुनः ।। ४० ।।
मुखालेपं ततः कुर्याद्रसं तत्र विनिक्षिपेत् ।
अन्धयित्वा पुटं देयं गर्भयन्त्रमिदं भवेत् ।।४१ ।।

चार अगुल दीर्घ और तीन अंगुल चौडी मिट्टीकी दृढ मूषा बनावे । उसका गोल मुख करे, लोनके बीस भाग, गूगल एक भाग महीन पीसकर मूषापर दृढ लेप करे, लवणादि मिट्टीमें प्रथम पारेकी पिट्ठी रक्खे । पीछे मुख बन्द कर लेप करे । पीछे जमीनमें गढा खोदकर तुषाग्निसे मन्द मन्द स्वेदन करे तो एक दिनरात्रि वा तीन रात्रिमें पारा भस्म होवे । यह गर्भयन्त्रविधान है ।।३९-४१ ।। इति रसमारण ।।

अथ हिंगुलशुद्धि

मेषीक्षीराम्लवर्गाभ्यां दरदं धर्मभावितम् ।
सप्तवारं प्रयत्नेन शुद्धिमायाति निश्चितम् ॥ ४२ ॥

हिंगुल (सिंगरफ) को भेडके दूध और अम्लवर्गकी सात भावना घर्ममें देनेसे हिंगुल शुद्ध होता है ॥ ४२॥इति हिंगुलशुद्धिः ॥

अथ गन्धकशुद्धिः

शुक्लपक्षसमच्छायो नवनीतसमप्रभः ।
मसृणः कठिनः स्निग्धः श्रेष्ठो गन्धक उच्यते ॥ ४३ ॥

शुक्ल पक्षके समान छायावान्, मक्खनके समान कान्तिमान्, एकसाकठिन और चिकना गंन्धक श्रेष्ठ होता है । ४३ ॥

घृतं भाण्डे पयः क्षिप्त्वा मुखं वस्त्रेण वेष्टयेत् ।
तत्पूर्वं चूर्णितं गन्धं क्षिप्त्वा तस्योपरि न्यसेत् ॥ ४४ ॥
कपालमेकमुत्तानं गन्धकस्यावियोगि तत् ।
दुग्धभाण्डं न्यस्य भूमौ देयमूर्ध्वपुटं लघु ॥ ४५ ॥

घी डालकर और दूध डालकर उस हाडीका मुख वस्त्रसे ढकदे । आमलासार गन्धक १६ तोले पीसकर घीमें गलावे । गलनेपर वस्त्रपर डालदे, गंधक उस वस्त्रसे टपककर दूधमें जम जायगी ॥ ४४॥ ४५॥

ततः क्षीरे द्रुतं गन्धं शुद्धयोगेषु योजयेत् ।
गन्धं घृते विपक्तव्यं यावत्तैलनिभं भवेत् ॥ ४६ ॥
वस्त्रेणान्तरितं कृत्वा चालयेस्त्रिफलाम्भसि ।
एवं गन्धकशुद्धिः स्यात्ततो योगेषु योजयेत् ॥ ४७॥

तव उस दूधसे निकली हुई शुद्ध गंधकको कार्यमें लावे । गन्धकको घृतमें तबतक पकावे जबतक कि, वह तेलके समान होजाय । उसे

फिर वस्त्रमें छानकर त्रिफलेके जलमें डाल दे। इस प्रकारसे गन्धक शुद्ध कर योगोमें लगाना उचित है ॥४६॥४७॥ इति गंधकशुद्धिः॥

अथ अभ्रक शुद्धि

कृष्णः पीतः श्वेतरक्तो योज्यो योगरसायने।
पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम् ॥ ४८ ॥

काला, पीला, श्वेत, लाल अभ्रक, रसायनके योग्य है. पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र ये चार भेद काले अभ्रकके है ॥ ४८ ॥

पिनाकाद्यास्त्रयो वर्ज्या वज्रं यत्नात्समाहरेत्।
मुञ्चत्यग्नौ च निक्षिप्तः पिनाको दलसञ्चयम् ॥ ४९॥

इनमें पिनाकादि तीनोको त्याग करके वज्र अभ्रकको यत्नसे ग्रहण करे, पिनाक अभ्रक अग्निमें डालनेसे दलसंचय अर्थात् पत्तोको छोडता है ॥ ४९ ॥

अज्ञानाद्भक्षणात्तस्य महादुःखप्रदो भवेत्।
दर्दुरोऽग्नौ विनिक्षिप्तः कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ ५० ॥

इसको अज्ञानसे खानेसे महादुःखदायक कुष्ठ होता है, दर्दुर अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेडककीसी ध्वनि करता है ॥ ५० ॥

तच्च भक्षणमात्रेण नानारोगान् प्रयच्छति।
नागश्चाग्निस्थितः सद्यः फूत्कारं च विमुञ्चति ॥५१॥

उसके खानेसे अनेक रोग होते है. नाग अभ्रक अग्निमें डालनेसे सर्पवत् फूत्कार करता है ॥ ५१ ॥

स च देहगतो नित्यं व्याधि कुर्याद्भगन्दरम्।
वज्राभ्रकं तु वह्नौ च न किञ्चिद्विक्रियां व्रजेत् ॥ ५२ ॥

उसको खानेसे भगदर रोग होता है. वज्राभ्रक अग्निमें रखनेसे कुछ भी विकारको प्राप्त नही होता है ॥ ५२ ॥

तस्माद्वज्राभ्रकं योज्यं व्याधिवार्धक्यमृत्युजित् ।
धमेद्वज्राभ्रकं वह्नौ यावदग्निनिभं भवेत् ॥ ५३ ॥
गोक्षीरे च ततः सेच्यं गोक्षीरे च पुनः पुनः ।
भिन्न पात्रे च तत्कृत्वा मेघनादद्रवाम्बुना ।
भावयेदष्टयामं च जायते दोषवर्जितम् ॥ ५४ ॥

इस कारण व्याधि बुढापा मृत्युका दूर करनेवाला बज्राभ्रक प्रयुक्त करे, उसको अग्निमें फूंके । जब यह अग्निके समान होजाय तब इसपर गौका दूध वारवार छिडके अर्थात् इसमें बुझावे । फिर इसे अलग रख चौलाईके रसमें आठ पहर भावना दे तो दोषवर्जित होता है ।५३।५४।

अथवाभ्रस्य भागौ द्वौ मुस्ता चैकं जलैस्सह ।
त्रिदिनं स्थापयेत्पात्रे ततः सूक्ष्मं प्रपेषयेत् ॥ ५५ ॥
एतदभ्रकचूर्णं तु निस्तुषं व्रीहिसंयुतम् ।
वस्त्रेण बद्ध्वा सारनाले भाण्डमध्ये विमर्दयेत् ॥ ५६ ॥
हस्ताभ्यां स्वयमायाति यावदम्लं तु रेणुताम् ।
अदोषाभ्रगतं शुद्धं शुष्कं धान्याभ्रकं भवेत् ॥ ५७ ॥

अथवा अभ्रक दो भाग, मोथेका एक भाग इनको जलके साथ तीन दिन पात्रमे स्थापन कर फिर सूक्ष्म पीस ले वह अभ्रकका चूर्ण भूसी रहित जौके सहित ले उसको वस्त्रमें बांध काजीके साथ पात्रमें मर्दन करे । हाथसे तबतक मले जबतक वह सर्वथा चूर्ण होजाय तव वह दोषरहित शुद्ध अभ्रक होती है ॥ ५५-५७ ॥

धान्याभ्रकं रविक्षीरे रविमूलद्रवैश्च वा ।

दिनमर्धपुटे पच्यात्सप्तधैनं मृतं भवेत् ।। ५८

धान्याभ्रकस्य भागैकं द्वौ भागौ टङ्कणस्य तु ।। ५९ ।।

पिष्ट्वा तदन्धमूषायां रुद्ध्वा तीव्राग्निना धमेत् ।

स्वभावशीतलं चूर्णं सर्वयोगेषु योजयेत् ।। ६० ।।

धान्य अभ्रकको आकके दूधमें वा आककी जडके रसमें आधे दिन पुट देकर पाचित करे । ऐसा सात वार करनेसे अभ्रक मरता है । धान्याभ्रकका एक भाग, सुहागा दो भाग दोनोंको पीस अन्ध-मूषामें रख धान्याभ्रक बन्द कर तीव्र अग्नि दे । जब स्वांगशीतल हो जाय तब निकाल चूर्ण कर सब योगोमें दे ।।५८-६०।। इति अभ्रकशुद्धिः ।।

अथामृतीकरणम्

सर्वेषां घातिताना तु ह्यमृतीकरणं शृणु ।

त्रिफलोत्थकषायस्य पलान्यादाय षोडश ।। ६१ ।।

गोघृतस्य पलान्यष्टौ मृताभ्रस्य पलान् दश ।

एकीकृत्वा लोहपात्रे पाचयेन्मृदुवह्निना ।। ६२ ।।

द्रवैर्जीर्णे समादाय सर्वयोगेषु योजयेत् ।। ६३ ।।

अब सब मारी हुई धातुका अमृतीकरण सुनो-त्रिफलेका काढा सोलह पल, गौका घी आठ पल, अभ्रक दश पल इन सबको एकत्र कर मृदु अग्निसे लोहपात्रमें पकावे जब रस जल जाय अभ्रक मात्र शेष रहे तब सब योगोमें युक्त करे ।।६१-६३ ।। इति अमृतीकरणम् ।।

अथ अभ्रकसत्त्वपातनम्

चूर्णीकृतं गगनपत्रमथारनाले धृत्वा दिनैकमथ

शोष्य च सूरणस्य । भाव्यं रसस्तदनु मूलरसे

कदल्या वेदांशटङ्कणयुतं शफरीसमेतम् ।। ६४ ।।

पिण्डीकृतं तु बहुधा महिषीमलेन संशोष्य कोष्ठ-
गतमाशु धमेद्यताग्नौ। भस्त्रीद्वयेन च ततो वमते
हि सत्त्वं पाषाणधातुगतमात्रमसंशयोस्ति ।। ६५ ।।

अभ्रकके चूर्णको एक दिन कांजी और एक दिन जमीकंदके रसमें भिगोदे। पीछे केलाकंदके रसमें भावना दे, चतुर्थांश सुहागा और छोटी मछली मिलाय भेंसके गोबरके साथ छोटी छोटी गोली बनावे। फिर धूपमें सुखाय कोष्ठिकामें रख बंकनाल धौंकनीसे महा अग्नि देवे तो सत्त्व निकले। यह महारसायन जारणयोग्य तथा सब रोगोको दूर करनेवाला है ।। ६४ ।। ६५ ।। इति अभ्रकसत्त्वपातनम् ।।

अथ मन शिलाशुद्धि

जयन्तीभृङ्गराजोत्थं रक्तागस्तिरसैः शिलाम् ।। ६६ ।।
दोलायन्त्रे पचेद्यामं यामं छागोत्थमूत्रकैः।
क्षालयेदारनालेन सर्वयोगेषु योजयेत् ।। ६७ ।।

हलदी, भांगरा, अगस्तिया इनके साथ मनशिलको दोलायंत्रमें छागमूत्रके साथ एक पहरतक पकावे तो शुद्ध हो पीछे काजीसे प्रक्षालन कर सबयोगोमें प्रयोग करे ।।६६।।६७।। इति मनःशिलाशुद्धिः।।

अथ हरतालशुद्धि

तालकं पोटली बद्ध्वा सचूर्णं काञ्जिके क्षिपेत्।
दोलायन्त्रेण यामैकं ततः कूष्माण्डजे रसे ।। ६८ ।।
तिलतैले पचेद्यामं यामं च त्रिफलाजलैः।
एवं यन्त्रे चतुर्यामं पाच्यं शुद्ध्यति तालकम् ।। ६९ ।।

हरनालको चूर्ण कर पोटली वांध कांजीमें डाल दे और एक पहर तक दोलायंत्रमें पचावे, फिर पेठेके रसमें तिलके तेलसे एक पहर-

तक पकावे, फिर एक पहर त्रिफलाजलसे पाचित करे तो द[illegible]रों-में हरताल शुद्ध होजाता है ।। ६८ ।। ६९ ।। इति हरतालशुद्धिः ।

अथ तुत्थशुद्धि.

विष्ठया मर्दयत्तुत्थं मार्जारककपोतयोः ।
दशांशं टङ्कणं दत्त्वा पाच्यं मृदुपुटे तु तत् ।
पुटं दध्ना पुटं क्षौद्रे देयं तुत्थं विशुद्धये ।। ७० ।।

तुत्थ (तूतीया) को बिलाव और कबूतरकी बीटमें मर्दन करे, उससे दशवां हिस्सा सुहागा डालकर मृदु पुटमें पचावे तथा इसकी शुद्धिके निमित्त दही और शहदकी पुट देनी चाहिये ।।७० ।।

अथ काशीशशखनाभिशुद्धि

घर्मे शुद्ध्यति काशीशं दिनं जम्बीरभावितम् ।। ७१ ।।

एक दिन जंबीरीके रसमें भावना देकर धूपमें सुखावे तो काशीश शुद्ध होवे ।। ७१ ।।

शङ्खनाभं च संदग्ध्वा भाव्यमम्लेन सप्तधा ।
प्रक्षाल्यं ग्राहयेत्तावच्छुद्धिमायाति नान्यथा ।। ७२ ।।

शंखनाभि (नाभिशंख) को लाकर सातवार अम्ल पदार्थसे भावना देकर प्रक्षालन करे तो शुद्ध हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं।७२।

अथ शातकुम्भादिधातुशोधनम्

मृत्तिकामातुलुङ्गाम्लैः पञ्चवासरभाविता ।
सभस्मलवणैर्हेम शोधयेत्पुटपाकतः ।। ७३ ।।

पांच प्रकार की मृत्तिका भस्मके साथ जम्बीरी अम्ल इनसे पुट-पाकद्वारा सुवर्णको शोधे ।। ७३ ।।

वल्मीकमृत्तिका धूमं गैरिकं चेष्टिका पटुः ।
इत्येता मृत्तिकाः पञ्च जम्बीरैरारनालकैः ।। ७४ ।।
पिष्ट्वा लिप्तस्वर्णपत्रं पुटेन परिशुद्ध्यति ।
नागेन टङ्कणेनैव धूमे शुद्ध्यति रौप्यकम् ।। ७५ ।।

बमईकी मिट्टी, धूम्र, गेरू, ईंट और लवण ये पांच मृत्तिका जंबीरी नींबूके रस और कांजीमें खरल कर उसके द्वारा स्वर्णके पत्तोंपर लेप कर पुटपाक करनेसे सुवर्ण भले प्रकारसे शुद्ध होजाता है । रूपा वग और सुहागेके साथ लगानेसे शुद्ध होता है ।।७४ ।। ७५ ।।

खटिका लवणं तक्रैरारनालैश्च पेषयेत् ।
तेन लिप्तं ताम्रपत्रं तप्तं तप्तं निषेचयेत् ।। ७६ ।।

खड़िया और सेंधेनोनको तक्र और कांजीमें पीसकर तांबेके पत्रोंपर लेप कर वारंवार आगमें तपाकर शुद्ध करे ।।७६ ।।

खदिरारनालतक्रान्तनिर्गुण्डी न विशुद्धये ।। ७७ ।।
रोहणं राजवं चैवं तृतीयं च पुटीरकम् ।
इति तीक्ष्णं त्रिधा तं च शोधयेद्योगसिद्धये ।। ७८ ।।

खैर तथा कांजी, मट्ठा और निर्गुंडी, राजवृक्ष, रोहिण और पुटीरकका प्रयोग करना चाहिये । इस प्रकार तीक्ष्ण तीनवार शुद्ध कर योगोंमें लगावे ।। ७७ ।। ७८ ।।

अथ तुत्थटङ्कणकाचलोहशोधनम्

शशरक्तेन संलिप्तं त्रिवारं चाग्निपाचितम् ।
तुत्थटङ्कणकाचैर्वा धामितं शुद्धमृच्छति ।। ७९ ।।

तीन वार*रक्तवर्गकी वा शशाके रक्तकी भावना देकर तीन वार अग्निमें पचावे, वारवार लेपकर अग्निमें रखनेसे तूतिया सुहागा और काच ये तापसे शुद्ध होते हैं ॥ ७९ ॥

अथवा लोहचूर्णं तु गोमूत्रैः षड्गुणैः पचेत् ।
प्रक्षालयेदारनालैः शोष्यं शुद्धिमवाप्नुयात् ॥८०॥

अथवा लोहचूर्ण छः गुने गोमूत्रमें पकाकर पीछे कांजीसे प्रक्षालन कर धूपमें सुखानेसे शुद्ध होता है ॥ ८० ॥

सर्वेषा मते मारणम्

शुद्धसूतं समं स्वर्ण खल्वे कुर्याच्च गोलकम् ।
अधोर्द्ध गन्धकं दत्त्वा सर्वतुल्यं निरुध्य च ॥ ८१ ॥
विशद्वनोपलैर्देयं पुटान्येव चतुर्दश ।
निरुत्थं जायते भस्म गन्धं देयं पुनः पुनः ॥ ८२ ॥

शुद्धपारेके समान सोना लेकर खरल करे गोली बनावे । उससे आधा गन्धकका चूर्ण गोलेके नीचे धर गोलेको मूषामें रख बीस वनकी उपलियोके द्वारा चौदह वार पुट देनेसे स्वर्णकी भस्म बनजाती है । हरेक पुटमें गन्धकका चूर्ण देता जाय ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

रौप्यं पत्रं चतुर्भागं गन्धं भागेन लेपयेत् ।
जम्बीरीनरपिष्टेन पञ्चविशद्वनोपलैः ॥ ८३ ॥
वध्वा त्रिभिःपुटे पच्यादगन्धं देयं पुनः पुनः ॥
म्रियते नात्र सन्देहस्तत्तत्कर्मणि योजयेत् ॥ ८४ ॥

---

* कसूम, खैर, लाख, मजीठ, लालचदन, सहिजना, दुपहरिया, कपूरगवो, सोना । माखी ये रक्तवर्ग हैं ।

चार भाग चादीके पत्र, एक भाग गन्धक जम्बीरी नींबूके रसमें खरल कर उनपर लेप करे। फिर संपुटमें रख पच्चीस वनके उपलोकी अग्निके द्वारा हरेक पुटमें गन्धक देकर तीन वार पुटकपाक करे अवश्य चादीकी भस्म होजायगी फिर कार्यमें लावे ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

ताम्रतुल्येन गन्धेन ह्यम्लपिष्टेन लेपयेत्।
कण्टवेधीकृतं पत्रमन्धयित्वा पुटे पचेत् ॥८५॥
उद्धृत्य चूर्णयेत्तस्मिन् पादांशं गन्धकं क्षिपेत्।
जम्बीरैरारनालैर्वा पिष्ट्वा बध्वा पुटे पचेत् ॥ ८६ ॥
एवं चतुः पुटैः पाच्यं गन्धं देयं पुनः पुनः।
मातुलुङ्गद्रवैः पिष्ट्वा पुटमेकं प्रदापयेत्। ८७ ॥

तावेके कंटकवेधी पत्र लेकर उसके बराबर गन्धकको कांजीमें खरल कर उसको तांबेके पत्रोपर लपेटे, फिर उन कटकवेधी तांबेके पत्रोको गजपुटमें पचावे, फिर महीन पीस चूर्ण करले। इसके उपरान्त चौथा भाग गन्धक मिलाय जम्बीरीनींबू कांजीमें पृथक पृथक् पीसकर गधक मिलाय चार पुट दे और जंबीरीके रसमें पीसकर वा बिजौरेके रसमें पीसकर पुटपाक करनेसे भस्म होजाती है॥ ८५–८७ ॥

अथास्य दोषहरणम्

सितशर्करयाप्येकं पुटं देयं मृतं भवेत् ॥ ८८ ॥
मृतं ताम्रं तु जम्बीरैर्यामं खल्वे विमर्दयेत्।
तद्गोलं सूरणे क्षिप्त्वा रुद्ध्वा सर्व च लेपयेत्।
शुष्कं गजपुटे पाच्यं निर्दोषं सर्वरोगहृत् ॥ ८९ ॥

एक भाग तांबा और दो भाग पारा इनको जम्मीरीके रसमें खरल कर खाड मिलाय तीन वार पुटपाक करनेसे तांबेकी भस्म होजाती है।

मरे ताम्रको जम्बीरीके, रसमें एक पहर खरल कर गोला बनावे। उसको जिमीकन्दके बीचमें धर लेप कर गजपुटमें पचानेसे सर्व रोगोंकी हरनेवाली भस्म होती है ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

अथ लोहमारणम्

नायं पचेत् पञ्चपलादर्वागूर्ध्वं त्रयोदश।

आदौ मन्त्रस्तथा कर्म कर्तव्यं मन्त्र उच्यते ॥ ९० ॥

लोहमारण श्रेष्ठ कर्म है इससे प्रथम इसकोपांच पलसे तेरह पल पर्यन्त लोहेको लेकर पहले मन्त्र पढे फिर कर्म करे ॥ ९० ॥

"ॐ अमृतोद्भवाय स्वाहा" इति मर्दनमन्त्रः।

अनेन मन्त्रेण लोहस्य तत्साधकस्य रक्षा

कर्तव्या। "ॐनमश्चण्डचक्रपाणये स्वाहा यक्ष-

सेनाधिपतये नुरगुरुमहाविद्याबलाय स्वाहा।"

अनेन मन्त्रेण बलिं दत्त्वा ततः कर्म कुर्यात् ॥

"ॐ अमृ." इस मन्त्रको पढकर मर्दन करे ॥ इस मन्त्रसे लोह और साधक की रक्षा करे और दूसरे "ॐ नमश्च." इस मन्त्रसे बलि देकर कर्म करे ॥

दन्तीपत्रद्रवं तस्यां लोहचूर्णं दिनोदये।

घर्मे धार्यं दिनं कांस्ये द्रवं देयं पुनः पुनः ॥ ९१ ।

रुद्ध्वा रात्रौ पुटे पाच्यं प्रातर्द्रवैश्च भावयेत्।

एवमष्टदिनं कुर्यात्त्रिविधं म्रियते तु घः ॥ ९२ ॥

दन्तीके पत्तोंके रसमें लोहेका चूर्ण खरलकर तीन दिन धूपमें रक्खे बार बार इसकी भावन दे, फिर रातमें लोहेको शरावसंपुटमें रखकर प्रातःकालमें पूर्वोक्त द्रवोंसे पचाना, इस प्रकार आठ दिन करनेसे लोहा मर जाता है ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

मृतस्य लक्षणम्

मध्वाज्यं मृतलोहं च रौप्यं सम्पुटके क्षिपेत् ।
रुद्ध्वा ध्माते तु संग्राह्यं रौप्यं चेत्पूर्वमानकम् ।
तदा लोहं मृतं विद्यादन्यथा साधयेत्पुनः ।। ९३ ।।

शहद, घी और मृत लोहेको रूपेके सम्पुटमें रख मुख बन्द कर अग्नि जलानेसे लोह भस्मही यदि पूर्ण ही रहे तो लोहेको मृत जा। यदि न हो तो फिर पुटपाक करे ।। ९३ ।।

अथ शोधनम्

गन्धकं तुल्यकं लोहं तुल्यं खल्वे विमर्दयेत् ।। ९४ ।।
दिनैकं कन्यकाद्रावे रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ।
इत्येवं सर्वलोहानां कर्तव्यं स्यान्निरुत्थनम् ।। ९५ ।।

गन्धक और मृत लोहेको खरलमें डालकर एक दिन घीकुवारके रसमें मर्दन करे, फिर गोला बनाय सम्पुटमें रख गजपुटमें पचावे, इस प्रकार सब लोह शुद्ध हो जाते हैं ।। ९४ ।। ९५ ।।

अथास्यामृतीकरणम्

घृततुल्यं मृतं लोहं लोहपात्रगतं पचेत् ।
जीर्णे घृते समादाय योगवाहेषु योजयेत् ।। ९६ ।।

घृत और लोहेकी भस्मको बराबर लेकर लोहेके बासनमें पकावे । जब घी जीर्ण हो जाय तब उतार ले । इसको योगवाही योगोमें प्रयोग करे । ९६।। इति लोहमारणम् ।।

अथ भूनागसत्त्वम्

सद्यो भूनागमादाय क्षालयेच्छिथिलं बुधः ।
अथवा कुक्कुटं वीरं कृत्वा मन्दिरमाश्रितम् ।। ९७ ।।

मलमूत्रं गृहीतेन सदम्बु प्रथमांशकम् ।
आलोड्य टङ्कं मध्वाज्यैघर्मे सर्वार्थमादरात् ।
मुञ्चेत्तु ताम्रवत्सत्त्वमेतद्भूनागसत्त्वकम् ॥ ९८ ॥

प्रथम भूनागको लाकर जो कि, वर्षाकालमें ताम्रभूमिमें हुआ हो उसको क्षालित करके अथवा देवकण्ड कनेर मिलाकर वा मुरगेकी बीटके साथ उसको मिलाकर अथवा गैके मलमूत्रके साथ जल मिलाय तत्कालके जलसे उसके चूर्णको शहद घृतमें मिलाय धूपमें धर दे । फिर मर्दन कर वकनालमें रख फूके तो तांबे के समान सत्त्व निकले९७।९८।

अथ लवणपञ्चकम्

सामुद्रं सैन्धवं काचं चुल्लिका च सुवर्चलम् ।
मूलिका नवक्षारश्च ज्ञेयं लवणपञ्चकम् ॥ ९९ ॥

समुद्रलवण, सैंधा, कांच, चूलिका, काला नमक, मूलिका और नवक्षार यह पांच लवण जानने ॥ ९९ ॥ इति लवण पञ्चक ॥

अथ क्षारा

त्रिक्षारष्टङ्कणक्षारो यवक्षारश्च स्वर्जिका ॥ १०० ॥

सुहागा, जवाखार और सज्जीखार ये तीन क्षार है ॥ १०० ॥

अथ वृक्षक्षार

तिलापामार्गकदलीपलाशः शिग्रुपौण्ड्रकौः
मूलकार्द्रकचित्राश्च सर्वमन्तः पुटेपचेत् ॥ १०१ ॥
समालोड्य जलैर्बध्वा वस्त्रे ग्राह्यमधोजलम् ।
शोधयेत्पाचयेदग्नौमृद्भाण्डेन तु तज्जलम् ।
ग्राह्यं क्षारावशेषं तु वृक्षक्षारमिदं स्मृतम् ॥ १०२ ॥

तिल चिरचिटा, केला, ढाक, सहिजान, पौंड्रक, मूली, अदरख, चीता इनको, पृथक् अन्तःपुटमें पचावे। (कहीं पौंड्रकका अर्थ इक्षु है (और जलमें अच्छी प्रकार आलोडित कर वस्त्रमें ग्रहण कर छान ले और उस जलको शोधन कर अग्निमें पचाय मिट्टीके बर्तनमें रक्खे फिर जो शेष रहे वह क्षार हैं यह वृक्षक्षार जानो ।।१०१।१०२।

अथ विड

मूलिकार्द्रकवह्नीनां क्षारं गोमूत्रयोजितम् ।
वस्त्र पूतं जलं ग्राह्यं गन्धकं तेन भावयेत् ।। १०३ ।।
सप्तवारं खरे घर्मे बीजोऽयं हेमजारणे ।
कन्याहयारिधत्तूरद्रवैर्भाव्यं तु गन्धकम् ।। १०४ ।।
शतवारं खरे धर्मे बीजोऽयं हेमजारणे ।
गन्धकं शङ्खचूर्णं वा गोमूत्रैः शतभावितम् ।
बीजोऽयं जारणे श्रेष्ठो बीजानां द्रावणे हितः ।। १०५।।

मूली, अदरख, चीता इनको गोमूत्रसे पीस वस्त्रसे छानले, उसमें गन्धककी भावना दे । इस प्रकार, सातवार कर कठिन धूपमें रखदे । यह सुवर्णके जारण करनेका बीज है । घीकुवार कनेर और धतूरोके रस सहित गधककी भावना देकर सातवार कठिन धूपमें रख दे यह भी सुवर्णके जारणेका बीज है गंधक और शखके चूर्णको सौ वार गोमूत्रसे भावना दे । यह हेमजारणमें श्रेष्ठबीज है । बीजोके द्रावणमें हित कारक है । (विरिया सौंचर नोनको भी विड कहते है) १०३-१०५ —१०५ ।।

अथ अम्लवर्ग

जम्बीरं नागरङ्गश्च मातुलुङ्गाम्बवेतसम् ।
चाङ्गेरी चणशुक्रश्च अम्लवर्गः प्रकीर्तितः ।। १०६ ।।

जम्बीरीनींबू, नागरंग (नारंगी), मातुलुंगी, बिजौरानींबू,अम्लवेतस, अम्ललौना, चना, चीता यह अम्लवर्ग है ।१०७। इति अम्लवर्ग।

अथ वज्रभूषा

वल्मीकमृत्तिकाभागं गवास्थितुषभस्मनोः ।
भागं रसं समादायं वज्रमूषा विरच्य ते ।। १० ७ ।।

इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचित्ते कामरत्ने रसादिशोधन नाम षोडशोपदेश ।। १६ ।।

तिनकोकी राख दो भाग, बॅमईकी मट्टी एक भाग, रस एक भाग लेकर अर्थात् लोहेका मेल एक भाग ले । बकरीके दूधसे पीसकर दृढ मूषा बनावे, धूपमें सुखा ले उपरोक्त कल्क लेपन कर मुख बंध करे । वह वज्रमूषा है । इसमें उत्तम पारेकी भस्म होती है ।। १० ७।।

इस ग्रन्थमे जो तोलका प्रमाण आया है
उसका प्रमाण

चार चौंकी एक जौटली वा रत्ती होती है ।
छः रत्तीका एक माशा वा धान्यक होता है ।
चार माशेको एक शाण वा टंक कहते हैं ।
दो टंकको एक कोल (आठ मासे) कहते हैं ।
दो कोलका एक कर्ष (तोला) होता है ।
दो कर्षका आधा पल होता है, इसे शुक्ति कहते हैं ।
दो पलकी एक प्रसृति (८ तोले) होती है ।
दो प्रसृतिकी एक अञ्जली और वही कुडव (१६ तोले) है ।
इस प्रकार परिभाषा समझना चाहिये ।

अथ दीर्घायुष्यकरणम्

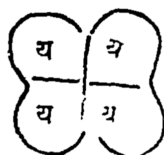
नीमकी छाल ४ मासे, नीमकी जड ५, मीमके फूल ५, हरिद्रा ७, अपामार्ग (चिरचिटा) ५, त्रिकुटा, २ बेलकी जड १, २५, श्वेतचीता १ मासा, अजवायन १ तोला, लवण, ५ मासे, यह सब एकत्र कर तत्ते पानीसे वस्त्रमें शोधले ।तीन मासेकी गोली बनाकर प्रतिदिन एक गोली खायतो तीन सौ साठ वर्ष जिये ।

पहले महीने अग्निकी प्रबलता दूसरे महीने व्याधिनाश, तीसरेमें पुष्टि, चौथेमें जनैकदृष्टि, पांचवमें सुन्दरता, छठेमें कोकिलास्वर, सातवेंसे पलितनाश, आठवेंमें वज्रकाय, नौवेंमें निद्रानाश, दशवेंमें यशोवृद्धि, ग्यारहवेंमें श्रुतिधर और बारहवेंमें सर्वसिद्धि होवे ।।

"ॐ स्वस्तिनानन्दग्रामात्नानन्दग्रामात् नानन्दगृहात् नानन्दविहारात् नानन्दकोनाम भिक्षु एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक नित्यज्वर, मासिक, वार्षिक द्विवार्षिक, हाकिनी, कृत्या, वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सन्निपातादीन् सर्वज्वरान् समादिशाते भवद्भिः प्रहितराजादेशश्रवणपत्रदर्शनात् श्री अमुकस्य शरीरे मुहूर्तमपि न स्थातव्यं ज्वर रे रे फट् फट् हुं स्वाहा । मारीच २ अमुकस्य ज्वर हर २ उच्चाटय २ स्वाहा" इदं यंत्र लिखित्वा शिरसि बद्धं सर्वज्वरान् हन्ति ।

यह यंत्र लिख शिरपर बांधनेसे सब ज्वर दूर होते हैं ।।

इस यत्र को काक और उल्लूके रक्तसे लिख शिरमें बाधे या कौएके गलेमें बांध छोडदे तो ज्वर आदिका उच्चाटन होकर रोगी सुखी हो जायगा । यह सत्य है ।।



इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकाया रसादिशोधन नाम षोडशोपदेश ।१६।।।

संवत गुणशर अग विधु, पौष कृष्ण गुरुवार ।
सकल कामप्रद पंचमी, मन इच्छा दातार ।। १ ।।
पूर्ण कियो शुभ ग्रन्थ, यह भाषा तिलक बनाय ।
लखहिं सजन हिय लहहिं मुद, काम अर्थको पाय ।। २ ।।
कामरत्न सब कामप्रद, सेवहिं जो करि नेम ।
ते पावहिं सुख सपदा, बढहिं वशमें क्षेम ।। ३ ।।
वसत राम गंगा निकट, नगर मुरादाबाद ।
तहा रहत हरिभजनरत, द्विज ज्वालापरसाद ।। ४ ।।
तिन भाषाटीका कियो, गौरि गिरीश मनाय ।
भक्तन सुख दायक सदा, जनको करें सहाय ।। ५ ।।

कामरत्नं समाप्तम् ।।



स्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबई,

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्, प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई,